

आर्यभाषा पुस्तकालय  
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी  
में उपलब्ध

हस्तलिखित  
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

प्रथम खंड

# हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथ-सूची

संपादक मंडल

सुधाकर पाडेय                      करुणापति त्रिपाठी  
मोहनलाल तिवारी

सहायक संपादक  
विश्वनाथ त्रिपाठी



नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रवागव  
नागरीप्रचारिणी सभा,  
वाराणसी

प्रथम सम्बरण  
स० २०३१  
११०० प्रतियाँ

मूल्य—७५-००



मुद्रक  
शशुनाथ वाजपेयी  
नागरी मुद्रण, वाराणसी

## प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरंभ किया, अपितु ऐसे गुरु गभीर आयोजन भी आरंभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अम्युदय और विकास मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोन्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल्य संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनो भे पड़ी पड़ी एकांत घरती में गड़ धन की भांति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८९४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यत्न में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समयाचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यंत आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का सफल बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के सकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची का यह प्रथम खंड प्रकाशित करते हुए हम अत्यंत प्रसन्नता में रहती हैं और आशा है, हम शीघ्र ही इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

रमयात्रा,  
स० २०२१ दि० }

बन्नापति त्रिपाठी  
प्रकाशन मंत्री,  
ना० प्र० सभा, काशी

# भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय-समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक भ्रजात लेखकों और ज्ञात लेखकों के भ्रजात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिमसे अनवरत प्रबहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने में अवल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों में जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का सचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लांघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपजीव्य एवं मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग—छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह में पड़कर व्यर्थ ही धरती में गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन में लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूंदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश में अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर दशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बर्मी तथा मद्रास की प्रेसीडेसी सरकारों ने इस कार्य में अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध सत्ताओं और विद्वानों द्वारा भी खोज में उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्न से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से सृष्ट साहित्य के अनक भ्रजात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक भ्रजात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक भ्रजात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की धीवृद्धि हुई। इस संबंध में रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम में प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अचला म कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त हो रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानबारी के लिये हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्राथमता पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके संपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसका बमठ वायवर्तामाने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियों में रखा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, धार्मिक, धनुर्विद्या, भाषा, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, काश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तत्त्व, मंत्र, यज्ञ, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरिभाषा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण काष्ठों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं क्रमसंख्या, (२) पुस्तकालय की भागतसंख्या या संग्रहविषय की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रा या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में पंक्तिसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूरा है, अपूर्ण है या वर्तमान ग्रंथ का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीघ्र से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित वायवर्तामाने सबंधी शिष्यगण मिश्र, डा० प्रेमचंद्र मिश्र, मयालाल मिश्र, पारमनाथ पाठय, वृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पाठेय, आदि का तत्पर सहयोग और धन प्रशसनीय रहा है अतः य सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने कार्य के प्रति इन लोगों का निष्ठापूर्ण लगन प्रशंस्य है।

काष्ठों के तैयार हो जाने पर इसके संयोजन और संपादन के निमित्त श्रीधीरजि त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इस स्वीकार किया और दो बार दिन चाए भी पर अतः म के हमसे एकदम बिरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण का यह प्रथम छद्म है जिसमें विभिन्न विषयों के लगभग २,५०० ग्रंथों का विवरण का गया है या पूर्वोक्त विधि से संकलित है।

इसमें आयुर्वेद के १८८, उपनिषद् के १५८, बर्मयाठ के १,१७१, ऋग्वेद के ११३, गीता के २०५, तथा ज्योतिष के ४८६ ग्रन्थों का विवरण प्रकाशित है। इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशन के क्रम में है। अंतिम खंड में परिशिष्ट में उन ग्रन्थों का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो संपादनक्रम में विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रन्थ पुष्पचिह्नान्वित (●) हैं।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रंश के भी अनेक ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रन्थ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रंश के ग्रन्थों का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्त्व के ग्रन्थ प्रकाश में आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय

प्रधान मंत्री,

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

# विषयनिर्देश

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठसंख्या
१.	आयुर्वेद	२-५६
२.	उपनिषद्	५६-१००
३.	कर्मकांड	१००-४३५
४.	बोध	४३६-४६७
५.	गीता	४६८-५२६
६.	ज्योतिष	५२६-६५७



संस्कृत-ग्रंथ-सूची

क्रमः श्रीर विषय	पुस्तकनाम की भागत मक्या या मुद्रारिनेप की मक्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ विग यम्पु पर विद्या है	विति
१	२	३	४	५	६	७
ध्यायुर्वेद						
✓ १	७२४१	ग्रंजन	ग्रगिनवेग		दे० का०	दे०
✓ २	३८१३	भजीएँ मजरी	श्री—?		दे० का०	दे०
३	३६६	अपामार्जन			दे० का०	दे०
✓ ४	६५१७	अकं चिकित्सा	रावण (लकानाम)		दे० का०	दे०
✓ ५	३७२४	अथवचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✕ ६	३३६६	अथवचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✕ ७	६५६७	अष्टाग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष वा विवरण	ग्रथस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स द	६	१०	१०
२२७ X ६२ से० मी०	१३ (१-१३)	१० ३२	५०	प्राचीन	इति श्री मदनन समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
१६४ X ८७ से० मी०	८ (१-८)	७ २७	५०	सवत्— १८४०	इति श्री वासिराज परमहंस परि- ब्राजकाचार्य श्री विरचित अजोगर्मजगरा- समाप्त ॥ शुभमस्तु । सवत् १८८० भाद्रपदकृष्ण एकादस्या शनिदिन ॥ लिपित मंगलशौन ॥
२१ X १० से० मी०	१२ (१-१२)	६ २४	अपूर्०	प्राचीन	
२५६ X १११ से० मी०	१८ (१-१८)	११ ४३	अपूर्०	प्राचीन	इति लवानथ वृत्ताक्तं चिकित्सा नानौषधविधान चतुश्शतका X X ॥
२५७ X १२२ से० मी०	१२ (१-१२)	६ २७	अपूर्०	प्राचीन	इति नकुलरुते अश्वचिकित्सित लक्षण नामाध्याय पट्ट ॥ (पत्र सख्या ६) X X X
२४५ X ११८ से० मी०	११ (१३ २३)	६ २६	अपूर्०	सवत्— १८२७	इति श्री नकुलरुते अश्वचिकित्सितविषा- ध्यायश्चतुर्दश समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितमजीवणवाचरानो मध्ये...मिति चैत्र शुक्ल ५ सवत् १८२७ श्राव १६६२
२३३ X ६८ से० मी०	४३ (१-४३)	१० ३३	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री वाग्भट्ट विरक्तिनायामप्टोप- हृदय मशियाया तृतीयेनिदानम्याय वातम्याधि निदानाध्याय पचदश ॥ ( पत्र न ४१ )

क्रमानुसारी विषय	पुराणनाम की प्रागल्भ्य या सप्तविधेय की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रथम विम्वन्तु पर विद्या है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
८	४३८	● अष्टाग हृदय	वाग्भट्ट		२० का०	२०
९	२१	अष्टाग हृदय संहिता			२० का०	२०
✓ १०	८८१	अष्टाग हृदय संहिता (संस्कृतटीका) { (१) तृतीयम्यां } { (२) चतुर्थम्यां } { (३) चतुर्थम्यां } { (४) पष्ठम्यां } { (५) मौषधिप्रकरण } { (६) क्षाराग्निवर्म } { (७) क्षाराग्निवर्म }	वाग्भट्ट	प्रणवदत्त	२० का०	२०
✓ ११	४१३५	आतक दर्पण	वाचस्पति वैद्य	बंधवाचस्पति	२० का०	२०
१२	५५६५	आतक दर्पण	वैद्य वाचस्पति		२० का०	२०
✓ १३	७३२२	आतकदर्पण (निदान व्याख्या)			२० का०	२०
✓ १४	१२६७	आतकदर्पणनिदान (संस्कृत टीका संहिता)	वाचस्पति मिश्र		२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	६	३	४	६	१०	११
२५ ५ × १० ७ से० मी०	३८३ (१-११५, ११७-२४०, २४३-३४१, ३४५-३८६)	११	३५	अपूर्०	प्राचीन संवत्— १७६७	मुनिरस-ऋषिचन्द्रे १७६७ वत्सरे शुक्ले शितदशमिशकावे नाथनाम्नाद्विजेना। सपदिचपठनार्थं वाग्भटोज्जेखिरम्यसवशा पुरमुपित्वा श्री हरे सूतनाय ॥ नालाकित यत्प्रतिपत्रमध्ये बुद्धेविरोधादथवान्य दापात् ॥ सद्भिविशोध्यक्षपयात्रनाये प्रायण ह्यभ्रानिमतिलिनलिक्षा ॥
३२ × १५ से० मी०	१६(२-२१)	१४	५१	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री वैद्यपति सिंहमुत्सूनो वाग्भट कृतावट्यागहृदय संहिताया सूत्रस्थाने-क्षाराम्निर्कर्मविधिर्नाम त्रिशाध्याय श्री विषवेश्वरारंपणमस्तु ॥ शुभ ॥ भवतु ॥
३१ × १५ से० मी०	१४८७ (६५,३४२ ६४,२२३, ४६१,१५१, १२१ प्रति अध्याय प्रमण )	६	३४	अपूर्०	प्राचीन	इति वैद्य वाचस्पति कृते भ्रातृकदर्पणे गृहिणीनिदानव्याख्यान ॥ (पत्र संख्या ३७)
२४ ७ × १० ७ से० मी०	३६ (२४-३६, ४३, ८१- १००)	१३	३७	अपूर्०	प्राचीन	इति माघनिदाने कृती वैद्य वाचस्पति कृते भ्रातृकदर्पणे अतिसरे द्वितीय (५० १८)
३४ ६ × १८ से० मी०	७१(१-७१)	१३	५८	अपूर्०	प्राचीन	इत्यातकदर्पणे निदान व्याख्यायां विष निदान सपूर्णसमाप्ता ॥ संवत् १६१४ शके १७७८ मासोत्तमे भासे भाद्रमासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भानु-वासरे हस्त नक्षत्रे तदिन गोविंदारमज चौरजीव × × × × × ×
२६ १ × १० ८ से० मी०	६६(१-६६)	६	३४	पूर्०	प्राचीन स० १६१४ (शके १७७८	इत्यातकदर्पणे निदान व्याख्यायां विष निदान सपूर्णसमाप्ता ॥ संवत् १६१४ शके १७७८ मासोत्तमे भासे भाद्रमासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भानु-वासरे हस्त नक्षत्रे तदिन गोविंदारमज चौरजीव × × × × × ×
२४ ५ × १० ५ से० मी०	४४ (१-४४)	१४	४२	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३७६१	भ्रातृवदपंखनिदान	माधवाचार्य ?		२० का०	२०
१६	७८६६	भ्रातृवदपंखनिदान-सटीक			२० का०	२०
१७	३८३				२० का०	२०
✓ १८	७०	आयुर्वेदप्रवाश	माधव उपाध्याय		२० का०	२०
√ १९	६५८७	आयुर्वेदमहोदधि	सुखेण		२० वा०	२०
२०	५६४	आयुर्वेदशतश्लोक्यानिघट	श्री विमल		२० वा०	२०
√ २१	१३६४	श्रीपथिवन्प			२० वा०	२०

पत्रो या पृष्ठी वा प्राकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४५×१२६ से० मी०	२४ (१-२४)	१३	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६६×११४ से० मी०	११२ (१-११२)	१४	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यातद्दुर्घणैनिदानव्याख्यामश्वरी निदानम् ॥ (पृ० १११)
२४५×१०५ से० मी०	८(२-७, ६-१०)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३८×१४४ से० मी०	५० सं० १६ (१-१६)	१३	३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८४२	इति सीराष्ट्रादेशोद्भवसारस्वतकुला- वतम् उपाध्याय माधव विरचिते आयुर्वेदप्रवाशे पाकावली नामाध्याय संपूर्णम् ॥ समाप्तम् ॥ शुभभवतु ॥ सवत् १८४२ शके १७०७ पौषकृतम् मदवाप्तरे ॥ समाप्तम् ॥
२०३×६७ से० मी०	४२ (१-४२)	१३	२८	अपूर्ण	प्राचीन	इति आयुर्वेदमहोदधौ मुखेण कृते पातीय वग्ग ॥ (पत्रसख्या-६)
२५१×१०४ से० मी०	५० सं० १२ (१-१२)	१०	३२	पूर्ण	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिते आयु- र्वेदशतश्लोक्या निघट्ट समाप्त ॥ सवत् १७३५ वैशाखमासे वृद्धवाप्तरे सप्तम्या ग्रथ समाप्त ॥
२३८×१०२ से० मी०	८० (२-६८, ७०-८२)	७	३१	अपूर्ण	प्राचीन	

समांश घोर विषय	मुन्नामान की प्रायत मन्ना या मन्नाविमेष की संख्या	प्रयनाम	प्रयनाम	टीकाकार	प्रय विम मन्ना पर विमो १	विमि
१	२	३	४	५	६	७
✓ २२	७५३६	घोरप्रिगार			दे० वा०	दे०
✓ २३	७०३५	भावमान			दे० वा०	दे०
✓ २४	६५६५	मानमान वैद्यक			दे० वा०	दे०
२५	४०६	गच्छावली	रत्न		दे० वा०	दे०
२६	४४०	● गुरुखलमाला	भावमिथ		दे० वा०	दे०
२७	५३८७	चतुर्थक			दे० वा०	दे०
✓ २८	६५१५	चिद्विज्ञानप्रणयनम्			दे० वा०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
८ अ	८					११
२३६ × ८.७ से० मी०	८	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६७ × १०.५ से० मी०	७ (१-७)	८	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४३ × ६.४ से० मी०	२० (१-२०)	८	३८	पूर्ण	स० १६२४	इति अभिन्यास कालजान वैद्यके नाम ग्रथ समाप्त ॥ श्री भरत योगेश्वरी प्रसन्नास्तु ॥ समत् १६२४ ॥ पीप कृष्ण ३० ॥ मुर वासरे ॥ वाराणस्या ॥ इदं पुस्तक रामचन्द्र विन्म गणेश भट्ट हर्षिकर इत्युपनामक ॥
२७५ × १२.५ से० मी०	३	११	३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री श्री श्रीरुद्र कतकप्यावली संपूर्ण ॥ करे कर पीठके चैव आयते स्तेताम्र भाजने अस्वस्वेवट पत्रेच भूक्ता चद्रा यणमाचरेत ॥ १ ॥ श्री ल ल ड ट
२३२ × ६.५ से० मी०	७४ (८३-८५, ८८-८९, ९१- ११०, ११२- १४३, १४६- १६२, १६४)	६	३१	अपूर्ण	प्राचीन स० १६४६	इति श्रीमन्मिश्रलटकनतनय श्री मिश्रभाव विरचिता गुणरत्नमाला संपूर्णा ॥ सवत् १६४६ समये चैत्रसुदि चतुर्थीवौ ॥
१६१ × ११ से० मी०	२ (१-२)	१३	३०	पूर्ण	प्राचीन	अर्थ चतुर्थक ॥ (प्रारम्भ)
१६६ × ११ से० मी०	७ (१-७)	८	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्म वैवत्तपुराणे ब्रह्मखडे मालवीविष्णुसदादे चिन्त्रिता प्रणयण पनदशोध्यायः ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सहाय या सप्रहयिगेप की सहाय	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३५८१	चिकित्सासार सग्रह	बंगसेन		२० का०	२०
✓ ३०	१६३०	चूर्णविधि ?			२० का०	२०
✓ ३१	१८३७	ज्वरनिदान चिकित्सा	भोविद प्रकाश		२० का०	२०
३२	७७३०	द्रव्यगुण शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		२० का०	२०
३३	५१४६	द्रव्यतत्व चन्द्रिका	तदमण पंडित		२० का०	२०
३४	५४४३	द्विशतश्लोकी	ठाकुर		२० का०	२०
३५	२२३०	द्विशति			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्थाओं और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	व	स	द	६	१०	११
३१६ X १७ सें०	५० स० ५१ (२-५१)	१७	४७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री वगसन कृते चिकित्सा सार सप्रहे द्रव्यस्य भावाभावो नमाप्त ॥ (पृ० ४३)
२५ X ६५ सें० मी०	५० स० १७	८	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
१४३ X १०२ सें० मी०	११ (५-१५)	६	१७	अपूर्ण	प्राचीन	इति गोविंद प्रकाश ज्वरनिदान चिकित्सा संपूर्ण ॥ देवीसहाय ।
२४ = X १०७ सें० मी०	११ (१-११)	६	४०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्लभट्ट विरचिताया द्रव्य गुण शतश्लोकी समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२३७ X ११ सें० मी०	३२ (१-३२)	१३	४६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भद्रब्रह्मज्ञानि वगावतस दत्तसुरि- मुत् लक्ष्मणपंडित विरचिता द्रव्यतत्त्व चंद्रिका समाप्तिमगमत् ॥ शुभ भूयात् ॥
२५५ X १०८ सें० मी०	१४ (१-१४)	१०	३३	पूर्ण	प्राचीन सवत- १८६८	गुणप्रामाभिरामेश्वपूजितेन मनस्विना श्री ठाकुरेण रचिता द्विगतीपुण्य तामिषात् ? इति श्री द्विगती समाप्ता सवत १८६८
२७ X ११ सें० मी०	२१	६	३०	पूर्ण	सवत- १६५०	इति द्वीपनि संपूर्ण - सम्पत् १६५० फानगुण गृदि १२ वार भादिव्यार पठिनवधरा शुभ भूयात् ।

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संप्रहयिज्ञाप की संख्या	प्रथमनाम	प्रथकार	टीकानगर	प्रथ विस यन्तु पर लिप्या है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६	३३५७	द्विगती	ठागुर		२० पा०	२०
✓ ३७	६५८२	धन्वतरि निपट			२० का०	२०
✓ ३८	७५२१	नाडीपरीक्षा			२० का०	२०
✓ ३९	७५२६	नाडीपरीक्षा			२० का०	२०
✓ ४०	७८५५	नाडीविज्ञान			२० का०	२०
✓ ४१	२७२	निषट			२० का०	२०
४२	४१८७	निषट			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति म अक्षर संख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रवस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	८			६	१०	११
३१ x ११ सें. मी०	१२ (१-१२)	१०	४३	पू०	सवत् १६२६	श्रीठाकुरेश्वरचिता द्विशती पूर्ण-तामियात ॥ ग्रहयुग्मनवेदो च फाल्गुने वृष्ण पक्षके पाठचाभिमेषुते साध्ये स्वामलालेन लेखितम् ॥
२१ x ८ ५ सें. मी०	१६ (१-१६)	७	३१	अपू०	प्राचीन	इति धन्वतरीये निघटी श्रव्यगण समुच्चय ॥ (पत्र सं. ८)
२७ १ x ११ १ सें. मी०	२ १-२	६	३०	पू०	प्राचीन (जीरा शीर्ष)	इति नाडी परीक्षा समाप्ता ॥
३६ १ x १० २ सें. मी०	१	७	२३	पू०	प्राचीन (जीरा शीर्ष)	इति नाडी परीक्षा ॥
२७ २ x ११ १ सें. मी०	११६ २-११७	१७	३८	अपू०	प्राचीन	
२७ x ११ १ सें. मी०	१३ (६६, ६६-१०२, १०४-१०५, १०७-१०६)	७	३५	अपू०	प्राचीन (जीरा)	
२७ ६ x ११ ८ सें. मी०	८ (१-८)	५	३१	अपू०	प्राचीन	

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	- ६	७
✓ ४३	१३२२	निघट्टु (ज्वर निदान)			दे० का०	दे०
४४	४६४४	निदान			दे० का०	दे०
४५	२७५४	निदानप्रदीप	नागनाथ		दे० का०	दे०
४६	२०	निदानमाला	वाचस्पति		दे० का०	दे०
✓ ४७	३७६०	निदानाजत	घग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ ४८	६५६६	नेत्रप्रसादन कर्म			दे० का०	दे०
✓ ४९	५३०९	पाकावली			मि० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति गणना और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		व	स			
२७.१ x ११.४ ११.४ सें. मी.	१४ (१-४)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३०.५ x ११.१ १.१ सें. मी.	१५ (८-१७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२१.५ x ११.७ ७.७ सें. मी.	२४ (१-२४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ x १५.५ सें. मी.	२६ (१-३, ५-२७)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
२५.६ x १२.४ ४.४ सें. मी.	११ (३-१३)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमदग्निवेशविरचित निदानाजतं संपूर्णम् श्रीराघाङ्गप्याग्या नमः ॥
१३.१ x ६.३ सें. मी.	६ (१-६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इक्षत्पूर्व सयुक्त स्मृत नेत्रप्रसादन ॥ नेत्र प्रसादिनी एष त्रिया ॥
२०.५ x १०.६ सें. मी.	४० (२-४१)	६	२६	अपू०	स० १८८१	इति पावावली समाप्त जेष्ठ वदि ११ संवत् १८८१ शके १७४६ मंगल नाम संवत्सरे लिखित प० श्रीमट्ट प्यारेलातेन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विरा वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६५६६	पाकावली			दे० का०	दे०
५१	६७४३	पाकावली			दे० का०	दे०
५२	२१३१	पाकानलि			दे० का०	दे०
५३	$\frac{३०००}{३}$	पिप्पली वर्धमान			दे० का०	दे०
५४	४२७६	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५५	४०१५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६	५७५७	पूतनाविधान	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्र संख्या और प्रति पत्र मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१५ × ६८ सें० मी०	१३ (१-४, ६-१४)	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन	अथ पावाडिकारः ॥ (प्रारंभ)
३३१ × ११५ सें० मी०	५ ६-८, १०-११	८	४४	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ + ११५ सें० मी०	७ (१-७)	६	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति पाकानलि सपूर्ण ॥
१७२ × ११८ सें० मी०	३	१२	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६८ × १२४ सें० मी०	१४	११	३३	अपूर्ण	सं० १६३७	इति श्री पूतनाविद्यान माती स्वद पुराणोक्त भामिनी बीडासमन विद्यान सपूर्ण ॥ लिखित मिथ सागरदल हरलीइयं समूहप्राध्य धामे मिनि बेगाय मुदि १० बुधवार १६३७ शुभ श्रीकृष्णा नमः शान्ति ॥
२३५ × १५४ सें० मी०	१० सं० ११ (१-११)	१०	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१४)	इति श्री पूतनाविद्यान समाप्तं गवत् १६१४ धेनू बदि तृतीयाया एतोराम्य नगरे छद्ममाप्तान वेद्य रथान इत्य- दाह " " ॥
२४३ × १२७ सें० मी०	८ १-८	११	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति कथमाहर भद्र कृने शानि रत्नकरे पूतनाविद्यान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या मसूदा विशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ५७	१३१२	पूतनाविधान (बालचिकित्सा)			दे० का०	दे०
५८	७०६५	प्रकाशचक्र निघण्टु	द्विज बोपदेव		दे० का०	दे०
५९	१३३४	बाल चिकित्सा			दे० का०	६०
६०	१३६५	बाल चिकित्सा			दे० का०	६०
६१	३६००	बालचिकित्सा पूतनाविधान	राजसिंह		दे० का०	६०
६२	६५६५	बाल तंत्र	कल्याण		दे० का०	६०
✓ ६३	८३४	बालरोग चिकित्सा	भीमदिगिध		दे० का०	६०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रमध्या व	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य प्रावश्यक विवरण
		स	द			
२१२× १०८ से० मी०	६ (१-६)	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
३२४×१३ से० मी०	६ १-६	६	४५	पूर्ण	प्राचीन	वाग्भट्कृते प्रभूते प्रवान चक्रे निषट्ट- ममन द्विजवापदेव १७६ श्रीमा रामानुजाय नमः X X X ॥
१६×१३५ से० मी०	६	१६	१६	पूर्ण	सवत्- १६२५	इति धी त्वाग्नित्या ज्ञाने एष्ट स्वामो वानिवय उमासयाद वात विहित्या पुस्तक द्वादश वष पयन्त वनि उपाय समाप्तम् ॥ धा० कृ० द्वि० २ सवत् १६२५ ॥
२४१× ११२ से० मी०	६(१-६)	६	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१२४×७६ से० मी०	२४ (१-२४)	८	१६	पूर्ण	सवत्— १६३०	इति धी महाराजधिराज श्रीराजमिष कृतो स्वधामिषा नाम्नि अथेन वात विहित्या पूतनाविघात समाप्त *** " स० १६३० निपत १० धीगाठक । हजारीमान नामिन सवहनी श्री कृष्णाय नमः ॥
२२×१०६ से० मी०	३ (१-३)	१६	४६	अपूर्ण	प्राचीन	इति बस्यागेन कृते शान्त तमे माकारण अधोवध कथन नाम द्वितीय सप्तम् ॥ (१३-मध्या २)
०२२७× १०६ से० मी०	२१ (१,६-२२ २४-२६)	८	३४	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सज्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	३५	भावप्रकाश	भावमिश्र		१० का०	१०
६५	५८२०	भावप्रकाश (माध्यम खंड)			१० का०	१०
६६	५८३६	भानुप्रकाशनिघंटु			१० का०	१०
X ६७	८	भियक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		१० का०	१०
✓ ६८	१४५०	भियक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		१० का०	१०
६९	३६२४	भियक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		१० का०	१०

पत्रा या पृष्ठा या पारार	पत्रमन्वा	प्रति पृष्ठ म पतिमन्वा और प्रति पति म पारारमन्वा	क्या प्रप पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्त- मान अण का विवरण	सवस्था और प्राचीनता	अन्य प्रावण्यक विवरण
क म	ख	ग द	६	१०	११
२८० X १३१ से० मी०	१० ग० १२८ (३-११ २५-२६, २८, ३२-३३, ३८ ४०-४१, ४४, ४६, ४७-५७ ५६-६०, ६५-७४, ७७ ७८, ८१-८२, ८४ ८५, ८६-९७, ९९-१०५, ११६-१२५, १२७- १३१ १३५-१३६, १३८ १४३, १४७, १५०, १५२-१५३, १५७-१५८, १६६, १६८-१७०, १७२, १७५-१८६, १८७- २१०, २१२-२१३, २२६-२२६ )	१२ ३४	अपूर्०	प्राचीन	
३३६ X १३१ से० मी०	१६ ( १-१६ )	६ ३३	अपूर्०	प्राचीन	
२७६ X ११६ से० मी०	१६ ( १-२, २-६, ११-१७, १६ )	८ २६	अपूर्०	प्राचीन	
२०५ X १३५ से० मी०	६३	२१ १६	पूर्०	वि० सं० १६०६	
२८५ X १६१ से० मी०	४ ( २-५ )	१२ ३३	अपूर्०	प्राचीन	
२३४ X १०३ से० मी०	५६ (१-५६)	१० ३५	पूर्०	सवत्- १६००	इति श्रीभियकचक्र चित्तोत्सवहृसरज कुते वैद्यशास्त्रे सप्तदशोऽध्याय १७ समाप्त । लिखितमिदमुक्तक सवत् १६०० भाद्रशुक्ल ११ चद्रवासरै ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या मप्रहविनेप की सख्या	प्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७०	१०६३	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७१	७२६	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७२	४७६७	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७३	४८८४	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७४	६७४४	मदनविनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०
७५	७०५६ ३	मदन विनोद निघट्ट	मदनपाल		दे० का०	दे०

पन्नों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति अक्षर संख्या	नया अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द घ	व	स द	६	१०	११
३१ x १६ ३ से० मी०	८१ (१-८५-८५)	१३ २८	अपू०	सर्वत १९४७	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघण्टौ प्रशस्ति वर्गशतुदश १४ ॥ चतुर्मासेषिते पक्षे मध्याह्ने शुक्रवासरे चतुर्दश्या लिखित फकीरीचद्रेण पुस्तक शुभदायक स० ११४७ वि० चै० सु० १४ दीन शुक्रवार वहेडिमध्ये सेवग रामात्मज श्री लक्ष्मणाय नमः ॥
२७ x १० = से० मी०	५६ (११ १२, ३२ ६२, ८२-८५, ८७-९७)	६ ३४	अपू०	प्राचीन	
२८ x ११ २ से० मी०	७ (१-२४, २६-७१)	१० ३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघण्टौ कृती नवगं एकदश ११ ॥ (पत्र, संख्या-६२)
२६ x ११ से० मी०	५२ (७, ६-१७ २६ ६७)	१० ४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघण्टौ प्रशस्ति वर्गशतुदश समाप्त ॥१४॥ वाचस्पति पितृस्वार सुविद्या वाचस्पतेश्वरशापकज*** इति मदन विनोद समाप्त ॥
३२ x १२ ६ से० मी०	४२ ४०-८१, ८३	६ ३७	अपू०	प्राचीन सर्वत-१८६०	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघण्टौ प्रशस्ति वर्गशतुदश समाप्त श्री शुभमस्तु फाल्गुणमासि कृष्णपक्षे पंचम्या भृगुवासरेक स० १८६० के साल श्रीकृष्णचंद्रमहम्मजामि ॥
१२ x १६ से० मी०	८६	१२ २३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघण्टौ मिथ वर्गशतुदश समाप्त २३ इति निघण्टुसंपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७६	२२३२	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७७	७७३७	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७८	५२३१	मधुकोश (माधवनिदान की टीका) भू० ग्रंथ माधव मिश्र	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
७९	५७३२	मधुकोश	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
८०	६३३०	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८१	६०३१	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
✓ ८२	६६८३	माधवनिदान ( उच्चर प्रकरण ) ( 'मधुकोश दध' संस्कृतटीका )	माधव मिश्र		दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रित सख्या और प्रति पत्रिकाम अक्षर सख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
		स	द			
२७ ५ X १४ से० मी०	१३	१६	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोद निघण्टो विधा वर्गास्त्रयोदश ॥ शुभ भूयात् ॥
२६ ४ X १० से० मी०	१६ ३८-५७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघण्टो कुतात्रयण एकादश X X ॥ (पृ० ५७)
२८ X १३ ५ से० मी०	४ (१-४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	तत्तदग्रथ तदग्रथो व्याख्या कुमुद रस- लेश माहृत्य भ्रमरेणोव मया य व्याख्या मधुकोप आरध्व ॥ उपयुक्तमिहानु- क्तनिदानमाश्रयेन यत् ॥ ग्रथ व्याख्या प्रसंगेन भयां तदपि लिख्यते ॥ (पत्र संख्या-१ पत्रित सं०-६)
२५ ६ X १० ८ से० मी०	३४	६	३२	अपू०	(जीण) प्राचीन	आरोग्य सारतीय वैद्यक महोपाध्याय श्री विजय रक्षित कृते मधवापि उवर निदान समाप्तिमगमत ॥ (पृ० ६३)
२४ ७ X १० २ से० मी०	४८ (१-४८)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२६ X ११ ८ से० मी०	७ (१-७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ X १० ४ से० मी०	१६ (१-१६)	१२	४१	पू०	प्राचीन	तेनोज्वलादिवृत्ति शतप्रिया हिताय सब- ध्यते विवृध माधय सप्रहस्य । विज्ञाय तार्किक वरकविचार वैद्य वैपम्य गु पत्रवशात्समूहकोश वध ॥ ८ ॥ (पत्र संख्या-२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकानय की प्रागत गद्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकानार	ग्रथ विस यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८३	६६८६	माधवनिदान	माधव		२० का०	२०
८४	६६५	माधवनिदान	माधवाचार्य		२० का०	२०
८५	३७५६	माधवनिदान	माधव		२० का०	२०
८६	३७६०	माधवनिदान ( प्रातकदपंणनिदान व्याख्या )	माधवाचार्य	वाचस्पति	२० का०	२०
८७	३९८९	माधवनिदान	माधव		२० का०	२०
८८	९०४६	माधवनिदान	माधवाचार्य		२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्या और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
		स	द			
२५ × १० से० मी०	६२ (१-६२)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
३३३ × १३५ से० मी०	११४	१०	४०	पूर्ण	सवत्— १६४२	इति श्री माधवाचार्य विरचितो रत्न- निश्चय समाप्तम् ॥ सवत् १६४२ शाके शालिवाहनस्य १८०७ मास १३ पक्ष २६ मितौ अश्विन वदि प्रतपदा १ शुक्रवासरान्विताया इदं पुस्तकं लिखित फकीरचद सेवगरामात्मज वडेवि- मध्य शुक्ल सुच्यशोकेशोचनिती शुक्लस्थाप परोपकार्य । शुभ भगन- मस्तु ॥ मंगल दशतु ॥
२४ × १० ५ से० मी०	१२२ (१-४१, ४३-११२ ११५- १२५)	८	३२	अपूर्ण	सवत्— १८७४	इति श्री वैद्यराजकवि माधवविरचिते रत्ननिश्चय संपूर्ण इति माधवनिदान समाप्त ग्रंथपरिमाण २२०० सवत् १८७४ वशाख कृष्ण १२ खौ वाच्य- कर्त्तयिदाध्यस्तोलेखको गणनायक ।
२३ ८ × १११ से० मी०	६६	१३	३८	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यातकदर्पणे वाचस्पति कृताया माधवे निदान व्याख्याया भगवण निदान ( पत्रसंख्या ११५ )
२२ ७ × १० २ से० मी०	४६ (१-४६)	११	३३	पूर्ण	प्राचीन	माधव कविविरचित स्मृत्वहेतोस्सामस्त "इति श्री माधवाभिधान इत्य- गुण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धे- श्वय्यनेम ॥
३६ १ × १४ ५ से० मी०	१००-४४ ४६-४० ४३, ४६, ४८-५०, ५३-५५)	११	४६	अपूर्ण	प्राचीन सवत्— १६१२	इति श्री माधवकृत निदान स्थान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	१८०४	माधवनिदान			दे० का०	दे०
९०	१४७	मालावति सवाद	गगाधरभट्ट		दे० का०	दे०
✓ ९१	७२७७	मुद्गरकूटविवरण	माधव	नागेश	दे० का०	दे०
✓ ९२	६५९३	मूल परीक्षा			दे० का०	दे०
९३	६५९४	मूलपरीक्षादि			दे० का०	दे०
९४	९५८	मूलपरीक्षा			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रित संख्या प्रौर प्रति पत्रित में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूरा है ? अपूरण है तो कत मान अंश का विवरण	ग्रन्थस्था प्रौर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब			६	१०	११
३५ × १२४ सें० मी०	१०००६० (१-६०)	६	३४	अपूर०	प्राचीन	
१६१ × १०२ सें० मी०	६ (१-६)	१०	२१	पूर० सं० १६३६	प्राचीन	इति मालावति विष्णु सन्वादे समाप्तो य ॥ सवत १६३६ शके १८०१ वैशाख वद्य २ गुरो तद्दिने पुस्तक समाप्त ॥ नाखरेत्युणनामक नारायणभट्टात्मज गंगाधर भट्टन लिखित मूळ हस्त न दातव्य एव वदति पुस्तक ॥
२१ × १०७ सें० मी०	३ १-३	१६	५०	पूर०	प्राचीन	इति श्री माधवविरचिता मुद्गरकूटस्त भाषितमगमत ॥ इति श्रीमदभिषग वृष्ण पडितात्मज मिपडनामश पडित विरचित मुद्गरकूट विवरणम् ॥
१६६ × १०६ सें० मी०	३ (१-३)	११	२८	पूर०	प्राचीन सं० १७८८	इति श्री मूत्र परीक्षा समाप्ता ॥ सवत १७८८ वर्षे शके १६२३ प्रवत्तमाने आश्विन शुद्ध १ भीम वामरे रावल-श्रीवदत पुत्र शभू रामण पुस्तक परोपकारे अर्पन करे छथी ॥ व्यास उदे कृष्णस्य अवरगावादे प्राप्तमिद ।
१४ × १०४ सें० मी०	४ (१-२ ४-४)	१५	१२	अपूर०	प्राचीन सं० १८८८	इति मत्र परीक्षा समाप्त सवत १८८८ भा० ६ शा १७५३३ श्रावण वदी ८ भीम लि०
३४ × १३ सें० मी०	२	१२	४०	पूर०	सवत— १६४०	मूत्र परिक्षासमाप्तम् सं० १६४० मिति चत सुदि १

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	७६२	मूत्रपरीक्षा	सरजीतसिंह		दे० का०	दे०
६६	७६४	योग तरंगिणी			दे० का०	दे०
६७	५०१२	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
६८	४५६४	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
६९	३६५६	योग चिंतामणि	हर्षकीर्ति सूरि		दे० का०	दे०
१००	७१६२	योगरत्नमालाविवृत्ति	नागार्जन		दे० का०	दे०
१०१	२४८	योगशास्त्र (टी०)			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठी वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७३ × १२१ से० मी०	२ (१, ५)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति मूत्र परीक्षा लक्षणानि शुभम् लिखित सरजीत सिंह ब्राह्मणेन शुभम् ।
२५ + १० × से० मी०	४८ (२-३, ५-६, ८-१५, १७-१८, २०-५०, ७१-७३)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
३० × १२३ से० मी०	२ (१०७-१०८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
३० × ७ + १२६ से० मी०	२२ (८५-१०६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
३१ + १२ × से० मी०	५५ (१-१५, १६-४७, ७५-८३)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्नागपुरीयत योगक्षीय श्री हर्ष कीर्तिमूरि सकलिते श्री योग चिन्तामणौ वैध्यक सप्रह्ने गुटिकाधिकारो नाम तृतीयोऽध्याय । पृ० ४७
२३ × १० × से० मी०	२४ १-२४	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२१ × १६ × से० मी०	१८ (१-१८)	१३	२७	पू०	प्राचीन स० १८२३	इति श्री योगशत समाप्तम् । स० १८२३ वर्षे भाद्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ ५ पंचम्यां शुभदिने लिपे कथा चक्र-योजयति ।

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिन संख्या और प्रति पत्रि मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य प्रावश्यक विवरण
		स	द			
३० × ११ × से० मी०	६ (१-६)	१२	४५	अपूर्०	प्राचीन	
२६'५ × ६'६ से० मी०	७ (१-७)	७		पूर्०	प्राचीन	इति योग शतक समाप्त ॥.....
२२ × १० से० मी०	८ (१-८)	८	२६	पूर्०	प्राचीन संवत्— १८७०	इति श्री जगदीश्वरजी वदिमिश्र विर- चित्तं जोग सुधा निधौ प्रथमादि दिवस मास वर्ष समुदाय कृतभेदन भिन्नाना पूतना ग्रहणचिकित्सा नामपंचकलास समाप्त ॥ संवत् १८७०
२७ × १२ से० मी०	६५ (१-६२, ६४-६६)	६	६३	अपूर्०	प्राचीन	विदु नामय सुभियजामुदेरसं पद्धति संपद्यते ( पृ १ )
२२'४ × ६'५ से० मी०	७ १-७	८	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२५'७ × १०'८ से० मी०	२४ ३०-३४, ३६-४५	७	३२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री शालिनाय विरचित्ता रममजरी काल ज्ञान रूपन नाम दशमोऽध्याय समाप्तोऽयं ग्रंथ ।
२४'४ + ६'६ से० मी०	४ १-४	६	३३	अपूर्०	प्राचीन	
२६'६ + ११'४ से० मी०	१४ (११-२५)	८	३८	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री पंडित वंदनाय पुत्र शालिनाय विरचित रत्नमजरी जरी उपरसमोऽध्याय मारण सत्वापातनमणि मारण रूपन- नाम तृतीयोऽध्याय ॥ ( पृ० १२ )



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
११०	७१०७	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
१११	१०४२	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
११२	४२८८	रस रत्न समुच्चय			दे० का०	दे०
११३	६४१८	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११४	७४१२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ		दे० का०	दे०
११५	४२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११६	११६२	रसतदाण			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अथ का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द अ	व	स	द	६	१०	
२४५ × ११ से० मी०	८ (१-२, ४-७, ९-१०)	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री रसमज्ज्या रस जारण मारणादि कथन नाम द्वितीयोऽध्याय ॥ ( पत्रसंख्या ७ )
२५५ × १२५ से० मी०	४२ (१-७, १०-११, १३-४५)	७	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२६४ × १११ से० मी०	३१ (१-१३, १६-३३)	१२	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति रसरत्न समुच्चये षोडशोऽध्याय ॥ ( पत्र सं० ३० ) × × ×
२६७ × ११६ से० मी०	११२ (१-११२)	११	७८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनामसिद्ध विरचिते रसरत्नाकरे रसायनखण्डे वीर्य- स्तम्भनादिल्ली द्वावणा तन्नामनव भोपदेश ॥६॥
१२८ × १०८ से० मी०	४७ (१-४७)	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाम विरचिते रस रत्नाकरे सिद्ध छन्दे त्रयो दशो पदेश × × । (पत्रसंख्या ३६)
३५ × १८ से० मी०	४६	१५	५२	पूर्ण	सबत— १७२८	रसरत्नाकरमंत्र खण्ड पूर्ण
२७ × १२५ से० मी०	६	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सस्था वा सग्रहविशेष की सस्था	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ११७	७१०३	रसायनरत्न			२० का०	२०
✓ ११८	६६८२	रसायन त्रिया ( काकचडीश्वर मते )			२० का०	२०
११९	४२६५	रसिकविमोद	मोनालदास		२० का०	२०
✓ १२०	७५२३	रोगचिकित्सा- श्रीपत्रप्रकरण			२० का०	२०
१२१	६६२३	रोगचिकित्सा ?			२० का०	२०
✓ १२२	४१६१	रोगावली ( हिंदी सटीक )			२० का०	२०
✓ १२३	४२६२	बीरसिंहावलोक ( बर्मविपाक )	बीरसिंह देव		२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति सख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	८	८	८	८	१०	११
२०.७ X १०.५ से० मी०	११ (१-११)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१६.५ X ८.५ से० मी०	४१ (१-४१)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
२७.८ X ११.२ से० मी०	५० स० ४५ (१-२, ७-८, १४-२३, २५-२८, ३४-३८, ४३, ५१, ५३, ५६-६१, ६८, ७४, ७६, ८२, ८६-८७, ९०, ९२, ९५, ९८, १०६, १०९, ११२, १५५, १५८)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सबत्— १७६७	इति श्री मेहरा वशावतस श्री स्वामि- दासात्मज गोपालदास विरचितोरसिक विनोद नाम्नाप्रथीय पत्रिसमाप्तः ॥ श्री शुभमस्तु मागल्प ददातु । सबत् १७५८ वर्षे पीप वदि पचमौ ५ गुरुवासरे X X X X ॥
२८.१ X १०.१ से० मी०	१३	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२५.१ X ९.८ से० मी०	३ (१, ४-५)	१४	४०	अपू०	प्राचीन	
२६.२ X १२ से० मी०	५ (१-५)	९	४२	पू०	प्राचीन	दशिताम्बरवर्णित इत्युक्त सन्दर्भ वृत्त्यमाह १ इति महाएषि ॥
२४.६ X १० से० मी०	९५	८	२९	अपू०	प्राचीन म० १५४४	इति श्री तोमरवशावतम—॥ श्रीरसि- देव विरचिते प्रथो श्रीरसिहावतने उद्योतिशारत्त बर्णविवाहायुर्वेदीय प्रयोगे ..... सत् १५४४ समय भाद्रपदि २ अश्विनारे । प्रथे- वानपानपरेमुनुवान बहुवीन गाहि- राये । श्रीरसिहावादेप्रादमपान रात्र्य प्रवर्तते ।..... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	६५८६	वैद्यक			२० का०	२०
१२५	३५७६	वैद्यक ?			२० का०	२०
✓ १२६	६११	वैद्यकग्रथ			२० वा०	२०
१२७	३३०३	वैद्यकशास्त्र	हसराम		२० का०	२०
१२८	७५३३	वैद्यकसंदोह			२० वा०	२०
१२९	६६८४	वैद्यकसंदोह			२० वा०	२०
✓ १३०	७०६१	वैद्यकसार	शकर		२० वा०	२०

पता या पृष्ठों का प्रकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पकित संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०८×६४ से० मी०	१६ (१-१६)	८	३४	अपूर्०	प्राचीन	॥ अथ बंदक ॥ (प्रारम्भ)
२५५×१२५ से० मी०	५(१-५)	६	१६	पूर्०	प्राचीन	
१६६×११२ से० मी०	प० सं० ३६ (१,३-११, ४५-६२, ६४-७५)	६	२७	अपूर्०	प्राचीन	
२३५×१०६ से० मी०	प० सं० १७ (१-१७)	७	२२	अपूर्०	प्राचीन	
२४६×६६ से० मी०	७	७	३०	अपूर्०	प्राचीन	
१७२×८८ से० मी०	७ (१-७)	८	१७	अपूर्०	प्राचीन	
१५७×८३ से० मी०	२० (१-२०)	७	१७	पूर्०	प्राचीन सं० १८६१	इति बंदकसारे अक्षराद्ये पचमोऽध्याय अथ संख्या ६५० हस्ताक्षरभांडविद्यया ब्रह्मण्य पुराणर कुलकर्णिय अथ जाहानाबादमौजे गोरण समत १८६१ कानिष कृष्ण १२—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३१	३२६३	वैद्यचन्द्रोदय	वाग्भट		दे० का०	दे०
१३२	४२३६	वैद्यसारसग्रह	हर्षकीर्ति		दे० का०	दे०
१३३	४३६३	वैद्यजीवन	लोलिवराज		दे० का०	दे०
१३४	१३५८	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिवराज	गोस्वामी-हरिनाथ	दे० का०	दे०
✓ १३५	१६०७	वैद्यजीवन (संस्कृत टीका सहित)	लोलिवराज	हरिनाथ शर्मा	दे० का०	दे०
१३६	११२६	वैद्यजीवन	लोलिवराज		दे० का०	दे०
१३७	३४००	वैद्यजीवन (गटीक)	लोलिम्बरराज	धर्मरथ	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
२२५ × १११ से० मी०	१० सं० ११ (१-३, ५-१२)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री बंधु वाग्मटोक्त विरचिताया बंधु चंद्रोदय नाम ग्रंथो पांडशाध्याय ॥ सदतु १८६८ साके १७३३ ॥
२५८ × १६६ से० मी०	३६ (३६-६१)	२३	२४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री योगचिंतामणौ बंधुव भारसग्रहे तैत्तिरीयकार पण्डोऽध्याय समाप्त ॥ ६ (पत्रसंख्या-४३)
२३१ × १०५ से० मी०	१० सं० २३ १-२३	६	३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२३	इति श्रीमद्दिवाकर मनुना लानिवराज कवि विरचिते बंद्य-जीवन समाप्त । × × × समत १६२३ ॥ शाके १७५८ ॥ बहूधाय नाम सवत्सरे उत्तरायणे ..... ॥
२३८ × १०६ से० मी०	३० (१-२ ४-३१)	१३	४६	पूर्ण	सं० १८६१	इति श्रीमद्दिवाकर मनु लोलिम्भराज विरचिते सननरोय प्रतीकारा नाम पञ्चमो विनास ॥ ७ ॥ सम्वत् १८६१ मिति फाल्गुन शुक्ल पक्ष नवम्या रविवासर अहिष्मणनगर रघुवरमिश्रस्य त्रियनमित्म शुभभूयात् ।



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३८	३७६६	बंधजीवन	लोलिवराज		दे० का०	दे०
१३९	६५८४	बंधजीवन	लोलिवराज		दे० का०	दे०
१४०	७१८६	बंधजीवन (सटीक)	लोलिवराज		दे० का०	दे०
१४१	$\frac{५७४१}{२}$	बंधजीवन	लोलिवराज		दे० का०	दे०
१४२	७७७३	बंधजीवन	लोलिवराज		दे० वा०	दे०
१४३	७२६४	बंधजीवन	लोलिवराज		दे० वा०	दे०
↓ १४४	७१२८	बंधजीवन दीपिका	लोलिवराज	रत्नमट्ट	दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
२६१ × १२२ से० मा०	५० सं० १६ (१-१६)	६	१७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री वैद्यजीवने ज्वर प्रतिकारोनाम प्रथमो विलासः । (पत्र सं० ६)
१५८ × ६२ से० मा०	३१ (३-३४)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	इति महिवाकर सूनू लोलिमराज विरचिते वैद्य जीवने ज्वर प्रकरणनाम प्रथमोल्लास ॥ १ ॥ (पत्र सं० १३)
३४८ × १३२ से० मा०	३३ (१-३३)	११	४५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री वैद्य लोलिमराज विरचिते वैद्यजीवनेरसविधिनाम पचमोविलास ५ सवत् १६२२ कार्तिके शुक्ल पक्षे पचम्या भौमवासरे ततदीने रामभक्तेन लोलिमराज लिख्यते समाप्त शुभ भूयात् ॥ X X
१८१ × १३६ से० मा०	२३	१७	१८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८५८	इति श्री श्रीमहिवाकर पंडित सूनू लाल लोलिवराज विरचिते वैद्यजीवण समाप्त सुभमस्तु मिद पुस्तक लिपा श्री त्रिपाठीनदलातेन पठरीधी ग्रामे सवत् १८५८ रामचंद्रायनम ।
२० × १५ से० मा०	३२ (१-३२)	१४	१३	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री लोलिवराजविरचिते वैद्य जीवने सकलरोग प्रतिवारो नाम पचमो विलास । इति वैद्य जीवन समाप्तम् ॥ शुभम्भूयात् सवत् ॥ १८६७ ॥
२३६ × ६५ से० मा०	२६ (१-२६)	७	३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १७२६	इति श्री श्रीमदिशार पंडित सूनू लाल लालिवराज विरचिते वैद्यजीवन समाप्त ॥ सवत् १७२६ समय जेठ वदि १२ मगत + + +
१६२ × १०२ से० मा०	८ (१-८)	१८	१३	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमानुसारी विषय	पुस्तकानाम की प्राणा सरुवा वा सप्रहयिनेप की सख्या	प्रमाण	प्रपकार	टीकाकार	प्रय विस यन्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
✓ १४५	६६८०	वैद्य दर्पण (द्विती टोका)			२० का०	२०
✓ १४६	६३६२	रंजभास्वरोदय मटीक	घनवतिरि	विष्णुगिरि	२० का०	२०
१४७	२०८६	वैद्यमनोत्सव	वशीधर मिश्र		२० का०	२०
१४८	२६	वैद्यमनोत्सव	वशीधर		२० का०	२०
✓ १४९	३२४२	वैद्यरत्न	शिवानंद भट्ट		२० का०	२०
१५०	$\frac{४५३६}{२}$	वैद्यामृत	मोरेश्वर भट्ट		२० का०	२०
१५१	६५१६	वैद्यामृत	मोरेश्वर		२० का०	२०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्तिसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आन्वयन विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
३१६ × १५५ सें. मी.	२५ (१-१२, १४-२६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	श्रीमते रामानु जाय नम नमस्तुत्य गणेशान महेशान महेश्वरो वैद्यदर्पण- माचष्टे वैद्यानाहितकाम्यया । ( प्रारम्भ )
२०४ × ८३ सें. मी.	१५८ (३- १६०)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री बंछास्करादये ध्वततिकृत विष्णु मि भाष्य विरचितया नामरोग व्याघ्रिज्य उत्पतिज्ञान अनुश्रमणिका नाम कथन चतुर्विंशति परिच्छेद २४ सुममस्तु ॥
२६५ × १४ सें. मी.	१७ (३,५ ७,९,१०, १४,१६, १७,२०, २२,२३, २३ (३७, ३८)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्मिश्र वसोधर विरचिते वद्य- भनात्सवे नाडापरीक्षा मूलपरिज्ञा पित्त कफवातकाय निदान साध्यासा ।
३० × १३ सें. मी.	म० सं० ३०	६	३४	पू०	प्राचीन म० १६१६	सवत् १६१६ वैशाखमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा श्रीमहासरे निधि कृत ... श्रीमस्तु शुभमस्तु दासस्ये रामकृष्ण ।
२३ × १०३ सें. मी.	४१ (३-४३)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि शिवानन्दभट्ट विर- चिते वैद्यरत्न समाप्त शुभभूयात् ॥
२७ × ११५ सें. मी.	१२ (१-१२)	११	४१	पू०	सवत्- १८४२	इति श्रीमदहम्मदानगरस्थितमाणिक- भट्ट वैद्यारमज मारेश्वरविरचिते चतुर्षो- लकार बाधवधरोपनामकरपुनाथसूनु- नामवानी शंभोरातिवितमल ॥ सवत् १८४२ भाषाड शुद्धपचम्यामिदी ॥
२४२ × १०२ सें. मी.	१२ (१-१२)	११	३५	पू०	प्राचीन सवत्- १८८६	इति श्रीमदहम्मदानगरस्थित माणिक- भट्ट वैद्यारमज मारेश्वर विरचिते वैद्यारमत्त चतुर्षोत्तर समाप्त ॥ सवत् १८८६ मिनि माघ शुद्ध ४ शुक्रवासर जयरामेन निवृत्त ॥ शुक्रवासरपनाम्ना ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५२	६५८३	वैद्यावतस	लोलिवराज		दे० का०	दे०
✓ १५३	७५३०	व्याधि ज्ञान			दे० का०	दे०
✓ १५४	६५६८	(द्रव्य गुणागुण) शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		दे० वा०	दे०
१५५	३२६४	शतश्लोकी	त्रिमल्ल कवि		दे० का०	दे०
१५६	६५४१	शतश्लोकी टीका (द्रव्यदीपिका)	त्रिमल्ल भट्ट	कृष्णदत्त	दे० का०	दे०
१५७	$\frac{७०५६}{३}$	शतश्लोकी निघट्ट	त्रिमल्ल		दे० वा०	दे०
✓ १५८	६६००	भारीरव (घट्टांग हृदय)	यागभट्ट		दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिमख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१८८×७७ से० मी०	१२ (१-१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	.....रक्षति चरवादीन् वीक्ष्य वैद्यावतम कवि कुल मुमतातो लाव लोर्लिव राज ॥ २ ॥..... (पत्र सं० १)
२१५× १०४ से० मी०	६	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२५×६ से० मी०	११ (१-११)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्ल विरचिता गुणा- गुण शतश्लोकी समाप्ता ॥ ..
२३२×१३ से० मी०	प०सं०१० (१-२, ८-१५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन संवत् १६२५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिता शतश्लोकी समाप्ता शुभ संवत् १६२५ फाल्गुन कृष्ण १० शनी ॥
३४५× १२६ से० मी०	१३ १,१-१२	६	४०	पू०	प्राचीन संवत् १६०५	इति श्री त्रिमल्ल भट्ट कृता शत- श्लोकी टीका समाप्त शुभ संवत् संवत् १६०५ के-कार्तिक ६ बु० ।
२२४×१६ से० मी०	५ (१-५)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	.....अथ श्री त्रिमल्लकविकृत शतश्लोकी निषट्ट प्रारभ ॥ .. (पादि)
२२×५ ६७ से० मी०	१४ (७,१२- २४)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारीरस्थाने मर्म विभावो- नाम चतुर्थाऽध्याय ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत मख्या वा सप्रहविशेष की सम्प्रा	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
√ १५६	७५६८	शाडगंधर सहिता			२० वा०	२०
√ १६०	७५६२	शाडगंधर व्याख्या	शाडगंधर	सुधराम	२० वा०	२०
१६१	७८२७	शाडगंधर महिता (व्याख्या) टीका	शाडगंधर		२० वा०	२०
१६२	७७०७	शाडगंधर टीका	शाडगंधर		२० वा०	२०
१६३	६०३५	शाडगंधर सहिता	शाडगंधर		२० वा०	२०
१६५	५६६२	शाडगंधर महिता (पूर्व एवं मध्यम खंड)	शाडगंधर		२० वा०	२०
१६५	६८७०	शाडगंधर महिता	शाडगंधर		२० वा०	२०

पत्रो या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्तगत्या और प्रति पत्र में प्रक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वर्तमान प्रथम का विवरण	ग्रन्थया और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक् विवरण
		स	द			
३४ × १ ३-१ सैं० मी०	२ (१-२)	१३	५२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री शाङ्गधरे० स्नेहपानाध्याय ॥ (पत्र-सं० २)
२७ × ११ ५ सैं० मी०	६०	६	३१	अपूर्०	प्राचीन (शके १७७६)	इति शाङ्गधर व्याख्याया दृष्टि प्रसादन कल्पनाध्याय । सवत् १-शके १७७६ मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे शुभे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीयाया भुवुवासरे तदिन उपनाम ज्योती गोविदात्मज चोरजीव रामेश्वर गोडरीमा सुभस्या नेन लिखित ॥
२६६ × ११ ३ सैं० मी०	८ १६, ८-६	११	३८	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री शाङ्गधर व्याख्याया पुटपाक कल्पना (पत्र सं० ३)
२७ × ११ ४ सैं० मी०	१८ १-३, ३-१७	१३	३६	अपूर्०	प्राचीन	
२८ × १२ २ सैं० मी०	५६	७	४०	अपूर्०	प्राचीन	
३३ ५ × १३ सैं० मी०	६२ (१-६२)	८	३०	अपूर्०	प्राचीन सं० १६११	इति श्री दामोदर सूनुना शाङ्गधर विरचिताया चिकित्सा स्थाने मध्यम खड समाप्त शुभमस्तु मिति पौष सुदि द्वादसी रवौ की सवत् १६०१ के साल
२३ ८ × १३ ५ सैं० मी०	११७	१०	२३	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनु शाङ्गधरेण विरचिता संहिताया चिकित्सा स्थाने पूर्णा जनवति सकल्पनाध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ श्री राधा कृष्णाभ्या नम ॥ शुभम् ॥



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	६५१६	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०
१६७	६०५५	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०
१६८	१०१६	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०
१६९	३०१२	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०
१७०	३७६७	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०
१७१	३७००	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०
१७२	६४६	शाङ्गंधरसहिता	शाङ्गंधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अक्षरों की प्राचीनता	प्रमुख भावप्रयुक्त विवरण
अ	ब	स	द	१०	११
२७ × ११.३ सें. मी०	३६ १-३६	१०	३१	अपूर्णा	प्राचीन इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गधरेण विरचिताया सहिताया सूत्र स्थाने परिभाषाय. प्रथमः + + + (१० ५)
२८७ × ११ सें. मी०	१६० १-२, ४-२५, २७-११३, ११५-१६२, १६४-१६८, १७१-१८२, १८४-१९१, १९३-१९८	६	२६	अपूर्णा	प्राचीन इति श्री दामोदरसुनुना शाङ्गधरेण विरचितायासहितायाश्चिकित्सास्थाने लेपादिविधिरध्यायः ॥ (पत्र संख्या १८६) + + +
२२.६ × १४.७ सें. मी०	५० सं. २६	१०	२५	अपूर्णा	प्राचीन प्राचीन सं. १९१८
२५ × १२ सें. मी०	५० सं. ५६ (१-४०, ४४-६२)	१३	२६	अपूर्णा	प्राचीन इति श्री दामोदर सूनुना शाङ्गधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सास्थाने- रसकल्पनाध्यायः समाप्तः ॥ इति मध्यमखंड समाप्तः सवत् १९१८ ॥
२५.२ × ११.६ सें. मी०	५० सं. २१ (१-२१)	११	३२	अपूर्णा	प्राचीन इति श्री दामोदर सूनुना शाङ्गधरेण विरचिताया सहितायानिदाने रोगप्रणाना संख्याध्य. इति पूर्वं खंडः समाप्तः ॥
३० × १५.७ सें. मी०	५० सं. ६ (२-६)	१४	३५	अपूर्णा	प्राचीन प्राचीन
२८ × ११ सें. मी०	१५७ १, ३-१२, १२-३५-३५- ११३, ११३- १३६, १४१- १५६	८	३१	अपूर्णा	प्राचीन सं. १७६६ इति श्री दामोदर सूनु श्री शाङ्गधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सास्थाने- नक्षत्रशादवकर्म विधिध्यायः ॥ शुभ- मस्तु सेपक पाठयो. श्रीरस्तु सवत् १७७६ वरपे बंशाप कल्पे पचम्ये चद्रदासरे इद पुस्तकं लिखितं शुभ मस्तु ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	प्रयत्न विस्तृत वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	४५३	शाङ्गधर सहिता मध्य खंड	शाङ्गधर		३० का०	३०
१७४	१४४	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		३० का०	३०
१७५	३१	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		३० का०	३०
१७६	४३१३	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		३० का०	३०
१७७	१५६०	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		३० का०	३०
१७८	१४४६	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		३० का०	३०
१७९	१०६१	शाङ्गधर सहिता	शाङ्गधर		३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द प्र	व	स द	१०	१०	१०
२८ × ११ से० मी०	६६	१० ०३	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री शाङ्गधरस्यसहितायां चिकित्सा स्थाने रस कल्पनाध्यायः ॥ इति मध्यम खंड समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ अथ शुभ सवत्सरे अस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्य सं० १८७२ वर्षे चंद्र शुद्धिदशमी १० बुध वासरे लिख तमिदं लक्ष्मण चदर्यं बद्धवाना शुभ ॥
२५ × १० से० मी०	४६ (२-४७)	६ २६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्ग धरेण विरचिताया अवलेह कल्पनाध्यायः ८॥
३० × १३ से० मी०	४६ (३-३५, ६१-६५, ७४, ८४-८४, ८६ (२-६५))	११ ३४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १३ से० मी०	५३	११ ३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गधरेण विरचितायां सहिताया चिकित्सा स्थाने कषादि कल्पनाध्याय X X X ॥ (पृ० १२)
२७ × ११ से० मी०	३५ (१-७, १०-३७)	८ २८	अपू०	प्राचीन	
२१ × १४ से० मी०	२७ (१-२७)	११ २६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूने शाङ्गधर विरचिताया सहिताया दारस्थाने योग गणनाध्यायः ॥
२१ × १४ से० मी०	६६ (७-४०, ४२-६६, ७२-६५)	१० २४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	१०८१	शाङ्गंधर संहिता	शाङ्गंधर		३० का०	३०
✓ १८१	१०७७	शाङ्गंधर संहिता (रसकल्पना विधि- रघ्याय)	शाङ्गंधर		३० का०	३०
१८२	१०५०	शाङ्गंधर संहिता	शाङ्गंधर		३० का०	३०
✓ १८३	४५	शालिहोत्र (तुरग-प्रशसा प्रकरण)	शाङ्गंधर		३० का०	३०
✓ १८४	७७७०	शिलाजतु शोधन (शिलाजोत शोधन)			३० का०	३०
✓ १८५	५१६०	भूतज्वर चिकित्सा			३० का०	३०
✓ १८६	५७३७	घृक्षतु पथ्य			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमर्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६५X १४ से० मी०	८८	१२	४०	पू०	स १८६६	इति श्री दामोदर सुनो आर्गंधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सा स्थाने नेत्र प्रसादन कर्म अध्यायः द्वात्रिंशदा- ह्य समाप्त सं० १८६६ मासोत्तमे माघ मासे शुक्ल पक्ष शुभ तिथी सप्तम्या उपरात अष्टम्या चंद्रवारा- न्विताया पुस्तग लिखित हेतरात्मज बहेडो मध्ये शुभमस्तु, मंगल देदातु ॥
३२१X १८२ से० मी०	७१ (१-७१)	६	३४	पू०	प्राचीन स १६३२	इति श्री दामोदर सुनुना शाङ्गंधरेण विरचिताया सहिताया चिकित्सा स्थाने रस कल्पनाविधिरध्याय चतुर्दश- १४ इति श्री मध्यम खड समाप्तम् ॥ सि० सवत् १६२२ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाया भीम वा० ॥
२८५X १४३ से० मी०	८० (१-८०)	१३	३७	पू०	स १८८८	इति श्री दामोदर सुनुनाशाङ्गंधरेण विरचितायाचिकित्सास्थाने नेत्र प्रसादन मूर्मासिस्थान समाप्त ॥ अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राजे सवत् १८८८ वर्षे वैशाखमुदी ४ चौष वार शनि ॥... .. ... .. श्रीराम श्रीराम
२४५X ११४ से० मी०	६	११	३५	पू०	प्राचीन	इति आङ्गंधर विरचिताया पद्मर्या सुरगप्रशसा ।
१३६X ८४ से० मी०	४ (१-४)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति शिलाजतुन शोधन विधि ॥
२११X १३८ से० मी०	१	२५	३६	अपू०	प्राचीन	
२३१X ८६ से० मी०	११ (१-११)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति यद्भक्तुपप्य वर्णन ॥ शुभ- मस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८७	६४३७	पट्टकतुवर्णन	त्रिमल्लवैद्य		दे० का०	दे०
✓ १८८	६५८५	हृदय दीपक			दे० का०	दे०
उपनिषद्						
१	६३२७	अथर्वणवेदोपनिषद्			दे० का०	दे०
२	१३२१	अथर्वणीय उपनिषद्			दे० का०	दे०
३	$\frac{१५२५}{१६}$	अथर्वशिखोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
४	७१४६	अथर्वशिखोपनिषद् दीपिका (टाका)		श्री मकरानन्द	दे० का०	दे०
५	$\frac{१५२५}{१६}$	अथर्वशिखोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठी या आधार ।	प्रति पृष्ठ मे पक्ति मन्था और प्रति पक्ति म अक्षर मन्था		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बतें मान अग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
	पत्रसन्था	द				स
१३४× १२८ से० मी०	०२ १-२	१८	४०	पू०	प्राचीन	इति विमलवैद्य विरचित पट्टशतु वर्णन संपूर्ण शुभमस्तु मंगलम् ॥
१५७×६८ से० मी०	२१ (१-२१)	११	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री हृदयदोषके विवाहर्ष ॥२॥ (पत्रसन्था ५)
१६५× १०२ से० मी०	६ (१-६)	८	१७	पू०	प्राचीन से० १६३२	इत्ययवर्ण वेदोपनिषत्समाप्तम् ॥ श्री रामायनम् ॥ से० १६३२ ॥
२३७× १२७ से० मी०	१०८०८६	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२३२× ११७ से० मी०	३२ (२३- २५३)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्ययवर्णशिवोपनिषद्दीपिका ७ ॥
२५५× १०६ से० मी०	१६ (११-१५)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यानि दत्ताद पूज्यपादशिष्यस्य श्री शंकरानन्द भागवत कृतिरथर्वशिखोपनिषद्दीपिका समाप्ता ।
३२२× १५७ से० मी०	११ (१२ २२)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिखोपनिषद्दीपिका ६ ॥



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६	$\frac{१५२५}{१६}$	अमृतविन्दूतनिपद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	२० का०	२०
७	७७१७	अस्लोपनिपद्	अबुलफजल		२० का०	२०
८	$\frac{१५२५}{१६}$	आत्मोनिपद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	२० का०	२०
९	३७४७	आरण्यक			२० का०	२०
१०	२०३४	ईशावास्य श्राण्य	शकर भगवान		२० का०	२०
११	१३७९	ईशावास्योपनिपद्			२० का०	२०
१२	$\frac{२६०}{३}$	ईशावास्योपनिपद्			२० का०	२०
१३	३११६	ईशावास्योपनिपद्			२० का०	२०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विम वस्तु पर लिखा है	। विमि
१	२	३	४	५	६	७
१४	१६८६ २२	ईशावास्योपनिषद्			२० वा०	२०
१५	१०६४	ईशावास्योपनिषद् शाकरभाष्य		शकराचार्य	२० वा०	२०
१६	११७६	उपनिषद्मुपचार दीपिका	वैद्यनाथ		२० वा०	२०
१७	७१६५	उपनिषद्मग्रह			२० वा०	२०
१८	१६०६	उपनिषद्मग्रह			२० वा०	२०
१९	६१६	उपनिषद्मग्रह			२० वा०	२०
२०	३६६६	उपनिषद्मग्रह संग्रह			२० वा०	२०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिका संख्या और प्रति पत्रिका म अक्षर संख्या		क्या प्रय पूर्ण है ? अक्षर है ता वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ प्रावश्यक विवरण
		स	व			
२६ २ × १४ १ से० मी०	१०११	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति ईशावास्य उपनिषद् समाप्त ।
२५ + १० = से० मी०	१४ (१-१४)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंसपरिव्रजकाचार्ये वदनाविदमगवत्पूज्यपादशिष्ये शर- भगवन् कृता ईशावास्यभाष्यसमाप्त श्री ब्रह्मार्पणमस्तु । ***
२८ ८ + १८ २ से० मी०	१० से०	१८	२६	पू०	प्राचीन	
३३ ६ + १२ ५ से० मी०	१० १-१०	११	६०	अपू०	प्राचीन	
१६ + ६ से० मी०	१४ (१-१४)	१०	२३	पू०	प्राचीन	तेजस्विनावधितमस्तु माविट्टिपावहे ॥ श्रीम् ॥ शान्ति ॥ शान्ति ॥ शान्ति ॥
२१ २ + १० से० मा०	५६	६	२६	पू०	से० १८५६	ममत् १८५६ प्रमादिनाम सवत्सरे भाग्यप्रभाते शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ मदवासरेलिखित ॥
२८ + ११ = से० मी०	२३	११	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्यत सख्या वा उपग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिवि
१	२	३	४	५	६	७
२१	१३६७	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२२	३६३१	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२३	३४१५	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२४	११३१	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
२५	६३५	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य- टिप्पणी	ज्ञानामृतमति		दे० का०	दे०
२६	२६६२	ऐतरेयोपनिषद् सटीक			दे० का०	दे०
२७	२८६० ३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे आधारसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वन- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१६५×८ से० मी०	६	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति एतरेयोपनिषत्समाप्तम् ॥
१६७×७६ से० मी०	५०सं०५ (१-५)	७	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
१६४× १०२ से० मी०	१० (१-१०)	७	१५	पूर्ण	प्राचीन	
२५५× १०५ से० मी०	७ (१-७)	८	२८	पूर्ण	प्राचीन	ऊँ शांति शांति शांति ॥
२१६×८८ से० मी०	१३ (१-१३)	१३	३८	पूर्ण	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री मद्भक्तमामृत पूज्यपादशिष्यस्य ज्ञानामृतयते कृतौ श्रीमदैतरेयोप- निषत्समाप्तम् ॥ सं० १७३५ वि० सवत्सरे श्राविक शुद्ध ७ गुरुवार ॥ कुलदश पुत्रस्य पुस्तक नारायणभक्त शिवरामस्य ॥
२३१× १५८ से० मी०	५०सं०८	१६	६२	अपूर्ण	प्राचीन	
२३३× १०१ से० मी०	५०सं०६ (५-१३)	६	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति कठबल्युबनिषत्समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विम्वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१२८	८६३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०
२६	२४२५	कठोपनिषद् भाष्य (टीका सहित)			दे० का०	दे०
३०	१०६४	कठोपनिषद् (शांकर भाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
३१	$\frac{१५७८}{६}$	वालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३२	१९००	वालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३३	३४३५	वालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३४	३५४१	वालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिका प्रति पत्रिका में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५ ३ X १० ६ से० मी०	१४ (१-१४)	७	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
३१४ X १६ २ से० मी०	प०स० २८ (१-२४)	१८	५२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री शंकरस्य काठकोपनिषद् भाष्य टीका समाप्ता ।
२५ ३ X १० ८ से० मी०	५३ (१-५३)	६	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत् पूज्यपाद शिष्य- स्य परमहंस परिब्राज कार्यस्य श्री मछ- कर भगवत् रती काठकभाष्ये द्वितीया- ध्यायं ऋतीमा बली ॥ सापष्टी बली समाप्ता ॥
३४ X १७ ४ से० मी०	१	१६	६०	अपूर्ण	प्राचीन	
१३ X ६ ५ से० मी०	२	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालान्निद्रोपनिषत् समाप्ता ॥ शिवमस्तु ॥ श्री ॥
१५ ६ X १० ६ से० मी०	प०स० १० (१-६, ६ १२)	७	२२	अपूर्ण	प्राचीन (स १८२४)	इति श्री नदिकेश्वर पुराणे कालान्नि- द्रोपनिषत्संपूर्णम् ॥ फागुनसुदि सवत् १८२४ पटनायं ... ।
२२ ५ X १० से० मी०	प०स० १० (१-१०)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वरपुराणे कालान्नि- द्रोपनिषद् संपूर्णम् ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या वा सग्रहविषय की संख्या	ग्रंथनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	३३७५	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३६	४६४८	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३७	४५८१	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३८	६६६७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३९	५७६६	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४०	६१०७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४१	१२८७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पकित सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०×११५ से० मी०	७ (१-७)	१०	२६	५०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त श्री बालाग्निहोत्रोपनिषत् संपूर्ण समाप्तम् ।
२७१×१३७ से० मी०	१	८	२८	५०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निहोत्रोपनिषत्समाप्ता राम ।
१६१×८६ से० मी०	४ (१-४)	७	१६	५०	प्राचीन	तत्सदिति बालाग्निरहोत्रोपनिषत्समाप्ता ॥
१७×१०३ से० मी०	७ (१-१)	७	२१	५०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त कालाग्निरहोत्रोपनिषत्समाप्तम् ॥*** **
२१×१०२ से० मी०	१० (१-१०)	७	२६	५०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वरपालयोक्त श्री कर्मिहोत्रोपनिषत्समाप्ता ॥ शुभम् *****
१६६×११७ से० मी०	६ (१-६)	१०	२६	५०	सं०१८८२	इति श्री नदिकेश्वरपुराणोक्त बालाग्निहोत्रोपनिषत्सु अक्षर १८८२ एकातीह २ ॥
११८×७६ से० मी०	५० सं०१७ (२-१७, २१)	६	१२	अपूर्ण	प्राचीन सं०१८२८	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	विपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	$\frac{२८०}{३}$	केनोपनिषद्			३० का०	३०
४३	४५७८	कतापनिषद्			३० का०	३०
४४	१०६५	केनोपनिषद् (शांकर भाष्य)			३० का०	३०
४५	$\frac{१५७८}{६}$	कैवल्योपनिषद् ॥			३० का०	३०
४६	७७७२	कैवल्योपनिषद्			३० का०	३०
४७	३२२४	कैवल्योपनिषद्			३० का०	३०
४८	४२६६	कैवल्योपनिषद्			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति म अक्षर संख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है ता वर्तमान अक्ष का विवरण	संख्या और प्राचीनता	"अन्य आवश्यक विवरण"	
द म	व	स	द	६	१०	१०
२३ ३ × १० १ से० मी०	१०	२१		अपूर्ण	प्राचीन	इति - सामवेदीयाना केतापनिपदे त्वमाध्याय ॥
१२६ × ११ से० मी०	७ (१-७)	७	१५	पूर्ण	प्राचीन	इति जैमिनी शास्त्रा मागवेदोक्त केतो- पनिपत्समाप्त ॥ " ...
२५ × १० ७ से० मी०	२२ (१-२२)	१०	३६	पूर्ण ( १ )	प्राचीन	इति श्री गोविदभगवत्सूक्त्यादमित्य- परमहंस परिब्राजकस्यश्रीशंकरभगवत् कृतापदभाष्य समाप्त ॥ कनभाष्य- समाप्त श्री ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
३४ × १७ ४ से० मी०	१	१६	६०	पूर्ण	प्राचीन	इत्यथवेदे कैवल्योपनिपत्समाप्ता ॥
१६२ × १० से० मी०	६ (१-६)	६	१८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कैवल्योपनिपद संपूर्णम् ॥
१३ × ८ २ से० मी०	१० (१-१०)	६	१७	पूर्ण	प्राचीन	इति कैवल्योपनिपद्विवरण वेदात् शास्त्रोक्त । श्री गजाननार्पण मस्तु । श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु मस्तु ॥
१८ ४ × १० ८ से० मी०	७ (१-७)	७	१५	पूर्ण	शाके- १७३६	इति कैवल्योपनिपत् ॥ सम्यक्ज्ञानी सदायोगी सत्सारमनुवचते ॥ परपुरु- पेक्ष या नारी भर्तारमनुवचते ॥ शक १७३६ भाद्रपद आधीन शुद्ध सप्तमी तद्दिने समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	३४१४	कैवल्योपनिषद्			२० का०	दे०
५०	४५८८	कैवल्योपनिषद्			२० का०	दे०
५१	$\frac{१९८६}{२२}$	कैवल्योपनिषद् (संस्कृत टीका)		विद्यारण्य	२० का०	दे०
५२	५२४६	कैवल्योपनिषद् (सटीक)			२० का०	दे०
५३	$\frac{१५२५}{१९}$	क्षुरिकोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	२० का०	दे०
५४	१३७४	गण्डवनिषद्			२० का०	दे०
५५	$\frac{१५७८}{६}$	गण्डवनिषद्			२० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
१७ X ६ से० मी०	३ (१-३)	६	३०	५०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषत्समाप्ता । ॐ ध्याति .... ।
१८.२ X १३ से० मी०	१३ (१-१३)	१४	३०	५०	प्राचीन	एतत्कैवल्योपनिषदोज्ञानफलस्य परब्रह्म रूपत्वात् केवल पाठस्य बध्यमाण फलान्याहे..... (पत्रसंख्या-१३, पक्ति संख्या ६ से)
२६.२ X १४.१ से० मी०	१३	२५	४६	५०	प्राचीन	इति श्री भयवर्णवेदकैवल्योपनिषद्-दीपिका ॥ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य कृतासमाप्तः ॥
२८.५ X १३.६ से० मी०	१३	१३	३७	५०	सं० १८७०	इतिकैवल्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥ सन् १८७० मार्गशिरमासे कृष्ण-एकादश्या गुरुवारान्विताया लिखित-मिदलक्ष्मणभिक्षानेन प्राप्तपठनार्थः शुभमस्तु ॥.....
३२.२ X १५.७ से० मी०	४३ (३-८)	१२	४६	५०	प्राचीन	इति क्षुरिकापनिषद्दीपिकासमाप्त चतुर्था ४ ॥
२० X ६.५ से० मी०	६	२५	२६	५०	प्राचीन	इति गच्छद्वयनियमपद् सपूर्ण ॥
३४ X १७.४ से० मी०	१	१६	६०	५०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे गारुडोपनिषदीपिका समाप्ता ॥

क्रमानु और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६३	१६६२	गोपाल सत- तापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	४३७४	गोपीचदनोपनिषद्			दे० का०	दे०
६५	३८६४	चाक्षुषोपनिषद्			दे० का०	दे०
६६	$\frac{१५२५}{१६}$	चूलिकोपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
६७	१४६५	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	२८६१	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६९	३१२६	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६.३ × १०.७ से० मी०	२१ (१-२१)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १७६८	इति गोपानत्याजपनीमत् समाप्तः ॥ संवत् १७६८ नापोशद्विंशती लीखित गद्यचौलिनीर्भय राम राघवराम घोलकिया । कल्याणमस्तु । शुभम् भवतु ॥
१५.८ × ८.६ से० मी०	५० सं० ५ (१-५)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति अथर्वनवेदगोपी चदनोपनिषत्संपूर्ण मुद्रमस्तु भगलं दत्तानुभ्रंभूयात् संवत् १८७३ मार्ग कृष्ण १४ चंद्रवासरे लिपयं श्रीज्योतिषरमणुप ॥
१८.४ × ११.७ से० मी०	२ (१-२)	६	२५	पू०	सं० १६३५	इति श्री चाक्षुषोपनिषत्समाप्तम् श्री संवत् १६३५ ।
३२.१ × १५.७ से० मी०	३३ (८३-११)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति चूलिकोपनिषदीपिका ५ ॥
१६.५ × ८ से० मी०	११	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति छंदोग्येय्यप्रपाठवस्समाप्तः ॥
२३.३ × १०.४ से० मी०	५० सं० ११ (१-११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति छादोग्यस्यसप्तमः प्रपाठकः ॥ श्री सच्चिदानंदारंणमस्तु ॥***
२८.५ × ११.७ से० मी०	६१ (१-६१)	८	४०	पू०	सं० १६०६	इति छादोग्यतानिषद् बाह्येण संपूर्ण । समाप्तं ॥ शुभम् भवतु ॥ संवत् १६०६ शुक्र १७७१ मार्गशुक्ल मासि शुक्ल पक्षे तिथौ .....श्री वेदपुराशासनमः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	३३६०	छादोग्योपनिषद्			३० का०	३०
७०	३०७२	छदोग्योपनिषद्			३० का०	३०
७१	१६५१	छादोग्योपनिषद्			३० का०	३०
७२	४११	छादोग्योपनिषद् प्रकाशिका			३० का०	३०
७३	७६५	छादोग्योपनिषद् (ब्राह्मण)			३० का०	३०
७४	$\frac{१५७८}{६}$	जावालीउपनिषद्			३० का०	३०
७५	७३००	जावालयोपनिषद्			३० का०	३०



पत्तों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रतिपवित्र में प्रक्षर संख्या		क्या सच पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आसपसब विवरण
		स	द			
३२'५ × १६ से० मी०	५६ (१-५६)	१५	६०	पू०		इति छान्दोग्योपनिषत्सप्तमोऽध्यायः
२३'२ × १०'५ से० मी०	६	८	३१	पू०	प्राचीन	इति छान्दोग्योपनिषदोऽध्यायः ॥ इति छान्दोग्यो पृष्ठम प्रपाठक ॥ शांति पाठ ५ ... .. × × ×
३०'५ × १३'५ से० मी०	२७ ५५, ७१, ६५	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
३०'२ × १३'१ से० मी०	५०, ६०, ८५	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२३'५ × ११ से० मी०	५५ (१-५५, ६६-७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति सामवेदस्य छान्दोग्यो उप- निषद् ब्रह्मण समाप्त ॥
३४ × १७'४ से० मी०	४	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे जाबालीपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × १२ से० मी०	२ (१-२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति जाबालोपनिषत्समाप्त ॥ श्री सर्व्वविद्यानिघान कवीन्द्रा- चार्य्यं सस्त्वतीना जाबालोपनिषत् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५७७	तुरीयातीतोन्नतूपनिषद्			दे० का०	दे०
७८	१५२५ १६	तेजोविन्दूपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायणः	दे० का०	दे०
७९	९१३	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८०	१२५७	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८१	१०२३	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८२	१०६८	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८३	१०६६	तैत्तिरीयोपनिषद् (शांकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
८४	३४९३	दत्तात्रेयउपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पक्ति में प्रकार संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	११
१७५X ११४ से० मी०	२ (१-२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति तुरीयातीतोवधूतोऽपनिपत्स- माप्ता ॥ .....
३२'५X १५७ से० मी०	१३ ६३-६४	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति तेजविद्वेषनिपत्दीपिका २१ ॥
२५'३X १०६ से० मी०	० १५ (१-१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१६'५X ८ से० मी०	१४	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री तैत्तिरियोपनिषदि तृतीय- प्रपाठकः ॥
२५ १X १०६ से० मी०	१० सं० ३६ (१-३६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इतियमेवयथोक्तान्यामस्यावत्समां बहू, विद्योपनिषत्सर्वाभ्योविद्याम् ** ... समाप्ता नदवल्नी ।
२५ ३X १०५ से० मी०	२५ (१-२५)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीश्रीशामाभ्य समान्त श्रीब्रह्मा- प्यणमस्तु ॥
२५ २X १०० से० मी०	१० (१-१०)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविन्दभगवत्सूक्तनाद शिष्य- स्वरमह्य परिचाजकाचार्यस्य श्री बृहत्समवत्सु इत्यो तैत्तिरीयोपनिषद्- भाष्य विवरणं समाप्तं ॥ श्रीब्रह्मार्पणं भूतु
२४X१५ से० मी०	५ (१-५)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री समाप्तोपनिषद् अद्वैत- वेदीयत समाप्तमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	$\frac{१५२५}{१६}$	ध्यानविन्दूपनिषद् (संस्कृत टीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८६	$\frac{१५२५}{१६}$	नादविन्दूपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८७	$\frac{३१७}{२}$	नारायण उपनिषद्			दे० का०	दे०
८८	३४१३	नारायणोपनिषद्			दे० का०	दे०
८९	४५७९	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९०	१८५४	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९१	$\frac{१५२५}{१६}$	नीलकण्ठोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमन्त्रा पौर प्रति पक्ति म अक्षरमन्त्रा		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अथ वा विवरण	अवस्था ओर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
३२२× १५७ सें० मी०	५॥ (५८-६२॥)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इतिप्र्यानविदूषपनिपद्दीपिका ।
३२२× १०४ सें० मी०	२॥ (४७-४६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इतिनादविदूषपनिपद्दीपिका सपूर्ण ।
१२२× ११२ सें० मी०	११ (१-११)	४	११	पू०	प्राचीन सवत् १६३५	इत्यववेदे अथर्व नारायणोपनि- पत्समाप्तम् लिपिकृत देवीदत्त उपोतिविदा । स० १६३५ भाष कृष्ण १ तिथी ।
१८×८५ सें० मी०	३ (१-३)	६	३२	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदनारायणोपनिपत्सपूर्ण शुभमस्तु ॥
१७६× ११५सें०मी०	४ (१-४)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति निरालवोपनिपद । समाप्त ॥
१६×१० सें० मी०	५	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणा वेदोक्त निरालवोपनिपद् समाप्त ॥ ... ..
३२२× १५७ सें० मी०	२॥ (४५- ४६॥)	११	४६	पू०	प्राचीन	इतिनीलरुद्रोपनिपद्दीपिका सपूर्णम् १६

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१ ६२	१३४८	नृसिंहोत्तर तापिनी उपनिषद् टीपिका (१-६) खड			दे० का०	दे०
६३	२१५५	नेत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	२५३६	बृहदारण्यक			दे० का०	दे०
६५	२६	बृहदारण्यक पञ्चोध्याय			दे० का०	दे०
६६	१०५६	बृहदारण्यक उपनिषद्			दे० का०	दे०
६७	३४४३	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	७०५६	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में प्रक्षर संख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	द्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३२ x १५ ५ सें. मी.	५१ (१-५१)	१२	४६	पू०	प्राचीन म० १८६४	इति श्री नृसिंहोत्तर तापिनी दीपिका समाप्त शुभमस्तु सं० १८६४ मी भादो सुदी क्वार सुकरवार ॥
१६ ८ x १२२ सें. मी.	१० सं० १	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
३४ ६ x १३५ सें. मी.	१० सं० ३६ (१-३६)	११	४७	पू०	प्राचीन	बृहदारण्यक चतुर्दश कांड..... सहिताया चत्वारशोऽध्याय ॥
२० २ x ८ ४ सें. मी.	१० सं० २४	७	२६	पू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके पष्ठोऽध्याय समाप्तः शुभमस्तु ॥
२३ x ६ ८ सें. मी.	५५	६	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री बृहदारण्यकोपनिषत्समाप्ता ॥ सर्वात्मने नम ॥ श्रीकृष्णार्णवस्तु ॥
२० ५ x ६ ५ सें. मी.	१० सं० १६ (१-१६)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके उपनिषत्पादे चतुर्थोऽध्याय ॥..... तत्सत् ब्रह्माप्यमस्तु ॥
३१ ७ x १५ ६ सें. मी.	७ (४६-५३)	१५	५१	अपू०	प्राचीन	...बृहदारण्यकोपनिषदि पष्ठोऽध्याय ॥ (पत्र-संख्या-५२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	निर्
१	२	३	४	५	६	७
६६	३६५	बृहदारण्यकोपनिषद्			१० का०	१०
१००	३४०८	बृहदारण्यकोपनिषद्			१० का०	१०
१०१	३६०१	बृहदारण्यकोपनिषद् (टीका)		शक राचार्य	१० वा०	१०
१०२	३७३०	बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य			१० वा०	१०
१०३	३६५४	बृहदारण्यकोपनिषद् (संस्कृत टीका)*		भगवदानन्द- ज्ञान	१० वा०	१०
१०४	२५३८	बृहदारण्यकोपनिषद् (सभाष्य)		शक राचार्य	१० का०	१०
१०५	१५२५ १६	ग्रन्थविद्वेषनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	१० वा०	१०



पत्रा या पृष्ठो वा आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्र संख्या और प्रति पत्र में अधारसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक् विवरण	
८	९	१०	११	१०	११	
२६५X १०५ सं० मी०	२७ (१५१- १७२ २०१- २०२, २६२- २६४)	७	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
१०५X७३ सं० मी०	५७ (१-४३, ४६-५६)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	यमु शाश्विय बृहदारण्यउपनिष ॥ समाप्त ॥
२६५X ११ सं० मी०	४६ (१-४६)	११	४४	अपूर्ण	प्राचीन	श्री गोविंदभगवत्पाद शिष्यपरमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीशंकरभगवत कृताया बृहदारण्यकटीकायां अतुष्टोऽध्याय समाप्त ॥ शुभभवतु ॥
२८३X १२५ सं० मी०	२२	१७	५२	अपूर्ण	प्राचीन	
२८८X १०१ सं० मी०	६५ (१-६५)	१०	५१	पूर्ण	संवत् १६४१	इति श्री परिव्राजक श्रद्धानंद पूर्णपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृताया बृहदा रण्यकभाष्यटीकाया अष्टमोऽध्याय ॥ संवत् १६४१ वर्षे आषाढ शुद्धि २ रवौलदोष्य शतीयनुपाध्याकेशवेनलेखित- मिद पुस्तक जपतु श्रीशुभमस्तु
३५X१३५ सं० मी०	३२७	१२	५७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीगोविंद भगवत्पूर्ण पादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीशंकर भगवत कृताया बृहदारण्यक कृतौ अष्टमोऽध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७४७ समये
३२२X १५७ सं० मी०	१३ (५०-५१)	११	५१	अपूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मविदु उपनिषद्दीपिका अष्टादशी १८

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	प्रयवार	टीकावार	ग्रथ विस्र वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	$\frac{१५२५}{१६}$	ब्रह्मविद्योपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	२० का०	२०
१०७	$\frac{१५२५}{१६}$	ब्रह्मोपनिषद्		नारायण	२० वा०	२०
१०८	३८४४	ब्रह्मोपनिषद्			२० का०	२०
१०९	६२६	भावनीपनिषद्भाष्य		भास्कर	२० का०	२०
११०	$\frac{१५२५}{१६}$	महोपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	२० वा०	२०
१११	१७००	माडूकोपनिषद्		श्री शकरानन्द	२० का०	२०
११२	७२२४	माडूकोपनिषद्भाष्य (गौडपाद भाष्य)		भगवदानन्द ज्ञान	२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिगणना और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३२२× १५७ सें. मी०	२ (२-३)	११	४३	अपूर्०	प्राचीन	इति ब्रह्मविद्योपनिषद्दीपिका तृतीयोपनिषत् ३ ॥
३२२× सें. मी०	७ (३५-४१)	११	४८	पूर्०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषद्दीपिका १० ॥
१६५×११ सें. मी०	२ (१-२)	११	३२	पूर्०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषत्सप्तमः ॥
२७×१२४ सें. मी०	१४	१०	३६	पूर्०	सें० १६७५	इति भावनाभाष्य समाप्त ॥ सं० १६७५ स्य वंशाधिपतिवलेदने नवम्यां चद्रबाहरे समाप्तिमगात् ॥
२३२× १५७ सें. मी०	३ (३२-३४)	१३	४०	पूर्०	प्राचीन	इति महोपनिषद्दीपिका समाप्ता ६।
१६५×८ सें. मी०	५	७	२५	पूर्०	प्राचीन	इति मादूकीपनिषद् समाप्त ॥
२५४× १३२ सें. मी०	३० (१-३०)	१६	३८	पूर्०	प्राचीन	इति श्री परमहंस पश्चिमानुशाखायं श्री गुरुदेव पुण्यपाद शिष्य भगवन्नामक-मान विरचितान्या गीत्याद भाष्य टीकायां प्रथम अक्षरसंख्या समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकानामय की प्रायत मट्या या मप्रहविशेष की मर्या	प्रयनाम	प्रयपार	टीकारार	प्रय निस वस्तु पर निया है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	७६३६	माडूकयोपनिपद्			दे० का०	दे०
११४	$\frac{३८१२}{२}$	माडूकयोपनिपद्			दे० का०	दे०
११५	३४२५	माडूकयोपनिपद्			दे० का०	दे०
११६	३५५१	माडूकयोपनिपद्			दे० का०	दे०
११७	$\frac{२८६२}{३}$	माडूकयोपनिपद्			दे० का०	दे०
११८	३४१८	मुडकोपनिपद्			दे० का०	दे०
११९	$\frac{२८६२}{३}$	मुडकोपनिपद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार :	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	धन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स द	६	१०	११
२४५× १२४ से० मी०	७ (४-६७, ११)	११ २६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री माहृक्योपनिषद्गोडपाद व्याख्याने वैतय्याख्य द्वितीय प्रकरण समाप्त ॥
१६५× ११२ से० मी०	१	११ ३६	पूर्ण	प्राचीन	हरि ॐ तत्सत् माहृक्योपनिषत्समाप्त ॥ [नोट - इसके नीचे शंकराचार्य कृत 'कोपीन पत्रम्' स्तोत्र भी है ]
१५८× ११५ से० मी०	८ (१-८)	६ २७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री माहृक्योपनिषत्सपूर्ण ॥
१५×८८ से० मी०	३ (१-३)	७ १६	पूर्ण	प्राचीन	इति माहृक्योपनिषत्समाप्त ॥
२३×१०२ से० मी०	१० सं० २३	७ २७	पूर्ण	प्राचीन	इति माहृक्योपनिषत्समाप्तम् । पूर्ववत् शांति कुर्यात् ॥
१६×१० से० मी०	७ (१-७)	११ २६	पूर्ण	प्राचीन	मुदकोपनिषत्समाप्ता ॥
२३×१०२ से० मी०	१० सं० ६३	६ २६	पूर्ण	प्राचीन	इति मुण्डकोपनिषत्समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	प्रपनाम	प्रपकार	टीकाकार	प्रथम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	६५६	मुण्डकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२१	११०२	मुण्डकोपनिषद् (शंकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१२२	११००	मैत्रायण्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२३	$\frac{१५७८}{६}$	परमहंसोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२४	६५५	पूर्वोत्तापित्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२५	$\frac{३८४२}{३}$	प्रश्नोत्तर मालिका (प्रश्नोपनिषद्)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२६	१४५४	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		अ	ब			
२५५× १०५ से० मी०	८	८	२७	पू०	प्राचीन	
२५२× १०८ से० मी०	४४ (१-४४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पुण्यपादशिष्यस्य परमहंस परिब्राजकाचार्यस्य श्रीमच्छकर- भगवत हरतावाथर्वणं मु ढकोपनिषदि- वरण समाप्त ॥ श्री ब्रह्मर्ष्यंणमस्तु ॥
२८६×१११ से० मी०	१०६०१७ (१-१६, १६)	८	२८	अपूर्ण	प्राचीन	इति भैरवायण्यपनिषदि सप्तम प्रपा- ठक ॥ लिखितमिद श्री मन्महादेव कवीन्द्रसरस्वत्या ॥
३४×१७४ से० मी०	६	६	६३	पू०	प्राचीन	इत्यथवेदे परमहंसोपनिषत्समाप्ता ॥
१७५×८ से० मी०	७	७	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वणं रहस्ये पूर्वतापनियोपनिषद्- समाप्त ॥ शुभ ॥
१४५× ६५ से० मी०	२ (१-२)	१३	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री शकराचार्यं विरचिते प्रश्नो- त्तर मालिनादेव्य संपुणम् ॥
२५३× १०७ से० मी०	८०६०६ (१-६)	८	२६	पू०	प्राचीन	प्रश्नोपनिषत्समाप्ता ॥ ***स्वतित्तो बृहस्पतिश्चातु ॥ कं शाति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकानार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	३४१६	प्रश्नोपनिषद्			दे० वा०	दे०
१२८	२८६२ १६	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२९	१०००	प्रश्नोपनिषद् भाष्य			दे० वा०	दे०
१३०	१५२५ १९	प्राणान्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३१	६१३०	प्राणान्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३२	१५२५ १९	योगतत्वोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१३३	१५२५ १९	योगशिखोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में प्रकृत सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१४ × ७ = सैं० मी०	२१ (१- २१)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्समाप्त ॥
(२३ × १०२) सैं० मी०	१० सं० ७ (१-७)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्संपूर्णं समाप्तम् श्री वृष्णापणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥
२५ × २ × १० × सैं० मी०	१० सं० ३२ (१-२३)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकर भगवत कृतो अथर्व- णोपनिषत्प्रश्नभाष्य विवरण समाप्त ॥ " " " द्वितीया सोमवासरे ॥
३२ × २ × १५ × सैं० मी०	३३ (४२-४४)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इति प्राणान्निहोत्रोपनिषदसमाप्ता ११
२२ × १ = ५ सैं० मी०	४ (१-४)	६	२१	पू०	प्राचीन सं० १६०३	इति श्री प्राणान्निहोत्रोपनिषत्समाप्त संपूर्णं ११ मीती माघ कृष्ण १३ त्रियोदश्या भुगी सवत १६०३ लोपी कृत योगालेन नसीराबाद की छावणी मघे " "
३२ × २ × १५ × सैं० मी०	(६७- ६८) २	१२	४७	पू०	प्राचीन	इति योगतश्चोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २३
२३ × २ × १५ × सैं० मी०	२ (६५- ६६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति योगशिखोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २२

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	४१४०	रामतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३५	७५०२	रामतापनीयोपनिषद् (पूर्व एवं उत्तर)			दे० का०	दे०
१३६	५६२४	रामतापिनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३७	$\frac{४३३०}{२}$	राममन्त्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३८	६१२७	रामोत्तरतापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३९	१४०८	रामोत्तरतापनीयोपनिषद् (प्रदीपिका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१४०	५३६०	रामोत्तरतापिन्युपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पणित संख्या और प्रति पक्ति में श्लोक संख्या		क्या श्रम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान श्रम का विवरण	श्रवस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४ × १०.६ सं० मी०	१६७०१८ (१-३, ३-१७)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति सत्याचत्वारिंशन्मंत्रिनित्य देवं स्तौति तस्य देव प्रीतो भवति स्वात्मानदशम्यतितस्माद्यएतंमंत्रिनित्य देव स्तौति मदेव पश्यति सोमत्तत्वं गच्छति इत्ययवर्ण रहस्येऽश्रीरामस्योत्तरतापनीयोपनिपत्समाप्तं चैत्र मुदि १ गुरुवासरे संवत् १६०६ ॥ शुभ ॥
२३ × ६.५ सं० मी०	११ (३-१३)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इत्ययवर्षेदे रामपूर्वतापनीयमुपनिपत्समाप्ता ॥ (पत्र सं० ६)
२१.५ × १०.१ सं० मी०	१३ (१-१३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इत्ययवर्षे रामोपनिपदुत्तरतापनीयं नाम सपूर्णं ॥
१३.३ × १०.६ सं० मी०	२ (१-२)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये श्री राम मंत्रोपनिपत्समाप्त. ॥
१४.८ × १०.२ सं० मी०	०२६ (१-२६)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति इत्ययवर्षे वेदे श्री रामोत्तर तापनीयोपनीपत्समाप्ता ॥
३१.७ × १५.६ सं० मी०	१०६०२५ (१-१५, १६-२६)	१०	४६	अपू०	प्राचीन	नारायणोत्तरचिन्ता श्रुति भास्वोपजीविना । अस्पष्ट पदवाक्याना रामोत्तर प्रदीपिका ॥ इति रामोत्तरतापनीयोपनिपत्समाप्ता ॥
२७ × ११ सं० मी०	८ (२-४, ६-१०)	६	४४	अपू०	सं० १७५६	इत्ययवर्षेदे रामोत्तरतापनीयमुपनिपत्समाप्ता शुभमस्तु संवत् १७५६ के फाल्गुन शुक्ल ३ तृतीयाया रविवासरे .....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	प्रवर्तार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	४३३० २	रामोपनिषद्			मि० का०	दे०
१४२	२७५६	रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४३	५५०७	वज्रसूक्तिकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४४	३२६०	वज्रसूक्तिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४५	२३४१	वज्रसूक्तिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४६	२१६	वज्र सूची उपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४७	२८७३	वज्र (वज्र) सूची उपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रा या पुठ्या या मातार	पत्रमात्रा	प्रति पुठ्ये पक्ति गणना भोर प्रतिपत्ति मे प्रभार गणना		क्या प्रय पाणि हे ? प्रपूर्णा हे तो कतं- मान प्रय वा विवरण	प्रयत्या घोर प्राचीनता	प्रय प्रायग्यत्र विवरण
		ग	द	६	१०	११
१५३× १०६ सैं० मी०	१	७	१६	५०	प्राचीन	इति श्री नामवेदे श्री रामोपनिषद् गम्पूर्णं शुभभूयात् ॥ श्रीमत रामानुजाय नम ॥
२१×८५ सैं० मी०	६	१०	२५	५०	प्राचीन	इति श्री नदिवेश्वर पुराणीतकालानि रदोपनिषत् सपूर्णम् ॥
१५३×६ सैं० मी०	६ (५, ७-१५)	७	१६	प्र०	सं० १६१८	इति श्री वज्रविकोपनिषद्भाग्यो नामोपनिषद् समाप्ते शुभभूयात् सवत् १६१८ शाने १७८३ कार्तिक शुक्ल . १२..... ।
१८५× ११८ सैं० मी०	१०सैं०८ (१-८)	१०	२१	५०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री मत्स्यराचार्य विरचित वज्र- सूची उपनिषत्समाप्त शुभभूयात् श्री सम्बत् १६०६ शाके १७७१ फाल्गुन शुक्ल १२ ।
२५३×१५ सैं० मी०	६	६	२०	५०	सं० १६१४	इति श्री शत्रुघ्नराचार्य विरचितायाम् उप- निषत्सुबोधिन्या वज्र सूची समाप्ता चैत्रे मासे नितेपक्षे प्लवशाच शुक्ल वासरे लिप्तह्युमासहापेन श्री शंकर प्रसादत सवत् १६१४ शुक्लान द्वारे लिखित मौनी सरस्वतीपठनाय ॥
१५×११३ सैं० मी०	८(१-८)	११	१७	५०	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री वज्र सूची उपनिषत्समाप्ता सं० १८५५ ।
२४२× ११२ सैं० मी०	१० सैं० ५ (१-५)	१०	३१	५०	प्राचीन (सं० १८८२)	इति श्री मत्स्यराचार्य विरचित वज्र सूची उपनिषत् समाप्ता ॥ सवत् १८८२ तत्र शाके १७४७ तिथी.... ॥

क्रमानुसारी विषय	पुस्तकालय की भागत सरपस या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीवावार	ग्रथ विस वस्तु पर लिपा है	लिवि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	१६६६	वाजसनेयसहितो- पनिपद्		शकराचार्य	२० का०	२०
१४९	१४१०	वानुदेवोपनिपद्- दीपिका			२० का०	२०
१५०	६९८	वेदातमलविभ्रानतो- पनिपद्	शकराचार्य		२० का०	२०
१५१	८९१	पोडशोपनिपद्			२० का०	२०
१५२	$\frac{१५२५}{१९}$	सन्धासोपनिपद् (संस्कृतटीका सहित)		नारायण	२० का०	२०
१५३	$\frac{१५७८}{६}$	सर्वोपनिपद्सार			२० का०	२०
१५४	१६२७	सूर्योपनिपद्			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	प्रतिसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रित संख्या और प्रति पत्रित संख्या का प्रकार		कदा प्रथम पूर्ण है ? पूरा है ता काल- मान काल का विवरण	प्रतिसंख्या और प्राचीनता	प्रकार का विवरण
		स	द			
३३५ × १२३ सं० मी०	६ (१-६)	१८	५४	मू०	प्राचीन ६०१८७६	इति श्री परमहंस परित्याज्याचार्य श्रीयोगिन्द्र भगवद्भाग्यपाद शिष्य ... भक्त भगवत कृती काजमनय महिता- पनिषद् भाष्य संपूर्णम् मवत् १८७६ ॥
३३४ × १७३ सं० मी०	३ (३१-३३)	१२	६१	मू०	प्राचीन	इति वामुदेवोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
२०१ × ११२ सं० मी०	११ (३-१३)	१०	२३	मू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचित वेदान्तसूत्रविश्रामतोपनिषदसमाप्ता ॥
२१५ × ६१ सं० मी०	४४ (२-४४)	११	२७	मू०	प्राचीन	इति योदशोपनिषत् ॥१६॥
३२२ × १५७ सं० मी०	१३ (६६-८१)	१५	५१	मू०	प्राचीन	इति सन्यासोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
३४ × १७४ सं० मी०	३	१६	६०	मू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे सर्वापनिषत्साम्प्रदायात् ॥
१२८ × ७६ सं० मी०	२	८	१५	मू०	प्राचीन	इति श्री सूर्यापनिषत्साम्प्रदायम् शुभम् ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या मसूहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	६३७ २	सूर्योपनिषद्			दे० वा०	दे०
१५६	७१६४	सूर्योपनिषद्			मि० का०	दे०
१५७	२२६०	स्वरूपोपनिषत् प्रकरण			दे० वा०	दे०
१५८	११८६ २२	स्वरूपोपनिषद्			दे० का०	दे०
कर्मका १	२४६७	मग करन्यास			दे० का०	दे०
२	३७७५	अतेश्चि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०
३	३७७६	अतेश्चि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० वा०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या प्रौर प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	LIBRARY अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
(२६२×१११) सें० मी०	१	६	३३	पू०	प्राचीन (सं० १६१०)	इति सूर्योपनिषत्समाप्त सं० १६१० भावण भासे कृष्ण पक्ष श्री श्री श्री०
१०१×६३ सें० मी०	५ १-५	८	१५	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदोमूर्धोपनिषत् ॥
२२८×१२४ सें० मी०	३ (१-३)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वरूपोपनिषत् प्रकरण संपूर्णम् ॥
२६२×१४१ सें० मी०	१	२०	५०	पू०	प्राचीन	इति स्वरूपोपनिषदप्रकरणसंपूर्णसमाप्त
१७×६५ सें० मी०	४	७	१८	पू०	प्राचीन	इति अगन्यास करन्यास संपूर्णम् ॥
२३२×६५ सें० मी०	२५ (१-२५)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२३४×६५ सें० मी०	३२ (१-३२)	६	५४	पू०	सं० १८१३	इती श्री मद्रिद्धन्मुकुट मारिण्य हीरो कुर श्री मद्रामेश्वर भट्ट सुनना श्रीमद्भट्ट नारायण कृते प्रयोगरत्ने श्रीर्ष्वदेहिक पद्धति समाप्तोय सवत् १८१३ ॥

LIBRARY  
V. D. P.

क्रमांक श्रीर विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविज्ञाप की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीनारार	ग्रथ किंग कम्पु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	३२७८	अत्येष्टि			२० का०	२०
५	३६५७	अतेष्टी			२० का०	२०
६	१५४	अत्येष्टि			२० का०	२०
७	७६५७	अत्येष्टि			२० का०	२०
८	६७४२	अत्येष्टि			२० का०	२०
९	४६६६	अत्येष्टि (दशमात्रपिडदान विधि)			२० का०	२०
१०	५५	अत्येष्टिकर्म			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ में पकित सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या श्रय पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	६	स	द	६	१०	११
२७ × १३ सें. मी.	१८ (१-१८)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२६ × १२ सें. मी.	४६ (१-२०, २२-५०)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
३१ × १२.६ सें. मी.	४५ (१-३४, ३६- ४१, ४३-४७)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
१६.३ × १०.२ सें. मी.	१८ (१-१८)	१३	१४	अपू०	प्राचीन	
२४.२ × १०.४ सें. मी.	४ (४६-५०, ५३-५४)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२८ × १३.१ सें. मी.	२० (१-७, १०-२२)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ११.२ सें. मी.	३४ (१२-२६, २६-४६, ४८)	८	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
११	३४६२	अत्येष्टि कर्म			३० का०	३०
१२	१३८७	अत्येष्टी कर्म			३० का०	३०
१३	२७०	अत्येष्टिकर्म	ईश्वरीदत्त		३० का०	३०
१४	७६६	अत्येष्टि कर्म पद्धति			३० का०	३०
१५	३२१०	अत्येष्टि कर्म विधि			३० का०	३०
१६	२६२	अत्येष्टि कर्म विधि			३० का०	३०
१७	३१२३	अत्येष्टि कर्म विपाक			३० का०	३०

पतो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या अथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	९	१०	११	१२	१३	१४
२०५ × १४ से० मी०	४८	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२१३ × ११ से० मी०	१८	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६६ × ११३ से० मी०	६३ (१-६३)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
(२६२ × ११५) से० मी०	१४ (१-१४)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १४ से० मी०	३ (१-३)	१२	२८	अपू०	प्राचीन	
२२५ × १५१ से० मी०	२० (१-२०)	१३	२३	पू०		
(१४३ × ६१ से० मी०)	१०	१३	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की श्रावत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१८	५५६४	अत्येष्टि पद्धति	नारामणभट्ट		३० का०	३०
१९	२१७०	अत्येष्टि विधि			३० का०	३०
२०	१७६	अध्याष्टि पद्धति			३० का०	३०
२१	१८४५	अविकास्थापन विधि			३० का०	३०
२२	५५३२	अविकास्थापन			३० वा०	३०
२३	$\frac{५०५४}{१५}$	अम्बुषट आढप्रयोग			३० का०	३०
२४	६६६६	अग्निमुख प्रयोग			३० वा०	३०

पत्रा या पुठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पुठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रिन अक्षरसंख्या		क्या ग्रय पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रय का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	ग्रय आवश्यक विवरण
		स	द			
द ग्र	व	स	द	६	१०	११
२५ X १० ६ से० मी०	७४	६	२८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८४६	इत्योर्ध्वदेहिक पद्धति समाप्त शुभभूयात् * * * सवत् १८४६ माघ शुदि चतुर्थी भीमवासरे तद्दिने समाप्त ॥
२६८ X १३ ३ से० मी०	१४ (१-१४)	११	४०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२१	इति सपिंडीकरणकर्म सपूर्ण ॥ * * * सवत् १६२१ पुस्तग लिपि कृत मगल भूयात् * * * ॥
२७ ५ X १० ६ से० मी०	७१ (१-२८, २८-७०)	१०	४३	पूर्ण	प्राचीन	॥ श्री ॥ अघयष्टि पद्धती मित्तेर्विष्टि ॥ समाप्ता ॥
१४ ५ X ६ ८ से० मी०	५ (१-५)	११	२२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री अत्रिकास्थापन सपूर्ण लिखित कन्हैयालाल स्वात्मपठनाथ शुभमस्तु * * *
२७ ७ X १० २ से० मी०	५ (१-५)	६	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री अत्रिकास्थापन सपूर्ण लिखित पुस्तग मीश्रमहतावस्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु ॥
१६ X ७ ८ से० मी०	२	८	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ ४ X १० ५ से० मी०	११ (१-११)	१७	३०	पूर्ण	सं० १८६४	संवत् १८६४ वातिके मास शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या त्रिमी भृगुवासरे तद्दिने श्री लक्ष्मी * * ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या मप्रहविभाग की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथनार	टीकानार	ग्रथ विम यस्तु पर निष्ठा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
०५	६४६१	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२६	६२२०	अग्निष्टोम	शेषगायिद		दे० का०	दे०
२७	६७५०	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२८	६४६४	अग्निष्टोम (आष्टावाक प्रयोग)			दे० का०	दे०
२९	६७४८	अग्निष्टोम (सप्तहोत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
३०	६७०७	अग्निष्टोमहोत्र			दे० का०	दे०
३१	६५२३	अग्निष्टोमेष्टावाक प्रयोग			दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठा वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वतं मान अक्ष वा विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२६×६४ से० मी०	६ (१-६)	८	३३	पू०	प्राचीन से० १७८०	॥ अग्निष्टोम समाप्त ॥ सवत् १७८० माघ शुद्ध १६ नामावारे लिखित ॥ इति श्री जोशनेकर गोपीनाथन लिखित
२३×१०४ से० मी०		१२	३५	पू०	प्राचीन से० १८१०	शपथोक्ति कुत्र प्रयोगोऽग्निष्टोम समाप्ता ॥ श्री वेद पुरुषापरणमस्तु ॥ सवत् १८१० सावननामसवत्तर आवरण शुद्ध १ शानो तद्दिने काश्या × × ×
२४७×११५ से० मी०	५(१-५)	११	२६	पू०	प्राचीन शके १६६३	इति ज्योतिष्टोमाग्निष्टोमे पोतृत्व प्रयोग ॥ इदं पुस्तक बाल्ह अर्मण ॥ शके १६६३ दुमतौ आवणाधिक द्वितीयाया भानी लिखित ॥
२४७× ११६ से० मी०	१८ (१-१८)	६	३२	पू०	प्राचीन से० १८१४	अग्निष्टोमादि अष्टोर्धामात अष्टावावस्य शस्त्रवर्णित समाप्ता । सवत् १८१४ कातिक कृष्ण १ भृगो समाप्त । पुस्तक- मिदं राम हृदोपनामक विश्वनाथभट्टा- त्मज नीलकण्ठभट्टेन लिखायित ...
२३६× १०४ से० मी०	११६ (१-११६)	६	२६	पू०	प्राचीन शक १७३८	इत्यग्निष्टोम सप्तहोत्र प्रयोग समाप्त ॥ शके १७३८ वर्षे घातू नामान्दे भाद्रपद वद्य ८ ॥
२३३×६७ से० मी०	५५ (१-५५)	११	३६	पू०	से० १८७२	इत्यग्निष्टोम होत्र समाप्त ॥ सवत् १८७२ मिति प्राशिवनशुद्ध २ सोम्य वासरे तद्दिने काश्याराजघान्या कवी- श्वरेत्युपनामक महादेव भट्टात्मज लक्ष्मी नाथेन लिखित ॥
२१७×८५ से० मी०	४ (१-४)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमेष्टावाव प्रयोग ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२	६७१२	अग्निहोत्र प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३३	६६०४	अग्निहोत्र			दे० का०	दे०
३४	६५२५	अग्रयण होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
३५	६८३७	अग्निहोत्रप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३६	६७०२	अग्निहोत्र होम			दे० का०	दे०
३७	६७१३	अग्निहोत्र होम		शुक्लराचार्य	दे० का०	दे०
३८	६८२६	अष्टावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा या संख्या	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पंक्ति मे संख्यासंख्या		क्या प्रथम पृष्ठ है ? अपूर्णं तो वर्त- मान प्रथम पत्र विवरण	अवस्था और प्राचीनता	संय आयुष्पक विवरण
		स	द			
२३६×१०४ सं० मी०	४० (१-४०)	११	३३	पू०	सं०१८७८	गमाप्तमिदं अग्निहोत्र प्रापयित्त ॥ × × सवत् १८७८ नदन नाम सवस्तर उदगयने वसत ऋतो वंशाष्ट शुद्ध ६ नवम्या तद्दिने कवीश्वरोप- नामक सधारामेण लिखित ॥ + + + इति श्री अग्निहोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु सवत् १९१७ ॥
२०×१२२ सं० मी०	५ (१-५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१९१७	अथाऽऽयण होत्र प्रयोग समाप्त ॥
२१४×८ सं० मी०	२ (१-२)	७	३१	पू०	प्राचीन	अथाऽऽयण होत्र प्रयोग समाप्त ॥
२०२×८३ सं० मी०	१५ (१-१५)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२१४×७५ सं० मी०	८ (१-८)	६	५०	पू०	प्राचीन	
२३३×१०१ सं० मी०	५ (१-५)	११	३७	पू०	सं०१८११	इत्याराधाहोत्र प्रयोग समाप्त ॥ पुस्तक मिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ- भट्टात्मज नीलकण्ठेन लिखापितम् सवत् १८११ कार्तिक शुद्ध पचम्या समाप्त ॥
२३५×१०१ सं० मी०	६ (१-६)	११	३०	पू०	प्राचीन	अप्यात्यग्निष्टोमे अछावाक प्रयोग समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६	$\frac{५२३३}{२}$	ग्रजपा गायत्री			२० का०	२०
४०	१६६३	ग्रजपा गायत्री जप विधि			२० का०	२०
४१	५४४	ग्रजपा जाप (मानस पूजा)			२० का०	२०
४२	६८३६	अतिपवित्रेष्टिहीत			२० का०	२०
४३	६७०६	अघानहीत (अश्वारभहीत)			२० का०	२०
४४	३६२८	अनतपूजा			२० का०	२०

पत्रा या पुष्ठा या पातार	पत्रगड्या	प्रतिपुष्ठा म परिग मंख्या घोरप्रतिपकि में घटार सक्षर		क्या प्रथ पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रथ का विवरण	धर्म्या घोर प्राचीनता	प्रथ यावश्यक विवरण
		स	द			
१५५×१०३ सं० मी०	५ (१-५)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री वनिष्ट महिताया मज्जा विधि समाप्तम् सुभमम्नु
१४५×६ सं० मी०	३	६	१८	अपू०	प्रा०	
१६×१०५ सं० मी०	७	६	२०	पू०	प्राचीन	इति धजप्ता विधि सन्नेपन समाप्त्यम् यादृश पुस्तक इष्ट्वातद्वय लिखित माया यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषान विज्ञने ?
२०५×७६ सं० मी०	८ १-८	७	२७	पू०	प्राचीन सं०१८७७	इत्यतिपवित्रेष्टिभरद्वालसूत्रोक्त समाप्ता ॥ सवत १८७७ भाद्रपदकृष्ण ३ मदवास्तरे सशमीनाथ कवीश्वरेण लिखित ॥ शुभ ॥
२०५×८७ सं० मी०	४(१-४)	११	३६	पू०	सं०१७८७	अश्वारभणीयमाहीत्र समाप्त ॥ इद पुस्तक रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठस्य सवत १७८७ श्री ।
२३७×१०४ सं० मी०	५० सं० ७	१२	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	प्रपकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	१८७	अनंतपूजा			दे० का०	दे०
४६	४७०५	अनंतोद्यापन			दे० का०	दे०
४७	७४३६	अनुवाक्			दे० का०	दे०
४८	६७६१	अपाया अनुवित्ती होत्र			दे० का०	दे०
	$\frac{१६०४}{४}$	अभिषेक			दे० का०	दे०
४९						
५०	३००६	अर्क विवाह			दे० का०	दे०
५१	५११८	अर्क विवाह			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ भावश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२ x ११ से० मी०	२२ (१-२२)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति अन्नत पूजन संपूर्ण ॥
३४ x ४ १३३ से० मी०	१२ (१-१२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे अन्नतोद्यापन समाप्त ॥
१७ x ८.६ से० मी०	७	८	७	अपू०	प्राचीन (सं० १६२३)	इति सर्वानुवाक संख्या समाप्त x x x x संवत् १६२३ मार्ग शु० १० सो०
२२ १ x ८.५ से० मी०	२ (१-२)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इत्यपाद्या अनुवितीना होत ॥
१३ ६ x ७ ६ से० मी०	५ (१-५)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२८ ५ x ६ ३ से० मी०	५ (१-५)	७	३५	पू०	प्राचीन	इत्यर्क विवाह समाप्त
२४ ६ x १० ६ से० मी०	५ १, ५,	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रथवार	दीनावार	प्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	४३६२	अशीचविचार			२० का०	२०
५३	६७०३	अश्वमेध हीन अयोग			२० का०	२०
५४	६७०५	अश्वमेध हीन प्रयोग (आश्वलायन मूत्रानुसार अश्वमेध हीन प्रयोग)			२० का०	२०
५५	४१६४	अष्टका श्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५६	५६४६	अष्टप्रयोग			२० का०	२०
५७	६५०३	आग्नीध्रप्रयोग			२० का०	२०
५८	५५५६	आतुर सत्यास पद्धति			२० का०	२०



पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
८ अ	ब	स	द	१०	११	
२५ × ११४ सें० मी०	२६	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ × ६७ (१-६७) सें० मी०	१०	३८	३८	पूर्ण	सं० १७६५ प्राचीन	इत्यश्वमेध हीत्र पद्धती प्रथम मुल्यागत- मस्तोम ॥ इव पुस्तक रामहृदस्थोपनामक विश्वनाथ भट्टारमज नीलकण्ठस्य ॥ सवत् १७६५*** ।
२२ × ६७ सें० मी०	१२७ (१-१२७)	१०	४१	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यश्वमेधस्याश्वलायन सूत्रानुसारेण- हीत्र प्रयोग समाप्त ॥
२१ × ६५ सें० मी०	८ (१-८)	६	४०	पूर्ण	प्राचीन	इति ।
२५ × ६६ सें० मी०	४ (१-४)	८	३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ × ६७ सें० मी०	६ (१-६)	७	३५	पूर्ण	सं० १८१६	सवत् १८१६ वर्षे भागशिस शुद्ध दुतीया मद वासरे ॥
१५ × ५८ सें० मी०	३ (१-३)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन	आतुर स्यासि पद्धति समाप्ता ॥ शुभभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या या सग्रहियोग्य की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
५६	७३५०	आतुरसंग्यास विधि			३० का०	३०
६०	$\frac{१६८६}{२२}$	आत्मपूजा	शंकराचार्य		३० का०	३०
६१	६५०६	आधान होत्र			३० का०	३०
६२	६५३१	आधान होत्र			३० का०	३०
६३	६५६८	आपस्तव सूत्रोक्त सध्यावदन प्रयोग			मि० वा०	३०
६४	२६४१	आपस्तव सूत्र मंत्र प्रश्न			३० का०	३०
६५	६८३४	आपस्तवसध्यावदन पद्धति (भाष्य)			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि म पत्रसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१४६×६६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति सयास विधि समाप्त ॥
२६२× १४१ सें० मी०	१३	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति शकराचार्यं आत्मपूजासंपूर्णं ॥
२१३×८७ सें० मी०	१३ (१-१३)	६	३५	पू०	प्राचीन	अथ आधान होत्र लिख्यते ॥ (प्रारभ)
१६८×८४ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति आधान होत्र समाप्त ॥
११३×११ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३०	पू०	सं० १६५१	इत्यापस्तम्ब सूक्तोक्त सध्यावदन प्रयोग श्री सीताराम चंद्रापरामस्तु ॥ श्री सवत १६५१ शके १८१६ परामवनाम सवत्सरे दक्षिणायणे शरदृतौ अश्विने मासे कृष्णपक्षे १।
२६५×११ सें० मी०	१० सं० २८ (१-२८)	८	३६	पू०	प्राचीन	शके १७ विक्रम नाम सवत्सरे दक्षिणायने वर्षा ऋतु भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे आष्टम्या त्रयो वासर भानुवासरे पुस्तक समाप्त ॥
२१३× १०६ सें० मी०	६	११	३३	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	६५६६	आपस्तंबोक्त मध्या- वदन प्रयोग			दे० का०	दे०
६७	३५५४	आम्युर्द्वेव श्राद्ध			दे० का०	दे०
६८	५६०४	आरामप्रतिष्ठा			दे० का० ।	दे०
६९	४४५१	आरामप्रतिष्ठाविधान			दे० का०	दे०
७०	४४५०	आरामोत्सर्ग पद्धति			दे० का०	दे०
७१	६७०८	अश्वलायनश्रौतसूत्र पूवपटक प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०
७२	६७१०	अश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो । का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकितमख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१४X ११३ सें० मी०	१० (१-१०)	११	२४	पू०	प्राधुनिक	
२३८X१५ सें० मी०	१ (१-३, ५,७,९)			अपू०	स०१८८६	ग्राम्युदक श्राद्ध समाप्त सवत् १८८६ जेष्ठ वदि २ बुधवासरे पत्र नव ॥
३२४X १४७ सें० मी०	६ (१-६)	१३	४२	पू०	जीर्ण स०१६२५	लिखत मुरलिधर न० १६२५
२२X१२ सें० मी०	३ (१-३)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	अथायतस्कृत्यसंगालुत्तरामाभतिष्ठा विधान लिख्यते । (प्रारम्भ) X X X
२७४X ११७ सें० मी०	११ (१-११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति शारामोत्सर्ग पद्धति समाप्ता ॥ विधान परिजाते ॥ ... .. ... .. इदं पुस्तकं वाताजी महाराष्ट्रस्य लिखित स्वायत्तार्थं च
२३४X १०१ सें० मी०	६६(१-७ १-६२)	३३	४१	अपू०	प्राचीन	
२३६X १०६ सें० मी०	७०(६३- १७३)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति मचनानार्थं विरचिताया शशव नायन सूत्र प्रयोग दीपिकाया पठोध्याय समाप्त ॥

संक्र. क्र. विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा मसूहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस- वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६७५७	प्राश्वलायन सूक्त			२० का०	२०
७४	२८६६	ग्रामुरी विधि			२० का०	२०
७५	६७११	आहितात्ममरणविधि			२० का०	२०
७६	१०६६	आह्निक कर्म विधि	शेगकर मिश्र		२० का०	२०
७७	२३८१	आह्निक कर्म विधि			२० का०	२०
७८	१०६५	आह्निक तरंग	नद पंडित		२० का०	२०
७९	१०६७	आह्निक नियम			२० का०	२०

पत्रो वा पृष्ठो का भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे रक्तिमत्तया और प्रति पक्ति मे प्रथमसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? मपूर्ण है तो वनं- मान प्रथ वा विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावस्थान विवरण
		स	द			
३२५ × १०.५ सें० मी०	३० (१-३०)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति धाश्वत्थामन सूक्तानि ॥
१७३ × १०.८ सें० मी०	१५ (१-१५)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति धामुरी विधि समाप्त. ॥ शुभ ॥
२३३ × १०.२ सें० मी०	२१ (१-२१)	११	२६	पू०	प्राचीन	इत्यापस्तवाहितान्ने. सस्वार विर्णयः ॥
१८ × ११.८ सें० मी०	८ (१-८)	८	३६	पू०	सं० १६२१	इति श्रीधर्मवर्णनश्च विरचित सक्षिप्त- नृहिक कर्म विधि ॥ मापासितैकादश्या चन्द्रे लिखित इत्येषा दत्तशुक्लेन शुकलेन ? ॥ संवत् १६२१ श्रीरामो जयति ... ..
१६७ × १०.५ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
२६.८ × ११.५ सें० मी०	८५ (१-८५)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्रीधर्मार्थिकारिकुल ॐ कमलमार्तंड नवपडितृ वेस्मृतिसिधावाहिकतरु समाप्तिमगात् ॥ श्री कृष्णभजेत् ॥
२२.५ × ६.५ सें० मी०	२५ (१-२५)	१०	३७	पू०	प्राचीन	उक्त नात्रमया स्वयं स्वरचित यथाज्ञबलया- दिभिः प्रोक्त स्वनिह्न निर्णये तदधिलक्ष्य परलक्ष्ये... श्री सावसदाशिवार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०	६७६	आत्मिक मूल पद्धति	गुणनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
८१	६४२०	उग्ररथ शांति		(१)	मि० का०	दे०
८२	६६०६	उत्सर्जनोपाकरण प्रयोग (श्रावणी)			दे० का०	दे०
८३	६४२८	उदकशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८४	६८७	उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
८५	४८३४	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०
८६	६४७	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में प्रकाशित सख्या और प्रति पत्र में आधार सख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रथम का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२ × १०२ सं० मी०	१६ (१-१६)	१०	३८	पू०	प्राचीन	रघुनाथेन विद्वयं भट्टमाधवसूनुना ॥ कृता निबन्धात्प्रशाऽनुसम्लाऽप्राग्दिक पद्धतिः ॥१॥.....
१६३ × ७०६ सं० मी०	५ (१-५)	११	२५	पू०	प्राचीनिक सं० १६६५	इति शौनकावतोरपरम शान्तिः ॥ सं० १६६५ शान्ति १८३० भाष कृष्ण द्वितीयाया शुद्धवारेऽर्द्ध पुस्तक वेदान्तोपाह्व श्रीनाथेन आरभ्य च समापितम् ॥
२२७ × ८६ सं० मी०	८ (१-८)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इत्युत्सर्जनोपाकरण प्रयोगः ॥
२३३ × ६१ सं० मी०	२१ (१-२१)	१०	४८	पू०	सं० १७८३	इत्युदक शांतिः समाप्ता ॥ सं० १७८३ नल नाम संवत्सरे माघ शुक्ल १५ बुध वसरे तद्दिने ... .. ।
१४ × ६५ सं० मी०	६	१४	२५	पू०	प्राचीन	
३१ × ११७ सं० मी०	१० (१-१०)	१०	४८	पू०	सं० १८८३	इति शतवध समाप्त ॥ सं० १८८३ ॥
२३ × १२७ सं० मी०	१६ (१-१६)	११	२८	पू०	सं० १६११	इति श्री उपनयनपद्धित समाप्तम् सं० १६११ ज्येष्ठ शुक्लादशम्याममीवासरे लिखितं जुहारारामेण ... .. श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७	१६८४	उपनयनवेदारभ			३० पा०	३०
८८	४८०	उपनयन संस्कार			३० पा०	३०
८९	२३५७	उपनयन संस्कार			३० पा०	३०
९०	१९००	उपनयन संस्कार (सटीक)			३० पा०	३०
९१	२२१५	उपनयन संस्कार विधि			३० पा०	३०
९२	२३०	उपासना			मि० पा०	३०
९३	३९९७	उपासना प्रयोग	गंगाधर भट्ट		३० पा०	३०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१४६६	उपाकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
६५	१६७१	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
६६	१८६४	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
६७	५८६४	ऋषिपंचमी व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६८	३७१७	ऋषिमंडल			दे० का०	दे०
६९	३४६३	एकादशाह धाद विधि			दे० का०	दे०
१००	५८८	एकादशाह्निक कर्म			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	१६४१	एकादशी व्रत उद्यापन			२० का०	२०
१०२	७८४	एकादशाह श्राद्ध-प्रयोग (सपिंडन पद्धति)			२० का०	२०
१०३	६१०८	एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग			२० का०	२०
१०४	६००५	ऐकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग			२० का०	२०
१०५	५१८२	एकोदित्त			२० का०	२०
१०६	५०५४ १५	एकोदित्त प्रयोग			२० का०	२०
१०७	५०५४ १५	एकोदित्त श्राद्ध विधि			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का अकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ म पवित सख्या भोर प्रतिपत्ति मे अक्षर सख्या		क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था भार प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३०८×१६१ सें० मी०	६	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे एकादशी वृत (प्रत) उद्यापन समाप्त ॥
२७५×१५ सें० मी०	२१	१०	३४	पूर्ण	स० १६०२	इति श्राद्धविवेके सविडन पद्धति समाप्तम स० १६०२
२२५×६२ सें० मी०	६(१-६)	१०	४०	पूर्ण	प्राचीन	अथैकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग (प्रारभ)
२१८×८४ सें० मी०	५(१-५)	११	४१	पूर्ण	प्राचीन	सतिष्ठत एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग ॥ समाप्त ॥
१८८×११३ सें० मी०	४(१-४)	१६	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति समाप्तोय (अथैकोदिष्ट प्रारभ)
१६×७८ सें० मी०	१	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन	अथसाम्बत्सरिकैकोदिष्ट प्रयोग {(प्रारभ)}
१६×७८ सें० मी०	७ $\frac{१}{२}$	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	एकोदिष्ट श्राद्ध समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सप्रहेविरोप की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	४६०५	एकोद्दिष्ट श्राद्धविधि			२० का०	२०
१०९	५६५८	श्रीधर्मेहिककृत्य	रामप्रसाद मिश्र		२० वा०	२०
११०	७२४७	श्रीधर्मेहिक पद्धति	नारायणभट्ट		२० का०	२०
१११	३७२३	श्रीधर्मेहिक सर्पिडीकरण प्रयोग पद्धति	भट्टनारायण		२० का०	२०
११२	६५६४	कन्या रजस्वला शांति			२० वा०	२०
११३	३७११	कपिलघारातिथ्यं विधि			२० वा०	२०
११४	१९६१	कपिला निवास			२० वा०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स	द	६	१०	११
२३ X १० ६ सें० मी०	१८ (१-१८)	६	१६	पू०	स० १६३६	इति एकादिष्ट श्राद्धम् श्रीरामचन्द्रायनम. श्री कृष्णार्पणमस्तु सवत १६३६ श्री साके ७६६ मित्ती मार्गसिर वदि ८ भौमवारकु लिपि कृत ॥ राम ॥***
२६ ५ X १२ सें० मी०	१४ (८२-६३, ६५-६६)	११	३२	धपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्राम प्रसाद मिश्र विरचिते प्रपत्ति भूपत्ये श्री परमेश्वर चरण युगले द्वीपर मधुकराशयाना परमेकान्तिवानामोद्धर्दद्विह्व कृत्यानि स्वृत्ति समाप्तानि शुभमस्तु ।
२२ ४ X ६ ७ सें० मी०	४२ १-१६, २२- २४, २७-२८, ३१-४८	१०	३२	धपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामश्वर मूरि सुनु नारायण भट्टन कृताया मोदद्विह्विक पद्धतौ मरणविधानानि । समाप्ता चेय पद्धति ॥
२४ २ X १० ४ सें० मी०	७० (१-७०)	८	३४	पू०	स० १८७३	इति श्री भट्टरामश्वर मूरिस्तु भट्टनारायण कृतायामोध्यद्विह्विक पद्धत्यामरणविधानानि अस्तुसत स० १८७३ ॥ शुभमस्तु
१६ १ X ८ ६ सें० मी०	२(१-२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पितृग्रहे कन्या रजस्वला शाति ॥
११ ५ X ८ ५ सें० मी०	३(१-३)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति कपिलधारा नियं विधि समाप्त ॥
२० ५ X ८ ८ सें० मी०	४(१-४)	८	२४	पू०	प्राचीन स० १८३३	इति श्री कपिला निवास सपुत्रं समाप्त ॥ स० १८३३ साके १६६८ कमपुत्र शुदि पट्टो ६ रवो पुस्तक सपुत्रनिघिठ प० श्री मिश्र उमेद भितरीप्रति ---

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५	३५२०	कर्मकांड			दे० का०	दे०
११६	३५६६	कर्मकांड कौमुदी			दे० का०	दे०
११७	४०६६	कर्मकांड पद्धति			मि० का०	दे०
११८	२६१६	कर्मकांडविधि			दे० का०	दे०
११९	३७४३	कर्म कौमुदी			दे० का०	दे०
१२०	३४५३	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० वा०	दे०
१२१	२४६०	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० वा०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर मख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रंथस्या और प्राचीनता	अन्य प्रावश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	व	स	द	६	१०	११
२१५ × १०४ सें० मी०	७ (२-७)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ × १४३ सें० मी०	७ (३८, ४१-४६)	१४	५१	अपूर्ण	प्राचीन	
१६३ × १२७ सें० मी०	३ (१-३)	११	२४	पूर्ण	प्राचीन	इत्यन्वय ॥ नन्दलालेन लिखित अर्थ श्लोक ॥
२१३ × ११ सें० मी०	३३	८	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
३१४ × १४ सें० मी०	३६ (१-३६)	१४	५७	अपूर्ण	प्राचीन	इति कर्म कौमुद्या नाम कर्म पद्धति । (५० सं० २१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२२	१५४४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२३	४००६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२४	४४७६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२५	४४२६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२६	४६५२	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२७	५२६०	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२८	५६६१	कर्मविपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६ X १० ७ सें० मी०	७४ (२-४, ६-१६, २१-७८)	६	२३	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ X १४ सें० मी०	२१ (२-२२)	१४	५०	अपूर्ण	सं० १८६३	इति कर्म विषयः प्रथम संपूर्णम् सवत् १८६३ माघाद शुक्ल चतुर्दश्या १४ भीम दिने लिखित निम्न पुस्तक तत्र भारद्वाज गोत्रे मिथ्य लक्ष्मणादासतत्सुन मिथ्य मुरलीधरः ॥
२४ १ X १० ८ सें० मी०	२४ (१-२४)	१३	४१	पूर्ण	प्राचीन	इती श्री कर्मविषाये प्रह्लादारद तवादे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ (पत्र संख्या २३)
३०.६ X १४ ८ सें० मी०	८ (१-३, ४-६)	१३	४२	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सङ्घा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	४३५०	कर्म विपाक (चतुर्वचरण)			दे० का०	दे०
१३०	९६४	कर्म विपाक कथन			दे० का०	दे०
१३१	$\frac{४९२१}{३}$	कलश प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
१३२	५८४३	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३३	१५९८	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३४	३६३४	कलशस्थापनविधि			दे० का०	दे०
१३५	६४३६	काव-भयुक्त दर्शन- शास्त्र विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आदर्शक विवरण
		स	द			
(३३२ × १६७) सें० मी०	५८ (१-३,३, ४,४,५,५ -५५)	१४	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कर्म विपाके सहितायां पार्वती हर सवादे रेवति नक्षत्रे चतुर्थे चरणे ब्रह्मांड पुराणे पितृकामोत्तरे सप्तकुमार मारकडयप्रणालत्तरेकर्म विपाक सहिता- यां नारद ब्रम्हरीय प्रत्युत्तरेभ्रातृन्यादि- नक्षत्रे ॥
३० × १४५ सें० मी०	४	१२		पू०	सं० १६०६	इति श्री महाभारतेऽखिले कर्मविपाक कथन ॥ ॐ उत्तरसत् सं० १६०६ लिखत मुरलीधर ॥
१६ × १०७ सें० मी०	४	६	१७	पू०	प्राचीन	इति कलस प्रतिष्ठा ॥
१६ × ११ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
१३ × ६८ सें० मी०	८	६	१८	पू०	सं० १६०६	सं० १६०६ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे ११ गुरुवासरे लिखत कन्हैया ॥
१५ × ११६ सें० मी०	४	१२	१५	पू०	प्राचीन	इति कलशस्थापन विधि समाप्ता शुभमस्तु ॥ श्री देव्यंतम ॥
२२४ × ६३ सें० मी०	१	६	४५	पू०	प्राचीन	इति काक मंथुन शांति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६	६४२२	काक स्पर्श शान्ति			दे० का०	दे०
१३७	४७५६	कात्यायन त्रिकडिका सूत्र (रत्नानुसूत्र)	कात्यायन		दे० का०	दे०
१३८	$\frac{२३६}{१२}$	कात्यायनी तर्पण			दे० का०	दे०
१३९	२१९८	कात्यायनी तर्पण विधि			दे० का०	दे०
१४०	५१२२	कात्यायनी शान्ति	कात्यायन		दे० का०	दे०
१४१	$\frac{३२८६}{२}$	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०
१४२	८०५	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२० × ७७ सें. मी०	६	७	३१	पू०	प्राचीन	इति काक शर्मा शान्ति ॥
२४ × ६ × १० × २ सें. मी०	३ (१-३)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति कात्यायन त्रिकंडिका सूत्रं समाप्तं संवत् १८४७ माघ कृष्णष्टम्या निष्ठित श्री भट्टविश्वभारस्यात्मनेचन्द्र- शेखरेण वाराणस्याम् ॥***
१६ × १० × ५ सें. मी०	५	१५	१४	पू०	प्राचीन	इति कातीय तर्पण प्रयोगः ॥
१७ × ७ × १० × ७ सें. मी०	३	११	२२	पू०	सं० १९४४	इति कात्यायनी तर्पण विधि समाप्तं संवत् १९४४ ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिया है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
१४३	२२२२	कार्यायनी शाति			३० का०	३०
१४४	२२६६	कार्यायनी शाति	कार्यायन ऋषि		३० का०	३०
१४५	२२१६	कार्यायनी शाति			३० का०	३०
१४६	$\frac{७५७१}{२}$	कार्यायनी शाति प्रयोग			३० का०	३०
१४७	६३७५	काम्यवृपोत्तर्ग प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		३० का०	३०
१४८	१४८१	कारिवास्त			३० का०	३०
१४९	६४७१	कारिचिष्टि हीत			३० का०	३०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिमख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या श्रय पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७३ × १६'७ सें० मी०	१३ (१-१३)	१३	१८	अपूर्०	प्राचीन	
१७३ × ११ सें० मी०	१७ (१-१४, १४-१६) 	७	१५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री कात्यायन ऋषि विरचिता कात्यायनी शांति. सपूर्णम् ॥ ...
२५'५ × १०'८ सें० मी०	१२ (१-१२)	८	२८	पूर्०	प्राचीन	इति कात्यायनी शांति समाप्ता। शुभंभूयात्
२१ × १६'५ सें० मी०	१३ (१-१३)	१४	२१	पूर्०	प्राचीन	इति श्री कात्यायनी शांति समाप्ता ।
२१'७ × ६'३ सें० मी०	८ (१-८)	१०	३६	पूर्०	सं० १७४४	इति भट्ट रामेश्वर सुत भट्टनारायणतमज भट्ट रामहृष्य कृत शौनक मतेन नाम्य वृषारतमर्ग । प्रयोग ॥ सवत् १७४४ कार्तिक १३ तिथितमिद कृष्णेन ॥
२५'४ × ८'४ सें० मी०	२६ (१-२२, २५-३१)	६	४७	अपूर्०	प्राचीन	
२०'५ × १० सें० मी०	२ (१-२)	११	३१	पूर्०	प्राचीन सं० १७८८	निखिन मिद रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलमठेन सं० १७८८ मिति भाद्रपद ४० ११ मीमे मधुस रामे समाप्तम् ॥ ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा उपग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकारार	ग्रथ किम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५०	७४११	वातंवीर्यं दीपदानपद्धति	धमलावर		२० पा०	दे०
१५१	५७७५	वातंवीर्यार्जुनदीपदान			१० का०	दे०
१५२	५५३४	कार्तिकोद्यापनविधि			२० का०	दे०
१५३	$\frac{६१६}{२}$	वालीपूजापद्धति			२० का०	दे०
१५४	४०६६	कुड प्रकाशिका	राम	रामबाजपेयी	२० का०	दे०
१५५	१६५६	कुडमठपकारिका	रामचद्र		२० का०	दे०
१५६	७३३६	कुडमठपसिद्धि सटीक		विद्वलदीक्षित	२० पा०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूरा है? अपूरा है तो वर्तमान अंग का विवरण	संवत्सा और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		ब	स			
२७ × ११ ५ सें. मी०	८ १, ३-४, ७-८ १०, १२-१३	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२४ ५ × ७ ४ सें. मी०	१० (१-१०)	६	३८	पू०	प्राचीन	
२२ ७ × ८ ६ सें. मी०	१० (३-१२)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणो कातिको- द्यापन विधि समाप्त शुभमस्तु ॥
२३ ५ × १० ६ सें. मी०	२ (८-६)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२ × ७ ७ सें. मी०	४२ (१-४२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री नैमिष निवासि रामरचित कुड प्रकाशिका रामवाजपेय टीका समाप्ता ॥
२८ ५ × १२ सें. मी०	१२ (१-२०)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	
२२ ६ × ११ सें. मी०	३५ (१-३५)	११	४२	पू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री महर्षयमनेरस्य विटठल दीक्षित विरचिता स्व कृत मठप कुड तिडि व्याख्या समाप्तेति शिव सवत १६१७ पौषशुक्ल १० तदिने समाप्ताय ग्रंथ स्वाय पराय च श्री रामायणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रद्विषय की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	५७३०	कुडमठपसिद्धि			दे० का०	दे०
१५८	५४७६	कुडमठपसिद्धि	विद्वल दीक्षित		मि० का०	दे०
१५९	५२८३	कुडमठपादिनिर्माणविधि			दे० का०	दे०
१६०	७३२१	कुडमातंण्ड			दे० का०	दे०
१६१	६७५९	कुंडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६२	१०७३	कुंडरत्नाकर टीका		वियवनाथ द्विवेदी	दे० का०	दे०
१६३	६५१३	कुडलेष्टि हीत प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब			६	१०	११
३१२ × १५ सें० मी०	११ (१-११)	१४	४५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१७ × १०४ सें० मी०	५ (२-५)	११	४०	अपूर्ण	प्राचीन सें० १८३०	इति श्रीभज्योतिविज्ञ विद्वान् दीनित विरचिता कुड मडपतिदिद्वि × × सेवत् १८३० समये कार्तिक शुक्ल १४ चतुदश्या पुस्तक लिखित आत्माराम भट्टेन महाराष्ट्रेण ॥ शुभमस्तु ॥
२३७ × १० सें० मी०	६ (१-६)	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	अथ कुडमडपाधुपयुक्त भूतमत्त्व साधन माह ॥ ( पत्र सं० ४ )
२७ × ११५ सें० मी०	७ (१-७)	११	३८	पूर्ण	प्राचीन	इति कुडमातण्ड सपूर्ण ॥
२०६ × १०१ सें० मी०	६ (१-६)	१२	४६	पूर्ण	सें० १८२०	इति श्री कुडमारण्ड समाप्त ॥ सवत् १८२० शीप मासि बकुल पक्षे शिव तियो भाँन सदा शिवन तिथि ॥
२५५ × ११ सें० मी०	५४ (२-५५)	११	३८	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मद्रकल मत्सकल विद्याविधारद श्री श्रीपति दीवदि द्विवेदी मुनु विश्वनाथ द्विवेदी कृता स्वकृता कुड रत्नाकर टीका समाप्ता ॥ शुभमभवतु ॥
२०६ × ८७ सें० मी०	३ (१-३)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन	इत्याश्वनायनानुसारी कुडलेटि होत्र प्रयोग ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविभाग की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	८७१	कुडविचार			दे० का०	दे०
१६५	१३७७	कुडविद्युसुहोम विधि			दे० का०	दे०
१६६	६५६६	कुडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६७	६५६५	कुडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६८	६५६२	कुडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६९	६५११	कुडाक टीका		रघुवीरदीक्षित	दे० का०	दे०
१७०	७२७०	कुराव व्याख्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रमन्त्र	प्रति पृष्ठ में प्रतिपाद्य और प्रति पंक्ति में प्रथममन्त्र		क्या प्रथम पूर्ण है ? पूर्ण होता क्या मान प्रथम का विवरण	धरतया और प्राचीनता	प्रथम प्रायगा विवरण
		स	द			
३१५ × १५ सें० मी०	७ (१-७)	११	४०	पू०	स०१७५०	इति कुडसिचार समाप्त ॥ मने १६१५ पान्ना पृष्ठ १ पृष्ठे लिखितमिदं पुस्तकं प्रथमाराम ज्योतिर्विदिभ ॥
२१ × १० सें० मी०	२	१०	३१	पू०	प्राचीन	
२३६ × १० सें० मी०	२२ (१-२२)	११	३८	पू०	स०१८०६	इति सगमनेरस्य विट्ठल दीक्षित विर- चिता स्वहृत कुडसिद्धि व्याख्या समाप्ता सवत् १८०६ मीती भाष वदी सतीमी वार शुभ दी ... ..
२३७ × १० सें० मी०	३८ (१-८३)	६	३३	पू०	प्राचीन	इति सगमनेरस्य विट्ठल दीक्षित विर- चिता स्वहृत कुडसिद्धि व्याख्या समाप्ता ॥ + + + स०१८०४ मीती वैशाख शुद्ध ५ समाप्ता ॥
२३ × ६४ सें० मी०	२६ (१-२६)	६	४४	पू०	स०१८१६	इति सगमनेरस्य विट्ठल दीक्षित रचिता स्वहृत कुडसिद्धि व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १८१६ ॥
२२ × ८४ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	३१	पू०	प्राचीन स०१८७३	इति कुडार्क टीका समाप्त ॥ समत् १८७३ भा (के) १७३६ प्राश्विन कृष्ण ६० शनिवार ॥ विट्ठल दीक्षित सूनना रघुनाथेन लिखित पुस्तक ... ..
२७२ × ११५ सें० मी०	३ (१-३)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति कुडार्क समाप्त ॥

क्रमांक प्रो. विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७१	१००६	कुडोद्योत			२० का०	२०
१७२	६४३०	कुंभ विवाह			२० का०	२०
१७३	६०२०	कुचकटिका			२० का०	२०
१७४	३६५२	कूपस्थापन विधि			२० का०	२०
१७५	६३७६	कूष्मांड होम			२० का०	२०
१७६	६५०१	कूष्मांड होम			दि० का०	२०
१७७	१६०८	कूपारामादि प्रतिष्ठा विधि			२० का०	२०



पर्वों या पृष्ठों का आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५५X १०२ सं० मी०	६ (१-६)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति कुडोद्योत ॥
२२५X १०३ सं० मी०	१	६	३५	पू०	स०१=१३	इति कुम्भ विवाह ॥.....सवत् १८१३ वंशाब्द शुद्ध ८ ॥
१७१X १२६ सं० मी०	५ (१-५)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति कुराकडिका सपूर्णम् ॥
२३७X १०६ सं० मी०	१० सं० ३ (१-३)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति शरवधनम् ॥
१६१X६६ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२६	पू०	सं० १६४६	इति कृष्णाट होम समाप्त ॥ श्री सवत् १६४६ मी० फागु० शु० व० २
१३४X६१ सं० मी०	४ (१-४)	७	३२	पू०	प्राचीन	
३२८X १२५ सं० मी०	१३ (१-१३)	६	३८	पू०	सं० १६४०	इति दिव्यालेभ्योऽपवलिदस्याततोदिक्या लेभ्यो नमस्कुर्वा देवालयरूपतदादि (तहागादि) भाराम प्रतिष्ठा पुस्तकं समाप्तम् ॥ सवत् १६४० ज्येष्ठ वदि एकदश्या ११ शुक्रवागरे...शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७८	४४४७	कूपारामोत्सर्ग विधि			२० का०	२०
१७९	७७	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८०	१८२	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८१	२३५	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८२	४१७	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८३	४७५३	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		२० का०	२०
१८४	३५२८	कृत्यरत्नावली			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७ ४ X ११ ८ सें० मी०	१० (१-४, ४, ५-७, ६- १०)	७	३३	अपू०	स० १६१८	इति कूपारामोत्सर्गः समाप्त ॥ सवत् १६१८ श्रावण शुक्ल पूर्णिमाती शुद्ध-वासर इदं पुस्तकं रावली मोषे
३० ४ X १४ १ सें० मी०	६८ (१-६८)	१३	४२	पू०	प्राचीन स० १८१७	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणभिज्ञतस्तु दुपाद्य बालकृष्ण भट्टागज विट्ठल भट्टाभिधयुधवरस्तु धर्मशास्त्र परावारीश्री श्रीमद्रामचन्द्रविरचिता वृत्त्यरत्नावली संपूर्णा ॥ श्रीरस्तुकल्याणस्तु ॥ श्री ॥ सवत् १८१७ आषाढ शुक्ल ४ चतुर्थी भाँमे लिखिता मिश्र नौबतराय श्री रस्ता ।
(२५ X १० ६) सें० मी०	८७ (१- २४, २८- ६३, ६६- ६२)	१०	४१	अपू०	प्राचीन स० १७६७	इति श्री मत्पद वाक्य***श्री प रामचंद्र भट्ट विरचिता वृत्त्य रत्नावली संपूर्ण ॥ म० १७६७ कातिक शुक्लकादश्या समाप्त ॥ लिखितमिदं पुस्तकम्*** गगारामेण ॥
(३० ३ X ११) सें० मी०	८ (३४- ४१)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदविट्ठलभट्टागज रामचंद्र विरचिता वृत्त्यरत्नावली समाप्त ॥
३० ७ X १३ सें० मी०	१२	१६	५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञ तत्सदुपाध्य बालकृष्ण भट्टागज विट्ठल भट्टाभिध युधवरस्तु धर्मशास्त्र या रावारीश्री श्रीमद्रामचन्द्र भट्टविरचिता वृत्त्य रत्नावली समाप्तिमगमत् । ६
२१ ६ X १० २ सें० मी०	१८ २, ५-२१	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति कातिव वृत्त्य + + + ॥
२५ १ X ६ सें० मी०	६८ (१-६८)	६	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञतत्सदुपाध्य बालकृष्णभट्टागज विट्ठल भट्टाभिध युधवरस्तुधर्म***श्रीमण श्रीमद्रामचंद्रभट्ट विरचितावृत्त्य रत्नावलीमगमति मगमत् ॥
सें० मी० २०						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	११६३	कृशरामश्राद्ध.			दे० का०	दे०
१८६	७५६४	कृष्णविरचि ग्रथिपेक	श्रीकृष्ण		दे० का०	दे०
१८७	७४०४	कृष्णव्रतोद्यापन			दे० का०	दे०
१८८	$\frac{३१२}{२}$	कृष्णाचन पद्धति (न्यास)	गो० निवाकंशरण देवाचार्य		दे० का०	दे०
१८९	५६०२	कोकिलव्रतोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१९०	६३७७	व्रमप्राप्तोविवाह			दे० का०	दे०
१९१	४७१६	क्रियापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१५ × १४ सें. मी०	५	११	२२	पू०	सं० १६३८	इति श्रीकृष्णराज आर्द्र समाप्ता शुभ-मस्तु श्रीकृष्ण १ सवत् १६३८ मः राजनगर लिपत ५० श्री अवस्थी जानकी प्रसाद जूकी जाये ता' जै राघे कृष्ण पठुच्ये ॥
१७२ × ८६ सें. मी०	२ (१-२)	११	२२	पू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्रीकृष्णविरचिसिद्धिको समाप्त शुभ भूयात् ॥.....
३४ × १३ सें. मी०	६ (६-१४)	६	४६	अपू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तरे श्रीकृष्णसुषिष्ठर सवादे श्रीकृष्ण ब्रतोद्यापन ॥
२१५ × १५ सें. मी०	२८	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१३२ × ७७ सें. मी०	११ (१-६, ६-१०, १४-१६)	७	२८	अपू०	प्राचीन	एतत्सर्वं प्रभोक्तव्यं वीरिणाग्रतमान-रेत् ॥ ब्रह्मवाद्यप्रभावेण वैद्यस्य नैव ज्ञायते ॥ इति उद्याग्न त्रिधि ॥
१६८ × १०० सें. मी०	२४ (१-२४)	१०	२७	पू०	शके १६५६	शके १६५६ ध्यानदानम भवत्सरे अश्विन मास सप्तम्या समाप्त ॥..... ( मुख पृष्ठ )
२७६ × ११२ सें. मी०	२५ (१-३, ५-६, १२-२५, २६-३०, ३३-३५, ४१)	६	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	$\frac{१२५१}{२}$	शौरविधि			दे० का०	दे०
१६३	५७६४	गयापूजा			दे० का०	दे०
१६४	६००७	गयास्नानपूजनविधि			मि० वा०	दे०
१६५	३२४०	गरुपतिपूजा			दे० वा०	दे०
१६६	३३८३	गरुपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८४	गरुपतिपूजाविधि			दे० का०	दे०
१६७	५१६६	गरुहोमविधि			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१२३ × ७८ सें. मी०	७ (१-७)	७	११	पू०	प्राचीन	इति क्षीर विधि ॥
१४६ × १०८ सें. मी०	२	१३	१७	अपू०	प्राचीन	
१५६ × १२१ सें. मी०	१४ (१-१४)	७	१६	पू०	प्राचीन (सं० १६४३)	इति गणपूजन विधि समाप्त ॥ राम वेदाक चद्राब्दे आश्विने × × × × शुभ भूमात् ॥ द्विजेरिति इति पाठ ॥
२११ × ८३ सें. मी०	६ (१-६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति पूजनम् ॥
३१४ × १२३ सें. मी०	२ (१-२)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति गरुडनि श्रुता ब्राह्मणाय इमां दक्षिणा दास्ये इति सनत्प* ॥
१५६ × १०२ सें. मी०	६ (१-६)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति पूजा समाप्त ॥
२३८ × ८४ सें. मी०	६ (१३-१८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति दौघायन प्रोक्तो गणहोम-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या सत्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	$\frac{२३६२}{२}$	गणेश चतुर्थीपूजाविधि			३० का०	३०
२००	$\frac{२४३४}{२}$	गणेशपूजन			३० का०	३०
२०१	४११६	गणेशपूजन			३० का०	३०
२०२	६३५०	गणेशपूजन विधि			३० का०	३०
२०३	७५३१	गणेशपूजा			मि० का०	३०
२०४	३१४	गणेशपूजाविधान			मि० का०	३०
२०५	३४२७	गणेशपूजाविधि			३० का०	३०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	[ग्रन्थस्य और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१२ × ६७ सें० मी०	१२	६	११	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश जू की पूजा विधि सपूर्ण शुभ भवति मंगल ददात् ॥
२५.८ × ११.२ सें० मी०	१३	११	३४	पूर्ण	प्राचीन	इति गणेश पूजन समाप्तम् ।
१७.१ × ११.२ सें० मी०	८	७	१७	अपूर्ण	प्राचीन	नया कृत पूजनेन यथाज्ञानाज्ञानो- पपन्न भगवान्सर्वात्मा श्रीसिद्धिबुद्धि सहित महागणेश प्रति प्रियतां ॥ ( अंत )
१६ × १२ सें० मी०	६ (१-६)	६	१२	०	प्राचीन	इति श्री गणेश जू की पूजन संपुरण सुभ भवतु मंगल ददात् ॥
२१.८ × ६.७ सें० मी०	६ (१-६)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	
१६.५ × १०.५ सें० मी०	६ (१-६)	८	१६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१८	जै गणेश जी सुभं मस्तु जयाप्रतय लिपतंममदोषो न दियते । सं० १६१८ अस्वनिप्रतीया ३ शुक्ल चन्द्रवार । श्रीरीदत्त.....
१६ × १० सें० मी०	७ (१-७)	१२	२५	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सप्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	६६२१	गयाकार्यानुष्ठान पद्धति			दे० का०	दे०
२०७	७६६२	गयापद्धति			दे० का०	दे०
२०८	४७२१	गर्भाधान			दे० का०	दे०
२०९	३७७४	गर्भाधान धादि संस्कार- विधि			दे० का०	दे०
२१०	६४४०	गर्भाधान मस्कार	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२११	७६२०	गायत्री			दे० का०	दे०
२१२	२२४१	तुविंशति गायत्री जपम्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूरा है ? अपूरा है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७१×६६ सें० मी०	१८	११	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मन्नामेश्वर भट्टात्मज नारायण भट्ट विरचिते त्रिस्थलीवेलौ गद्या- प्रकरणे गद्या कायानुष्ठान पद्धति ॥ तीष कर्त्तव्य सदेह + + + ॥
२०८×६७ सें० मी०	१८ (१-१८)	१०	३६	पू०	प्राचीन स० १८७३	इति गद्या विधि अकीर्ण विस्तार अद्यानुकमणिका ॥ सवत् १८७३ ।
२७७×११ सें० मी०	२ (१-२)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२८×१२४ सें० मी०	१० (१६-२८)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२२×८७ सें० मी०	१६ (१-१६)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री विद्वन्मुकुटनाथिष्य श्री मन्नामे श्वर भट्ट सुत नारायण भट्ट विरचिते प्रयोग रत्नेस्तज्ज्येष्ठ सुत रामकृष्णो • • • दुष्ट रजो दशन ध ति ॥
१६८×११४ सें० मी०	१६ (१-२, ४, १८)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
३३२×६२ सें० मी०	१	३८	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री चतुर्विंशति गायत्रि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	४६३४	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१४	१७४३	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१५	३८१६	गायत्री जपविधि			मि० का०	दे०
२१६	$\frac{१५०२}{३}$	गायत्री तर्पण			दे० का०	दे०
२१७	७६४१	गायत्रीन्यास ध्यानपूजा			दे० का०	दे०
२१८	६२४	गायत्री पद्धति			दे० का०	दे०
२१९	१५५०	गायत्री पुराणपर प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या		कथा ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१२२×१११ सें० मी०	६ (२, ६-१३)	११	१५	अपू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री ब्रह्म ऋषिः बसिष्ठ याज्ञवल्क्य प्रश्ने गायत्री नल्प संपूर्ण ॥ सं० १८३४ वर्षे ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे ७ गुरुवासरे ॥
२७×१०८ सें० मी०	३ (३३-३५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमायत्री नल्प संपूर्णम् ॥
१४२×११ सें० मी०	४ (१-४)	६	१७	पू०	आधुनिक	
१४×१० सें० मी०	८	८	१२	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्त ।
२३.५×८७ सें० मी०	१० १-१०	६	२६	पू०	प्राचीन	
१६×६५ सें० मी०	७	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२०×८४ सें० मी०	६	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीभट्ट शबूरात्मजभट्ट शाब कृव गायत्री पुरश्चरणप्रयोगः ॥***

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	७०५८	गायत्री प्रयोग			२० का०	२०
२२१	२००६	गायत्री विधान			२० का०	२०
२२२	३५६४	गायत्री विषयवित्तवल्प			२० का०	२०
२२३	६८६५	गावस्तुत प्रयोग			२० वा०	२०
२२४	२७०४	गुरु दीक्षा ?			२० वा०	२०
२२५	३०६३	गुह्यनाल्यापुत्रा पद्धति			२० वा०	२०
२२६	३६२३	गृहदान प्रयोग			२० वा०	२०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सन्ख्या और प्रति पक्ति म अक्षर मख्या		क्या ग्रय पूर्ण है? अपूर्ण है ता वर्त मान अग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५५ × १६२ सें० मी०	६	१४	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
१७६ × ११३ सें० मी०	१	८	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
१७५ × ६४ सें० मी०	८	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
२३५ × १०१ सें० मी०	५ (१-५)	११	३१	पूर्ण	प्राचीन	इति ज्योतिष्योमेशावस्तुत् प्रयोग. समाप्त ॥
१६ × ७ सें० मी०	४ (१-४)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति सकल्प्य कृत मत्र चल मत्र चानु- सथाय सात्विक त्याग इत्त्वम् द्वयमु- च्चार्य श्री मनारायण चरणारविंदयो सर्वदेश सर्व कालस " ॥
२३१ × ८४ सें० मी०	५ (१-५)	६	४२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गृह्यकात्या पूजा पद्धति संपूर्ण ॥ नम श्रीगृह्याचार्य ॥
२३५ × १० सें० मी०	२	८	३६	पूर्ण	प्राचीन सें० १८१२	इति गृहदान विधि संपूर्ण श्रीरक्षण- मस्तु ॥ सवत् १८१२ आषाढ शुद्ध ५ समाप्तम् ॥ पुस्तकमिदं रामप्रहकर विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठमहोदय लिखावित स्वयं परार्थं च । श्री साव शिव प्रसन्नोस्तु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	प्रयनाम	प्रयकार	टीकाकार	प्रय विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२७	६३०	गृह बीषय			दे० का०	दे०
२२८	१६२५	गृहप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२२९	५२३२	गृह प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२३०	४५३८	गृहस्थ रत्नाकर			दे० का०	दे०
२३१	७२६९	गृहारभ शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
२३२	१०३१	गृह्यसार	बोपरा भट्ट		दे० का०	दे०
२३३	५४१३	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पणित सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्णा है तो वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अक्षर आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	व	स	द	६	१०	११
२७३ × ११५ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३५	पू०	प्राचीन स० १६२१	इति गृहदीपक समाप्तम् । स० १६२१ शाके १७८६ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे अमावस्या भुमी वाशरे लिपित्वा दोजहुरामशपट्टाऽर्पयत् तत्त्वे ।
३० × १३ सें० मी०	३ (१, २ अज्ञात)	६	४०	अपू०		
२६४ × १०३ सें० मी०	१३ (१-१३)	१०	४१	पू०	प्राचीन स० १६२३	इति गृहप्रतिष्ठा विधि ॥ सवहसरे १६२३
२६५ × ११२ सें० मी०	१५० (१-४८, ४८, ४९-१४९)	८	४४	अपू०	प्राचीन	इति गृहस्थरत्नाकरे दातृनिरूपण तरण ॥ पू० (३५)
२८१ × १०८ सें० मी०	४ (१-४)	६	३१	पू०	प्राचीन स० १६१३	इति गृहारभ शिलायास्य विधि समाप्त श्रीरस्तु स० १६१३ चैत्र शुदि १५ रवौ ॥
२३ × ८६ सें० मी०	४४ (२५-६८)	७	२८	अपू०	स० १७३५	इति श्रीमहोपाध्याय श्रीमद्रत्नाकरोक्तपण- भट्ट विदुषा विरचिता गृह्यसार समाप्त ॥ स० १७३५ आषाढ कृष्ण द्वादश्या दश- पुत्ररघुनाथेन स्वार्थ परीपकारार्थं च लिखितो गृह्यसारः समाप्त ॥
२४२ × १०५ सें० मी०	२८ १-२३, २३- २७	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय को आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीनाथार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३४	५८३३	गोकुलाष्टमी पूजा			दे० का०	दे०
२३५	६६३५	गोतमस्तोत्रादि	रघुनाथ		दे० का०	दे०
२३६	७२४८	गोतावली			दे० का०	दे०
२३७	४७३२	गोत्रोच्चार			दे० का०	दे०
२३८	६३४१	गोदान			दे० का०	दे०
२३९	७७०६	गोदान			दे० का०	दे०
२४०	४२३८	गोदान			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्षितसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूरा है? अपूरा है तो वन मान अंग का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४५ × १०७ सें० मी०	४ (१-४)	७	१८	पू०	प्राचीन	गोकुलाष्टमि पूजा समाप्त ॥
२३१ × ६४ सें० मी०	२४ (१-२४)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १८०५	इति श्री मदयाचितोपनामकह्य भद्र सुते नरघुनाथेन एषा पद्धतिविरचिता ॥ शुभमस्तु ॥ सवत १८०५ मिति पौषवदि द्वितीया पुस्तकमिदं राम हृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठस्य ॥
२३८ × ६५ सें० मी०	१० (१-१०)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२३८ × १०४ सें० मी०	६ (२-७)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति गोब्राह्मण समाप्तम् ॥
२३३ × ६८ सें० मी०	४ (१-४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति गोदान प्रथमा० ॥
२३३ × ६८ सें० मी०	७	११	३८	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१४ (२-१६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकानय की घातकत मक्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रयनाम	ग्रयवार	टीनाकार	ग्रय विस वस्तु पर लिया है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३८६५	गोदानपद्धति			दे० का०	दे०
२४२	$\frac{३०४६}{६}$	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४३	२३५४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४४	२०००	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४५	२१५८	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४६	६०२१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४७	१३६०	गोदान विधि			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	४	स	द	६	१०	११
२०७ X ६३ सें० मी०	५ (१-५)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति गोप्रदान पद्धति समाप्ता ॥
(१६७ X १३१ सें० मी०)	३३	१६	१७	पू०	प्राचीन स० १८८५	इति गोदान पद्धति संपूर्ण ॥ स० १८८५ ॥
२५२ X ११२ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२४	पू०	(कृमिकृति) स० १६१५	इति स० १६१५ तत्रमासे महामागल्यमासे शीपमासे शुक्लपक्षे द्वादश्या १२ आदित्य वासराश्विनाया लिख्यत मिश्र प्रभूनाल पठनायं १ इति गोदान विधि समाप्तम् ॥ राम-राम
२८ X १३३ सें० मी०	७ (१-७)	१०	३१	पू०	प्राचीन (जीर्ण) स० १६४४	इति श्री नारदपुराणे गोदान विधि समाप्त । स० १६४६ मासोत्तम मासे श्राद्धपद मासे कृष्ण पक्ष शुभतिथी द्वितीयान्
१६३ X १२३ सें० मी०	४ (७-१०)	११	१६	अपू०	प्राचीन	
२७८ X ११६ सें० मी०	४ (१-४)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे प्रयाग महात्म्ये गोदान विधि निरूपण पद् पचाशत्तमोऽध्याय ॥
१२३ X ८ सें० मी०	४	८	१५	पू०	प्राचीन	इति सक्षेपेण गोदानविधि

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीवानार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२४८	२८८४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४९	३८८१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२५०	७६२३	गोदान (सूक्त) विधि			दे० का०	दे०
२५१	$\frac{४३३७}{८}$	गोदार			दे० का०	दे०
२५२	७५८५	पूजाविधि गोपालकृष्ण			दे० का०	दे०
२५३	२५६७	गोपाल गायत्री मगन्यास			दे० का०	दे०
२५४	६५६३	गोप्रसव शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२३ × १० सें० मी०	६ (१-६)	१०	३४	अपूर्ण	जीर्ण प्राचीन सं० १७८१ शाके १६४६	इति साधारण.....॥ सुभमस्तु ॥ संवत् १७८१ साके १६४६ माघवदि दसम्या
१५७ × १५ सें० मी०	८	११	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
३१५ × ११७ सें० मी०	४ (१-४)	७	४२	पूर्ण	प्राचीन	इति सूक्ष्म विधि समाप्ता .....
१६ × १३३ सें० मी०	२ (३५-३६)	१२	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति गर्डत्यारणी (?) गळत्यारणि ? समाप्ता ॥
१७ × १० सें० मी०	८	८	१७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गोपालकृष्ण पुत्रा समाप्त ॥
२० × १०५ सें० मी०	३ (१-३)	६	२२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गोपाल गायत्री पंच अग्न्यास. संपूर्ण ...
१६३ × ६ सें० मी०	१	७	४५	पूर्ण	प्राचीन	इत्यद्भुत सागरे मारदोक्ता सीढाकं शो प्रसव भाति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगम संख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	प्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२५५	७२७३	गोमुखप्रसव			दे० का०	दे०
२५६	४३३२	गोमुख प्रसव विधि			दे० का०	दे०
२५७	६४२३	गोमुख प्रसव शांति			दे० का०	दे०
२५८	६४३४	गोमुख प्रसव शांति प्रयोग			दे० का०	दे०
२५९	४७९९	गोमुख शांति			मि० का०	दे०
२६०	७९६४	गौतमी पद्धति			दे० का०	दे०
२६१	२७३	ग्रहमख पद्धति			दे० का०	दे०



पत्रो मा पृष्ठो वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ प्र	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ६३ सं० मा०	२ (१-२)	८	३०	पूर्०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव ॥ + + +
२१ × ८५ सं० मा०	२ (१-२)	६	३१	पूर्०	सं० १७६७	इति गोमुख प्रसव विधि ॥ सं० १७७६ शर्वर्यदि चैत्र शु० १
२० × ७६ सं० मा०	४ (१-४)	७	२७	पूर्०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव शांति समाप्तः ॥ श्री ॥
२२२ × ६ सं० मा०	६ (१-६)	७	३०	पूर्०	सं० १६१५	सवत् १६१५ भाद्रपदशुक्ल १२ रवि- वाररे इद पुस्तक वेतालपनामकस्य ॥ शुभ ॥
२४३ × ११ सं० मा०	६ (१-६)	८	३४	पूर्०	सं० १६६६	इति श्री म० गोमुखप्रसव शांति समाप्ता । सं० १६६६ वाशिकरोपा- न्ह काशिनानथ धमणा लिखितम् ॥
२७१ × ११२ सं० मा०	२८ (१-२८)	६	३४	अपूर्०	प्राचीन	अथ गौतमी पद्धति लिख्यते (प्रारम्भ)
१७३ × १०५ सं० मा०	७२	७	२२	पूर्०	सं० १६६६	इति ब्रह्मख पद्धति समाप्त आश्विने मासे कुस्त पञ्चतुमयाया गृहवाररे ७ तस्मिन् दिनेषु लिखित श्री गुरोरक्ष प्रसादत ॥ श्री रस्तु ॥ सं० ६६६६ दुमति नाम सवरतरे शुभ उभयो लेखक पाठकयो ॥ लिखित इद पुस्तक पुष्पो- त्तम मिश्र । शुभ भवतु स्वार्थ परमायं च ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	दीवाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	५६३०	ग्रहवास्तुपूजन			२० का०	२०
२६३	२२१६	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		६० का०	२०
२६४	२६८०	ग्रहशांति			६० का०	२०
२६५	१८४१	ग्रह शांति			२० का०	६०
२६६	१६२४	ग्रह शांति			६० का०	२०
२६७	६७	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		२० का०	२०
२६८	$\frac{४१७२}{२}$	ग्रहशांति विधान			२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठा या प्रानार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति मध्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७४४ ११५ सं० मी०	४(१-४)	६	४३	पूर्ण	प्राचीन	
२५८४११ सं० मी०	८ (१-८)	८	३५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीवाल्यायन ऋषि विरचिता ग्रह- शांति समाप्ता १
२२५४८८ सं० मी०	३	१०	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
१७४१०५ सं० मी०	२७	१२	२५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६०	इति नवगृह मध्य यज्ञ समाप्त ॥ सं० १८६० मागसिर सूदि ११ गुरुवारैण त्रिपित जोसिचनराम सूत पुत्र कालुराम पुस्कर मध्ये ॥ श्रीमस्तु ॥ वत्प्राणमस्तु ॥
२५५४१५ सं० मी०	१६ (१-२, ४-१७)	१२	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१६४१३२ सं० मी०	१०		१५	पूर्ण		इति वाल्यायन ऋषि विरचिता ग्रह शांति समाप्ता शुभेभूयास्तेष्वक पाठ- कयोस्ताम्बकृपात. ॥ कृपनाय नम ॥ राम राम
१८८४ १३८ सं० मी०	२३ (१-४, ६-२७)	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति प्रवर्गभं समाप्त । (१० सं० २७)
सं० सं० २३						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	१०२४	ग्रहशास्त्रविधि			दे० का०	दे०
२७०	$\frac{२४३४}{२}$	ग्रह स्थापन विधि			दे० का०	दे०
२७१	६७५२	ग्राहस्तोत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
२७२	५०१७	घृत तुलादान प्रयोग			मि० का०	दे०
२७३	५६१७	चटिका विधान			दे० वा०	दे०
२७४	५२५१	घटी जप विधि			दे० वा०	दे०
२७५	६३०	घटीविधि			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रिन संख्या और प्रति पत्रिन में अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४३× १५ सें० मी०	६ (१-६)	११	२५	पू०	प्राचीन (स०१८६०)	इति आ ग्रहशास्त्रि विधि समाप्तम् शुभ भूयात् ॥ म० १८६० चैत्रशुदि १५ बुधदिने श्री शो (सो) तारा नायनम् ॥
२५८× ११२ सें० मी०	(१३)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति कात्यायन ऋषि विरचिते ग्रहा-स्थापन विद्याय समाप्त ॥
२४×११ सें० मी०	५ (१-५)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति श्राव स्तोत्र प्रयोग ॥
१६५×६३ सें० मी०	१	१५	३७	अपू०	आधुनिक	
२४४× १०५ सें० मी०	११(१- १०,१३)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति चडिका विद्याय संपूर्ण ॥
२२×१०२ सें० मी०	५ (१-५)	११	३६	अपू०	प्राचीन	अथ चडो अपविधि ॥ (प्रारम्भ) × × ×
२४४× ७६ सें० मी०	६ (१-६)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति चडो विधि ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकानुय की शागत सख्या वा मद्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
२७६	२४३७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७७	२२५७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७८	६४४६	चतुर्थाश्रित चद्रार्घ्यं			दे० का०	दे०
२७९	१५०७	चतुष्टय सप्रदाय पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
२८०	७२०१	चलाचलमतिपदा विधि			दे० का०	दे०
२८१	७१८३	चवरी			दे० का०	दे०
२८२	६४९९	चार्तुमास			दे० का०	दे०

पत्रो वा पृष्ठा वा श्राकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्षित संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रथ वा विवरण	श्रवस्था और प्राचीनता	अथ श्रावश्यक विवरण
सं	सं	सं	सं	१०	११
२४५ × ११ सं० मी०	२५	६ ३८	५०	प्राचीन	इति श्री मद्रुवाध्यायोपनाम शिव भट्ट मुत् सतीगभज नागाजी भट्ट कृते मारकंड्य पुराणात्गत सप्तसत्वारव्य चंडीस्तोत्रे माध्याने चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥
१८८ × १६१ सं० मी०	५० म० ३३ (२-१६ १८-३५)	१३ ४०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६३२	इति श्री मद्रुवाध्यायोपनाम शिवभट्ट मुत् सतीगभज नागाजी भट्ट कृते माकंड्य पुराणात्तर सवत् १६३२
१३६ × ८२ सं० मी०	३ (१-३)	५ १३	पूर्ण	प्राचीन	इति चद्राध्य ४ वृत् ॥
१८ × ६७ सं० मी०	७ (५-११)	८ २५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५८ × ११२ सं० मी०	१७ (१-१७)	६ २८	पूर्ण	सं० १६१५	इति चलाचल प्रतिष्ठा विधि सवत् १६१५ तीपमास त्रितेपक्ष त्रयोदश्या श्राद्धवेतया शोभारामेण लेखस्यात्
२६२ × १५ = सं० मी०	१४ (१-११, १३-१५)	१३ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाब्रह्मपुराण कर्कण्डे- विवाह विधि चतुर्थाध्याय + + सं० १६०३ अर्धगठमध्ये + + ॥
२२५ × ६५ सं० मी०	५३ (१-१३, १५-५४)	१२ ४८	अपूर्ण	प्राचीन	इति होत्र पशुवधश्चातुर्मास्यानां । ( पत्र सं० ५४ )

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विसयस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८३	१२०६	चातुर्मास्यविधि			दे० का०	दे०
२८४	६७०६	चातुर्मास्यहोत्र			दे० का०	दे०
२८५	५१४२	चित्तगुप्त पूजा विधि			दे० का०	दे०
२८६	७०८८	चूडाकरण			दे० का०	दे०
२८७	६६७०	चौलप्रयोग			दे० का०	दे०
२८८	६१३३	जनमारी शांति			दे० का०	दे०
२८९	६२५४	जप			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में पत्रसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थ की अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२ × १३ सें. मी०	६ (१-६)	७	२३	पू०		इति चातुर्मास्य विधि- संपूर्णं सूत्र भूयात् ।
२२ × १५ सें. मी०	८ (१-८)	१०	३१	पू०	प्राचीन	
१६ ७ × १६ ८ सें. मी०	११ (१३ १३-२२)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२२ १ × ११ ६ सें. मी०	६ १-६	६	२२	पू०	प्राचीन	इति षड्विंशत्य पुस्तक समाप्तम् चंद्र मार्ते सिते १३० + + + + +
२२ ४ × ७ ७ सें. मी०	७ (१-७)	६	३८	पू०	प्राचीन	
१७ २ × ७ ५ सें. मी०	४	८	२१	पू०	प्राचीन	इति विद्यानमानायां वर्षे प्रोक्ता जन- मारी शांति समान्तं ... ..
२६ ८ × १० ६ सें. मी०	२	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविषय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	४८१६	जपविनियोग			दे० का०	२०
२६१	१६१३	जल गायत्री			दे० का०	२०
२६२	३७५१	जलाशयकूपोत्सर्ग			दे० का०	२०
२६३	१३०६	जलाशय चत्वर प्रतिष्ठा			दे० का०	२०
२६४	५६४५	जलाशयारानीत्सग मयूख	नीलकण्ठ भट्ट		दे० का०	२०
२६५	२५१०	जनाश्रयोत्सर्ग	नीलकण्ठ भट्ट		दे० का०	२०
२६६	४४४६	जलाशयोत्सग विधि	नारायण भट्ट		दे० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द ग्र	व	स	द	९	१०	
१७ X १० ७ सें० मी०	३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
१६ X ११ सें० मी०	१	७	२०	अपू०	प्राचीन	
(२७ ६ X १५ १) सें० मी०	२५ (१-२५)	१२	२६	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति जलाशय कूपोत्सर्गं समाप्तं सवत् १८६६ मासानामुत्तमे फल्गुने मासि वृष्णेपक्षे एकादश्या शनिवासरे लिखित मिद पुस्तक लक्ष्मी नारायणेन ... ॥
१६ ३ X ६ २ सें० मी०	३७ (१-३७)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १६०७	इत्यारामामोजलाशय चत्वर प्रतिष्ठ-समाप्ता । श्री वृष्णायनम सं० १६०७ शाने १७७२ मासोत्तममासे ज्येष्ठ वृष्ण ३० चद्रवासरे त्रिपि वृत् मिथ्र ढान चद्र राम पुरव । श्री वृष्ण ।
२३ ४ X ११ सें० मी०	१३ (३-१५)	१४	३८	अपू०	सं० १६०६	इति श्री मीमांसक भट्ट सकरात्मज भट्ट नीलवण्ट वृत्ते भास्करे जलाशयारामोत्सर्गं मय्य समाप्त ॥ ... १६०६ चित्रे शुक्ले तरे शुभे ...
२६ ३ X १५ २ सें० मी०	२७ (१-२७)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं० १६१८	इति श्रीमीमांसक भट्ट सकरात्मज भट्ट नीलवण्ट वृत्ते भास्करे जलाशयारामो-त्सर्गं मय्यग्रथ शाब्दा १०० शुभमस्तु यातिव मुदि १५ वा सं० १६१८ व
२७ X १२ सें० मी०	८६ (१-८६)	८	३७	पू०	सं० १६१७	इति श्रीभट्ट रामश्वर मुनिवृत्तशागमण्य भट्ट वृत्ते जलाशयारामो विधोत्सर्गो गणं विधि पद्धति ॥ सवत् १६१६ शोभ पोत्र शुभन १० स्वार्थ परीतशारथं व ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विविधि
१	२	३	४	५	६	७
२६७	५०५३	जलोत्सर्ग			२० का०	२०
२६८	४६०२	जलोत्सर्ग			२० का०	२०
२६९	६४१७	जातकर्म पद्धति			२० का०	२०
३००	६४१८	जीर्णोद्धार			२० का०	२०
३०१	६३६८	जीर्णोद्धार प्रयोग			२० का०	२०
३०२	६३७१	जीर्णोद्धार विधि			२० का०	२०
३०३	६११८	जीवशास्त्र पद्धति	श्रीरी भट्ट		२० का०	२०

पदों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण हैं ? प्रपूर्ण हैं तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४१×११ सें० मी०	३ १-३	१०	३१	अपूर्०	प्राचीन	
२८५×१२२ सें० मी०	३ १-३	८	३८	अपूर्०	प्राचीन	
२२४×६ सें० मी०	६ (१-६)	७	३२	पूर्०	प्राचीन	इति जातकर्म पद्धति ॥
२१५×८४ सें० मी०	४ (१-४)	६	२७	पूर्०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार निर्णयसिद्धीकृतो विधि समाप्तिसमयत् ॥
१४×७६ सें० मी०	१ (१-२)	१०	२५	पूर्०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार प्रयोग समाप्त ॥
२१८×१०१ सें० मी०	४ (१-४)	१०	४०	पूर्०	प्राचीन	इति रघुनाथ मूर्ति मूलु त्रिबिजम रचिताया प्रतिष्ठापद्धतौ जीर्णोद्धार विधि ॥
२४३×११३ सें० मी०	१४ (१-४४)	७	३३	पूर्०	सं० १६५८ दृग्निर्दिष्ट)	सं० १६५८ माघ शुक्ल १० गोमे निमित्त मण्डपनि पुराहितन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविषय की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीनावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
३०४	५७२८	जेष्ठानक्षत्र जनन शांति			दे० का०	दे०
३०५	$\frac{५०५४}{१५}$	ज्वरशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
३०६	६५८६	तडागादि प्रतिष्ठाप्रयोग		( - )	मि० का०	दे०
३०७	५४५८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०८	६२१८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०९	७७८२	तर्पण			दे० का०	दे०
३१०	४०७२	तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सटया प्रौर प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४ × ८७ सें० मी०	३ (२-४)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति ज्येष्ठा नक्षत्र जननं ज्ञाति ॥
१६ × ७८ सें० मी०	४	८	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति ज्वरं शाति ॥
२४ × १०७ सें० मी०	८ (१-८)	१०	३६	पूर्ण	प्राचीन	बाज वाहादुर चद्रनिमित्ते कौस्तुभेनुपति धर्मगोचरे शौनकोक्तविधितेयनीरिता सज्जालाशयतरुसृजे कृति ॥
२६ × ६५ सें० मी०	५	८	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
६८ × १६५ सें० मी०	१ (घर्ष)	६३	१४	अपूर्ण	प्राचीन	
११ × १०२ सें० मी०	८ (१-८)	११	१३	पूर्ण	प्राचीन	
१४ × ८७ सें० मी०	५० सं० ७ (२-८)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६७	इति तपनं सपूर्णं सवत् १८६७ सावि १७६२ आषाढ वदि ६ बुधवासे सादिनं प्रति सपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लि।
१	२	३	४	५	६	७
३११	११६६	तर्पण			दे० का०	दे०
३१२	४५०४	तर्पण			दे० का०	दे०
३१३	२८७७	तर्पण			दे० का०	दे०
३१४	$\frac{७००४}{२}$	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१५	१३३३	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१६	५७१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३१७	६०७	तर्पण विधि			दे० का०	दे०



पत्रो वा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या शब्द पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	क्ष			
२४४×१०६ सें० मी०	४ (१-४)	८	३०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६३८	
२७३×६७ सें० मी०	८ (१-८)	६	४०	पूर्ण	सं० १६३३	इति तर्पणाम्सम्पूर्णम् ॥ जपानतर कात्यायन ॥ " " सवत् १६३३ माघ शुक्ल वसंत पंचम्या..... ॥
१७३×१०६ सें० मी०	३ (१-३)	११	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति तर्पण सम्पूर्णम्.....दिवाकर ॥
१२२×८२ सें० मी०	१४ (१-१४)	५	१५	पूर्ण	प्राचीन	इति सूर्यायाजलिदधात् शुभम् ॥
१७५×१३ सें० मी०	५	११	२३	पूर्ण	प्राचीन	इति तर्पण विधि पुस्तक मिद गमादत्त ब्रह्मचारिण पाठाथम् निधित जयान- देन शुकदेवाश्रमे प्रतिप्रतियो भीम- वासरे शुभम् ॥
१६८×१४३ सें० मी०	४ (१-४)	११	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥१॥
१२८×१० सें० मी०	६ (१-६)	७	१३	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१८	६००६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३१९	५३२१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२०	५१२६	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२१	$\frac{५२२६}{४}$	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२२	$\frac{५२६६}{२}$	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२३	$\frac{७७६}{२}$	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२४	७५४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठी की आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितमत्प्या श्रीर प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या अक्ष पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था श्रीर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
१३३×६०४ सें० मी०	५ १-५	८	१५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि समाप्त ॥
३०×१३६ सें० मी०	८ (१-८)	१०	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
७५५×११२ सें० मी०	१ (४री)	७६	१७	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ***
१६५×११२ सें० मी०	५ (१-५)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥
१६×८ सें० मी०	२ (३-४)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१५४×१०६ सें० मी०	१६ (२-१७)	१०	६	अपूर्ण	प्राचीन स०१६४०	इति तर्पण विधि स० १६४० भाद्र सु० ७ शनिवारे मध्याह्नात् घाटिका न्यून*** ***पठेत् ॥ अच्युतायनम गोविदायनम. शुभ भूयात् ।
२६×१०५ सें० मी०	७	८	३५	पू०	प्राचीन स०१६०६	इति श्री तर्पण विधि सपूर्ण शुभमस्तु शुभसवत्सरा १६०६ भादे १७०१ इके शुक्ल प्रतिपदा भृगु वासरे नेत्रियम- दिह्न विप्रेण परोपकारार्थं हेतवे ।

प्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	प्रथनाम	अवधार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३२५	३५८५	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२६	२२८६	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२७	३६६२	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२८	४०६५	तर्पणविधि			३० का०	३०
३२९	४२२०	तर्पणविधि			३० का०	३०
३३०	१५७३	तर्पणविधि			३० का०	३०
३३१	<u>१६२६</u> ३	तीर्थमुखश्राव			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२३१ × १३७ सें० मी०	८ (१-८)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि *** ॥
७५६ × १०८ सें० मी०	१	६३	१३	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति तर्पण विधि सपूर्णम् सं० १६०४ ॥ ब्रह्मादय ***
२३४ × ६५ सें० मी०	१	३३	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ॥
१५७ × ७६ सें० मी०	४ (१-४)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि शुभमस्तु
२७ × ११२ सें० मी०	२ (१-२)	११	४०	पू०	प्राचीन	इति नाट्य पत्रपत्रे तर्पण विधिः ॥
३१ × ११५ सें० मी०	११ (१-५, ५८ -६३)	११	४५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१४ × १३१ सें० मी०	८ (१-८)	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १६००	इति तीर्थमुद्र धाढ विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ पागुन शुक्ला वृषवासरे सवत् १६०० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संप्रहविणीय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	२६७७	तीर्थविधि			मि० का०	दे०
३३३	१७७५	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३४	६०७४	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३५	३३००	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३६	७६८	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३७	१३६६	तीर्थश्राद्ध निर्णय	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
३३८	१८४८	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२२३६	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४०	$\frac{२६०१}{२}$	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४१	२२४३	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४२	६७४	तिलकमुद्राप्रारण विधान			दे० का०	दे०
३४३	१५८१	तुलसीप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
३४४	$\frac{१६२६}{३}$	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०
३४५	$\frac{७०४३}{३}$	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या पंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बताना अक्षर का विवरण	ग्रन्थ का और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावस्था विवरण
		स	द			
८ अ	८	स	द	६	१०	११
२१४ × १०७ से० मी०	८ (१-८)	८	२८	५०	प्राचीन	इति तीर्थं श्राद्ध विधिः ॥
२१ × ११.५ से० मी०	६	८	१६	५०	१०१६२६	इति श्री तीर्थं श्राद्ध विधि समाप्तम् ॥ लिपत ५० बद्धलगाहाम् ॥ ? ॥
१८ × ११ ८ से० मी०	४ (१-४)	१३	१६	५०	प्राचीन	दक्षिणा चाम्र सन्त्य तीर्थं श्राद्धपत्र विधि । अर्पणमा वाहन चैव द्विजाप्यु- निवेशन ॥ विवर तृप्ति प्रश्न च तीर्थ- श्राद्धेषु वर्जयेत् ॥२॥
१४ × १० से० मी०	५	६	१७	५०	प्राचीन	इति श्री वाराह पुराणे पातुर्मास महा- त्म्ये धरणी वराह सवादे श्री भगवान- वराहोक्त तितक मुद्रा धारण विधान नाम षष्ठमोऽध्याय ॥ श्री कृष्णार्पण- मस्तु ॥ शुभ भवतु ॥ धीरस्तु ॥ श्री कृष्ण ॥
२७.५ × १२ ८ से० मी०	१३ (१-१३)	१०	२६	५०	१०१८८१	इति तुलसी प्रतिष्ठाभंगसुपूर्णं ॥ स० १८८१ ॥ तत्रपर्वे मार्गशीरशुद्धिद्वादसी वृषपक्षवारदिने लिखितकिसनवद ॥ इद पुस्तक ॥ शुभमस्तु ॥
२११ × १२ ६ से० मी०	४ (६-१२)	६	१८	५०	प्राचीन	इति तुलसी विवाह समाप्त ॥
१४७ × १३ ३ से० मी०	६	८	१४	५०	प्राचीन सं० १८४२	इति श्री विष्णु जी भजे श्री तुलसी विवाह विधि सपूर्णं ॥ स० १८४२ वर्षे कार्तिक वदिकादशी भृगुदिने लिखित स्वामि तन सुवरीम वेणीराम का पुत्र शुभमस्तु ॥ मंगल ददातु ॥



क्रमांक और विषय	मुस्तावालय की प्रागत मन्थरा या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
३४६	७१३६	तुलसीविवाहपूजा पद्धति			द० का०	द०
३४७	$\frac{४६७६}{२}$	तुलसीविवाह विधि			द० का०	द०
३४८	$\frac{५०५४}{१५}$	तुलादान प्रयोग			द० का०	द०
३४९	३८५४	तुलादान प्रयोग	कमलाकर भट्ट		द० का०	द०
३५०	७७९३	तुलादान विधि			द० का०	द०
३५१	३५०१	तुलादान विधि			द० का०	द०
३५२	३०४९	तुलापुरुष पद्धति			द० का०	द०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित संख्या और प्रति पवित में प्रसार संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ की प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
		स	द			
२६ × १० × ६ सें. मी.	१६ १-१६	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	अथ तुलसी विवाह पूजा प्रारंभ × × × (प्रारंभ)
१५ × ८ × ६ × सें. मी.	१४ १-१४	१०	२३	पूर्ण	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे कान्तिकोद्यापन तुलसी विवाह विधि: ॥
१६ × ७ × ८ सें. मी.	५	७	२०	अपूर्ण	प्राचीन	अथ तुलादान प्रयोग: ॥ (प्रारंभ)
२३ × ५ × ११ सें. मी.	३ (१-३)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति कमलाकर भट्ट कृत तुलादान प्रयोग: संमतिमगमत् ॥ श्री ॥ भा द्वाज वैजनायात्मज धुंडराजस्य
२६ × ६ × ११ × सें. मी.	३ १-३	७	३२	पूर्ण	प्राचीन	
२३ × २ × १० × सें. मी.	७	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१० × ५ × ६ × सें. मी.	८ (१-८)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन सं० १७७५६	इति तुलापुरुष पठति समाप्त: ॥ सं० १७५६ समये श्रावणशुक्लपौर्ण- मास्याकाशीसेवे लिखित तुलापुरुष दान प्रयोग: समाप्त: ॥



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	प्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	३८६४	तुलाप्रयोग			दे० का०	दे०
३५४	३१७३	त्रिकडिका			दे० का०	दे०
३५५	७२५४	त्रिकालसध्या			दे० का०	दे०
३५६	६०६७	त्रिकाल सध्या			दे० का०	दे०
३५७	६४२४	त्रिपाद पञ्चक शांति			दे० का०	दे०
३५८	७०३	त्रिपिडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
३५९	३७०६	त्रिपिडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पम्नि सध्या धोर प्रति पक्ति में प्रक्षर सध्या		क्या प्रंप पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्त- मान भग वा विवरण	भवस्या धोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२१×६५ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३३	५०	प्राचीन स०१८१२	इति तुला प्रयोग समाप्त ॥ स०१८१२ आपाद् शुद्ध पीर्णमास्या समाप्तम् ॥ पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठ भट्टेन लिखितम् स्वार्थ परार्थं च ॥
२३×१०५ सं० मी०	३ (१-३)	६	२७	५०	प्राचीन स०१८६७	इति त्रिकाडिका सम्पत्तम् । इति श्री कात्यायन प्रणीतं स्वानं सूत्रं समाप्तं ॥ लिखितं वेणी राम दिक्षितस्य ॥ स० १८६७ भाद्रपदवद्यं भानुवासरे ॥
१०६×११७ सं० मी०	१८ १-१८	७	१६	५०	प्राचीन स०१६६१	इति त्रिकाल सध्या संपूर्णम् ॥ लिपितं स० १६६१ ॥
१६७×८३ सं० मी०	७ (२-८)	७	१८	५०	प्राचीन स०१६०४	इति श्री त्रिकाल सध्या समाप्त संपूर्णम् ॥ मिति हृती ज्येष्ठ सुदि ३ मीन सवत् १६०४ ।
१६८×८ सं० मी०	४ (१-४)	६	३१	५०	प्राचीन	त्रिपादपत्रक शान्तिः समाप्ता ॥
२२६×११७ सं० मी०	६ (१-६)	१०	२६	५०	प्राचीन	श्रेतपाक व मूद्राभन कुपट्टिशदेवक समाप्त ॥
१८५×६४ सं० मी०	४ (१-४)	१४	३२	५०	प्राचीन स०१८०६	इति गरुडोक्त त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग • ..... । स० १८०६ मणशीर्षं वद्री १४ इद्री लिखितमिदम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
३६०	३७१०	त्रिपिढी श्राद्ध विधान			दे० का०	दे०
३६१	३८८०	त्रिवेणी स्नान विधि			दे० का०	दे०
३६२	४७९६	त्रिसुपर्ण			मि० का०	दे०
३६३	३३१७	दडक			दे० का०	दे०
३६४	७२८२	दक्षिण पुन ग्रहण विधि			दे० का०	दे०
३६५	६९६०	दशं पद्धति			दे० का०	दे०
३६६	६५१०	दशं पूर्णमास विहार-कारिका विवरण			दे० का०	दे०

पतो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२० × ६ सें० मी०	६ (१-६)	१२	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१५ ८ × १५ ७ सें० मी०	६	१५	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ २ × १० ३ सें० मी०	५ (१-५)	११	२१	पूर्ण	प्राधुनिक	त्रिसुपर्णमयाचित ब्राह्मणाय दद्यात् । ब्रह्महत्या वा एते क्षति । ये ब्राह्मणा स्त्रिसुपर्णं पठति । ते सोमं प्राप्नुवन्ति ॥ (पत्र संख्या-१, पक्ति संख्या-४, ५)
२२ ८ × १० १ सें० मी०	२८ (१-२८)	७	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति देण्डक सम्पूर्णम् ॥
२८ ६ × १० ६ सें० मी०	३ (१-३)	६	३५	पूर्ण	प्राचीन सें० १६१२	इति दत्त्रिमपुत्रविधिः समाप्ता सवद् १६१२ चं० वदी १२ ॥
२२ ८ × ३ ७ सें० मी०	३४ (१-३४)	१०	३२	पूर्ण	प्राचीन	प्रागस्तबोक्त रीत्यंकारित्य वर्त- पठति ॥ ... ..
२२ × ८ ६ सें० मी०	७ (१-७)	११	२५	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	प्रयनाम	प्रयकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६७	६५००	दर्श पौर्णमास होत्र ?			२० का०	३०
३६८	७७२३	दर्शपौर्णमासी व्याख्या			२० का०	३०
३६९	४१४५	दशगात्र			२० का०	३०
३७०	$\frac{४९२१}{३}$	दशगात्र			२० का०	३०
३७१	४८८१	दशगात्र एकादशाह श्राद्धपद्धति			२० का०	३०
३७२	२४०५	दशगात्र पिंडदान विधि			२० का०	३०
३७३	२२९२	दशगात्र विधान			२० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अप्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२३५×६२ सें० मा०	३ (१-३)	८	३३	पू०	प्राचीन	
२३१×१०४ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
१६३×१०३ सें० मी०	४ (१-४)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति दशगात्र विधिः समाप्त ॥
१६×१०७ सें० मी०	७ (१-७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति दशगात्र संपूर्ण त्रियित्तरसिध दा मुक्त सवत् १८२८ मिति असाठ " "
२८८×१०२ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६४	व्योरो दशगात्र की सामग्री की ॥ (पत्र सं० १) इति प्रसिध सचपन आद विधि गपुर्ण ॥ (पत्र सं० ४) इति एकादशगत विधि गपुर्ण ॥१॥ सवत् १८६४ जेष्ठ कृष्ण ६ वृषदिने इष्ट नियत आहारमनुचरणमध्ये ॥ **** सवत् १८९३ माघ कृष्ण ७ वार मनिवार शुभमस्तु भूयात् " ॥
२६१×१३६ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३३	पू०	प्राचीन सं०१८९३	
२३×१०७ सें० मी०	१५ (१-१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस्र वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
३७४	४२५	दशपिंडीकरणपद्धति			२० का०	२०
३७५	३७२७	दानचद्रिका			२० का०	२०
३७६	७८०६	दानचद्रिका			२० का०	२०
३७७	४९८६	दानप्रायेणावली			२० का०	२०
३७८	१६३२	दानमयूख			२० का०	२०
३७९	६२४९	दानविधि			२० का०	२०
३८०	६२४९	दानविधि			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिनसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या पत्र पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२० ८ x ६ सें. मी०	६ (१-६)	१३ ४०	पू०	प्राचीन स० १८१२	इति सवित्रीकरण पद्धति समाप्त लिखत मिश्र नौवतराय स० १८१२ ।
२४ ५ x १० ५ सें. मी०	१४६ (१-१४६) ४ (सूचीपत्र)	७ ३६	पू०	स० १८५८	इति दान चंद्रिका समाप्ता ॥..... यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित- मया ॥ यदि शूद्रमशूद्रबा भ्रमदीपोन लिप्यते ॥ स० १८५८ ॥ अतएव सन्तान सवत्सर भाष्य शुद्ध सात दिने समाप्ते ॥
१५ ७ x ८ ६ सें. मी०	६ (६-१०, १२-१५)	६ १८	अपू०	प्राचीन	
२६ ५ x १३ ५ सें. मी०	५ (१-५)	१० ५०	पू०	प्राचीन (पंडित)	श्रीपद्मगुरु वपुं र वस्तूरी कुटुमान्वित विनेपन प्रयच्छामि सौख्यमस्तु सदा मम ॥
(२६ ६ x १३ ६) सें. मी०	११ (२-१२)	१४ २६	अपू०	प्राचीन	
१७ x ८ सें. मी०	१० (१-१०)	८ २५	पू०	प्राचीन	इति दानदान श्लोक ॥
२२ x ६ ४ सें. मी०	७	१० ४०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस दस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३८१	$\frac{५०५४}{१५}$	दानविधि			दे० का०	३०
३८२	$\frac{५०५४}{१५}$	दानविधि			दे० का०	३०
३८३	८७५	दानविधि			दे० का०	३०
३८४	८२२	दानविधि			दे० का०	३०
३८५	७८७२	दानविधि			दे० का०	३०
३८६	२२८७	दान सिद्धांत मणि	चंडेश्वर		दे० का०	३०
३८७	१५३५	दालम्ब्योत्तर पद्धति			दे० का०	३०

पत्थर या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्थरसंख्या और प्रति पत्थर में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षरों का विवरण	ग्रंथस्य और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६ X ७ ८ सें० मी०	६	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ X ७ ८ सें० मी०	१० ३	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ X १२ ३ सें० मी०	२२६ (१३२-२३०, २३५-२६४, २६८-३६६ ३७०)	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१८ X १२ सें० मी०	६ (५-१३)	१०	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
१४ X ७ ८ सें० मी०	२	३	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
३४ X १३ ७ सें० मी०	१८ (३-२०)	१२	४१	अपूर्ण	प्राचीन	
३२ X १२ ६ सें० मी०	५ (७-११)	१४	५२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री दातम्योत्तर पद्धति संपूर्ण ... ..... सन् १६१७ सालान् मासे शुक्ल पक्षे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
३८८	७०६	दाह पद्धति			दे० का०	दे०
३८६	३६६७	दाहप्रयोग			दे० का०	दे०
३६०	३११	दाहविधि	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
३६१	६६३२	दिव श्येनय			दे० का०	दे०
३६२	३५७४	दीक्षाविधान			दे० का०	दे०
३६३	१४१५	दीपमालाकृत्य			मि० का०	दे०
३६४	४२३७	दीप श्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कति मान ग्रथ का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक् विवरण
		स	द			
८ अ	८			६	१०	११
२४५×८ सें० मी०	२०	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१×६४ सें० मी०	२ (१-२)	१७	४७	पू०	प्राचीन सं०१७५७	इति अहिलान्नेराश्वलायनोक्तमाग्रेण दाह प्रयोग * * * * * * * * * * सं० १७५७ पीप शुद्ध ७ रवी
३३×१२५ सें० मी०	१७ (१-१७)	११	४५	पू०	प्राचीन	इति विश्वनाथ कृति सपूर्ण शुभमस्तु ॥
२३६×११२ सें० मी०	४ (१-४)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति दिव श्येनय समाप्त ॥
१७३×६ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति दीक्षाविधान सपूर्ण शुभभवति ॥
२६६×१२१ सें० मी०	२	६	३६	पू०	प्राचीन	शुभ इति
२०३×१०८ सें० मी०	२ (१-२)	१२	२७	पू०	प्राचीन सं०१८२४	इति दीप आढ प्रयोग ॥ सं०१८२४॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सहाय वा सग्रहविशेष की सहाय	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३६५	४०७६	दीपश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३६६	२६६८	दुर्गा जंत्र विधि			दे० का०	दे०
३६७	१३६१	दुर्गापाठ विधि			दे० का०	दे०
३६८	६५६	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
३६९	२८७०	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
४००	१२००	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०
४०१	२०१०	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो या भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्र सख्या प्रति पक्ति मं भावार संख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता यत्- मान अथ का विवरण	अवस्था प्रौर प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
		स	द			
१५६×६६ सं० मी०	२	१०	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१३३×६२ सं० मी०	२ (१-२)	७	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
१८८×६५ सं० मी०	४	७	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति दुर्गापाठ विधि समाप्तिमयात् ॥
१५×८ सं० मी०	३६ (१-३६)	५	२१	अपूर्ण	प्राचीन (जोण)	
२२८×८६ सं० मी०	१	७	४०	अपूर्ण	प्राचीन	
२१८×८५ सं० मी०	६	६	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१×१५ सं० मी०	२३	१३	३०	अपूर्ण	प्राचीन	



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
४०२	१६४२	दुर्गाप्रतिष्ठाान विधि			२० का०	२०
४०३	५६६८	दुर्गाहवन पद्धति			२० का०	२०
४०४	१६११	दुर्गाचंन विधि			२० का०	२०
४०५	३७७०	दुर्गात्सव पूजा			२० का०	२०
४०६	३२६१	दुर्गात्सव पूजा पद्धति			२० का०	२०
४०७	६३६३	दुष्ट रजोदशन शांति			२० का०	२०
४०८	५१५२	दुष्ट रजोदशन शांति			२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति सद्यः और प्रति पक्ति में प्रक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	भवत्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२६२ × १२६ सं० मी०	६	११	३१	पू०	प्राचीन	इति दुर्गा मापत्री ॥ अथपूजाखेहकोशेषु ॐ गणेशायानम ॥ .....
११६ × ११६ सं० मी०	११ (४-७, १०, २६-३१)	६	१६	अपू०	सं० १६२४	इति दुर्गा हवन पद्धति समाप्तम् शुभ- मस्तु सं० १६२४ मास फाल्गुण कृष्ण ६ वासर गुरु * * ।
१६ × १५८ सं० मी०	५ (१-५)	११	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सूरि श्री पति जे कृष्ण विर- चिता भगवति पद्य पुष्पांजलि स्तव समाप्तम् । सं० ३६ सु० ११ भी० ॥
२३८ × ११२ सं० मी०	१० (१-१०)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२७६ × ११६ सं० मी०	४३ (८-५०)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री शारदीय नवरात्रि प्रतिपदारभ्य विजय दशमी पर्यंत श्री दुर्गास्त्रवादि चंडी पूजन पद्धति विधि संपूर्ण समाप्त शुभ भवतु मंगल ददातु श्री सं० १८७६ शके १७४४ श्रावणे मासे शुभन पक्षे तिथौ ४ चंद्रवासरे ।
१६२ × ८२ सं० मी०	६	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति दुष्ट रजोदर्शन शांति समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥
२४४ × १०४ सं० मी०	८	११	३७	अपू०	प्राचीन सं० १८०६	इदं दुष्टरजोदर्शन शांति समाप्ता ॥ इदं पुस्तक चंद्रमंडलम् ॥ सं० १८०६ शके १६७० कार्तिक व ८ समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या या संग्रहविषय की मर्यादा	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	७४१०	देव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
४१०	१६४५	देवप्रतिष्ठा देवमूर्ति देवालय निर्माण विधि			दे० का०	दे०
४११	१४६२	देवप्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
४१२	६२०६	देवयानिक क्रिया निवध			दे० का०	दे०
४१३	१२५०	देवपूजा			दे० का०	दे०
४१४	४६४६	देवाचन पद्धति			दे० का०	दे०
४१५	६४१६	द्वादशाब्दादूर्ध्वं मिलन शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१५'८ X १२'१ सें० मी०	५ २-६	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६'५ X १३ सें० मी०	२ १-३	८	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
१७'५ X १०'५ सें० मी०	२४	८	१७	अपूर्ण	प्राचीन स० १८८६	इति देवप्रतिष्ठा प्रयोगमल संपूर्ण नामगात् १८८६ ।
३४'७ X १३'५ सें० मी०	१३० १-१३०	६	४७	पूर्ण	प्राचीन स० १६२३	इति दाहादिकर्मकर्तुं निर्णय भर्तुं- श्राद्ध पचमेह्नि कुर्या रजस्वला पुत्र नितोः प्रकुर्वीत मृताह्नि शुचेर्यत ॥ देवयाज्ञिक क्रिया निवध समाप्त ॥ स० १६२३वे० शुकल १५ रवीवासरे ।
२४'७ X १६'५ सें० मी०	३	१२	२२	पूर्ण	प्राचीन	
२२'२ X ११ सें० मी०	१६ (५०-६८)	१०	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
१६' X ६'८ सें० मी०	१	८	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति द्वादश्याम्हाद्रुर्ध्वमिलन विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत सख्या या मद्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४१६	३५०२	द्वादशाह			दे० का०	दे०
४१७	$\frac{२८२७}{५}$	धनदापद्धति-			दे० का०	दे०
४१८	१४७८	धनेश्वरी पूजाविधि			दे० का०	दे०
४१९	६४६२	नक्षत्रेष्टिप्रयोग			दे० का०	दे०
४२०	१९३९	नवग्रह पूजा			दे० का०	दे०
४२१	६६०७	नवग्रह मंत्र			दे० का०	दे०
४२२	४४३७	नवग्रहमन्त्रप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२८×६ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १७६२	इति द्वादशाह समाप्त ॥ शिव शिवञ्चरी वर्तुं ॥*** सवत् १७६२ शाके १६२७ फाल्गुन कृष्ण अमा- वस्याया भीष्मदेवेन लिखित श्री ॥
१५८×६२ सें० मी०	६३	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पट्टतिघनदाकि सपूर्णम् ॥
१८×११८ सें० मी०	४ (१-४)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री तत्रसारे धनेश्वरी पूजाविधि समाप्त । शुभ सम्बत्सरा १६०६ शाके १७७४*****
२५×११७ सें० मी०	१६ (१-१६)	१२	४६	पू०	प्राचीन (कृमि-कृन्तित)	इद पुस्तक गावल्पपनामदाद भट स्वामिः नशास्त्रेष्टि प्रयोगस्य । पत्र १६ अथ संख्या ६८४*****
२४८×१२ सें० मी०	८ (१-८)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १६२०	इति नक्षत्रह समाप्त शुभमस्तु ***** सवत् १६२० मिति कार्तिक यदि ३ पुरी कानि या पुस्तक राम वनग्रह ॥
२४७×१०५ सें० मी०	१	८	४६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र मत्र सपूर्ण ॥
२७१×१३३ सें० मी०	३६ (१-३६)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १८४०	इति श्री स्वनारायणविधि नक्षत्रह मत्र प्रयोग समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥***** सवत् १८४० क मानसमय नामनीय मुनि पत्नी १२ रविचामर विरचितपुर चाम पुस्तक निरिक्त मीर्छिका ॥ पद निबारा धातु पठनाथ ॥ रामचन्द्र

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४२३	२१४०	नवग्रहमखप्रयोग			३० का०	३०
४२४	४७७२	नवग्रहहोमविधि			३० का०	३०
४२५	४६५६	नवग्रहहोमविधि			३० का०	३०
४२६	६४१०	नव षडो होम			३० का०	३०
४२७	३६४६	नवरात्रविधि			३० का०	३०
४२८	२७४३	नवाग्येष्टि			३० का०	३०
४२९	३२३६	नवाणविधि			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०५ × १०५ सें० मी०	३६	६	२१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७८०	
३०३ × १२४ सें० मी०	१५ १-१५	१०	४२	पूर्ण	प्राचीन सं० १८७७	इति श्री नवग्रह होम सर्वज्ञ विधि समाप्तम् शुभ सम्यत्सरा १८७७ साके १७४२ समयभाद्र शुक्ल २ शनिवासरे रघुवर रामेण लेखि ॥
२१२ × ८८ सें० मी०	७ (१-४)	७	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति ग्रह होम विधि ग्रहा + + + सं० १८६० ॥
२१४ × ७८ सें० मी०	१८ (१-१८)	८	४२	पूर्ण	प्राचीन	
२३६ × १०८ सें० मी०	२५ (१-२५)	६	२४	पूर्ण	प्राचीन	इति शारद नवरात्र विधि सपूर्णा × × × ॥
१६६ × १३२ सें० मी०	३ (१-३)	११	२०	पूर्ण	प्राचीन	इति नवान्तेष्टि ॥
१७२ × ८६ सें० मी०	३ (१-३)	७	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति नवाहं विधि ॥



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	प्रथमान	प्रथकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४३०	३०३५	नादीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३१	२२२१	नादीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३२	३६२	नादीमुखश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४३३	३०३७	नादीश्राद्ध-मातृकापूजन			मि० का०	दे०
४३४	२७५५	नागबलि विधि			दे० का०	दे०
४३५	२७६४	नारायण बलि			दे० का०	दे०
४३६	२५३७	नारायण बलि			दे० का०	दे०

पत्रो मा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष वा विवरण	धवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		द	स			
२७७ × १०३ सें० मी०	१०	७	३३	अपूर्ण	(खंडित)	
३२ × १३१ सें० मी०	७ (१-७)	१०	४६	पूर्ण	प्राचीन स० १८१८	श्री कृष्णायनमोनम सबत्सराष्टादश शतेषु १८ द्विनवतीवर्तमानेऽस्मिन् कार्तिक कृष्णतयोदश्या भौमवासरे इद लिपिकृत हरिसिंहात्मजेन हरदयालु नावडोतमघोस्वत्यपठनकर्मानुसारेणशुभ- मगलादि भूयात्तुः ॥
१६३ × ११४ सें० मी०	३६ (१-३६)	१०	१८	पूर्ण	प्राचीन स० १६१६	इति नादी मुख श्राद्धपद्धति समाप्तम् ॥
१८ × १० सें० मी०	२५ (१-२५)	८	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति सपूर्ण । उमाकात दीक्षित***
२३ × १० ५ सें० मी०	११	७	२२	पूर्ण	प्राचीन स० १६२८	इति शौनक प्रोक्त नागधति विद्यान पुरा ॥ सवत १६२८ माघवद्य ११ चंद्रवासरे । लि० लालजी दुवे अल स्वार्थ परमार्थ ॥
२३ २ × १० ५ सें० मी०	६	७	२४	पूर्ण	प्राचीन	इति नारायण धति समाप्त ॥
२ ५३ × १ ५ ७ सें० मी०	८२ (१-८२)	२०	१२	पूर्ण	प्राचीन	इति नारायण धति कर्मे समाप्तम् श्री गुणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४३७	४४०४	नारायणवलि			दे० का०	दे०
४३८	११०४	नारायणवलि			दे० का०	दे०
४३९	१८०५	नारायणवलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४०	२५९	नारायणवलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४१	१७९	नारायणवलि प्रयोग				
४४२	१२६६	नारायणविधि			दे० का०	दे०
४४३	$\frac{३१५}{२}$	नारायणवलि विधान			दे० का०	दे०

पत्रो या पुष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पुष्ठ मे पकिनसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		कथा ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान प्रग वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६४ × ११४ सं० मी०	६	१०	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६६ × १३ सं० मी०	७६ (१-७६)	८	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१६६ × १२४ सं० मी०	५ (१-३, ७-८)	१८	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति नारायणीबलि (नारायणबलि) संपूर्ण शुभ ॥
२६ × १७५ सं० मी०	२४	२४	१८	पूर्ण	सं० १६४५	इति नारायणीबलि पद्धति समाप्ता ॥ थी ॥ सं० १६४५ भाद्रपद शुक्ल द्वितीयाया बहुदो नगरे धामध्ये विश्रामे विलक रामेण लेपित शुभ भूयात् ॥ रामकृष्ण ॥
१३५ × ८२ सं० मी०	१३ (१-१३)	१०	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति नारायण बलि प्रयोग ॥ एताव द्विस्तरावेत्तो प्रयोगशक्ती बीद्यायती ॥
२२६ × १५ सं० मी०	१४ (१-१४)	१०	१६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२६	इति * * * नारायणविधि समाप्तम् संवत् १६२६ ज्येष्ठ शुक्ला ८ ॥
१७७ × ११८ सं० मी०	१८ (१-१८)	१५	१२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२९	* * * नारायण बलि वाप्यो इति मत्स्येन पूजन विधि समाप्तिम् पात् लिपित पचीलिमहताव सं० १६२९ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४४	१६०८	नित्यकर्म			दे० का०	दे०
४४५	१६१२	नित्यकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
४४६	३२२२	नित्यपूजा-अप विधान			दे० का०	दे०
४४७	७१५७	नित्यपूजा विधि			दे० का०	दे०
४४८	३३६६	नित्यश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४४९	१४८८	नित्य स्नान विधि			दे० का०	दे०
४५०	५८१४	निरण्य चिंतामणि	विष्णुशर्म		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
क म	व	स द	६	१०	११	
१३५ × ८५ सें. मी०	२	१०	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६५ × १२७ सें. मी०	४	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१३ × ६२ सें. मी०	४ (२-५)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति निरवृत्त पञ्चादिग्रन्थविद्यान समाप्त उद्धारये करइस्फुपनाम्नी जनादंते- नलिखित ॥
३४ × ११३ सें. मी०	३	१४	६०	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
४५१	५६६५	निर्णयसार	राघवभट्ट		२० का०	२०
४५२	६६०	नीलोदाह विधि			२० का०	२०
४५३	६८६४	नेष्टृत्व प्रयोग			२० का०	२०
४५४	७३४२	नेष्ट्र प्रयोग			२० का०	२०
४५५	$\frac{२६३७}{१२}$	न्यासतिलक	वेदाताचार्य		२० का०	२०
४५६	$\frac{२६३७}{१२}$	न्यासदशक			२० का०	२०
४५७	$\frac{२६३७}{१२}$	न्यासविनयति			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आरार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अक्षरों और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
नं०	व	स	द	६	१०	११
२५ × ११ सं० मी०	६ (१-६)	११	४८	५०	प्राचीन म० १८६५	इति राघव भट्ट विरचिते निर्णयसारः समाप्त ॥ ..... सं० १८५६ अक्षर १७२३ लिखित ..... ॥
२३ × १०.२ सं० मी०	१८ (१-१८)	१२	३४	५०	प्राचीन	इति अक्षरस्य पुराणे शीतकोरनीलो-धर्मविधि (१) समाप्तः ॥ शुभभवतु ॥
२३ × १०.१ सं० मी०	६ (१-६)	११	३५	५०	प्राचीन	इति नेष्टत्व प्रयोग समाप्त ॥
१५.८ × ७.६ सं० मी०	१३ (१, ३-१०, १३-१६)	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन	अथ साध्यायनगूत्रिय नेष्ट प्रयोगः ॥
१३.१ × ८ सं० मी०	१३ (१-१३)	७	१३	५०	प्राचीन	इति श्री वेदांताचार्यं त्रिराज्यायां ग्याम-तिना संपूर्णं श्री मन्मथमानुजायनम ॥
१३.१ × ८ सं० मी०	३ (१-३)	७	१२	५०	प्राचीन	इति श्री ग्यामविगति संपूर्णं ॥
१३.१ × ८ सं० मी०	१४ (४-१७)	१	१२	५०	प्राचीन	इति ग्याम विगति संपूर्णं ॥



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथभाण	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
४५८	४७६५	न्युब्जपादजनन शान्ति			दे० का०	दे०
४५९	६५७	पचक मरण विधि			दे० का०	दे०
४६०	१८६५	पचकविद्या			दे० का०	दे०
४६१	१७३५	पंचकविद्या			दे० का०	दे०
४६२	$\frac{३०४९}{६}$	पचकविद्या			दे० का०	दे०
४६३	२३४५	पचकविद्या			दे० का०	दे०
४६४	८००	पचकविद्या			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
क	ख	स	द	६	१०	११
१३४ × १०३ सें. मी०	२ (१-२)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारदोक्त न्युब्जपादप्रभृति खनन शांति ॥ हे पुस्तक सदासीद भट दुषोडकरेण लिखित वाचितायं विजई भव ॥ शुभ भवतु ॥
३११ × १५१ सें. मी०	२३ (१-२३)	१३	३६	पू०	प्राचीन	इति पंचकर्मण विधि समाप्त ॥ लिप्यत देविसाहाय विद्यार्थी... नक्षत्रे योगे च शुभगाभवेत् ॥
३०८ × १३४ सें. मी०	४ (१-४)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १६०२	इति पंचकविद्यान समाप्त ॥ सवत् १६०२ मासोत्तम मासे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथौ दशम्या दुघवासरे ॥
१४७ × १०३ सें. मी०	८	१०	२०	पू०	सं० १६०१	इति पंचक विद्यान समाप्त सवत् १६०१ कार्तिक .....
१६७ × १११ सें. मी०	१	१६	१६	अपू०	प्राचीन	
१७२ × १२३ सें. मी०	७	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२७६ × १२५ सें. मी० (सं० मू० ३०)	३	१२	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	४४६	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६६	३५११	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६७	४१२६	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६८	६४३५	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६९	७६१	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४७०	६०२	पंचकशान्ति विधि			दे० का०	दे०
४७१	६६७५	पंचकग्रन्थ विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	अ द	६	१०	११
२१×६२ सें० मी०	४ (१-४)	१४ ४६	पू०	प्राचीन स० १८१२	(कृमिकृतित) इति ब्रह्मपुराणोक्तमस्ति इच्छावे- त्कतव्य । अकृतेन दोष । इति पचक विधि ।
१६१×६५ सें० मी०	६ (१-६)	६ २२	अपूर्ण	प्राचीन	इति पचक विधान समाप्त ॥ (पू० ५)
२७८×१० सें० मी०	३ (१-३)	८ ३८	पू०	प्राचीन	इति सामग्री समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१५×६३ सें० मी०	२ (१-२)	१० ४०	पू०	स० १८०१	इति ब्रह्माडपुराणोक्त पचक शांति समाप्त ॥ * ॥ सवत् १८०१ भासे जेष्ठान्तिते पक्षे द्वादशी मन्वासरं ॥ * * ॥
२६५×११ सें० मी०	५ (१-५)	६ २७	अपूर्ण	प्राचीन	
२४३×६६ सें० मी०	४ (१,३-५)	८ ४३	अपूर्ण	प्राचीन	पेय पचकशांतिवत् ॥
२२१×१३५ सें० मी०	२ (१-२)	७ २३	पू०	प्राचीन	इति पचगव्य विधि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा राग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४७२	५१८८	पचगव्य विधि			दे० का०	दे०
४७३	१७६७	पचपातकनाशन विधि			दे० का०	दे०
४७४	$\frac{७८६६}{४}$	पचसस्कार			दे० का०	दे०
४७५	२६५२	पचायतन पूजा			दे० का०	दे०
४७६	४२४१	पचीकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७७	७२३८	मतिदेह सस्कार			दे० का०	दे०
४७८	६७६३	परमहंस दीक्षाग्रहण विधि	विश्वेश्वर		दे० का० -	दे०

पत्रो भा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
१८'६ × १३'२ सें० मी०	१	१२	२४	पू०	प्राचीन	इति पञ्चगव्य विधि समाप्तम् ॥
१५'५ × ८ सें० मी०	४	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१०'५ × ७'७ सें० मी०	२ (६६-१००)	७	११	अपू०	प्राचीन	इति पञ्चसंस्कार संपूर्ण ॥
(१५'१ × १०'८) सें० मी०	१२ (१-१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	श्रीवासुदेवाय नम इति पुस्तक समाप्त ॥
२६'२ × १२'८ सें० मी०	३ (१-३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्रजकाचार्य्य श्रीमद्भूमवद्गोविंदपादपूज्यशिष्य श्री- मच्छंकराचार्य्य विरचित पञ्चीकरण संपूर्ण शुभमस्तु :
१७'६ × १०'४ सें० मी०	४	११	३०	अपू०	प्राचीन	
३४'५ × १३'६ सें० मी०	७६ (१-७६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णुभरद्विरचित परमहंस दीक्षा ग्रहण विधि समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत मख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	प्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	३२१६	परायणक्रम विधि मूल वाक्य			३० का०	३०
४८०	६४२१	पर्यंकखट्वागादि भग (अद्भुतसावार) भाति			३० का०	३०
४८१	६००४	पल्लीशरट भाति विधान			३० का०	३०
४८२	६५०७	पवित्रेष्टि			३० का०	३०
४८३	६४७०	पवित्रेष्टि हीन			३० का०	३०
४८४	६७०६	पगुबंध प्रयोग			३० का०	३०
४८५	३११२	पात्रनोधन			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्तिकाओं और प्रति पत्तिका में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? प्रपूर्ण तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
		ग	द			१०	११
१८ × ८६ से० मी०	२६ (१-२६)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति परापरगुणम विधि मूलवाक्यानि ॥ समाप्तश्चाप्य प्रथ ।	
१६७ × ७४ से० मी०	४ (१-४)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति अद्भुतसागरे पर्यं ब्रह्मद्वागादि- भग शांति समाप्ता ॥.....	
२७१ × ११५ से० मी०	२ (१-२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री वसंतराजे गणोक्त पत्नी- शरटयो शांति विधान सपूर्णम् ॥	
२२५ × ६२ से० मी०	२ (१-२)	१०	४०	पू०	प्राचीन	सतिष्ठते पवित्रेष्टिः ॥	
२२ × १०२ से० मी०	४ (१-४)	१०	२६	पू०	प्राचीन		
२३ × ६५ से० मी०	२२ (१-२२)	८	४१	पू०	प्राचीन		
२२ × ११-१ से० मी०	७ (१-४)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपात्रे शोधन सपूर्णं शुभम् ॥	



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४८६	४७१७	पाथिव गणेश पूजन पद्धति			२० का०	२०
४८७	४३८५	पाथिवपूजन			२० का०	२०
४८८	३०१०	पाथिव (लिंग) पूजन			२० का०	
४८९	६५००	पाथिव पूजनविधि			२० का०	
४९०	७३८७	पाथिव पूजा			२० का०	
४९१	७८२८	पाथिवपूजा			२० का०	
४९२	२१८४	पाथिवपूजा			२० का०	

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसङ्ख्या	प्रतिपृष्ठ म पवित सख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षर सख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्तमान अथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१=७×११७ से० मी०	३ (१-३)	१०	६०	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखंडे पायिदगणेशपूजन पद्धति समाप्ता ॥
१७७×१७७ से० मी०	१२ (१-१२)	१४	२०	अपू०	प्राचीन	अथ पायिदपूजन निरूपणे ॥ *** (प्रारम्भ) × × ×
१५३×७५ से० मी०	४ (६,११-१३)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७२×७६ से० मी०	४	८	२६	अपू०	प्राचीन	
१४४×१०४ से० मी०	७ १-७ (शेष फुटकलपत्र)	७	१५	पू०	प्राचीन स० १६२६	पायिदपूजा अपवित्त पवित्रो वा सर्वावस्थागतो × × समता १६२६ ×
२३१×११५ से० मी०	१० १-१०	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२०५×११ से० मी०	६	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति पायिदपूजा समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४६३	६०२६	पाथिवपूजा			३० वा०	३०
४६४	५४७३	पाथिवपूजाप्रकार			३० वा०	३०
४६५	१२५४	पाथिवपूजाविधान			३० का०	३०
४६६	४६५६	पाथिवपूजाविधि			३० वा०	३०
४६७	३४५०	पाथिवपूजाविधि			३० वा०	३०
४६८	२०३६	पाथिवपूजाविधि			३० वा०	३०
४६९	४८४४	पाथिवपूजाविधि			३० वा०	३०

पत्रा या पृष्ठी का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिगणना और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अर्थ पूरा है ? अपूरण है तो वन मान अर्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१६×११ सें० मी०	५ (१-५)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति पूजा कुमति ॥
३१२×१२ सें० मी०	८ (१-८)	१५	५०	पू०	प्राचीन	इति लिंगपुराणे पाथिवलिंगोद्यापन संपूर्णम् ॥
२२×११ सें० मी०	८ (६-१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८५७	इति पाथिवपूजाविद्यान समाप्तम् सं० १८५७ तत्र वर्षे चैत्रमासे शुक्ले पक्ष विद्यो तृतीया ३ भूगु० दिने लिपत पाठ्यु स्थालमे त्रैविर्नाबद मध्ये ॥ शुभमस्तु मंगल ददात ॥ श्री०
२१७×८८ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति शिवपाथिव पुजन समाप्तम् शुभस्तु ॥ इति शिवायनम् ॥ सम्बत १८६० शके १७२५ समये जष्ठ मासे कृष्ण पक्ष द्वि ॥
१३८×७२ सें० मी०	७ (१-७)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पाथिवपूजा विधि
१६६×६७ सें० मी०	७ (१-७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पाथिव विधि समाप्त शुभमस्तु ॥
२३६×६५ सें० मी०	६ (२-१०)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री सकल सारोद्धार पाथिव पूजा- विधि समाप्तम् शुभ सम्बत्सरा १८७० शाने सातिवाहृतस्य गत्समा १७३५ समय श्रावण + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
५००	६६८	पार्थिव महापूजा			३० का०	३०
५०१	२६००	पार्थिव लिंग पूजन			३० का०	३०
५०२	५४४८	पार्थिवलिंग पूजा उद्घाटन विधि			३० का०	३०
५०३	३३०७	पार्थिवलिंगपूजा विधि			३० का०	३०
५०४	५६७३	पार्थिव विधान			३० का०	३०
५०५	७५८७	पार्थिवार्चन विधि			३० का०	३०
५०६	७६३	पार्थिवेश्वर चिन्तामणि			३० का०	३०

पता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रति पक्ति न अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूरा है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अक्षर आवश्यक विवरण
		स	द			
२२ × १४ ५ सें. मी०	८	१४	३४	पू०	सं० १६११	इति सं० १०११ त्रिविध मुरलीघर श्रोतस्तत आ ॥
१० × ६ सें. मी०	१६	६	१३	अपू०	प्राचीन	
२१२ × १० ५ सें. मी०	१५ (१-१५)	६	३२	पू०	सं० १८२७	इति लिंगपूजा उद्यापण विधि समाप्त सिवापण शवत १८२७ भावे शौरास १६६२ विष्णु विद्यतिनाया ...
२२६ × १० सें. मी०	१३ (१-२ ४-१४)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८२८	इति लिंग पूजा उद्यापण विधि समाप्त सिवापण संवत् १८२८-१६६३ वंशाप यदि ३ गणेश लिपत गाविद पारम दुव ॥
१५ ८ × ६ ६ सें. मी०	८ (१-८)	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १७८६	इति पाथिव विद्यान समाप्तम् ॥ सवन् १६२१ सावे १७८६ मिति माष यदि ५ भोमवासरे × × × × ॥
२६३ × ११ ३ सें. मी०	३ (१-३)	१७	४८	पू०	प्राचीन	इति पाथिवाचन विधि ॥
२० ६ × १० ७ सें. मी०	४ (१-४)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पणम् ॥ ६७ नम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
५०७	७०६२	पाण्डित्येश्वरमत्त विधि			दे० का०	२०
५०८	३३६	पावणश्राद्ध			दे० का०	२०
५०९	५५५०	पावणश्राद्ध			दे० का०	२०
५१०	५३२६	पावणश्राद्ध			३० का०	२०
५११	३३१६	पावणश्राद्ध			२० का०	२०
५१२	२४८६	पावणश्राद्ध			२० का०	२०
५१३	४०६१	पावणश्राद्ध			२० का०	२०

पक्षो या पृष्ठो 'का अक्षर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षित संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द			
१७८ × १० सं० मी०	२ (१-२)	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
३२१ × ११४ सं० मी०	६ (१-६)	७	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६५५	इति पार्वणं श्राद्ध संपूर्णं शुभं सवत् सो आश्विनमासे कृष्ण पक्षे पीरुंगमाया १५ रविवासरे सवत् १६५५ इदं पुस्तक कवलचद शुभमस्तु ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१॥
२२८ × १०४ सं० मी०	२१ (१-२१)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति पार्वणश्राद्ध संपूर्णं + + + + + + + अस्तु परिपूर्णमस्तु मार्ग शीर्षे शुक्लपक्षे तु पचम्या रवि- वासरे लिपत प्रयाग मध्ये तु० ग० पाठ द्विजोत्तमः ॥ स्वार्थं परार्थं शुभमस्तु ॥ सवत् १६०७ ॥
२४८ + १०६ सं० मी०	४ (१-४)	११	४६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ × १४ ३ सं० मी०	१३ (१-१३)	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन	इत्येका पार्वण श्राद्ध समाप्तः ।
२०२ × ६२ सं० मी०	७ (२-८)	७	२४	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति पार्वण श्राद्ध संपूर्णं शुभं सवत्सरे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे *** सवत् १६२२ इदं पुस्तक लिप्यते गीरीदत्त शुभमस्तु ओ नम विवाय ॥
१७ × १० ३ सं० मी०	२१ (३-२३)	१०	२३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६६७	इति पार्वण श्राद्ध संपूर्णं सवत् १६६७ श्राद्ध शुक्ले १० बुद्धे *** ।



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीनावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिया है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५१४	१८४४	पार्वणश्राद्ध पद्धति			२० का०	२०
४१५	५५०६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५१६	६३८०	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५१७	३८६६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			२० का०	२०
५१८	६११७	पार्वणश्राद्ध विधि			२० का०	२०
५१९	६६७६	पार्वणश्राद्ध विधि			२० का०	२०
५२०	५७७६	पार्वणश्राद्ध विधि			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का क्रमांक	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पकितसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या यह पूर्ण है? अपूर्ण है तो वनमान अक्षरों का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ
१४६×१०३ सं० मी०	२० (१-२०)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति पावणं श्राद्ध पद्धति समाप्तम् ॥ * * * आसाढ मासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ ४ रविसारे सवत् १८८६ ॥ साके १७२४ ॥ लिखत कन्हैया लाल ॥
२४५×१०७ सं० मी०	१० (१-१०)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति पावणं श्राद्ध सपूर्णं ।
२०८×६७ सं० मी०	२ (१-२)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
२१५×७६ सं० मी०	१० (१-१२)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२०२×६ सं० मी०	३२ (१-३२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति पावणं श्राद्धविधि सपूर्णं ॥
२५×६५ सं० मी०	६ (१-६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति पावणं श्राद्ध विधि समाप्तम् ॥ × × × × ।
१६५×१६ सं० मी०	८ (१-८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
(सं० नू० ३२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	३४२०	पार्वणश्राद्ध पद्धति			३० का०	३०
५२२	$\frac{५०५४}{१५}$	पार्वण श्राद्धपद्धति			३० का०	३०
५२३	४६२४	पार्वण श्राद्धपद्धति			३० का०	३०
५२४	१३३२	पार्वण श्राद्धपद्धति			३० का०	३०
५२५	७४८	पार्वण श्राद्धपद्धति			३० का०	३०
५२६	५६६९	पिठदानम्			३० का०	३०
५२७	१५०८	पिठदानम्			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
घ अ	ब	स द	१०	१०	१०
२३-२४ × १० सें० मी०	१२ (१-१२)	८ २५	५०	प्राचीन सं० १८१५	गया श्राद्ध फलमस्तु ॥ सम्बन्ध १८१५ ॥ श्राद्ध बहुलोग्य पदातिथेषु नवमी तथा ॥ रविवारं मुहूर्ताया तिष्ठित्वा हुनामिस्तथा ॥
१६ × ७.८ सें० मी०	१४ ३/४	६ २४	५०	प्राचीन सं० १८६६ शाब्द १७६१	इति पार्वणि श्राद्धपद्धतिः समाप्त शाब्द १७६१ माघ सुदि ६मीदिक् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
५२८	१२८२	पिडदानम्			२० का०	२०
५२९	१५५५	पिडदान विधि			२० का०	२०
५३०	७०२८	पिडदान विधि			२० का०	१०
५३१	६५२८	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०
५३२	६५३२	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०
५३३	६५३३	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०
५३४	६५२६	पिडपितृयज्ञ			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७ × १३ सें. मी०	२५ (१-२५)	१४	१२	अपू०	प्राचीन	
२३ × १४ सें. मी०	१८	२०	२२	अपू०	प्राचीन	
१६२ × १३८ सें. मी०	१५ (४-१८)	१४	१५	अपू०	प्राचीन	
२०४ × ८६ सें. मी०	६ (१-६)	८	२४	पू०	प्राचीन	
१५३ × ८ सें. मी०	४ (१-४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पिठवितुयज्ञ ॥
१६५ × ७३ सें. मी०	२ (१-२)	८	४५	पू०	सं० १८३४	इति पिठवितुयज्ञः समाप्त ॥ सवत् १८३४ आ० कृ० ३२० ॥
२१३ × ८ सें. मी०	३ (१-३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति पिठवितुयज्ञ समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३५	५७५७	पितृकर्म			दे० का०	दे०
५३६	६४४१	विपीनिका शाति			दे० का०	दे०
५३७	७३१९	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३८	४२५४	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३९	४९६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४०	६६६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४१	७७०४	नांदीश्राद्ध प्रयोग पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०

पत्रो वा पृष्ठो वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि में अक्षरसंख्या		नया प्रथ पूर्ण है प्रपूर्ण है तो वर्तमान प्रथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७६×११० सं० मी०	६ (१-६)	८	३१	५०	प्राचीन	इति श्री सहितायाम्भाठे पितृवर्म्म सपूर्णम् ॥
२२४×१६ सं० मी०	२ (१-२)	१०	३०	५०	सं० १६६६	॥ एक खड्गम् ॥ पौर्विद ज्योतिर्विमुक्त माधवेन लिखितेयं शाति ॥ सवत् १६६६ जंष्ट शूद्र १५ वृषं ॥
२५५×१०६ सं० मी०	२४ (१-२४)	६	२२	५०	प्राचीन	
२१×११ सं० मी०	५ (१-५)	७	२६	५०	प्राचीन	
१२७×८३ सं० मी०	१७ (२-१०, १२-१६)	८	१८	अपूर्०	प्राचीन	इति पुण्याहवाचन सपूर्णं ॥.....
१६७×८७ सं० मी०	१२ (१, ३-५, १२, १५-१७ १६-२२)	७	२२	अपूर्०	प्राचीन	
१६६×८ सं० मी०	१८ (१-१८)	७	३०	अपूर्०	प्राचीन	



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	संघनाम	गद्यकार	टीकाकार	संग्रह किस वस्तु पर लिया है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४२	१५३६३	पुस्तकालय			दे० का०	दे०
५४३	४३८८	पुस्तकालय			दे० का०	दे०
५४४	७५२०	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४५	७०७७	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४६	६४१६	पुनरुत्थानविधि			दे० का०	दे०
५४७	४३५७	पुरस्चरणा चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०
५४८	५३६	पुरस्चरणा चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०

पत्रा या पुष्ठा या भावार	पत्रसंख्या	प्रति पुष्ठा ये पति मागा धीर प्रति पति मे अक्षर सदया		तया अथ पूर्ण है?	अवस्था ओर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द	मपूरा है ता वर्त- मान अथ वा विवरण		
८ प्र	८	१०	३०	६	१०	११
२६५ × ११ सं० मी०	६ (१-६)	१०	३०	पू०	सं० १६१२	इति पुस्तकविधान समाप्त*** लिपित दत्त रामेण पठनार्थं सवत् १६१२
३२ × १२४ सं० मी०	७ (१-७)	१०	४२	पू०	सं० १६०६	इति पुस्तकविधानममाप्तम् सं० १६०६ लिखित पचौली महातार्किक स्वाम- पठनार्थं ॥
२३ × १०६ सं० मी०	५ (१-५)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इत्यनंतदेव कृतपुनराद्ये समाप्तमगमत् ॥
२२ × १०६ सं० मी०	२ (१-५)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२११ × ६५ सं० मी०	१	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति वीधायन सूत्रोक्त पुनर्लिखित प्रतिष्ठा- पन विधि समाप्ता ॥ सदाशिवभट्ट वचोद्वारेण लिखित पुस्तक ॥ **
२६१ × १०५ सं० मी०	२७ (१-२७)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य जानकीनाथ देवेन्द्राश्रमधीमता त्रियतेमत्तचन्द्राणापुरखचरणचरिका ॥ (प्रारम्भ) × × × ×
२३८ × १० सं० मी०	४८ (२-४६)	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री देवेन्द्राश्रमकृतावै पुरखचरण शिकाममाप्त शुभमन्तु श्रीरस्तु विद्यास्तु श्रीगणेशदेव **

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५४६	४३८३	पुष्य स्नान विधि			मि० का०	३०
५५०	२६०८	पूजनक्रम			३० का०	३०
५५१	५३८४	पूजनविधि			३० का०	३०
५५२	४०६३	पूजापद्धति			३० का०	३०
५५३	२८३	पूजापद्धति			३० का०	३०
५५४	२६६२	पूजापद्धति			३० का०	३०
५५५	४६६०	पूजाप्रकार			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५३ × ११३ सें. मी०	७ (१-७)	७	३२	पू०	सं० १६६६	इति पुष्य स्नान ॥ सं० १६६६ पौष कृ० रवि वासरे वाशिकरो पाह्व वाशिनाथ शमंशा लिखितम् ॥
२०६ × १४१ सें. मी०	४ (१-४)	१०	२५	पू०	प्राचीन सं० १२१७	इति पूजनक्रम समाप्तिमगात् श्री विद्वान् गताध्वान् १६१७ मिथुनाके ति १५ रविवासर ।
२६८ × १३३ सें. मी०	११ (१-११)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
१३६ × ११३ सें. मी०	१२	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१८५ × १३५ सें. मी०	१० (२-११)	६	१७	अपू०	प्राचीन	
१०५ × १०७ सें. मी०	१३ (४-१६)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति पूजापट्टनि पटल समान्त ॥
२०६ × ११५ सें. मी०	२ (१-२)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मनामाद्यैः पूजा-प्रकार ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सप्रह्विविषय की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५६	५३५६	पूजाविधि			२० वा०	२०
५५७	५४०५	पूजाविधि			२० वा०	२०
५५८	५२१	पूजाविधि			२० का०	२०
५५९	२१४८	पूजाविधि			२० वा०	२०
५६०	१७०५	पूतनाविधान			२० वा०	२०
५६१	६८२८	पूर्णमासप्रायश्चित्त	महादेव		२० वा०	२०
५६२	६४२९	पूर्वांशमन्त्रावर	ब्रह्मसार मठ		२० वा०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति मत्त्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूर्ण हैं? अपूर्ण हैं तो बर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द			
१६*४ X १०*२ सें० मी०	६ (१-६)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति पूजाविधि समाप्तोऽयम् ॥
१६*६ X १३*७ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	२१	पू०	प्राचीन	कल्पमुद्रोक्त प्रकारेण पूजा विधिः समाप्त ॥
३० X १७*८ सें० मी०	३० (१-२१, २३-३२)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
२४*७ X १०*३ सें० मी०	३ (१-३)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
१६*५ X ११ सें० मी०	१०	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति पूतनाविधान मालाया स्कन्द पुराणोक्त भामिनीपीडा शमन विधान संपूर्ण ॥ श्री.....
२२*१ X ८*६ सें० मी०	२८ (१-२)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति महादेव सोमयाजि विरचिते सत्यापाटीपहिरभ्यकेभिसूत्र प्रयोग-रत्ने दशपूर्णमास प्रायश्चित्तानि समाप्तानि ॥
२२*३ X १०*३ सें० मी०	४८ (१-४८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमीमांसकरामहृत्पुत्रभट्टात्मज महात्महोपाध्याय कमलाकर भट्टकृत ऐश्वरीमहाभाति सहित. पूर्तकमलाकरः समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६३	७४	पूतं कमलाकर (जलज्ञानोपाय)	कमलाकरभट्ट		३० का०	दे०
५६४	२५४	पूतं कमलाकर	कमलाकरभट्ट		२० का०	दे०
५६५	६५३०	पोतृत्व प्रयोग			२० का०	दे०
५६६	६५२७	पोतृ प्रयोग			२० का०	दे०
५६७	६४६३	पौंडरीक हीत्र			२० वा०	दे०
५६८	६४६६	प्रज्ञानामनयोष्टि			२० वा०	दे०
५६९	२६५५	प्रणिष्ठा वचं			२० वा०	दे०

पत्तो गा पृष्ठो वा माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिमन्व्या और प्रति पत्ति मे प्रक्षरमन्व्या		क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है ता वर्तमान प्रथ का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५२ × ११ सं० मी०	१२१ १-१२१	११	४०	पू०	प्राचीन	इति भट्टकमलाकर कृतो जलज्ञानोपाय ॥
२६२ × ११२ सं० मी०	१३८	११	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मीमांसक रामकृष्ण भट्टारक महामहोपाध्याय कमलाकरभट्ट कृत ऐद्री महाशांति सहितो राज्याभिषेक प्रयोगश्च पुस्तं कमलाकर समाप्तः सं० १८६४ मिति श्रावण सुदि १० शुक्लेका का राम राम राम
२०४ × ८४ सं० मी०	८ (१-८)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमस्य पौत्रत्व प्रयोग समाप्त ॥
२१३ × ७८ सं० मी०	४ (१-४)	११	४२	पू०	प्राचीन (सं० १६४३)	इति सस्थालय । वतीयेन निष्कम्ब ॥ सतिष्ठते ज्योतिष्टोमो ज्योतिष्टोम ॥ सवत् १६४३ श्रावण वदि .....
२२५ × १०४ सं० मी०	२६ (१-२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं० १७६५)	समाप्त पौडरीक हौतम् ॥ सवत् १७६५ पौष कृष्ण १ मनी लिखित ॥
२०७ × १०३ सं० मी०	२ (१-२)	६	३२	पू०	प्राचीन (सं० १७६०)	लिखितमिद रामहृदस्य नीलकण्ठेन सवत् १७६०
२६७ × १५५ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३६	पू०	प्राचीन (सं० १६२५)	इति प्रतिष्ठानुक्रम ॥ लिख्यते गणेश शुक्लेन मार्ग वदी ११ सवत् १६२५



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	गद्यरूप	टीकाकार	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५७०	२६८७	प्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०
५७१	३३२८	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठभट्ट		दे० का०	दे०
५७२	४४०२	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठभट्ट		दे० का०	दे०
५७३	१६२१	प्रतिष्ठामयूख			दे० का०	दे०
५७४	७३	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठभट्ट		दे० का०	दे०
५७५	६२६	प्रतिष्ठामयूख	भट्टनीलकण्ठ		दे० का०	दे०
५७६	$\frac{६१५}{३}$	प्रथम स्नानविधि वाजसनेयिनाम्			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो वा आक्षर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आशयक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	१०
२५१×६२ सं० मी०	११	१०	४६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६×६६ सं० मी०	४६ (१-४६)	६	२७	पूर्ण	प्राचीन म०१६२६	इति श्री भीमामहर्षि मृत नीलकण्ठे भस्करे प्रतिष्ठासुखाष्टमं सप्तमो- मिति ज्येष्ठशुक्ल १३ बृहस्पतिवार भवत् १६१५ ॥
१८.५×१२.३ सं० मी०	२७ (३-२६)	१२	४४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री शंकरभट्टात्मज मृत नीलकण्ठे वृत्ते भास्करे प्रतिष्ठा मधुखोष्टम ॥
२८६×१४३ सं० मी०	८	१२	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२७५×१३ सं० मी०	३१ (१-३१)	१२	४१	पूर्ण	प्राचीन म०१८३७	शुद्धि वृत्तिः । इति श्री तेजस्र वस- वन्त श्री महाराजधिराज भगवत देवाधिष्ठ मीमांसक मृत शंकरात्मज नीलकण्ठ वृत्ते प्रतिष्ठासुखाष्टमो नवमः ॥६॥*** गवत् १८३७ शारे*** मायात्मने पाल्पुन मागे वृत्त्यासने भुम्भ*** ** मरे विहित हरभुवराय मरेठ नगरे ॥ शुभ ॥ नोवतशय पाठाय ॥ शुभ ॥
२६८×११५ सं० मी०	३७	१२	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमद्विद्यासिद्धि वराहमिह शंकराधिराज मीमांसक शंकरभट्टा- त्मज मृतनीलकण्ठे वृत्ते भगवत भास्करे प्रतिष्ठा मधुखोष्टम ॥
१६३×११३ सं० मी०	२ (१-२)	१४	३०	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकानाम की आगत सहस्रा वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	३८२१	प्रदोष पद्धति			३० का०	३०
५७८	४१५४	प्रधानपुरुष घटस्थापन पूजा			३० का०	३०
५७९	९६	प्रपन्नकटाभरण	श्रीरामप्रसाद मिश्र		३० का०	३०
५८०	४५९३	प्रपन्नकटाभरण	रामप्रसाद मिश्र		३० का०	३०
५८१	६७८४	प्रयोषित्तामणि	अनंत भट्ट		३० पा०	३०
५८२	६६६७	प्रयोगपरिजात (पोड्य धर्मवाढ समावर्तन-प्रयोग)			३० का०	३०
५८३	३६३	प्रयोग रत्न (पोड्य कर्मपद्धति)			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या अक्षर पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	१०
२५ x १६" सें० मी०	१३ (२-१४)	१०	४८	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ x १५" सें० मी०	४ (१-४)	१०	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति प्रधानपुराण पूजा समाप्ता ॥
२१ x १० सें० मी०	२१० (७-२१०)	८	२७	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६६	नमास्तेयमानुश्रममल्लिका ॥ सवत् १८६६ शक १७३१ ज्येष्ठे मासि श्रीमहासरे नयम्या विद्यो समाप्तोर्ध्वं यय ॥
३६ x ११ x सें० मी०	१०२ (१,१,१,१-१३,१३,३०-६८,६८,६८-७१,७१,७२-७५,७७-७६, १०१-१०२, १३१, १३५, १३६, १३७, १३७, १३८-१५७, १५७, १५८-१८८-१८६)	१४	५४	अपूर्ण	प्राचीन	श्री महानप्रसाद मिश्र विरचिते प्रसन्न-कटाभरणे सत्येकेश्वरगणेशानन्दो-त्कर्त्तनाम पृष्ठ विवरण ॥
२८ x ११ सें० मी०	१६१ (१-१६१)	११	४२	अपूर्ण	प्राचीन	दृश्यते अट्ट विरचिते श्री रामकण-दुमासनेन सगराणादे प्रयागविशा-मन्तो वृत्ति श्राद्ध ॥*** ** ** *(१११८१-१०)
२७ x १० सें० मी०	४ (१-४)	११	३२	पूर्ण	सं० १७६६	सवत् १७६६ मिति आश्विनवदि ६ नवमी बृहस्पतिवार ॥ + + +
२३ x १० सें० मी०	४७ (२-४८)	६	३३	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की श्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८४	२२५	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८५	६३७६	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
५८६	६६६	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
५८७	४७५१	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८८	$\frac{७००३}{२}$	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५८९	३६६१	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५९०	४६५	प्राणप्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सध्या वा सग्रहविशेष की सध्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५६१	२१४५	प्राणप्रतिष्ठामत्र			दे० वा०	०
५६२	४६७८	प्रात कालपूजाविधि			दे० का०	दे०
५६३	७७४८	प्रात सध्या			दे० का०	दे०
५६४	७७५३	प्रात सध्या			नि० का०	दे०
५६५	५८३६	प्रात सध्या			दे० का०	दे०
५६६	५७७६	प्रात सध्या			दे० वा०	दे०
५६७	६१२	प्रायश्चित्तमुक्तावली	दिवानकरभट्ट		दे० वा०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण		अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०		
१६५ × १२८ सें० मी०	१ २	११	२३	पूर्ण		प्राचीन	इति प्राणप्रतिष्ठा समाप्तम् ।
२४८ × १०५ सें० मी०	६ (१-६)	१३	५५	पूर्ण		प्राचीन	इति प्रातः काल पूजाविधिः ॥ शुभमस्तु ॥
१४५ × ८४ सें० मी०	२० (१-२०)	६	१४	पूर्ण		शके १६५३	इति प्रातः संध्या समाप्त । शके १६५३..... ॥
१६ × १० सें० मी०	१६ (१-१६)	७	२०	पूर्ण		आधुनिक	
१६३ × १० सें० मी०	४ (१-४)	११	३५	पूर्ण		प्राचीन	***संवत् १८७४ (शके १७३८) प्रथम भावण सुदि ८ चद्रे समाप्तोय***
१६४ × ८४ सें० मी०	६	७	१६	अपूर्ण		प्राचीन	
२५३ × ११४ सें० मी०	६	६	३६	पूर्ण		प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव ब्रह्मरामज दिवाकर विरचितायां प्रायश्चित्त भूता- वल्या सर्व साधारण प्रायश्चित्त प्रयोग ॥६॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किम वस्तु पर लिया है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५६८	२३७२	प्रायश्चित्तादिधि			दे० का०	दे०
५६९	७७०८	प्रासादमूर्तिप्रतिष्ठा- न्वाधान (प्रासाद नव कुडी प्रयोग)			दे० का०	दे०
६००	२८५४	प्रेतदीपिका			दे० का०	दे०
६०१	४६८९	प्रेतप्रकाशिका	उद्योतमणिमिश्र		दे० का०	दे०
६०२	३८२८	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०३	९	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०४	७०८	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२८१ × १०७ से० मी०	१६ (२६, ८६ १३ १६, १६ २५)	७	२६	अपूर्०	प्राचीन	
२३२ × ६४ से० मी०	५ (१-५)	१०	३३	अपूर्०	प्राचीन	
२६२ × ११८ से० मी०	४० (१-११, १३ १३-३१, ३३-४१)	११	३८	अपूर्०	प्राचीन	
२६३ × १०८ से० मी०	१६ (२४, ६- २२)	८	३५	अपूर्०	प्राचीन सं० १६१४	इति श्री मन्पडितचोतमणि मिश्र कृपाया प्रेत प्रकाशिताया निरग्नि सवत् १६१४ वैशाख सुदि ६ बुध्न लिखित प श्री नायक रामगोपाल ॥
२८ × १८ से० मी०	३१ (१-३१)	२१	१८	पूर्०	सं० १६३६	इति सविही श्राद्ध संपूर्णम् । इति श्री प्रेत मन्त्री संपूर्णम् .. . . . .. .. . सवत् १६३६ मिति जेष्ठ सुदी २ वार गुनवार कु संपूर्ण हुई ।
२६५ × १४ से० मी०	२३	२३	३३	पूर्०	प्राचीन	
२३३ × १०८ से० मी०	११	११	३१	अपूर्०	प्राचीन सं० १८८८	इति प्रेत मन्त्री समाप्ता ॥ सवत् १८८८ अश्वि वैशाख शुद्ध २ गुरो लिखित स्वार्थ परारार्थ ॥ शुभ

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ विस यस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०५	३७४०	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०६	२१७६	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०७	४१०६	प्रेतमुक्तिदा पद्धति	क्षेमराम		दे० का०	दे०
६०८	$\frac{४०००}{३}$	बलदेवाह्निक			दे० का०	दे०
६०९	$\frac{२८०१}{४}$	बलि वैश्वदेवविधि			दे० का०	दे०
६१०	६५०४	बृहस्पतिसव होत्र			दे० का०	दे०
६११	४८७०	बीषायनोक्तविनायक- शांति				दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में उचितगणना और प्रतिवर्ग में प्रसस्तरसंख्या		क्या प्रथमपूर्ण है ? प्रपूर्ण है ही। यत-मग्न भग का विवरण	प्रकृत्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क घ	घ	स	द	६	१०	११
१८ × १३ २ सं० मी०	३८ (६-४१)	१२	२२	अपूर्०	प्राचीन	
२७ ८ × १४ १ सं० मी०	३६ (१-१६ २१-३२ ३२-३६)	८	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२५ ५ × १० ७ सं० मी०	१५ (१-१५, १५-१५)	१२	४७	अपूर्०	प्राचीन	श्री शंकराचार्यवृत्तम प्रेममनिनदा समाप्ता शुभ भूयात् ॥ सवत् १८३३ शके १६६८ मणिमासे दृष्ट्यापथे रविवाररे ॥
१८ ७ × १५ ४ सं० मी०	६ (४-६)	१३	२२	अपूर्०	सवत् १६१८	इति श्री हरिवंशे बलदेवान्तिक नारायण समष्टि रूपस्नवन आत्मरक्षा-करण १६४ के तत्सत् सवत् १६१८ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ तिथितमिद पुस्तक मुरलिधर आत्मपठनार्थ ॥
१७ ५ × १३ ५ सं० मी०	२	११	२०	अपूर्०	प्राचीन	
२३ ३ × ८ ५ सं० मी०	८ (१-८)	८	३३	अपूर्०	सं० १७८२	इति बृहस्पति सव समाप्त ॥ सवत् १७८२ मार्गशीर्ष शुद्ध ८ बुधे तिथित जय राम खेडा कामेश्वरस्य ॥
२५ ५ × १० ८ सं० मी०	४ (१-४)	६	३५	पूर्०	प्राचीन	इति प्रतापनारतिहाय्ये तस्कार प्रकाशे श्रीधायनानुसारीविनायक शक्ति प्रयोग समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६९२	१४३३	शतपथ			३० का०	३०
६९३	१४६६	ब्रह्मचर्यव्रतम्, पद्धति			३० का०	३०
६९४	६५२४	ब्रह्मतरवप्रयोग			३० का०	३०
६९५	४५५०	ब्रह्मयज्ञ			३० का०	३०
६९६	६३६४	ब्रह्मयज्ञ			३० का०	३०
६९७	६३६६	ब्रह्मयज्ञ			३० का०	३०
६९८	६३७०	ब्रह्मयज्ञ			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
१८ X ११ ५ सें. मी०	१४ (१-१२, १६-१७)	८	१४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ ५ X १० ३ सें. मी०	२४ (२-२५)	६	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ ३ X ८ ८ सें. मी०	६ (१-६)	१०	४७	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मरव ॥ अक्षरगोपामनि पद्यमान ॥
११ ५ X ६ ६ सें. मी०	५ (१-५, ६)	११	१४	अपूर्ण	प्राचीन	अत्मना समस्त पापक्षयार्थं देवरवि- मुप ॥ पित्रु प्रीत्यर्थं ॥ ब्रह्मयज्ञमह करिष्ये ॥ (पत्र-संख्या—१, प्रारम्भ)
१६ ५ X १० ३ सें. मी०	१४ (१-१५)	८	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मयज्ञदेवश्रुविमनुष्यपितृ- तर्पण समाप्त ॥ शुभ भूयात् ॥ श्रीरस्तु ॥
१७ ७ X ६ सें. मी०	५ (१-५)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
१५ ५ X ६ ८ सें. मी०	७ (१-७)	७	१८	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की अंगण संख्या या सत्र दिनेश का संख्या	प्रथमतः	प्रयत्न	टीकाकार	प्रथम तिथि वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६१६	४४७४	भागवतपुत्रा विद्यालय			दे० का०	दे०
६२०	४४६०	भुवनज्वरी शांतिः			दे० का०	दे०
६२१	४४४६	भूतमुक्ति			दे० का०	दे०
६२२	$\frac{७००३}{२}$	भूतमुक्ति			दे० का०	दे०
६२३	१२१०	भैरव दीपदान			दे० का०	दे०
६२४	२००५	भैरवपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६२५	२०७१	भौमपूजा			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति म अक्षर सख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७६ × ११७ सें० मी०	३ (१-३)	६	५०	अपूर्ण	प्राचीन	विनामणि फलप्रदा श्री भागवताभिधा सप्ताह यज्ञ नियमन श्रवणमह करिष्ये ॥ इति सकल्प ॥*** (पत्र सख्या २)
२४५ × १०५ सें० मी०	८	६	३७	पूर्ण	प्राचीन	इति भुवनेश्वरी शान्ति
२१५ × ६५ सें० मी०	२ (१-२)	८	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति भूतशुद्धि ॥
१२३ × ८ सें० मी०	५ (१-५)	६	२३	पूर्ण	आधुनिक	इति भूतशुद्धि संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥ ब्रह्मापरा मस्तु ॥
२० × ११५ सें० मी०	६ (५-६, ११)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	*
२० × २ × १० सें० मी०	१०	१०	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति भैरवपूजा पद्धति ।
१६ × २ × ८ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२२	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सहाय या राश्रह विशेष की सहाय	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२६	४४६१	श्रीमपूजा			दे० का०	दे०
६२७	५३८५	श्रीमपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३८	१३०६	मगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६२६	७४७०	मगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६३०	६०३७	मडपपूजा			दे० का०	दे०
६३१	१३५४	मडपपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३२	६८१	मडपपूजा विधि			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्षिसंख्या और प्रति पृष्ठ में प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२०.५ × ८.८ सें. मी०	३ (१,४,५)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीनक	इति भोगपूजा ।
१६.६ × ८.५ सें. मी०	१२ (१-१२)	५	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
३० × १३.५ सें. मी०	२	१०	३५	पूर्ण	प्राचीन	
१६.१ × ११.२ सें. मी०	२	२१	२०	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थवार	टीकावार	ग्रन्थ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३३	७१३५	मङ्गलदेवतापूजन (सर्वतोभद्र-सिगतोभद्र- देव स्थापन-पूजन)			दे० का०	दे०
६३४	३१०६	मन्त्रदीक्षा			दे० का०	दे०
६३५	७१४०	मन्त्रदीक्षासिद्धि विधि			दे० का०	दे०
६३६	२६६३	मन्त्रपूजा होमविधि (नारद पंचरात्र)			दे० का०	दे०
६३७	३८४६	मन्त्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
६३८	७१५६	मन्त्ररत्नावलीयन्त्रपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३९	५८५१	मन्त्रला			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रपक्ष्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या प्रौर प्रति पक्ति मे अक्षरपक्ष्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	भवस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७ × ११३ सें. मी०	६ (१-६)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति मडलदेवताः पूजनसंपूर्णं ॥
२१.६ × १०.८ सें. मी०	१४ (१-१४)	८	२७	पू०	प्राचीन	
१५.६ × १०.६ सें. मी०	१० (१-१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११३ सें. मी०	४ (१-४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पन्चरात्रे मद्रपूजा होम-विधि ॥
२३.५ × ११.४ सें. मी०	७ (१, ३-८)	६	३१	अपू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री मद्रमुक्तावल्या कृष्ण नारद सवादे दीक्षाविधाय पंचमोऽध्याय संपूर्णं शुभमस्तु भगवददात् सवतु १६०६ साके १७७३ *** ॥ शेष पत्रकशातिवत् ॥
११.४ × ७.२ सें. मी०	३ (१-२, ११)	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्रत्नावल्यायज्ञपूजनविधान-मेकत्रिशोत्सास + + + + +
२३.३ × १०.६ सें. मी०	४	७	२६	अपू०	प्राचीन	

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की आगत मूल्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४०	२६१९	भवविधि			२० का०	२०
६४१	७८६०	मठमठपीतसर्ग			२० का०	२०
६४२	१७५१	महादाननिराण्य	दामोदर		२० का०	२०
६४३	६२६०	महान्यास	माधव भट्ट		२० का०	२०
६४४	३९९६	महामृत्युञ्जय जप पद्धति			मि० का०	२०
६४५	१५३८	महामृत्युञ्जय मंत्र			२० का०	२०
६४६	७७३३	महामृत्युञ्जय जपविधि			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१३५ × १० सें० मी०	४ (२-५)	८	२५	अपूर्ण		इति मत्र विधि समाप्त ॥
२४५ × १० १ सें० मी०	६५ (१-६५)	८	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२७७ × १० ५ सें० मी०	४८	८	४४	अपूर्ण	प्राचीन	
१४७ × ७ १ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२६	पूर्ण	शके १६७४	इति न्यास सपूर्ण । श्री कृष्णापरा- मस्तु शके १६७४ माघ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदभूयुवासरे । कवीश्वरोपनामक मुकुन्द भट्टस्य सूनूना माधवेन लिखित ॥
१६८ × १० ३ सें० मी०	५ (१-५)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महामृत्युञ्जय पद्धतिस्तमाप्ता मत्रोपया.....
१७२ × ८ ६ सें० मी०	३ (१-३)	५	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२१५ × १० ७ सें० मी०	६ (१-६)	८	१८	पूर्ण	प्राचीन सं० १८३०	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४७	४६६४	महालक्ष्मी पूजन			दे० का०	दे०
६४८	३१३५	महालक्ष्मीव्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
६४९	३०३४	महालक्ष्मीव्रत- पूजन विधि			दे० का०	दे०
६५०	६८६३	महाव्रत होत प्रयोग			दे० का०	दे०
६५१	७६१	महापष्टी पूजा			दे० का०	दे०
६५२	३२४६	महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६५३	६५६१	महिम्नोक्त लिग- प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३०५ × १७५ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	२४	पू०	स० १६७६	इति श्री लक्ष्मी जी की आरती समाप्तम् ॥ १० लालमन दास लिपि कृत स० १६७६ मिति वै० शु० ५ भीमदासरे चाँदपुर निवसि ॥
२३८ × १०३ सें० मी०	७ (१-७)	१०	५२	पू०	प्राचीन	इति महालक्ष्मी व्रतोद्यापन समाप्त ॥
२४ × १०४ सें० मी०	७ (१-७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३४ × ६८ सें० मी०	१४ (१-१४)	१०	४१	पू०	प्राचीन स० १७६१	इति आश्वलायनोक्त महाव्रत ॥ सवत् १७६१ श्रावण कृष्ण ३ चद्रे लिखित ॥
२४५ × १० सें० मी०	७ (२-८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२५५ × ७७ सें० मी०	१० (२-११)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति महालक्ष्मी दुर्गासव व्रत पूजा समाप्त ॥
२५ × ११४ सें० मी०	२५ (१-२५)	७	३३	पू०	स० १६३६	इति महिम्नात्मक लिगप्रतिष्ठा स्थापन विधि समाप्त ॥ सवत् १६३६ मि०***

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिति
१	२	३	४	५	६	७
६५४	३८६६	महीदानविधि			२० का०	२०
६५५	२३५६	माघउद्यापन विधि			२० का०	२०
६५६	३०१६	मातृका न्यास			२० का०	२०
६५७	५४०६	मातृश्राद्धप्रयोग			२० का०	२०
६५८	६३६६	(जगदवाया) मानस पूजा	सकराचार्य		२० का०	२०
६५९	५६४६	मानसपूजा			२० का०	२०
६६०	$\frac{३३४८}{४६}$	(श्रीराम) मानसपूजाविधि			२० का०	२०



पद्यो या पृष्ठो वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्तपद्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या शंभु पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्त- मान घण का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०४×६७ सें० मी०	२ (१-२)	८	३१	५०	प्राचीन	इतिमहीदानं ॥
६३×१८५ सें० मी०	१ (खरी)	६४	२३	५०	प्राचीन सं०१८२०	इति श्री नारद ब्रह्म सवादे माघनुद्यापन विधि सपूर्ण समाप्त ॥ सवत् १८२० माघमासे त्रयोदशी १३ बुधदिने ..... शुभमस्तु ॥ मंगल ददातु ॥
२३५×८८ सें० मी०	६ (१-६)	७	२८	५०	प्राचीन सं०१८२८	इति केशवादि मातृकान्यास. । स्वामि- चरणारविन्दयोस्तु ॥ सवत् १८२८ शके १६६३ ज्येष्ठ० ११ भृगुवासरे ॥ .....
२४८×१०३ सें० मी०	५ (१-५)	१०	३०	५०	सं०१६१३	इति मातृश्राद्ध समाप्तम् ॥१॥ सवत् १६१३ भाद्रपद शुक्ल पक्षे च प्रतिपद्या बुधवारामे लिपित दत्त रामेण धीशङ्की पुर मध्ये ॥ स्वहेतवे ॥ शुभभूयात् रामायानम् ।
२४५×१०२ सें० मी०	६ (१-६)	८	३०	५०	प्राचीन	इति श्री मच्छ(क)राचार्य विरचिता जगदवाया मानसपूजा समाप्त ॥
२४×११८ सें० मी०	५ (१-५)	६	३३	५०	प्राचीन	इत्यगस्त्य संहिताया परमरहस्ये मानसी- पूजा कथन नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्याय ३३ ..... ॥
१२५×८२ सें० मी० (सं०मु०३७)	१३ (१-१३)	६	१६	५०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहिताया परमरहस्ये श्रीराम मानसीपूजाविधिपत्रत्रिंशो- ऽध्यायः श्रीराम*** ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६६१	१६१२	मानसोपचार पूजा	शकराचार्य		मि० का०	२०
६६२	६३४६	मालासस्कार	चिरजीव भट्टाचार्य		२० का०	२०
६६३	$\frac{७७६६}{२}$	मालासस्कार			मि० का०	२०
६६४	२८६३	मालासस्कार			२० का०	२०
६६५	३३०६	मालासस्कार			२० का०	२०
६६६	६७४७	मालासस्कार विधि			२० का०	२०
६६७	५७५२	मालासस्कार विधि			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२८२ × १५५ सें० मी०	४ (१-४)	१५	४२	५०	प्राचीन	इति श्रीमच्छ्री शकटाचार्य कृतामानसो पंचार पूजा समाप्तम् ॥ शुभममस्तु ॥
२४ × १०५ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३४	५०	प्राचीन	इति विरजी भट्टाचार्य कृते सर्वाण्ये माला सस्कार ॥
२०८ × १११ सें० मी०	३ (१-३)	६	२३	५०	प्राचीन	इति माला सस्कार ॥
१६७ × ७७ सें० मी०	५ (१-५)	८	१६	५०	प्राचीन सं० १८३६	इति रुद्र यामले तत्रे माला सस्कार संपूर्णं शुभ मस्तु ॥ सबदु १८३६ ॥ मुद्रामछत्रपुरं लिपितं लल्लू भवस्यो ॥
२०३ × ११४ सें० मी०	३ (१-३)	७	१७	५०	प्राचीन	इति माला सस्कार संपूर्णं ॥
२४६ × १०६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३३	५०	प्राचीन	इति माला विधि समाप्ता*** ** **
१८५ × ८२ सें० मी०	१	८	३५	५०	प्राचीन	इत्य मालानीं मस्कार्यं यथाशक्ति मन्त्रमन्त्र ज्योतिर्दिनि ॥ मालानीं सस्कार-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६६८	३०२६	मुडनसस्कार विधि			२० का०	२०
६६९	६४२६	मूर्तिदान विधि			२० का०	२०
६७०	६४१५	मूर्तिप्रतिष्ठा	सदाशिव भट्ट		२० का०	२०
६७१	४८८३	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			मि० का०	१०
६७२	२५०५	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			२० का०	२०
६७३	४७७८	मूर्तिशास्त्र			२० का०	२०
६७४	३१०७	मूर्तिशास्त्र			२० का०	२०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्र संख्या प्रति पत्रिका में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्या श्रीर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१६७×६५ सें० मी०	५	१२	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
१२६×१०३ सें० मी०	१	८	३६	पूर्ण	सं०१८१३	इति मूर्तिदान विधि ॥.....सर्वत् १८१३ बैशाख शुद्ध ८ ॥
२२२×६२ सें० मी०	७ (१-७)	१०	३७	पूर्ण	प्राचीन	इत्यादिमोक्षना मूर्तिप्रतिष्ठा ॥..... चलाचल प्रतिष्ठाया पुस्तकं लिखित सदा शिव भट्ट कवीश्वरेण ॥.....
२८८×१४१ सें० मी०	१० (१-१०)	१३	३२	पूर्ण	सं०१६५७	इति चलाचल मूर्ति प्रतिष्ठा विधि समाप्त सर्वत् १६५७ माघ मासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ एकादश्या बुधवारान्वि- ताया लिखित.....॥
२०६×१० सें० मी०	५ (१६-२०)	१२	५२	अपूर्ण	प्राचीन	
३२७×१३४ सें० मी०	७ (१-७)	११	४६	पूर्ण	सं०१६०६	इति श्री मूलशांति समाप्तः सर्वत् १६०६ ॥
२२५×८८ सें० मी०	२	१०	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री सर्व शास्त्रोद्दारे भूत शांतिरु समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत मर्यादा या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६७५	३७३५	मूलशांति			दे० का०	३०
६७६	३७१४	मूलशांति			३० का०	३०
६७७	४५५	मूलशांति			३० का०	३०
६७८	८२१	मूलशांति			३० का०	३०
६७९	२४२९	मूलशांति			३० का०	३०
६८०	७३२	मूलशांति काविका	शामदेव दीक्षित		३० का०	३०
६८१	२८४२	मूलशांति विधि			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बतें मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	८	९ ८	९	१०	११
३०५ × ११४ सें० मी०	८	११ ४४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मूलाद्यक्षे स्नान कर्म विधि लिखत मुरनिघर + + + + + ॥
२३ ५ × १२ सें० मी०	८ (१-८)	८ २६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६५०	इति श्री मूल सात विधायसपुनं ॥ शुभ । मिली द्वितिय आषाढशुक्ल १४ गुरवास्तरे सकत् १६५० ॥ ... ..
२४४ × ११ सें० मी०	६	११ ३२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६६६	इति मूलशाति कर्तव्यता ॥ १६६६ वरये माघवदिदशमी बुधवासराश्विना जा तत्र बदरी मिश्रण प्रालेपि ॥१॥ शुभमस्तु ॥१॥
१६७ × ६५ सें० मी०	६ (१-६)	६ २४	पूर्ण	प्राचीन	इति विश्वप्रकाशे मूलजनन शात समाप्त
२०१ × १११ सें० मी०	२१ (१-२१)	८ २१	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६२	पुतय लिध्यत जमनादास सं० १८६२ शाके १७२७ ॥
२३१ × ११ सें० मी०	६ (१-६)	१० ३६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री दीक्षित विश्वामित्रात्मज दीक्षित बामदेव कृता मूल शाति काडिकाया पठति समाप्ता ॥
२०६ × १०० सें० मी०	५ (१-५)	१० २५	पूर्ण	प्राचीन	इति मूल शाति विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	प्रथनाम	अथकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६८२	२०६०	मूलशांति विधि			२० का०	२०
६८३	२३१०	मूलशांति विधि			२० का०	२०
६८४	२६८६	मूलशांति विधि			२० का०	२०
६८५	६७१४	मृगारेष्टि प्रयोग			२० का०	२०
६८६	६५१२	मृगारेष्टि हीत			२० का०	२०
६८७	६५२२	मृगारेष्टि हीत			२० का०	२०
६८८	६४६६	मृगारेष्टि हीत			२० का०	२०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षर संख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१२४×८८ सें० मी०	६ (१-६)	७	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१७५×८६ सें० मी०	१२ (३-१४)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मूलशांति विधि समाप्त श्री शिवायनम श्रीकृष्णायनम सवत् १६३५ राम.....
२६५×१२५ सें० मी०	६	८	२५	पूर्ण	सं०१६१५	सवत् १६१५ मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे पुन्यतियो मावस्यावां शुक्रवासरान्विताया शुक्रवासरे लिखित चदन मिश्र सनु हरिदोयाल मिश्रका ॥
२३४×१० सें० मी०	६	१०	४२	पूर्ण	सं०१७६१	इति मृगारेष्टि प्रयोग ॥ श्री लक्ष्मी- नृसिंहायनमस्तु ॥ सवत् १७६१ आषाढ शुद्ध १२ लिखितमिद पुस्तक रामडोहकरोपनामक विश्वनाथ भट्टेन ॥
२१६×८२ सें० मी०	५ (१-५)	८	२६	पूर्ण	प्राचीन	॥ सतिष्ठते मृगारेष्टि ॥
२१५×८६ सें० मी०	३ (१-३)	११	३५	पूर्ण	प्राचीन	इति मृगारेष्टि होत्र समाप्त ॥
२१६×१०४ सें० मी०	७ (१-७)	६	२३	पूर्ण	प्राचीन सं०१७८७	इति मृगारेष्टि होत्र सपूर्ण ॥ श्री ॥ सवत् १७८७ शाके १६५२ पश्चिम शुक्ल पक्षे ..... (सं०सू०३८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रथमार	टीकाकार	प्रथम किस्त वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
६८६	३६६८	मृतदाहविधि	नारायणमठ		२० का०	२०
६९०	६२८	मृत्युञ्जयपूजा			२० का०	२०
६९१	६३६६	मृत्युञ्जय विद्या			२० का०	२०
६९२	३३०८	मृत्युञ्जयविद्या			२० का०	२०
६९३	७३४७	मैत्रावरुण अग्निष्टोम			२० का०	२०
६९४	६५०५	मैत्रावरुण प्रयोग			२० का०	२०
६९५	६६६१	मैत्रावरुण प्रयोग			२० का०	२०

पदो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	द	स द	१०	१०	१०
२२५×६३ सें० मी०	११ (१-११)	६ ३५	१००	प्राचीन सं०१८१४	इति श्री भट्टारामेश्वर मुत्तनारायण भट्ट विरचितः सान्निकाप्राशक्लापन मृतदाह विधि ॥ (पत्रसंख्या ९) + + + पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठभट्टेन लिखापित स्वार्थ परार्थ च सवत् १८१४ समय प्राश्विन कृष्ण ७ रवौसमाप्तम् ॥***
२४१×१०६ सें० मी०	७ (१-७)	६ ३४	१००	प्राचीन सं०१८८८	इति मयु रजयजूजा संपूर्णमिति धोनमः शिवाय सवत् १८८८ तत्रमासे ॥*** मम दोषा नदीयते ममल ददातु ॥
२२८×६७ सें० मी०	४ (१-४)	६ २८	१००	प्राचीन	इति श्री मृत्युञ्जय विद्यान समाप्तः ॥ सदाशिव देवताऽऽर्णमस्तु ॥ सवत् १६१० के साल समये नाम मितौ माघ सुदि ७ कः बुधवासरे कः समाप्तः ॥ + + +
२०६×१०६ सें० मी०	१० (१-१०)	६ २६	१००	प्राचीन सं०१८७६	इति मृत्युञ्जयविद्यान वमिष्ट मत्वे ॥ आचार्य सदा रत्नम्वेनालेन भववित् ॥ राजाहि सर्वलोकस्य पिता भवति धामिन् ॥ तस्मात्तरुण्यत्नेन कर्म कुर्वीत शान्ति ॥ श्री महर्षिवायनम् ॥ सवत् १८७६ ॥ मार्गशीर्ष मासेशुक्लपक्षे
२२२×६६ सें० मी०	३५ (१-३५)	११ ३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२२६×८५ सें० मी०	१५ (१-१५)	१४ ३६	१००	प्राचीन	अपानिष्टो मोर्मन्नावरणप्रयोगो निरूप्यते (प्रारम्भ)
२६६×६८ सें० मी०	३ ७	७ १६	अपूर्ण	प्राचीन (सं०१७८८)	- मैत्रावरुण गमाप्त ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठम्य सवत् १७८८ ज्येष्ठ शुक्ल ५***

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राणत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	प्रयनाम	प्रसार	टीकाकार	अथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६६	१८६६	यज्ञपद्धति			२० का०	२०
६६७	४७७६	यज्ञपद्धति	रामप्रसाद प्रणुत		२० का०	२०
६६८	४५४६	यज्ञपद्धति			२० का०	२०
६६९	५८६३	यज्ञोपवीत			२० का०	२०
७००	६३५४	यज्ञोपवीत			२० का०	२०
७०१	$\frac{३६२६}{२}$	यज्ञोपवीतकरण विधि			२० का०	२०
७०२	२४३६	यज्ञोपवीत पद्धति			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठा वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कौन- सा प्रथम वा द्वितीय	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्‍या विवरण
		स	द			
१८५×६५ सं० मी०	३८ (२-३७, ४३-४४)	१०	२०	अपूर्ण	प्राचीन	जीए
३६६×१२२ सं० मी०	६० (२-६०) पत्र ४२-६०	११	४०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८७२	सम्भवतः शुभ सप्तम्यां शशि परिमित मासि माघे च शुक्ले पक्षे चापुष्य योगे कुम्भशर निधौ पुष्यभ चावक वारे ॥ श्री मद्रासप्रभाद प्रणत विरचिता श्री वशिष्ठ प्रणोतेश्चन्द्रो मन्त्रैर्विशिष्टा- घरकर परमा पदतिः पूर्तिमाप्ता ॥ समाप्तोप यज्ञ पदतिः समस्त ॥
२५४×१२८ सं० मी०	२७ (२-५ ) १४-३६)	६	३३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री यज्ञ पद्धति संपूर्णम् शुभ मस्तु सवत १६१७ भाषाह शुक्ल ६ दुष्प्रवासरे ॥
२५२×१०३ सं० मी०	६ (१-६)	६	४६	अपूर्ण	प्राचीन	
१६६×१०३ सं० मी०	१५ (१-१५)	८	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
१३४×१५६ सं० मी०	३	६	१४	पूर्ण	प्राचीन	इति यज्ञोपवीत करण विधि ॥
२२२×१२१ सं० मी०	११ (३-४ ८, २० २४-२५ २० ३०-३३)			अपूर्ण	सं० १८४६	इति यज्ञोपवीत पदति समाप्त ॥ शुभमस्तु । सवत् १८४६ श्रावण कृष्ण षष्ठ्या सोमवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
७०३	१२७६ २	यज्ञोपवीत प्रकार			२० का०	२०
७०४	४१२८	यज्ञोपवीतसंस्कार पद्धति			२० का०	२०
७०५	३०३८	यज्ञोपवीतसंस्कार विधि			२० का०	२०
७०६	१००७	यतिसंस्कार विधि			२० का०	२०
७०७	७६६२	यत्तीचाराधना प्रयोग			२० का०	२०
७०८	६६२३	योगपट्ट विधि			२० का०	२०
७०९	२६६६	रजोदर्शन शास्त्र			२० का०	२०

पत्रा या पत्रो का संख्या	पत्रासंख्या	प्रति पत्र में पत्रिकासंख्या और प्रति पत्रिका में पत्रिकासंख्या		पत्रिकासंख्या पूर्व में ली गयी मात्र पत्रिका विवरण	पत्रिका की संख्या	पत्रिका विवरण
		म	र			
१६×११५ सं० मी०	४ (१-४)	१२	१२	५०	प्राचीन	इय्युपवीत प्रसार ॥
२२२×१२० सं० मी०	१५ (५, ७-८, १०-१६, २५-२६)	११	२५	सू०	प्राचीन	
२१५×१०० सं० मी०	१२ (१-१२)	६	३०	सू०	प्राचीन	
२३१×१०६ सं० मी०	११ (१-११)	११	३५	५०	सं० १८१७	इति मति सन्धार विधि निर्णयमग्रह ॥ श्रीरामहृत्पावनम ॥ श्रीकृष्णपावनम संवत् १८३७ मी० भा०
२५८×१०७ सं० मी०	५ (१-५)	६	३०	५०	प्राचीन	इति मतीना धारापना प्रयोग ॥
१८६×८६ सं० मी०	५ (१-५)	७	२०	५०	प्राचीन सं० १८६३	इति योगपट्ट विधि समाप्त ॥ संवत् १८८३ भावे १७२८ मासाश्विन शुक्ल पक्षे त्रयो ५ शुक्रवारि ॥ लखि ब्राह्मण विसंनगरा ॥ पट्टया ऊद्धवजीये ॥ पौरिषिवाणद स्वामिनीछ ॥
१६६×७७ सं० मी०	१० (१-१०)	७	२०	५०	सं० १८२७	इति धीनकोवत रजोदर्शन शास्त्रि ॥ संवत् १८२७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीचापार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१०	३४५६	राधाकृष्णमानसीपूजा			दे० का०	दे०
७११	३६६४	रामचद्राह्निक (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
७१२	५७८८	रामपद्धति	रामानुज		दे० का०	दे०
७१३	५८१८	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१४	३२०४	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१५	६०६७	रामपद्धति			दे० का०	दे०
७१६	$\frac{२१४२}{६}$	रामपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का प्रमाण	पत्रांक	प्रति पृष्ठ में पवित्रमन्त्रों और प्रति पत्रि मन्त्रांशका		क्या पत्र पूर्ण है?	घट्टा घोर प्राचीनता	अन्य प्राच्य विवरण
		ग	द	संपूर्ण है तो वर्ष-मान घट्टा का विवरण		
स	स	ग	द	स	१०	११
१६'३ × ८'५ सं० मी०	८ (१-८)	६	२३	पू०	प्राचीन	श्रीराधाकृष्ण मानमोदना सम्पूर्णम् ॥
३२'० × १३'२ सं० मी०	३० (५-६, ८-११ १५-१६ २१,२५ ३२-३५ ३८,४१ ४५-४६)	११	५५	अपू०	प्राचीन	
२२'५ × १०'५ सं० मी०	११ (१-११)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री रामानुजकृता रामपदति वेदोक्त- समाप्ता । शुभमस्तु भस्वन गुदि ७ सवत् १८८३ ... .. ॥
२७'२ × ११'६ सं० मी०	१० (१-१२)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्रामानुजाचार्य विरचित श्री रामपदति वेदोक्त संपूर्णम् लिखित समीक्षा अट्ट तंतिग पत्रावत ॥ शुभभूयात् ॥ ... धारोग्ये भवतु ॥
२१'८ × १०'३ सं० मी०	३१ (१-२ ५-२२)	६	२४	अपू०	सं० १८२३	इति श्री रामानुजाचार्य कृता वेदोक्तो पदति संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु सवत् १८२३ मास ॥ सावण शुक्ल पक्ष ॥ १० ॥ वार ॥ रवि ॥ लिखित बरेली मध्ये ॥ चपतराय वा ॥ वल मे ॥ दामानु- दास । वनदेवदास ॥ ... ..
१५'७ × ६'२ सं० मी०	२६ (१-२६)	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री रामानुजीय श्री रामपदति संपूर्णम् ॥
१८'५ × १६ सं० मी०	५ (६-१२)	६	१६	पू०	सं० १६२३	सवत् १६२३ धारण कृष्ण पक्षे तृतीये सोम्य वासरे लिखित जय रामेण याद दास्ती शुभ भवेत् ॥ श्री ... ..

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
७१७	३०६६	रामपूजा विधि			३० का०	३०
७१८	२८३२	रामसेवा विचार			३० का०	३०
७१९	५३३८	रामयणपरायण विधि			३० का०	३०
७२०	७८६१	रामायणपूजन			३० का०	३०
७२१	७५६९	रामायणविधि			३० का०	३०
७२२	१५०३	रामार्चन			३० का०	३०
७२३	७५०७	रामार्चनचक्रिका			३० का०	३०

पत्रों का पृष्ठा का मात्र	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या घोरप्रतिपत्ति में पक्षसंख्या			क्या प्रथम पत्रों में प्रथम है तो यहाँ मान भग का विषय	धरण्या घोर प्राचीनता	अन्य प्राचिन विवरण
		म	द	९			
२५ × ६७ सं० मी०	२	८	३२	५०	प्राचीन	इति रामायण सखेवतो पूजा विधिः ॥	
२६ × ११२ सं० मी०	४५ (१-४५)	११	३७	५०	प्राचीन	इति श्रीगम सेवाविचारं एकोन- विंशतिध्याय ॥	
२७७ × १११ सं० मी०	११ (१-११)	७	२७	५०	प्राचीन	इति रामायण पुरुषचरण विधि ॥	
२३३ × ११ सं० मी०	५ (१-५)	११	२४	५०	प्राचीन		
३१५ × १२२ सं० मी०	४ (१-४)	९	४०	५०	प्राचीन	इति श्री मद्रामायण विधिः.....	
२०२ × १०३ सं० मी०	६ (१५-२०)	९	२८	५०	प्राचीन		
२२७ × १२५ सं० मी०	६२ (१-६२)	१०	३३	५०	प्राचीन सं० १६०४	इति रामायण चंद्रिकाया पंचम पटलः समाप्तः ॥.....संवत् १६०४	

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	प्रथाम	प्रयवार	टीकावार	प्रय रिस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७२४	६१२४	रामार्चन पद्धति			३० का०	३०
७२५	१००३	रामार्चन विदीपिका	रामकृष्ण भट्ट		३० का०	३०
७२६	६२१७	रामार्चन विधि			३० का०	३०
७२७	३५२६	रामार्चा पद्धति			३० का०	३०
७२८	६२८६	रामार्चा विधि			३० का०	३०
७२९	७६११	रामार्चा विधि (द्वितीय अध्याय)			३० का०	३०
७३०	६४८३	रामार्चा विधि			३० का०	३०

पत्तो या पुळो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकिनमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		कथा ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४ × ६७ सें. मी०	५ (६-१३)	६	३३	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ × ५ × ८ सें. मी०	३४ (१-३४)	५	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाराष्ट्र रामकृष्ण भट्ट विरचिता श्री रामचर्न विदोपिका समाप्ता ॥
१८ × ७ × ५ सें. मी०	५ (१-५)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
२४ × १० × ५ सें. मी०	६ (१-६)	६	३८	पूर्ण	प्राचीन	
३१ × १६ × २ सें. मी०	७ (१-७)	१२	३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२३	इति श्री शिव सहिताया अविष्योत्तर खडेशिव पावंती सवादे रामाचर्चा विधि संपूर्ण सं० १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ८ भागे ॥
२७ × ११ × ३ सें. मी०	१० (१-१०)	८	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री शिव सहिताया अविष्योत्तरपडे रामाचर्चा विधि त्रयेण शिव सवादे द्वितीयोऽध्याय ॥ + + +
१४ × ६ × २ सें. मी०	१४ (१-१४)	८	१२	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की श्रावण सहाय या सप्रहविषय की सहाय	ग्रथनाम	प्रथवार	टीनावार	अथ किस वस्तु पर विषय है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७३१	१२५५	रुद्रनाम (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)			२० का०	२०
७३२	७१५८	रुद्रनाम			२० का०	२०
७३३	५७१३	रुद्रपद्धति	रगनाथ		२० का०	२०
७३४	१४०५	रुद्रपाठ (अष्टम अध्याय)			२० का०	२०
७३५	४४२६	रुद्रपूजन विधि			२० का०	२०
७३६	२१३५	रुद्रप्रथन			२० का०	२०
७३७	३००३	रुद्रप्रथन			२० का०	२०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्र संख्या और प्रतिपत्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थशास्त्री और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१२'५' x ६ सें० मी०	१४ (१-१४)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति मद्र जाये द्वितियोध्याय ॥२॥
६'५' x ५'७ सें० मी०	७	६	१०	अपू०	प्राचीन	इति मद्रजाप्ये पञ्चमोध्यायः ॥
२७' x १०' सें० मी०	१५ ३-१७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति रगनाय वृते रुद्रपदवी ॥
२०' ८' x १०' ५' सें० मी०	२१ (१-२, ६-१३, १७-१८, २०-२७, २९)	८	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९१५	इति रुद्रपाटोऽप्रष्टमोध्याय सं० १९१५ थावण वृष्ण दशम्या निश्चित भवानी दत्तेन मुमु भूयात् ॥
२४' २' x ११' २ सें० मी०	८ (४२-५०)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति बोधायनोक्त रुद्र स्नान विधान समाप्त ॥*** (पत्रसंख्या ५०)
२४' ३' x ६' ३ सें० मी०	१५	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
६' ८' x ५' १ सें० मी०	१०	५	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस्र वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३८	७१०	रुद्रवत्युं धापनविधि			दे० का०	दे०
७३९	२३५५	रुद्राक्षधारण विधि	वृषसिंहदेव		दे० का०	दे०
७४०	५५५६	रुद्राक्षमाला संस्कार			दे० का०	दे०
७४१	६९३०	रुद्रानुष्ठांग पद्धति	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
७४२	५००८	रुद्राभिषेक कल्प			दे० का०	दे०
७४३	२९६७	रुद्राभिषेक विधि			दे० का०	दे०
७४४	४७४२	रुद्रोजाप			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६५ × ६५ सें० मी०	३	१२	६४	पू०	प्राचीन	इति काशी खंडे रुद्रवात्स्युं धापन विद्यान संपूर्ण ॥
२६ × १५ सें० मी०	५ (१-५)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
१८५ × ८ सें० मी०	४ (१-४)	६	३३	पू०	प्राचीन	रुद्राक्षमाला सस्कारे***मंत्रसिद्धि कामो- ऽमुक देवता माला सस्कारमह करिष्ये ... .. ( प्रथम पत्र )
२३७ × १०३ सें० मी०	५६ (१-५६)	६	३२	पू०	सं० १८०३	संवत् १८०३ मासे आश्विन कृष्ण पक्षे तिथि ३० वार गुरो तद्दिने अव- सत्यो माहेश्वरेण लिखित ॥
१६३ × १२५ सें० मी०	४५	७	२२	अपू०	प्राधुनिक	
१६३ × ६६ सें० मी०	४ (१-२७)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
१७४ × ६७ सें० मी०	२२ (१-२२)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १७८१	इति रुद्रविद्यान समाप्त ॥ संवत् १७८१ ... .. ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा मसहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४५	४६७७	लक्ष्मीपूजन विधि			दे० का०	दे०
७४६	१२५१ २	लघु आतुरसन्ध्यास विधि			दे० का०	दे०
७४७	६४७२	लघुपद्धति			दे० का०	दे०
७४८	१८४६	लघु लक्ष्मीहवन विधि			दे० का०	दे०
७४९	६३१२ ७	लघुशांति			दे० का०	दे०
७५०	४४७७	विगतोभद्रमण्डल देवता			दे० का०	दे०
७५१	६७३	विगतोभद्र होम			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्रिनसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वर्त- मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०५ × ८८ सें० मी०	३ (१-३)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२३ × ७८ सें० मी०	४ (१-४)	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति सयास ।
२३३ × ७२ सें० मी०	७६ (७७७, ७६-८६)	५	३२	अपू०	प्राचीन	
१४६ × १० सें० मी०	६ (१-६)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति लघु लक्ष्मी हवन समाप्त इति श्री लिखित पुस्तक कहैया लाल स्वात्म पठनाय शुभमस्तु ॥
२०८ × १४२ सें० मी०	२ (१-६)	१५	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री लघुशांति समाप्त ॥
२५५ × १०६ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति देवता होमे समाप्त ॥
२०२ × ८ सें० मी०	६	७	२२	पू०	सं० १६३६	इति लिखितोपद्र देवता प्रधान होम समाप्त ॥ इद होपुरोपासक बटुक- नार्येन स्वपठनार्थं लिखित ॥ स्वार्थ पराय च ॥ माघे शुद्ध ८ म्या लिखित ॥ सं० १६३६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	अथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
७५२	७८०५	(शिव) लिगप्रतिष्ठा पद्धति			दे० का०	२०
७५३	३३२५	लिगप्रतिष्ठा पद्धति	अनंतमट्ट		दे० का०	दे०
७५४	१००६	लिगप्रतिष्ठापन विधि			दे० का०	दे०
७५५	१०६०	लिगप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७५६	५७२७	लिगस्थापन विधि			दे० का०	दे०
७५७	६५६७	लिगार्चाप्रतिष्ठा विधि	बमलाकर		दे० का०	दे०
७५८	१२०६	ब्रह्मगोपासमंत्रानुष्ठान			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६५ × ११४ सें० मी०	१३ (१-१३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति बौधायनीक्त लिगप्रतिष्ठा पद्धति समाप्ता ॥
२६३ × १० सें० मी०	२० (१-२०)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं० १६२३	इति श्रीमद्विद्वद्बृहस्पतिमुक्तमणि श्रीमन्नागदेवात्मज श्रीमदनत मृदु विरचित लिगप्रतिष्ठा पद्धतिः समाप्ता “ इति लिपि कृत स्यामलालचरये य ग्रंथ सं० १६२३ भास माघ. शुक्ल. ११ ॥
२४ × १०.३ सें० मी०	१४ (१-१४)	८	३१	पू०	प्राचीन	श्रीराम श्री कासी विश्वेश्वरारण्यमस्तु ॥ श्री अन्नपूर्णा देविभ्यो नमः श्री भैरवनाथ समयं श्री अष्टमातृका देवता नवम्रा देवतापणंमस्तु । श्री राम ॥
२३६ × ११७ सें० मी०	६	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति वास्तुदेवता ॥ शुभभवतु ॥
२०.२ × ६.३ सें० मी०	११ (१-११)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति बौधायनसूत्रोक्त लिगस्थापन विधि ॥
२४ × ६.५ सें० मी०	७	६	५०	पू०	प्राचीन	इति मद कमलाकर कृते लिगार्चनप्रतिष्ठा विधिः ॥
३२ × ११ सें० मी०	१	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७५६	५७७४	बटुकदीपदान विधि			२० का०	२०
७६०	५२८१	बटुकवलि विधि	-		२० का०	२०
७६१	४८३०	वनप्रतिष्ठा विधि			२० का०	२०
७६२	४८४६	वनप्रतिष्ठा विधि			२० का०	२०
७६३	७७४०	बलिदान विधि			२० का०	२०
७६४	३८३१	बलिदान विधि			२० का०	२०
७६५	४८३१	बलिदान विधि			२० का०	२०

पत्तो या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	८	९	१०	११	१२	१३
२३८ × ८५ सं० मी०	१	३३	१७	पू०	प्राचीन	इति बटुकदिपदान विधि ॥ शुभ०
२६२ × ११ सं० मी०	३ (१-२)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति बटुक बलि विधि ॥
३०३ × १२५ सं० मी०	११ (१-११)	१०	४०	पू०	सं० १८७४	इति श्रीवनोत्तराम जलोत्सजी विधि संपूर्णम् । सम्बत्तरा १८७४ साके १७३६ समय फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे पचम्या बुध दासरे वेलेपिरधुवगमन पुष्ककि समाप्तम् ॥
२४६ × १० सं० मी०	१७ १-१७	८	२६	अपू०	प्राचीन सं० १७८१	× सम्बत्सरे १७८१ समय भाद्र शुक्ल स्यकादश्या बुधदासरे ॥
१३७ × ६२ सं० मी०	४ (१-४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति बलिदान विधि ॥
३५६ × ६२ सं० मी०	२	७	४६	पू०	प्राचीन	इति बलिदान प्रकरण समाप्त ॥
२७५ × ११५ सं० मी०	४ (१-४)	६	४१	पू०	सं० १६४०	इति बलिदान विधि समाप्तम् ॥ सं० १६४० शा १८०५ गौरि द्विज ॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आयत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
७६६	५२२८	बलिर्वैश्वदेव			दे० का०	वे०
७६७	५८४६	बलिर्वैश्वदेव			दे० का०	वे०
७६८	७५८०	बलिर्वैश्वदेव विधि			दे० का०	दे०
७६९	६८६२	वाजपेयहोत्रप्रयोग			दे० वा०	दे०
७७०	२३५८	वापीकूपतडागादि- प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७७१	६६५०	वाल्मीकि रामायण पाठ प्रयोग			दे० वा०	दे०
७७२	६६४९	वाल्मीकि रामायण- पाठ प्रयोग			मि० वा०	दे०



पत्नी या पुष्टो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रतिपुष्ट मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति म प्रकार संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	भवस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	
२८ × १२५ सं० मी०	२ (१-२)	१०	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति बल वैश्वदेव क्रिया समाप्तम् ॥
२९ × ६२ सं० मी०	२ (१-२)	११	४५	पूर्ण	प्राचीन	
२६३ × ११ सं० मी०	३ (१-३)	६	४५	पूर्ण	प्राचीन	अथ वैश्वदेव लिप्यते (प्रारंभ)
२३६ × १० सं० मी०	२५ (१-२५)	१२	४५	पूर्ण	प्राचीन	इति वाजपेय होत समाप्त ॥
२७५ × १३ सं० मी०	११	१३	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२३ × १०.५ सं० मी०	८ (१-८)	१०	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति सभित्त श्री वाल्मीकि रामायण- पाठप्रयोग ॥ अथ विधि. श्री काशीस्य ठाकुरद्वारा समीपस्य श्री विश्वनाथजी प्रमिहोतीति प्रतिद्व सोमयाजिना परम काशीकेन संगृहीत ॥ तथा श्री सवत् १६५० + + + + ॥
१६२ × ६६ सं० मी०	५ (१-५)	११	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाहस प्रयाणे उमामहेश्वर- सवादेवचम पत्र ॥५॥ श्री सवत् १६५० आरण्य वृष्य १२ द्वादश्या + + + रामदास भट्टात्मजराय कृप्यो- नैतत् विद्यानि सीतला षट् समीपस्य- ठाकुर द्वारा समीपवासि श्रीविश्वनाथ प्रमिहोती + + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
७७३	६६४८	वाल्मीकि रामायणपाठ विधान			दे० का०	दे०
७७४	६६६६	वाल्मीकीय रामायण संक्षेप पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७५	५३०१	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७६	५२४७	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७७	१४	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० वा०	दे०
७७८	२२५१	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० वा०	दे०
७७९	५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
द	घ	स	द	९	१०	११
१६६ × १०४ सें० मी०	६	१२	२४	पू०	प्राचीन सं० १६४६	श्री वाल्मीकि रामायण पाठ विद्यान श्री रामभक्तार्थ महता परिश्रमेण संगृह्य लिखित श्रीराम भद्रात्मज राम कृष्ण तैलङ्गेण । श्रीकाशीविश्वनाथपुरी सवत् १६४६ X X X
२८६ × ११६ सें० मी०	१२ (१-१२)	६	३६	पू०	सं० १६५०	इति श्री मद्वाल्मीकि रामायण पारायणो सक्षेप प्रयोग ॥ श्री सवत् १६५० शके १८१५ विश्वावमुनाम सवत्सरे मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया
२१४ × ११४ सें० मी०	२६ (७-३२)	११	२४	अपू०	सं० १६३२	इति वासिष्ठी समाप्त*** * * * * *** * * * * सवदि १६३२ शके १७६७ वारानाम ग्रामे लिप्यत पपरे पाठक ॥
२३६ × १११ सें० मी०	५ (१०-१४)	६	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री वासिष्ठीकीरिचा समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ मिति कार्तिक वदी ७ सवत् १८६६ * * * ॥
१५ × १०५ सें० मी०	११ (१-११)	७	१३	पूर्ण	प्राचीन	
१५५ × १० सें० मी०	२६ (१-२६)	६	१८	पू०	प्राचीन सं० १७८६	इति वासिष्ठी समाप्त ॥ शुभ मंगल दवातु ॥ कार्तिक वदि ४ वासरे सवत् १८७६ लिखत प० श्री पाठक जवाहिर सोप ग्रामे विहारी आश्रमे ॥ स्वस्ति । दीर्घायु भूयात ॥४॥
१७ × १२५ सें० मी०	१४	८	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक भीर विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८०	३५६८	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८१	३५१५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८२	५०४६	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८३	८३८	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८४	६६७	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८५	५००५	वाशिष्ठी होम विधि			दे० का०	दे०
७८६	६८२	शस्तुपूजा			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या और प्रति पक्ति म आक्षर संख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२४ × ११५ सें० मी०	१४ (६-१२, १७-२२)	१०	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२५४ × १५१ सें० मी०	१६	१४	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२४२ × ११५ सें० मी०	४० (१-३०, ३३-४२)	७	२८	अपूर्०	प्राचीन सें० १६०७	इति श्री ब्रह्मप्रोक्त संहिताया वाशिष्ठी दुर्गात्सव होम पद्धति समाप्तम् ॥ × × सवत् १६०७ वैसापकृष्ण ६ रवौ ॥
२३७ × १३२ सें० मी०	७ (४६-५५)	६	२३	अपूर्०	प्राचीन सें० १६२३	इति श्री होम पद्धति वाशिष्ठी संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु मंगल भूयात् सवत् १६२३... लिखत भया यदि शुद्धममुद्ध वान मम दोषो न दीयते ॥
२०५ × १०२ सें० मी०	२५ (२-२६)	६	२५	अपूर्०	प्राचीन	
२५७ × १११ सें० मी०	४० (१-४०)	६	३६	पूर्०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मोक्त वसिष्ठोक्त होम विधि समाप्त ॥
२०८ × १११ सें० मी०	६	७	३०	पूर्०	सवत् १६३६	गौरी शंकर शर्मा लिपित्वा ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	प्रकार १	टीकाकर	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७८७	२६७६	वास्तुपूजा			२० का० १	२०
७८८	७४७३	वास्तुपूजादि			२० का०	२०
७८९	९२७	वास्तुपूजा विधि			२० का०	२०
७९०	६०३६	वास्तुपूजा विधि			२० का०	२०
७९१	२१३८	वास्तुपूजा विधि			२० का०	२०
७९२	६४१३	वास्तुप्रतिष्ठा			२० का०	२०
७९३	३७७३	वास्तुप्रतिष्ठा पूजा- विधि			२० का०	२०

पदो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति पक्षसंख्या		क्या प्रथमपूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वत मान प्रथम का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५१ × १५५ सें. मी०	३ (१-३)	१०	३१	अपूर्०	प्राचीन	
२४६ × ११ सें. मी०	१३ (२-१४)	८	२८	अपूर्०	प्राचीन	
२४८ × १०२ सें. मी०	१५ (१-५)	८	३७	पूर्०	सं० १६४६	इति वास्तुपूजा विधि समाप्तम् सवत् १६४६ शाके १८११ माघ शुक्ल १ भौम लिपित्वा गोरी शर्मणो ॥
२४१ × ६२ सें. मी०	६ (१-६)	६	३५	पूर्०	प्राचीन	इति वास्तु पूजा विधि ।
२०५ × १० सें. मी०	१७	८	२१	अपूर्०	प्राचीन	
२१४ × ६६ सें. मी०	१० (१-१०)	१०	३८	अपूर्०	प्राचीन	अथ प्रतिष्ठावास्तुलिख्यते तद प्रकार । (प्रारम्भ)
२६२ × १४२ सें. मी०	२	१४	५०	पूर्० (जीर्ण शीर्ष)	सं० १६०६ प्राचीन	इति वास्तु पूजा विधि सप्तमं सुभमास्तु-मगल ददात सवत् १६०६ कार्तिक कृष्ण १ वृ

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रह विशेष की सख्या	ग्रथनाम	रचकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७६४	४८६६	वास्तुर्गाति (शास्तु पूजन पद्धति)			दे० का०	दे०
७६५	१००४	शास्तुशाति प्रयोग			दे० का०	दे०
७६६	६४२७	शास्तुशाति प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७६७	५१३३	शास्तुशाति प्रयोग			दे० का०	दे०
७६८	२०३२	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	दे०
७६९	५८४	विजया दशमी पूजा विधि			दे० का०	दे०
८००	६३४८	विष्णुसाराय भायविषय- विधि			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपत्ति म अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो बत- मान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ		स द	६	१०	११
२१"८ × ११"४ सें० मी०	११ (१-११)	८ २६	पू०	स० १६०६	इति वास्तु पूजन पद्धति समाप्ता ॥ संवत् १६०६ ॥
२४" × १०" ३ सें० मी०	११ (१-११)	११ ३७	पू०	प्राचीन	अग्निरित्यादिप्रजापत्यत ॥ एकैक्याज्या- हृत्यायथे ॥
२२"२ × ६"५ सें० मी०	१० (१-१०)	१० ४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामकृष्ण विरचिते आश्वलायन गृहीत वास्तु शांति प्रयोग ॥
२१"४ × १०"५ सें० मी०	३ (१-३)	१४ ४५	पू०	प्राचीन	इति गृहवास्तु शांति प्रयोग ।
२७"७ × १३" १ सें० मी०	४ (१-४)	१३ ३७	पू०	प्राचीन स० १८२३	इति श्री विजयादशमी पूजा समाप्त ॥ * * * * *संवत् १८२३ तत्र वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदाया १ गृहदिन लिखित * * * * * ॥
१६" × ११" ५ सें० मी०	८ (१-८)	१६ १०	पू०	प्राचीन स० १८३६	इति विजयदशमी कर्तव्यता सपूर्ण सं० १८३६ ॥
२३" ५ × १०" ५ सें० मी०	११ (१-११)	१२ ४४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८०१	७८१५	विनायक शांति			दे० का०	दे०
८०२	५४८१	विवाह			दे० का०	दे०
८०३	$\frac{६११६}{७}$	विवाह कर्म	रूपलाल गुसाई		दे० का०	दे०
८०४	$\frac{४३३७}{८}$	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०५	$\frac{३२८३}{२}$	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०६	५४२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०७	५२४३	विवाह कर्म			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	१०	११	
२६८×१११ सें० मी०	३ (१-३)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति विनायक शांति ॥ शुभमस्तु
१८.६×१० सें० मी०	२० (२४-४३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१४७×६६ सें० मी०	४० (१-४०)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति आषाचार रूपलाल गूभाई कृत सपूर्ण॥ + इति ग्रहघ्नोक्त विवाह कर्म सपूर्णम् ॥ १॥
१६×१३३ सें० मी०	२४ (७-३०)	१३	२५	अपू०	प्राचीन	इति ग्रहघ्नोक्त वीवा कर्म सपूर्ण ॥
१८५×१२८ सें० मी०	१६ (१-१६)	१२	२३	पू०	प्राचीन स०१८६५	इति विवाह कर्म समाप्त ॥ इति ॥ १६०८ आरण कृष्णा ५ गुहवासरे लिपत सौतेराम ब्राह्मण वहायडि मध्ये ॥
१६×१२२ सें० मी०	१६ (१-१६)	१०	१८	पू०	प्राचीन स०१६०८	इति श्री विवाह कर्म समाप्तम् । सवत् १६०८ आरण कृष्णा ५ गुहवासरे लिपत सौति रम । पठनार्थं बर्हैया- राम । शुभमस्तु श्रीः ॥ श्रीरामचन्द्र
२७×११६ सें० मी०	२२ (१-२, ४- ८, १०, १२- २५)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इति विवाहकर्म समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८०८	५११६	विवाहकर्म			२० का०	३०
८०९	१००२	विवाहकर्म			२० का०	३०
८१०	५५९६	विवाहकर्म (टीका सहित)	हलामुद्य		२० का०	३०
८११	४२८७	विवाहकर्म			२० का०	
८१२	६०८९	विवाह टीका			वि० का०	
८१३	४०६२	विवाह दर्पण			२० का०	
८१४	४६४	विवाह पद्धति	रामदास		२० का०	

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो चर्त मान अथ का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
द अ	ब	स	द	६	१०	११
१८७ × १४७ सें० मा०	१५	११	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
२५५ × ११ सें० मी०	१० (१-६, ११)	१०	४१	अपूर्ण	सं० १८१३	इति विवाह क्रम ॥ सपूर्ण ॥ सवत् १८१३ मति वैसाख शुक्ल १० रवि वासरे ॥ यादसि पुस्तक द्रष्टवा ॥ तादस लिखित मयापजदि शुद्ध विधुद्ध बा मम दोषो न दियेते ॥ श्रीराम
३०८ × १४७ सें० मी०	१५ (४-१८)	१४	५२	अपूर्ण	सं० १८८३	इति श्री विवाह कर्म मत्र व्याख्या हलायुधन कृत विवाह सपूर्ण * * सम्बत १८८३ श १७५८ फाल्गुण कृष्ण ६ सोम्य दिने लिपि कृत निदि ।
२५३ × ११२ सें० मी०	१७ (२-१८)	११	३१	अपूर्ण	सं० १८४६	इति विवाहकर्म समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १८४६ समय पाव कृष्ण एका दशवा लिखित रामहित शुक्ल आदारे वैते ॥ राम कृष्णपानम ॥
१६६ × ८ सें० मी०	१२ (१-१२)	५	१५	पूर्ण	सं० १६०५	इति श्री विवाह टिका सपूर्ण सवत् १६०५ मीति आपाडवदि ११ वार मंगलवार * * *
२३५ × ८८ सें० मी०	२३ (२५-४७)	७	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५५ × ११३ सें० मी०	३४ (१-३४)	१०	३५	पूर्ण	सं० १६३२	इति वाक्याथ इति चतुर्थामत्र व्याख्या विवाहकर्म समाप्तम् हलायुधन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	प्रथ कित वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१५	२४४	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त		दे० का०	दे०
८१६	११८६	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८१७	११९४	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त आचार्य		दे० का०	दे०
	२					
८१८	४६२	विवाह पद्धति (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
८१९	४६०६	विवाह पद्धति (कर्मकौमुद्यातर्पत)	कृष्णदत्त प्रवर्षी		दे० का०	दे०
८२०	५२२१	विवाह पद्धति (सटीक)	रामदत्त		दे० का०	दे०
८२१	४०१०	विवाह पद्धति (सटीक)	प० गयासहाय		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वन- मान अक्षर वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवरण विवरण
		स	द			
१६१×१२६ से० मी०	२२ (१-२२)	१२	१६	पू०	प्राचीन स०१०६७	इति चतुर्थी कम समाप्तम स० १०६७ तिथि ६ बुधवार मार्गशोप ।
२२५×८ से० मी०	२२ (१-२२)	७	३२	पू०	स०१७२७	अनेखित पिरोघर विपाठी मिद पुस्तक संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ सबत् १७२७ ॥ शाके ॥ १५६२ आदर्श मासि कृष्ण पक्षे तिथी चतुर्दश्या ॥१५॥ भोमवासरे
१५२×१२४ से० मी०	३६ (३-४२)	१०	१७	अ० पू०	स०१६१०	इति श्री रामदत्त आचार्य कृते विवाह पद्धति संपूर्णम् शुभ भूयात् लिप्यनार्थ गणन आचार्य १६१० पीप शुक्ला ८ मृगु०.....
३३×१४ से० मी०	१६ (१-१६)	१४	५१	पू०	स०१०६७	इति चतुर्थी कम प्रकारः समाप्तमिति श्रीरस्तु ॥
२३१×११८ से० मी०	२६ (१-२६)	१०	२६	पू०	स०१६०६	इत्यावस्थिक कृष्णदत्त विरचितायां कम्म कौमुद्या विवाह पद्धति प्रकरणं समाप्त शुभमस्तु सबत् ॥ १६०६ जेष्ठ शुक्ल ॥ १३ ॥ सोमकौ लिख्यत प० श्री अउजरिया विहारी स्वार्थम् ॥
३३४×१२६ से० मी०	२२ (१-२२)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामछति विरचिताया विवाह पद्धति ॥
३२५×१०४ से० मी०	४२ (१-४२)	६	२७	पू०	स०१६५७	इति विवाह प्रकरणम् ॥ + + + + + सबत् १६५७ पठित गया गहाय कृत ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिंग
१	२	३	४	५	६	७
८२२	१७७३	विवाह पद्धति			३० का०	३०
८२३	५२०३	विवाह पद्धति			३० का०	३०
८२४	२०२६	विवाह पद्धति			३० का०	३०
८२५	२२६२	विवाह पद्धति			३० का०	३०
८२६	३२४४	विवाह पद्धति			३० का०	३०
८२७	६४५५	विवाह पद्धति			३० का०	३०
८२८	१८६७	विवाह पद्धति			३० का०	३०



पत्नी या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्र-संख्या और प्रति रक्ति मे अक्षर-संख्या		क्या संय पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४२ × १०३ सं० मी०	२२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१४६ × ६२ सं० मी०	२०	१०	१७	अपू०	प्राचीन	अथ वर धर्माधिकारमाय मोरी विवाहः यिप्ये वर इति सकला पत्रम् सस्कारा न्भुत्वा लौकिकाग्नि स्थापन . . . . . (पत्र-संख्या ३)
३०२ × १४५ सं० मी०	६ (१-६)	१६	५२	पू०	सं० १८५८	इति विवाह कर्म समाप्तम् सवत् १८५८ फाल्गुन शुक्ला प्रतपदा भृगुवासरे विवाह पद्धति लिपितम्
१८३ × १०७ सं० मी०	२५ (१-६, ११-२६)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२५५ × १५२ सं० मी०	४ (६, ८-९, ११)	१६	२०	अपू०	प्राचीन	
२५६ × १०८ सं० मी०	४ (४-७)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति विवाह विधि ॥
१७३ × १३३ सं० मी०	३१	१०	१५	अपू०	सं० १९४३ कृमिकृतित	इति विह कर्म समाप्त ॥ अथ चतुर्थी कर्म लिप्यतम् ॥ सं० १९४३ मासाना मासोत्तमासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ १३ तृयोदश्या भोमवासरे लिप्यत मीथ्र बाहालराम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८२६	१५४०	विवाहपद्धति			दे० का०	१०
८३०	४५०५	विवाहपद्धति			दे० का०	१०
८३१	$\frac{४६२१}{३}$	विवाहपद्धति			१० का०	१०
८३२	४२०४	विवाहपद्धति			मि० का०	१०
८३३	४२०२	विवाहपद्धति			१० का०	१०
८३४	४१६०	विवाहपद्धति			१० वा०	१०
८३५	२७०६	विवाहपद्धति			१० वा०	१०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिमख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७ × १०.२ सें. मी०	१८ (१-७, ९-१६ १८-२३)	७	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
२३.२ × ११.५ सें. मी०	२५ (१-२५)	८	२४	अपूर्ण	प्राचीन	अथ कर्मप्राप्तो विवाह विधिमुच्यते (प्रारम्भ) × × ×
१६ × १०.७ सें. मी०	१३	९	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२.३ × १७.६ सें. मी०	१९	११	२३	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × ११.८ सें. मी०	१२ (१-१२)	७	३०	अपूर्ण	प्राचीन	अथ विवाहपद्धति लिखते (अथमपत्र)
२१.१ × १०.३ सें. मी०	९ (१०-२०)	७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ × १०.५ सें. मी०	११	९	१७	अपूर्ण	सें. १८.४९	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३६	३५०४	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८३७	१२२५	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८३८	४०३६	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८३९	६२६	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८४०	६२७	विवाहपद्धति			२० का०	२०
८४१	१८०८	विवाहपद्धति (टीकासहित)			२० का०	२०
८४२	१६०४	विवाहपद्धति (संस्कृतटीका)			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१८५ × १३ सें० मी०	२७ (१-२७)	११	२६	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति विवाहपद्धति कर्म समाप्तम् ॥ .....सवत् १८७१ आषाढ शुक्ल प्रतिपत्सनिवासरे लिपीपूति..... ॥
२३७ × १०२ सें० मी०	१७ (१-१७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति विवाह समाप्त ॥ मी पौरशुदी ८ शुभ
१६ × १०२ सें० मी०	३० (१-३०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
१६५ × १२५ सें० मी०	२७	६	२२	अपू० कृमिकृतित	सं० १६२१	इति चतुर्थी कर्म समाप्तम् ॥ शुभमस्तु- मगल वदातु ॥ श्री ॥ सवत् १६२१ मिति पौर वदि १३ चद्वार लिपत मिश्र हरगु (गुन)लाल ॥ पठनार्थ मिश्र लाल ॥ शुभ ॥
२३ × १६ सें० मी०	६ (१-२,७-१३)	२२	२०	अपू०	प्राचीन	
३२७ × १२५ सें० मी०	३८ (२-७, ६-३८, ४३-४४)	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२६५ × १३७ सें० मी०	११ (१-४, ६-१२)	११	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतारण्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८४३	३५१४	विवाहप्रदति (मटोक)			३० का०	३०
८४४	६६६८	विवाहप्रयोग	कमलाकर भट्ट		३० का०	३०
८४५	१६७४	विवाहप्रत व्याख्या			३० का०	३०
८४६	४०४०	विवाहविधि			३० का०	३०
८४७	४७१०	विवाहविधि			मि० का०	३०
८४८	$\frac{७५७१}{२}$	विवाहविधि			३० का०	३०
८४९	४९२६	विवाहग्रन्थ			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	व			१०	१०	१०
३१६ × १२५ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२२३ × १०३ सें० मी०	११ (१-११)	१०	३४	पू०	सं० १७८८	इति श्री राम कृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्ट कृतो विवाह प्रयोग ॥ सवत् १७८८ माघ कृष्ण ११ बुधे लिखित मिद रामहृदापनामक विरचनाय भट्टात्मज नीलकण्ठे ॥
२२५ × १४५ सें० मी०	६ (१-६, ९, ११-१३)	२०	३०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०५ सें० मी०	४३ (१-४३)	६	२६	पू०	सं० १६१७	इति विवाह विधि समाप्त ॥ सवत् १६१७ ॥ फाल्गुण मासे शुभे वृष्ण पक्षे ॥ तिस्रो पंचमीयां ॥ शुकवासरे ॥ .. ..
२०७ × १७३ सें० मी०	११ (१-११)	८	२३	अपू०	आधुनिक	
१२१ × १६५ सें० मी०	३३ (१-३३)	१८	२१	अपू०	प्राचीन	
१५२ × १०२ सें० मी०	५ (१-५)	८	१८	पू०	सं० १८५०	इति विवाह शूद्र विधि पठित राम हित ॥ सवत् १८५० आशारे वंशे मिति जेष्ठ शुक्ल पंचमी गुरु वासर के पुस्तक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	३७६१	विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
८५१	६५७०	विष्णुवलि प्रयोग			दे० का०	दे०
८५२	६६४०	विष्णुवलिप्रयोग			दे० का०	दे०
८५३	१४८४	विष्णुशयनी स्थापन विधि			दे० का०	दे०
८५४	२७६०	विष्णु पोठना नाम			दे० का०	दे०
८५५	२७८३	विष्णु पोठनोपचार पूजा			दे० का०	दे०
८५६	५७५०	विष्णु सहस्रनाम पद्यति			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित संख्या और प्रति पवित मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
६५१ × १०७ सें० मी०	४२ (२-४३)	६	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्रकल्पे वानप्रस्थ- गृहस्थाश्रम धर्मपंचमहायज्ञविधि समाप्त ॥ (पत्रसंख्या-३७) + + +
२४४ × १११ सें० मी०	४ (१-४)	१०	३८	पूर्ण	सं० १८१६	इति विष्णुवलि प्रयोग ॥ पुस्तकमिदं रामडोहकर विश्वनाथ भास्कर भट्टात्मज नील कठभट्टेन लिखित स्वार्थ परार्थ च संवत् १८१६ कार्तिक शुद्ध १०
२२६ × १०१ सें० मी०	४ (१-४)	६	४१	पूर्ण	प्राचीन	इति विष्णुवलि प्रयोग ॥
१८८ × १० सें० मी०	५ (१,४-७)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णु- भयनाच्युदापन विधि भपाठी शुक्ला संपूर्ण शुभ भूयान् श्री वृष्णापन्न
१२८ × ६६ सें० मी०	२ (१-२)	८	१२	पूर्ण	प्राचीन	इति विष्णु पुराणे दोहस नाम समाप्त ॥
१४ × ८४ सें० मी०	३ (१,३४)	७	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७३ × ६७ सें० मी०	३	४	१६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८५७	$\frac{६३१२}{७}$	बुद्धि शांति			दे० का०	२०
८५८	८६५	वृषाक पदाति			दे० का०	२०
८५९	४१६०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	२०
८६०	११३०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	२०
८६१	५५०२	वृषोत्सर्ग			दे० का०	२०
८६२	५२७७	बृहस्पतिमंत्र न्यास			दे० का०	२०
८६३	$\frac{३७५८}{२}$	वेणीमाघव पूजन			दे० का०	२०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमंख्या पीर प्रति पक्ति मे अक्षरमंख्या		क्या ग्रप पूर्ण है? प्रपूर्णा है तो वर्ण मान अक्ष का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०८ × १४२ सें० मी०	३ (६-८)	१४	३२	पू०	प्राचीन	इति वृद्धि जाति संपूर्णा ॥
३२५ × १७६ सें० मी०	३	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२२७ × ६ सें० मी०	७ (१-७)	१२	४४	पू०	स० १८४५	श्री रस्तु ॥ सवत् १८४५ मिति आबए वद्य पंचमी लिखित नारायणस्य हस्ता- क्षर पुस्तक समाप्त ॥ इद पुस्तक वृषोत्सगंस्येद ॥
३१ × १३१ सें० मी०	१३ (१-१३)	१२	४०	पू०	स० १९४२	इति वृषोत्सगं गोदान सवत् १९४२ आश्विनै कृष्णपक्षे च द्वादश्या चतुर्दश्या लिखित फकीरचंद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ श्रीरोशिवानम शुभभूयात् ॥
२७४ × १७५ सें० मी०	१ धर्रा (१-४)	३६	३०	अपू०	जीएँ प्राचीन	
१५६ × ११५ सें० मी०	१	१५	२०	पू०	प्राचीन	बृहस्पते गृहसमदो बृहस्पतिस्त्रिपु छन्द न्यामि विनि०... (प्रारम)
१५७ × ८५ सें० मी०	६ (२-१०)	११	२३	अपू०	प्राचीन स० १९०४	इति श्री पदमपुराणै पानान चटोश्च श्री वैष्णोमाधव पूजन समान्त ॥०॥

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रह विभाग की संख्या	ग्रथनाम	प्रकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८६४	६३७२	वेदपारायण विधि			२० का०	२०
८६५	$\frac{५०५४}{१५}$	वेदपारायण विधि			२० का०	२०
८६६	१२१९	वेदोक्तशिवाचन पद्धति			२० का०	२०
८६७	६९३१	वैदिकमन्त्र सग्रह			२० का०	२०
८६८	६९२९	वैदिकमन्त्र सग्रह			२० का०	२०
८६९	६४३३	वैद्युत्प्रज्ञाति प्रयोग			२० का०	२०
८७०	$\frac{५०५४}{१५}$	पैशाखस्नान विधि			२० का०	२०

पत्तो या पृष्ठो वा भावार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे पकिनसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बर्त- मान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२४×६१ से० मी०	५ (१-५)	१०	३६	पूर्ण	प्राचीन	इति ऋग्विधानाद्युक्तो वेदपरम्परा विधिः ॥
१६×७८ से० मी०	१३३	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
२३१×१२३ से० मी०	४४ (१-४४)	४	१३	पूर्ण	प्राचीन	इति वेदोक्तशिवाचनं पद्धति । शुभम् ।
२४५×१११ से० मी०	४ (१-४)	६	२६	पूर्ण	प्राचीन	
२४३×१११ से० मी०	३ (१-३)	१०	३५	पूर्ण	प्राचीन	
२२३×८८ से० मी०	३ (१-३)	७	२७	पूर्ण	प्राचीन	
१६×७८ से० मी०	४३	७	२१	अपूर्ण	प्राचीन	इतिस्तोत्रम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिय
१	२	३	४	५	६	७
८७१	७६४७	वैशाखाष्टम			३० का०	३०
८७२	४४८५	वैश्य सध्या			३० का०	३०
८७३	१६२०	वैश्व (बलिवैश्व)			३० का०	३०
८७४	६३६१	वैश्वदेव			३० का०	३०
८७५	५७५८	वैश्वदेव विधि			३० का०	३०
८७६	५८१६	वैश्य विधि			३० का०	३०
८७७	६४२	व्यास पूजा	शकराचार्य		३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठो वा आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या प्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान प्रथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
		स	द			
२७३×११४ सें. मी०	२	६	३५	अपू०	प्राचीन	इति वैशाखोद्यापनविधि ॥
२५×१०४ सें. मी०	२ (१-२)	८	४२	पू०	सं० १६२३	इति वैश्य सध्या समाप्तिमगात् सं० १६२३ वैशाख शुक्ला ८ श० वा० ॥
२५५×१०७ सें. मी०	५ (१३-६)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति वैश्वम समाप्तम पौषमासे अस्ति पक्षे दशम्या सनिकानरे ॥ नमन मिश्र द्विजे नेद लिपित पुस्तम् मिद ॥ सवत् १८७३ अकेश १७३८ शुभमस्तु ॥
१४७×८३ सें. मी०	६ (१-६)	६	२४	अपू०	सं० १६३५	इति वैश्वदेव समाप्त ॥ स्वार्थं परोप काराय ॥ शिवाय गुरवे नम ॥ सवत् १६३५ अके १८०० ॥
२६४×२१३ सें. मी०	१ (खर्चा)	२०	३३	पू०	सं० १८८६	इति श्री वैश्वदेव पद्धति संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ सं० १८८६ के उपरात् चं० व० ७ मु० बेरेठी लिप्यत् प० विदुवा मुपनाल ॥
२७३×११४ सें. मी०	२ (१-२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति वैश्व विधि ॥ सं० १६३२ मा० मा० वृ० ४ लि० ॥
१३×१०५ सें. मी०	६ ((३-८))	१२	१५	अपू०	प्राचीन	इति छकराचार्य विरचित व्यास पूजा समाप्ता ॥ श्री हरहरायणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८७८	१८४२	ग्रथवध			दे० का०	दे०
८७९	४८१३	ग्रनाकं			दे० का०	दे०
८८०	५९२६	ग्रताकं			दे० का०	दे०
८८१	६९४१	ब्रह्मचारीवतलोप- प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
८८२	१२४४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८३	५२६६	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
	२					
८८४	७०५२	ब्रह्मयज्ञ तर्पण			दे० का०	दे०



पत्रो वा पृष्ठो वा आकार	पत्रमर्यादा	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या और प्रति पति मे अक्षरसंख्या	क्या यह पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
अ	ब	ग	द	९	१०	११
१४ × १२.३ सें. मी०	२	१०,	१८	अपूर्ण	प्राचीन (पंडित) जीर्ण	इति वसवध अतादेश व्रतविगं तृतीय वर्गं समाप्तम् सवत् १६१५ ? मिति भाद्रपद वदि १ शुभवाशरे ॥ लिपित मिथ नयन ॥ पठनापे नानक पचोनि ॥
२६३ × १०.३ सें. मी०	१६ (१५-३०)	८	३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२३.५ × १०.६ सें. मी०	१७ (१-१७)	१३	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२२.७ × १०.२ सें. मी०	० (१-२)	१०	३६	पूर्ण	सं १७१८	लिखितमिद रामहृदस्य विश्वनाथ भट्ट सुत नील कठ भट्टेन वैशाख शु० ११ सवत् १७१८ ००
२०.८ × ६.२ सें. मी०	५ (१-५)	७	२५	पूर्ण	प्राचीन	अथ ब्रह्मयज्ञ समाप्त ॥ ..... मिथ्म युधिष्ठिर सवादे सहस्त्रशत रामायण समाप्त । श्री कृष्णार्पणमस्तु॥
१६ × ८ सें. मी०	२ (१-२)	६	२६	पूर्ण	प्राचीन	ब्रह्मयज्ञ समाप्त । शुभमस्तु
२७.२ × १०.६ सें. मी०	११ (१-११)	६	३४	पूर्ण	प्राचीन सं १८६२	इति श्री ब्रह्मव्रततर्पण समाप्तम् शुभमस्तु मि० वं० सु० १२ मगलवार समाप्तम् सं १८६२ लिखित पुराणीतम रत्निराने रीवा बँडे ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८८५	४८६६	ब्रह्मशापविमोचन			मि० का०	२०
८८६	६८२८	ब्राह्मणाच्छी प्रयोग			दे० का०	२०
८८७	६६६६	ब्राह्मविबहागभूत- वाग्दान विधि			१ मि० का०	२०
८८८	२२६६	शकारार्चन दीपिका पद्धति	श्रीपति		२० का०	२०
८८९	४७२६	शमीपूजन			२० का०	२०
८९०	५०२२	शय्यादान			२० का०	२०
८९१	४२२७	शय्यादान प्रयोग			१२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वन- मान अथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६६×८२ सें० मी०	३ (१-३)	६	२२	पू०	प्राचीन स०१९१८	इति श्री रुद्रया जामने चडिका ब्रह्म- शाप विमोचन सपूर्णम् ॥* * * * * स०१९१८ ॥
२३४×१० सें० मी०	७ (१-७)	११	३०	पू०	प्राचीन	इति ब्राह्मणाष्टसो प्रयोग समाप्त ॥
२२३×१०.३ सें० मी०	३ (१-३)	८	३५	पू०	प्राचीन	
२५३×८.५ सें० मी०	७१ (६-७६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२०६×१०.१ सें० मी०	५ (२-५)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति शमीपूजन समाप्त शुभ भूयात् ॥ राम.....
२१२×८७ सें० मी०	१	८	५०	अपू०	प्राचीन	
२१८×८८ सें० मी०	३ (१-३)	८	३४	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम ॥ अथ शय्यादान ॥ (प्रारम्भ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
८६२	३००३	शातिकर्म			३० का०	३०
८६३	६४३२	शातिरत्न (ज्वरशांति प्रयोग)			३० का०	३०
८६४	५१	शातिविधान			३० का०	३०
८६५	६३५१	शातिविधि			मि० का०	३०
८६६	६४२५	शातिसार			३० का०	३०
८६७	२१२	शास्त्रनवरत्न			३० का०	३०
८६८	६३८१	शालग्राम पचायतन दान विधि			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या प्रौर प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द घ	घ	स	द	ह	१०	११
३० ६ X १५ १ सें० मी०	१३ (१-१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
११ ७ X १० सें० मी०	२ (१-२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति शातिरत्ने ज्वरशाति प्रयोग ॥
२६ ५ X १३ २ सें० मी०	८	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२४ २ X १५ ३ सें० मी०	८ (१-८)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२२ ७ X १० ३ सें० मी०	१० (१-११) (पत्र १ पर दा नवर)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति वैद्युतिव्यतीपातसत्रातिबन्धन शाति ॥
२४ २ X ११ सें० मी०	१४	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२० ५ X ६ सें० मी०	१	१३	३३	अपू०	प्राचीन	इति पचायतन दान विधि

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसदस्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रपनाम	ग्रपकार	टीकाकार	ग्रप किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८६६	६३६२	शिलान्यास विधि			दे० का०	३०
९००	४२८२	शिव पार्थिव पूजा			दे० का०	३०
९०१	४०५१	शिवपूजन			दे० का०	३०
९०२	२८३८	शिवपूजन			दे० का०	३०
९०३	८१२	शिवपूजनन्यास			दे० का०	३०
९०४	८११	शिवपूजनन्यास			दे० का०	३०
९०५	४०३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	३०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या घोरे प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो बत मान अक्ष का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		ब	म			
१५ X ७२ सें० मी०	६ (१-६)	६	२५	पू०	स० १८५४ शके १७१६	इति शिलान्यास विधि ॥ श्री सवत् १८५४ विभवनाम सवत्सर फागुन कृत्ख ७ शके १७१६ ॥
१५ X ११६ सें० मी०	१४ (१-१० १३-१८)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति शिव पार्थिव पूजन सपूर्ण समापत शुभ मंगल मस्तू ।
२३ X १०७ सें० मी०	५ (१२-१३ १५-१७)	७	२६	अपू०	स० १६१२	इति शिवपूजन सपूर्णम् शुभ सवत १६१२ ॥
१४ X ८६ सें० मी०	६ (१-६)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
२२ X १०६ सें० मी०	६ (१,३,५- ६,१०- ११)	१२	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री इतिहास्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत् ॥ सवत् १८७२ ॥
२२ X १०६ सें० मी०	६	१२	२८	अपू०	सं० १८७२	इति श्री इति हा स्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत् ॥ सवत् १८७२ ॥
१५ X ८२ सें० मी०	१५ (१-१५)	७	२२	पू०	स० १६०८	इति शिवपूजन सपूर्णम् ..... शोपशुक्ल १० भृगी सवत् १६०८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविणय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	१३३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०
६०७	$\frac{३०४६}{६}$	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०८	१४१०	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०९	$\frac{४३३७}{८}$	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१०	२६८७	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६११	$\frac{१६०४}{४}$	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१२	१४८३	शिवपूजा			दे० का०	दे०



पदा या पृष्ठ- या भाकार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितमका घोर प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? प्रमाण है ता वतं मान अग वा विवरण	ध्वन्या घोर प्राचीनता	अन्य भावस्थव विवरण
क म	ख	ग	द	ए	१०	११
२१७×६५ सं० मी०	१५ (१-१५)	७	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री शिवपूजनपद्धतिसंपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८७१ समेमात्रपद्धत्या पद्य रविवास्तरे ॥
१६७×१३१ सं० मी०	३	२१	१५	पू०	प्राचीन	इति विमर्जन ॥
१६×८५ सं० मी०	८ (२-५,७-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	
१६×१३३ सं० मी०	१४ (४२-५५)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति द्रामल शिवपूजा संपूर्ण ॥
१६५×११५ सं० मी०	६	६	२१	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति शिवपूजा संपूर्णं संवत् १६१८ ॥
१३६×७६ सं० मी०	३ (५-६)	८	१३	अपू०	प्राचीन	इति शान्तिवचम् ॥
१८८×११२ सं० मी० (सं०मू०४६)	६ (५-१०)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति शिवपूजा समाप्ति सं०१८८८ ॥ श्रावण वदी त्रयोदशी १३ ॥ शनि- वासरे ॥ शुभ मंगल ददात् .....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथनार	टीकाकार	ग्रप किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१९३	७००५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
१९४	३६२५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
१९५	७८७७	(विश्वनाथ) शिवपूजा- तरंगिणि			दे० का०	दे०
१९६	४०७१	शिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
१९७	१६२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
१९८	२४७१	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
१९९	४५३३	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पणितसङ्ख्या और प्रति पणित म अक्षरसङ्ख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१ ५/१० ३ सें० मी०	८ (६-१३)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	इति रुद्रयामले शिवपूजावेदोक्त सपूर्ण । इद प्रति लिपत नातिक कृप्या १० । चद्रवासरे इद प्रति लिपत रामघन मिथ २ अहिरवा मध्ये भ्रातृ पठनार्थ ॥ + + + +
१५ ८/७ ८ सें० मी०	६ (२-१०)	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८५५	इति शिवपूजा समाप्त ॥ मत्र होन० गद्य जातिदेव गणा सर्व पूजा + + + + सं १८५५
२१ ५/६ ५ सें० मी०	१० (१-६, ६-१२)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ ४/८ ८ सें० मी०	६ (१-६)	१०	२०	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०२	इति श्री वेदोक्त शिव पूजा विधान सपूर्ण समाप्त जेष्ठ सुदि २ सवत् १६०२
३३ ५/१३ सें० मी०	२	४८	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति पूजा विधि समाप्ता ॥
२३ ५/१० ७ सें० मी०	३ (१, ४ ५)	६	३७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री शिवपद्धतौ शिवपूजा विधि ॥ सपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु ॥
२४ ३/१० १ सें० मी०	६ (४-६)	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति शिवपूजाविधि समाप्त शुभमस्तु ज्येष्ठे मासे वस्त्र पसे तिथौ १३ भुगु वासरे सवत् १६१७ लिपत प श्री रिछारिया हर परसाद ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है।	विधि
१	२	३	४	५	६	७
६२०	१२५८	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२१	$\frac{४६१७}{२}$	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२२	४८८५	शिवपूजाविधि प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६२३	$\frac{४६७६}{२}$	शिवप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६२४	$\frac{१३७५}{२}$	शिव मानसपूजा			दे० का०	दे०
६२५	५२३	शिव रहस्यमहालिगार्चन			दे० का०	दे०
६२६	१४८२	शिवलिंग (पञ्च- तर्पणम्)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसङ्ख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षसङ्ख्या प्रति प्रनिर्पक्ति मे अक्षरसङ्ख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर ना विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	व	स	द	६	१०	११
२६ × १४ सें० मी०	७	१३	३५	पू०	स० १८७४ शके १७३६	इति हाम्देन पूजा विधि समाप्ति मगमत ॥ सवत् १८१४ शके १७३६ श्राव शुदि चतुर्दशी दुधवार पुस्तक लिखि है ।
१५१ × ६६ सें० मी०	३	८	१५	अपूर्ण	प्राचीन	इति शिवपूजा विधि सपूर्ण ॥
२२५ × १०६ सें० मी०	१३ (१-१३)	१०	२८	पू०	स० १८७२	इति श्री इतिहासेन शिव पूजा विधि प्रतिष्ठा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १८७२ । पीप शुदि द्वितीया २ चद्र वामरे लिखितमिद पुस्तक लक्ष्मणा- भिधानेन चण्डिपुरमध्ये शुभ ॥
१५८ × ६५ सें० मी०	१४ (२-१४)	१०	२४	पू०	प्राचीन स० १८८४	इति शिव प्रतिष्ठा समाप्तम् शुभ मयात यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिपत मया यदि शुद्ध वा मन दोषो न दिपते १ सवत् १८८४ तत्र वर्ष माघ मासे शुक्ल पक्षे × ×
१५ × ६५ सें० मी०	२	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री वेद वेदात परिवर्ण शिव मानवपूजा समाप्त ॥
११३ × ११ सें० मी०	१४ (१-१४)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री जंब पुराणे शिव रहस्ये महा- विभाजन विवरणं नानाप्रद्विशीघ्यायः । यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश निमित्तमया यदि शुद्धम शुद्धवामन दोषो नहीयते लेखक पाठकयामयल शुभमस्तु ।
२०६ × ११२ सें० मी०	३ (१-३)	६	२६	पू०	प्राचीन स १६०६	इति श्री पाण्डित्येवर चिना मनि शिव विज्ञ पूजा तर्पण संपूर्णम् ॥ स० १६०६ शके १७७४ अधिक

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६२७	६८२	शिवलिंगप्रतिष्ठा- प्रयोग			३० का०	३०
६२८	४०५२	शिवस्थापन पूजन विधि			३० का०	३०
६२९	६२१५	शिवार्चन पद्धति			३० का०	३०
६३०	४७६५	शिवार्चन विधि			३० का०	३०
६३१	५०२१	शिविकादान			३० का०	३०
६३२	६६३७	शुक्लमूत्र परिशिष्ट			३० का०	३०
६३३	११७७	शुद्ध एकादशाह			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या	क्या यथ पूरा ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आक्षेपक विवरण	
द	व	स	द	१०	१०	
४२२ × ६'२ सें० मी०	२ (१-२)	८	६६	अपू०	प्राचीन	
२२ × १० सें० मी०	४ (१-४)	१०	३५	पू०	सं० १६०८	इति शिवस्यापन पूजन विधि समाप्तम् ॥ आ० शं० १४ रवीशवत् १६०८ अस्थित
१६'५ × ११ सें० मी०	२ (२-३)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति शिवार्चन पद्धति ॥
३० × १४ सें० मी०	१ (खरा)	३८	१६	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति बौधायन सूक्त शिवार्चन विधि ॥ सं० ॥ १८६७ वैशाख शु० ३ पराज्प इत्युनाप्रा अणा भट्टेन लिखित ॥
२१२ × ६७ सें० मी०	२ (१-२)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
१७१ × ७'५ सें० मी०	६ (१-६)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति वात्स्यायनोक्तं शुभ्र मूत्र परिशिष्टं समाप्त ॥ श्री रामचंद्रायनम । नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रेण गोविंदेन शुभ्र मूत्र पुस्तक लिखित + + + + ॥
२२१ × १३० सें० मी०	६ (१-६)	१६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की प्राप्त सभ्या वा संग्रहविशेष की सत्या	ग्रथनाम	स्यकार	टीकाकार	ग्रथ विसु वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
६३४	८२८	शुद्धिविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
६३५	५२६२	शीनववारिका			दे० का०	दे०
६३६	५२००	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
६३७	१३२४	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
६३८	१६४६	श्राद्धकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
६३९	१६७	श्राद्ध काह	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
६४०	१४९३	श्राद्ध परिषा	दिवाकर		दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठा वा प्राकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ से पङ्क्तिगणना और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	६	१०	११
२८४ × ६५ सं० मी०	१०० (१-१००)	७	४०	अपूर्०	प्राचीन	
२३ × ६६ सं० मी०	१	२०	३५	अपूर्०	प्राचीन	श्री गणेशायनम शौनक कारिका ॥ (प्रारम्भ)
२२८ × ६६ सं० मी०	३ (१-३)	७	२६	पूर्०	प्राचीन सं० १८०२	श्राद्धाहनिर्तु संप्राप्तो भवेत्तिरशानोपि वेति ।***लिखितमिदं पुस्तकं राम-हृदोपनामकं नीलकण्ठेन पीप वदि १ सवत् १८०२***** ।
२१ × ११५ सं० मी०	१३ (२-१४)	११	२८	अपूर्०	प्राचीन	
३० × १३ सं० मी०	८ (६५-६६, ७४-७६)	१२	४५	अपूर्०	प्राचीन	
२११ × ६ सं० मी०	२४ (१-२४)	१४	४३	पूर्०	प्राचीन सं० १६६७ सं० १५६२	इति षट्पादक्य प्रमारा श्री लक्ष्मीधर सुरे सूनूना भट्टोजिदीक्षितेनरचिताया श्री चतुरविंशति मुनिमन व्याख्या श्राद्ध वाङ्म । सं० १६६७ शके १५६२ विरो-धिनि सविता माधसित द्वादश्या प्रयागे-याजवत्कयो पेंहभटोपाध्याय सूनूना भट्टोपाध्यायान देना लेखीदम् ।
२०५ × ११ सं० मी०	२६	१०	२५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टारमज सक्ल विद्या निधान श्री दिवाकर विर-चिताया श्राद्ध चद्रिकाया महासप्त श्राद्धानि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६४१	६८४१	श्राद्धचंद्रिका प्रकाशानु- क्रमणिका	वैजनाथ		दे० का०	दे०
६४२	३८३८	श्राद्धदीपिका			दे० का०	दे०
६४३	५५७४	श्राद्धनिर्णय			दे० का०	दे०
६४४	६५५७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४५	६६८८	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४६	३५७१	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४७	३६७२	श्राद्धपद्धति	शैमराज		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
द	व	स	द	६	१०	११
२७ ६ X ११ ४ सें० मी०	८१ (१-८१)	१०	४३	पू०	प्राचीन सं० १७८२	इति श्री दिवाकरात्मज वैशनाथ विरचिता आद्वन्द्विका प्रकाशानुक्रमणिका समाप्ता ॥ सवत् १७८२ आश्विन सुदि १२ X X X म० १७८६ ज्येष्ठदि १ शोधितमदोभारद्वाज काशीनाथेन + ॥
२४ ५ X १२ २ सें० मी०	१६ (१२-२७)	६	२४	अपूर्ण	सं० १८१७	सपिंडी धाद्व कर्तव्य ॥ ..... ... .. शुभमस्तु सवत् १८१७ ॥
२२ ८ X ११ सें० मी०	३ (२०, २८, २९)	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ ४ X ८ ८ सें० मी०	८ (१-८)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति कौकिल ऋषिमत्त सद्योपत ॥ सवत् १६६६ वर्षे पोष मासे शुक्लपक्षे + + + + + ॥
२१ ७ X १६ ८ सें० मी०	१२ (१-१२)	१४	२३	पू०	प्राचीन	
२१ ४ X १२ सें० मी०	७ (१-७)	१४	३६	पू०	सं० १८५६	इति श्री रूपरति समाप्त शुभमस्तु सवत् १८५६ अघनवहि १० सनीधरे लिपत्तपुमानसुकल श्री जमुना दैनम ...
२३ ३ X ८ सें० मी०	६३ (१-६३)	७	३८	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री क्षेमराम कृता आद्वपदति समाप्ता शुभमस्तु शुभभूयात् सवत् १८७१ शके १७३६ अधिक मासे मासि शुक्ल पक्षे विषो वयोश्या रविवासरे विहित मिद पुस्तक वेणीप्रसाद विपाठिना .....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा समग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४८	५४६२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४९	६७८७	श्राद्धपद्धति		६	दे० का०	दे०
६५०	७२९७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५१	३४९०	श्राद्धपद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० वा०	दे०
६५२	४११५	श्राद्धपद्धति			दे० वा०	दे०
६५३	३९६६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५४	५१७६	श्राद्धपद्धति			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रमह्यता	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमह्यता ओर प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रय पूर्ण है ? अपूर्ण तो वत मान ग्रय वा विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	ग्र य साक्षरग्रय विवरण	
		स	द			१०	११
२० १ × १० ६ सें० मी०	११ (१-११)	११	२२	पूर्ण	जीण सं० १८८८	इति श्री आर्यपद्धति समाप्त ॥ सवत् १८८६ (८) मिति आश्विनवदी २ गुरु वार लिपत गगाधर पाठ ...	
२५ ७ × १० ५ सें० मी०	६ (१-६)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०४	इति आर्यपद्धति समाप्त ॥ माघकृष्ण ११ भौमक सवत् १६०४ वंशाके १७६६॥	
२२ २ × ६ २ सें० मी०	४० (१-३०, ३३-४२)	८	३१	अपूर्ण	सं० १६२१	इति द पुस्तक आर्यपद्धति समाप्त सवत् १६२१ मि० पौ० शु १ गुरुवार	
१६ ७ × १० सें० मी०	६६ (२-७०)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणज्ञ सूवि वरचितरत्नासीरसरापाध्य भट्ट मरा- धवात्मज भट्ट रघुनाथ विरचिता आर्यपद्धति संपूर्ण ॥ ...	
२४ ४ × १० ६ सें० मी०	२२ (२-२१ ३८-३६)	६	२१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८५८	इति आर्य समाप्त ॥ समत १८५८ प्रमादनाम सवत्सरे वैशाख वदय पच- मित दिन समाप्त ॥ (पत्र सं० ३६)	
२३ ३ × १० २ सें० मी०	१६ (२२-३७)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन		
२५ २ × ६ ५ सें० मी०	१०	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन		

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६५५	३८२६	श्राद्धपद्धति			२० का०	२०
६५६	$\frac{५७४१}{२}$	श्राद्धपद्धति			२० का०	२०
६५७	१६६६	श्राद्धपद्धति			२० का०	२०
६५८	५१३१	श्राद्धप्रकार			२० का०	२०
६५९	४५१८	श्राद्धप्रकाश	इन्द्रदत्तोपाध्याय		२० का०	२०
६६०	३४८७	श्राद्धप्रयोग			२० का०	२०
६६१	४६७४	श्राद्धप्रयोग			२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठा वा पानवार	पत्रसंख्या	प्रतिपुच्छ म पत्रिमदशा पौर प्रति पाल म सभारगमना		कसा वष पूर्ण है ? मपुग है ता वरं- मान सग वा दिवरण	पत्रस्या पौर प्राचीना	धर्म प्रारभण दिवरण
		म	द	६	१०	
८	९			६	१०	११
१६३×६१ सं० मी०	८ (१,५-१०, १०)	४	२८	मपू०	प्राचीन	
१८१×१३६ सं० मी०	२	१६	२१	मपू०	प्राचीन	
२१७×११२ सं० मी०	५ (१,३-६)	१०	३०	मपू०	प्राचीन	
१५८×६३ सं० मी०	३ (१-३)	८	२२	मपू०	प्राचीन	
३४४×१३६ सं० मी०	२६ (१-२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१६२७	इति श्री आद्यप्रवासो इन्द्रतोषाघ्या वृत्ते अष्टना भाद्राथ सविण्डन विधि- तृतीय प्रमाण १३। श्री सरत् १६२७। जष्ट मने शुचन पक्षे प्रतिपदा मगन वाचरे डिडन रामभरोजन आद्यप्रवास निरूपते ॥
२१७×१०५ सं० मी०	२३ (१-२३)	११	२४	पू०	सं०१६५०	श्री भवत १६५० शाने १-१५ विश्या- वगु नाम गवसरे क्षमातमानेन शापाड वृष्ण ६ पञ्चा गुरुवासरे श्री धेन वाश्या रामदागराम भट्टा त्मज रामवृष्ण तैलङ्गेन धार्मिक जनमोतल्हादनाया भसाप्रदायिकोय आद्यप्रयोगो विवित
२४१×१०१ सं० मी०	४ (१-४)	६	३८	पू०	प्राचीन	आद्य सपूर्णता यातु प्रासादादभव + + + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राग्वहिकता वा संग्रहविशेष की सद्यता	ग्रन्थनाम	ग्रन्थभार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
६६२	५५७६	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६६३	७०१३	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६६४	१७१३	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६६५	६६१	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६६६	५६५८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
६६७	१६२२	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
६६८	५६३६	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का माकार	पत्रमख्या	प्रतिपृष्ठ म पत्तिमहारा और प्रतिपत्ति म अक्षरलक्ष्य		क्या ग्रथ पूर्ण है?	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण		
नम	व	स	द	६	१०	१०
२७६×११२ से० मी०	५६ (३-५,७-१०, १२-१६,२१- ३४,३६-३७, ३९-६५,६७)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन	*****गण्ड पुराणादौ श्राद्ध प्रयोग लिप्यते (पत्र सं० ३)
१७८×६५ से० मी०	११ (१-११)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१७४×६५ से० मी०	१० (१-१०)	७	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६५×६६ से० मी०	१० (१-३, ५-११)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्राद्ध मपूर्ण शुभम श्री गणेशा- यनम सीताराम ॥
२१८×८७ से० मी०	१० (१-१०)	७	२६	पूर्ण	सं० १७४४	इति श्राद्ध विधि समाप्त शुभमस्तु संवत् १७४४ आश्विन वदि १० मंगल वास्तरे कस्य लिपितमिद***** ॥
२३७×७८ से० मी०	१	१६	११	पूर्ण	प्राचीन	
२८×११८ से० मी०	१३	१०	३६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६६	१४१८	शास्त्रविधि ।			दे० का०	दे०
६७०	२२६	शास्त्रविधि			दे० का०	दे०
६७१	२२३५	शास्त्रविवेक			दे० का०	दे०
६७२	४८५१	शास्त्रविवेक	शुद्धर		दे० का०	दे०
६७३	४४२३	शास्त्रविवेक (प्रतिप्रिया)	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
६७४	२१८२	शास्त्रविवेक			दे० का०	दे०
६७५	३४८५	शास्त्रविवेक			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्रि मे पत्रसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? ग्रंथ है तो कत-मान ग्रंथ का विवरण	ग्रन्थमा और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
द म	व	स	द	६	१०	११
३०६×१३ सें. मी०	२४	१२	४२	ग्रं०	प्राचीन	
२७×११७ सें. मी०	१० (१-१०)	११	४३	ग्रं०	प्राचीन	
२७५×१०३ सें. मी०	३ (१-३)	११	३२	ग्रं०	प्राचीन सं० १६३५	संवत् १६३५ तमसे फलगुणमसे कृष्ण पक्षे शुभतिथी १ लीखत हरसण सहाय .....
२६४×१०६ सें. मी०	२० १-३०	८	२६	ग्रं०	प्राचीन	इति श्री भट्टोपाध्याय श्री छद्मर कृते श्राद्ध विवेक श्रीनारायणयनम + + + + + ॥
२५६×१०७ सें. मी०	१५ (२६-४३)	११	३६	ग्रं०	प्राचीन सं० १६१५	इति श्री कृष्णदत्त प्रकाशिकाया पितृभक्ति- नलापा श्रीद्धं देहीकेति कर्तव्या सपूर्णम् ॥ चैतमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या अतिवासे लिखित दत्तारामेण पठनार्थस्वमात्मने ॥ सूत्रभाषात् मंगल ददातु ॥ संवत् १६१५ ॥
२७५×१४२ सें. मी०	६७ (१-५१, ५३-६८)	१३	३०	ग्रं०	प्राचीन	
२०२×६५ सें. मी०	१४ (१-१४)	६	३२	ग्रं०	प्राचीन	भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा भृगुवासरे पुस्तक श्राद्ध सकल्प समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७६	३४८६	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
६७७	३४६८	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
६७८	५४६८	श्राद्धसूत्र	चात्यायन		दे० का०	दे०
६७९	५४६६	श्राद्धसूत्र			दे० का०	दे०
६८०	४११३	श्री बेशबलीर्वादि न्यास			दे० का०	दे०
६८१	४३३६	श्रीनायादिश्लोक उदार			दे० का०	दे०
६८२	१३६५	श्रीरामचन्द्र पोग्गोप चार पूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि- के प्रक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	यवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द			
८ अ	५			६	१०	११
२१०×६२ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२६	पू०	प्राचीन स० १८६७	यस्य स्म० आद्य सफल समाप्त ॥ सत्रन् १८६७ चैत्र शुक्ल पण्ड्या समा- पित गदाधर वेतालेन लिखित ॥
२३×६ सें० मी०	१६ (१-११)	११	४३	पू०	प्राचीन	श्री काशी विश्वेश्वरारण्यमस्तु ॥
२१×१० सें० मी०	३ (१-३)	६	४१	पू०	स० १६३६	इति श्री कात्यायनकृत आद्य सूत्र सप्- ताम ॥ स० १६३६ चैत्रसिते ३ बुधे बटुकनाथेनालिखि ॥
२४६×११ सें० मी०	४ (१-४)	११	४३	पू०	स० १६०६	इति कात्यायनमुन्युक्त आद्य सूत्र ॥ स० १६०६ आश्विनदिदि ७ गुरो मिरजा- पुरे लिखित ॥
२२१×६७ सें० मी०	२ (१-२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव कीर्त्यादि न्यास ॥
२२×१०७ सें० मी०	५ (१-५)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीनाथादिस्नोक उद्धार संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
१५५×८५ सें० मी०	५	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री राघवद्वय वोटनोपचार पूजा- विधि वसिष्ठ हितायाम् संपूर्ण ॥ श्री रामयत ॥ सीताराम ॥ सीतेश्याम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमस्था वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८३	२३०६	श्रीराम नित्यपूजा पद्धति			३० का०	३०
६८४	७८१७	श्रीराम पद्धति	रामानुजाचार्य		३० का०	३०
६८५	$\frac{१२८५}{८}$	श्रीराम पद्धति	श्री रामानुज		३० का०	३०
६८६	२०२०	श्रीराम मानसपूजा			३० का०	३०
६८७	७२३४	श्रीसूक्त जपविधि			३० का०	३०
६८८	११५६	श्रीसूक्त विधान			३० का०	३०
६८९	६५०२	श्रुतिलक्षण प्रायश्चित्त			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अक्षरस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७६ × ११३ सें० मी०	७२ (१-७२)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले तत्रे हरगौरी सवादे श्रीराम नित्यपूजा पद्धतिः समाप्तम् शुभमस्तु ॥
१६६ × १०२ सें० मी०	२१ (१-२१)	८	२१	पू०	प्राचीन से० १६०७	इति श्रीमद्रामानुजाचार्यं कृत श्री राम पद्धति वेदोक्त सपूर्णं × × शुभमस्तु माघे मासे कृष्ण पक्षे १२ दसी से० १६०७ ॥
१७५ × ६५ सें० मी०	२१ (१-२१)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानुजा कृता वेदोक्त श्री राम पद्धति सपूर्ण ॥ श्रीरस्तुकल्याण- मस्तु ॥
१३४ × ८४ सें० मी०	१४	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहिताया परमहंस्ये श्री अगस्त्य सुतीक्ष्ण सवदे श्रीराम- मानसीरुजा सपूर्णं समाप्तम् ॥ शुभ ॥ राम
१४२ × ८७ सें० मी०	११ (१-११)	६	२०	पू०	प्राचीन से० १८३२	इति श्रीसूक्त विधि सपूर्णं ॥ श्री महालक्ष्मी देवतापंणमस्तु ॥ सवत् १८३२ माघ शुद्ध १५ रवौ १६ पुस्तकं समाप्तमस्तु ॥ स्वार्थं परोपकारार्थं च ॥
१३६ × ८७ सें० मी०	२४	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूक्तविधान समाप्त श्री परमेश्वरपंणमस्तु ॥
२२६ × ६१ सें० मी०	२० (१-२०)	६	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त सध्या या संग्रहविशेष की सध्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	प्रथ विस्र वस्तु पर तिखा है	विपि
१	२	३	४	५	६	७
६६०	८२६	स्तेपाशाति विधि			६० का०	३०
६६१	$\frac{४३३७}{८}$	पडंग छद्रजाप्य			६० का०	३०
६६२	७३४६	पडग " "			६० का०	३०
६६३	३७४५	पडग " "			६० का०	३०
६६४	१३७६	पण्णवतीश्राद्ध निर्णय			६० का०	३०
६६५	२०५४	पट्टीका पूजाविधि			६० का०	३०
६६६	६५८८	पट्टीपूजा			६० का०	३०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षर-संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६'६" X ६'२" सें० मी०	३ (१-३)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्लेषाशांति विधि ॥
१६" X १३'३" सें० मी०	२१ (५६-७७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्येपंडंग समाप्ता शुभमस्तु ॥
२१'२" X १२" सें० मी०	१५	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१३" X ८" सें० मी०	१६ (१-११, २२-२६)	६	२४	अपू०	प्राचीन स० १८३३	...सवत् १८३३
२१" X १०" सें० मी०	८	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमन्चातुर्धर गोविंद सूरिस्त्वनो शिवस्य कृती पद्यावती आद्यं निरण्यः समाप्त ॥
२०'५" X १०" सें० मी०	१० (१-१०)	७	२०	पू०	प्राचीन स० १८४१	इति पट्टिमा पुजा समाप्ता शुभमस्तु सवत् १८ सें ४१ केशला चैत्रादि अमावस्य रविवासरे नः लिपत सिद्ध-पारमद पंडेके पुस्तक सापुरण शुभमस्तु ॥
२४'६" X १०'५" सें० मी०	६ (१-६)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति पट्टी पुजा समाप्ता ॥*****

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसदृश या सग्रहविशेष की संख्या	प्रथमानाम	प्रथकार	टीनाकार	प्रथ विस वस्तु पर लिखा है	जिति
१	२	३	४	५	६	७
६६७	५३६२	पट्टी पूजा			दे० का०	दे०
६६८	६६७१	परिष्ठ पूजा			दे० का०	दे०
६६९	५५८७	पट्टी पूजा विधि			दे० का०	दे०
१०००	६०१	पोडग कर्म			दे० का०	दे०
१००१	२७१	पोडगकर्म विधि			दे० का०	दे०
१००२	५०४७	पोडग पूजा			दे० का०	दे०
१००३	४४४० १०	पोडग पूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रमस्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसरया और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान ग्रथ वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४१×१० से० मी०	३ (५-७)	६	३१	अपूर्ण	स० १८५७	इति पण्टी पुजन समाप्त शुभमस्तु संवत् १८५७ शक १७२२ फाल्गुन भासि कृष्ण पक्षे.....
२०५×१०५ से० मी०	३ (१-३)	१२	३४	पूर्ण	स० १८८७	इति श्री पण्टि पूजा समाप्ता ॥ सवन् १८८७ मिति अश्विन शुद्ध ३ सोम- वासरे समाप्त ॥
२५×१२५ से० मी०	६	११	२८	अपूर्ण	प्राचीन (जीर्ण)	
२३×६ से० मी०	२३ (१-२, ४-२४)	१४	४३	अपूर्ण	प्राचीन	इति पाठग कर्माणि समाप्तानि ॥
२६×१४ से० मी०	६	१२	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२५१×१२६ से० मी०	३ (१-३)	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन	
१२४×६१ से० मी०	५	६	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति षोडश पूजा विधि संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की श्रावणसंख्या या सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीचानार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१००४	७७२	पोडगमस्वार पद्धति			३० का०	३०
१००५	६१७	पोडससस्वार विधि			३० का०	३०
१००६	४३१०	पोडशापचार			३० का०	३०
१००७	५६०६	पोडशापचार			३० का०	३०
१००८	६३६४	पोडशापचार पूजाविधि			मि० का०	३०
१००९	४५८७	सकष्ट चतुर्थी पूजा			३० का०	३०
१०१०	६४१४	संलिप्त चवार्था- प्रतिष्ठाविधि			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१२×६५ सें० मी०	२२ (२१-४२)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२४७×१०४ सें० मी०	३५	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२१४×११५ सें० मी०	३ (१-३)	८	१८	पूर्ण	प्राचीन	
१७३×६५ सें० मी०	५ (१-५)	६	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
२३३×१०२ सें० मी०	३ (१-३)	७	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति पांडशोत्रकारपूजा विधि सहस्रशोपा समाप्तम् ॥
१६३×१२५ सें० मी०	६ (१-६)	१०	१२	पूर्ण	प्राचीन	सकष्ट चतुर्थि पूजा समाप्त ॥
२१३×६२ सें० मी०	६ (१-६)	१६	३७	पूर्ण	प्राचीन स० १७५३	इति सशिक्षित चत्वार्षी प्रतिष्ठाविधिः ॥ "सकट १७५३ समये मार्गशीर्ष शुद्ध ३ शुभ निधिनमिदं पुस्तकं शायया विरचनायभट्ट राजाह्वररुण ॥"

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविषय की संख्या	प्रथमानाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ विस यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०११	६६६३	सक्षिप्त सिक्कूजा प्रयोग			३० का०	३०
१०१२	$\frac{७०५५}{४}$	सक्षिप्त सध्या प्रयोग			२० का०	२०
१०१३	५७३१	सलेप धार्मिकपूजन विधि			३० का०	३०
१०१४	४२६८	सतानगोपाल विधि	सत्यापाठ		२० का०	२०
१०१५	३३०१	सध्या			२० का०	३०
१०१६	३१०८	सध्या			२० का०	२०
१०१७	$\frac{५५३०}{३}$	मध्या			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूरा है ? अपूर्ण है तो वतं मान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३० × ११ ६ सें० मी०	१	१४	३५	पू०	प्राचीन	इतो मूल जल्वा शिवाय जप समये इति संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग ॥
१३ ५ × १३ सें० मी०	४ (१-४)	१६	१७	पू०	प्राचीन	
१५ ६ × १० ६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति संक्षेपत पाणिन विधि ॥
२५ ७ × ११ ५ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री सत्यापाढ कृते अन्नपत्यख-हर सतान गोपाल विधि ॥
२२ ६ × १५ सें० मी०	३ (१-३)	१७	३१	पू०	प्राचीन	इति साय सध्या समाप्ता ॥ × × ×
२६ ४ × ११ ३ सें० मी०	४ (१-४)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति सध्या सपूर्ण ॥
२६ × १४ ७ सें० मी०	७ (१-७)	८	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	प्रयनाम	प्रयकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०१८	५५६१	सध्या			दे० का०	दे०
१०१९	$\frac{६११३}{१०}$	सध्या			दे० का०	दे०
१०२०	५७५६	सध्या			दे० का०	दे०
१०२१	२३६७	सध्या			दे० का०	दे०
१०२२	२२६६	सध्या			दे० का०	दे०
१०२३	६४०१	सध्या			दे० वा०	दे०
१०२४	६४४४	सध्या			दे० वा०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का मापन	पाठसंख्या	प्रति पृष्ठ में नवि-संख्या कोर प्रति-वि- सं-संख्या		कम संव. पुरा. के प्रमाणों के मा. सं. मा. सं. का विवरण	प्रकरण कोर संख्या	अन्य पाठसंख्या विवरण
		म	द			
२५.४ x ११.८ सं० मी०	८ (१-८)	७	३५	५०	प्राचीन सं० १६४९	इति ग्रामगाथा सख्या समाप्तम् ॥ शुभं सफलदशात् सवत् १६४९ मः सतत पुर ।
१६.५ x १३ सं० मी०	१० (२७-३६)	८	१८	५०	प्राचीन	इति त्रिपाल सख्या समाप्ता ॥
१६.३ x १२.६ सं० मी०	८ (१-८)	१४	१४	५०	प्राचीन	इति सार्य सख्या समाप्ता शुभमवति सफलदशात् ॥
२२ x ८.५ सं० मी०	६	७	३०	५०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री यदुवंद सख्या संपूर्णम् सम्यत् १८६५ ॥
२७.८ x ११.६ सं० मी०	६ (१-६)	६	२५	५०	प्राचीन सं० १६९९	इति सख्या विधिप्रयोगः ..... .....सवत् १६९९ का कालवृत्त माते दशम्या ..... ॥
२१.५ x ६.३ सं० मी०	७ (१-२,४-८)	६	२२	सपू०	प्राचीन	इति त्रिपाल सख्या विधि + + + ॥
१५.६ x ८.४ सं० मी०	४ (४-६)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति गायत्री त्रिपाल सख्या संपूर्णं शुभ- मस्तु सवत् १८६६ के साल मार्ग शुदि १२ क. तिथा दामोदर दास वैपपरा बेटे श्री तिवारी बस्ती राम पठनार्थक ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगनसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०२५	५५१२	सध्या			३० का०	३०
१०२६	$\frac{७३७७}{३}$	सध्या			३० का०	३०
१०२७	७७६८	सध्या			मि० का०	३०
१०२८	७६७४	सध्या			३० का०	३०
१०२९	६२१६	सध्या			३० का०	३०
१०३०	$\frac{७३४}{४}$	सध्या			३० का०	३०
१०३१	७०२०	सध्या			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का मात्रा	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्तिसंख्या और प्रति पत्ति में पद्यसंख्या		क्या प्रथम पंक्ति अपूर्ण है तो यहाँ मान प्रथम का विवरण	ध्वस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द	६	१०	
१८५ X ८६ सं० मी०	१५ (१-१५)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
६.६ X ४.१ सं० मी०	१२	४	१२	अपूर्ण	प्राचीन	
१६.१ X ६.६ सं० मी०	५	७	१६	अपूर्ण	अर्वाचीन	
१७.५ X ८.६ सं० मी०	३ (५, ५, १०)	५	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१७.२ X ८.६ सं० मी०	३	८	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
१४.६ X ६.३ सं० मी०	६ (१५-२०)	७	१३	अपूर्ण	प्राचीन	
१२.३ X ६.६ सं० मी०	६ (१-६)	७	१२	पूर्ण	प्राचीन	

प्रमाक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०३२	३८५७	सध्या जप			मि० का०	३०
१०३३	५०५१	सध्यावर्णविधि			३० का०	३०
१०३४	७०७६	सध्या पद्धति			३० का०	३०
१०३५	६४६	सध्याप्रयोग			३० का०	३०
१०३६	७७११	सध्याप्रयोग			३० का०	३०
१०३७	$\frac{७०२५}{३}$	सध्याप्रयोग			३० का०	३०
१०३८	२०५१	सध्याप्रयोग			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ मे पकितसख्या और प्रति पक्ति म अक्षरमख्या		क्या सय पूर्ण है? अपूर्ण है ता वत मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६०३ × १०४ से० मी०	४ (१-४)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति सस्छोजप । तीर्थेनित्कम्भ ॥
२४८ × ११५ से० मी०	१८ (१-१७,१६)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२४१ × ६६ से० मी०	४२ (४६-६१, ६३-१०२)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२६५ × ११ से० मी०	४ (१-४)	६	३८	पू०	१०१८७३	इति श्री सध्यासभाजम् ॥ शुभमस्तु स० १८७३ तत्रवर्षे मासोत्तममासे चंद्रमासे वृष्णपक्षे अष्टम्या चंद्रवसरे लिपितम् रामदियाल ब्रम्हणे स्वपठनाधि हेतवे .. .. .
२५६ × ११३ से० मी०	५ (१-५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगसंपूर्णम् लीपिहृत मिश्र दिवान आवण मासे वृष्णपक्षे त्रयोयाया भोमवासर शुभमस्तु श्रीराम चद्रायनम + + ॥
१०८ × १०'६ से० मी०	६ (१-६)	७	१७	अपू०	प्राचीन (जोर्ण)	
१४१ × ६५ से० मी०	१० (१-१०)	८	१५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसम्पदा वा सग्रहविशेष की सख्या	प्रथाम	प्रथमार	टीरामार	प्रथ किस वस्तु पर लिया है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१०३६	२११७	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४०	३२६६	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४१	३६६५	सध्याविधि			२० का०	३०
१०४२	२६५६	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४३	$\frac{३६२६}{२}$	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४४	४३३५	सध्याप्रयोग			२० का०	३०
१०४५	१६१५	सध्याप्रयोग			२० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रमन्त्राओर प्रतिपत्ति मे प्रसरमन्त्रा		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०६ × ११५ सें. मी०	६ (१-६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१३५ × ८६ सें. मी०	४	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१५३ × १०३ सें. मी०	६ (१-६)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल सध्या समाप्ता ॥ × × × × ×
१६५ × १०५ सें. मी०	६	६	२३	अपू०	प्राचीन	
१३४ × १५६ सें. मी०	११ (२-१२)	६	१३	अपू०	प्राचीन	इति यजुर्वेदी सध्या प्रयोग ॥
१५७ × ८ सें. मी०	११ (२-६, ११-१३)	१०	१६	अपू०	प्राचीन सं० १६२०	लिखित ५ श्री पुजारी कन्हैया लाल मवत १६२० वात्तिवचदि ॥
३१ × ६४ सें. मी०	४ (१-४)	७	४७	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति सध्या प्रयोग समाप्त सवत् १६११ चैत्र कृष्ण १५ भौमवासरे सु० कपु गगलरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकानथ की घागतसख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०४६	$\frac{२००१}{४}$	सध्याप्रयोग			६० का०	६०
१०४७	५६७६	सध्याप्रयोग			६० का०	६०
१०४८	$\frac{७००४}{२}$	सध्याप्रयोग			६० का०	६०
१०४९	$\frac{५२२६}{४}$	सध्याप्रयोग			६० का०	६०
१०५०	३५५६	सध्याप्रयोग			६० का०	६०
१०५१	४४३०	सध्याभाष्य	दिवराजगर्मा		६० का०	६०
१०५२	५२०८	सध्याभाष्य			६० का०	६०



पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्षितसंख्या और प्रति पक्षित में अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षरों की विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७ ५ × १३ ५ सें० मी०	७ (३-६)	६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	इति सध्याप्रयोग ॥
१४ ५ × १० ८ सें० मी०	८ (१-८)	६	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति सध्याप्रयोग ॥
१२ २ × ८ २ सें० मी०	११ (१५-२५)	५	१४	पूर्ण	प्राचीन	इति सध्या सपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
१६ ५ × ११ २ सें० मी०	५ (५-६)	११	२०	पूर्ण	प्राचीन	सध्या समाप्त ॥
२१ ६ × १२ ७ सें० मी०	७ (१-७)	८	१८	पूर्ण	प्राचीन सें० १६२१	इति वै कालिक सध्यापनन समाप्तम् ॥ राम सम्बत् १६२१ गायत्री लिपित ॥
३३ २ × १३ ४ सें० मी०	२१ (१-२१)	१२	५७	पूर्ण	प्राचीन	इति सध्याविधानम् ॥
२२ ४ × ११ ६ सें० मी०	३ (१६-१८)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५३	६५७१	सध्यामत्र व्याख्या	सद्गुजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१०५४	२७४६	सध्या महावाक्य पञ्चीकरण			दे० का०	दे०
१०५५	१५४५	संख्याविधि			दे० का०	दे०
१०५६	३०८४	सध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५७	४६२०	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५८	४६६५	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५९	<u>७१२७</u> ३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिमस्या पौर प्रतिपंक्ति ग आक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्त- मान प्रश्न का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२५ × ६६ सं० मी०	७ (१-७)	१२	३२	पू०	प्राचीन	भट्टो जी दीक्षित विरचित सध्या मंत्र व्याख्यान सपूर्ण ॥
१७ × ८५ सं० मी०	१२ (१-१२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति परिव्राजकाना सध्या पचीकरण महावाक्यादिक समाप्त ।
११५ × ६७ सं० मी०	१७ (१-१७)	६	१२	पू०	प्राचीन सं० १७६६	इति त्रिनाल सध्या विधि । सं० १७६६ वर्षे कातिक सु ७ जनै लिपित सदा मिच देवेन वदन दुवे निमित्त ॥
१६१ × १११ सं० मी०	८ (१-८)	१०	१४	पू०	प्राचीन	इति जप विधिः सध्याविधिः समाप्त ॥
१४७ × १११ सं० मी०	१३ (१-१३)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगसमाप्त शुभ राम "
२७६ × १२१ सं० मी०	६ (१-६)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सध्याप्रयोग समाप्त ॥
१७ × १०६ सं० मी०	७ (१-७)	१६	१२	पू०	प्राचीन सं० १७७६	इति सध्या प्रयोग ॥ शुभभवतु ॥ सवत् १७७६ चैतमुदी २ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६०	५२६८	सध्या विधि प्रयोग			३० का०	३०
१०६१	३०८०	सध्या विधि प्रयोग			३० का०	३०
१०६२	६६४	सध्या विधि प्रयोग			३० वा०	३०
१०६३	४६८८	सध्या विधि प्रयोग			३० का०	३०
१०६४	५५४३	सध्या विधि प्रयोग			मि० वा०	३०
१०६५	१२४३	सध्या विधि प्रयोग			३० वा०	३०
१०६६	२२८८	सध्या विधि प्रयोग			३० वा०	३०

पत्ती या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या अक्षर पूरा? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४ × १०.२ सें. मी०	८ (१-८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयाग शम्भूराम् ॥
१५.७ × १०.३ सें. मी०	८	८	१८	पू०	प्राचीन	इति सध्या विविध प्रयोग समाप्त ॥ शुभ भूयात् । श्रीरामायनम् ॥
२२.८ × ११ सें. मी०	४	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १३.४ सें. मी०	११ (१-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सध्या समाप्त ॥
२० × ८.२ सें. मी०	६ (१-६)	७	२५	अपू०	प्राधुनिक	.... अक्षर सध्या प्रयोग..... (आदि)
२१.१ × ६.४ सें. मी०	४ (१-४)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२१.८ × ६.५ सें. मी०	६ (१-६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसरया या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६७	६७७३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६८	४६६४	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६९	४५१७	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७०	<u>१२८३</u> ८	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७१	४९६१	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७२	३५०३	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७३	१११५	संध्योपासन			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकिनसंख्या और प्रति पक्ति म संक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता अर्ध मान अथ का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७२ × ८६ से० मी०	६ (१-६)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन स० १६०६	इति विसर्जनम् इति + + + + + सध्याविधि प्र० समाप्ता शुभमस्तु सवत् १६०६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्षा + + + ॥
१४६ × ७६ से० मी०	२५ (१-२५)	५	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति सन्यासस्य सध्याविधि समाप्त ॥
२५२ × १०४ से० मी०	१४ (२,२-१४)	७	३३	अपूर्ण	प्राचीन	इति सायशय्या शूर्ण . . . . . ॥
१७५ × ६५ से० मी०	६ (१-६)	७	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति नामगात्रिवेदिकाल सध्यापासन समाप्त ॥ १७॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॥
२२६ × ८५ से० मी०	८ (१-८)	७	३०	पूर्ण	प्राचीन	इति त्रिकाल गायत्री विधि समाप्त ॥ + + + + + ॥
२१७ × १० से० मी०	५ (२-६)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति सामगाना सध्यापासनम् ॥
१४८ × ८५ से० मी०	१० (२-११)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७४	१८५१	सध्योपासन विधि			दे० का०	दे० ३
१०७५	२६२०	सध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७६	२४६६	सन्यास पद्धति			दे० का०	दे०
१०७७	३७०१	(आतुर) सन्यासविधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७८	७५३६	संस्कार पद्धति			मि० का०	दे०
१०७९	२२६९	संस्कार विधि			दे० पा०	दे०
१०८०	६२४१	संस्कार विधि (गर्भाधान से धर्मप्राप्त्यन तक)			दे० पा०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिगणना और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षरों का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
११×८ सं० मी०	१४	८	११	पू०	प्राचीन सं० १८५३	इति संख्या संपूर्ण समाप्त ॥ संवत् १८५३ भाद्र पद वदि प्रादित वार ॥ १० ॥
१५७×७७५ सं० मी०	६ (१-६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२३४×६५ सं० मी०	३६ (१-३६)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२३७×११७ सं० मी०	४ (१-४)	८	२८	पू०	प्राचीन	अथ प्रातुर सन्यात विधि समाप्तः ॥
२२५×१०५ सं० मी०	४७ (१-८, १५-५३)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८६४	सरस्वतीं गुरु चैव कुर्वे सस्वार पठति ॥ (प्रारभ) + + + इत्यर्कविवाह ॥ संवत् १८६४ सके १६५(?) भाद्रपदपक्ष १० शुक्रवासरं टोपतोपनामक बाला जी नामकेन लीखित स्वार्थ परार्थ च इय देव नाधि*****
२३२×६५ सं० मी०	३४	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
१६×११३ सं० मी०	२५	६	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१०८१	६३५८	संस्कारविधि (चोलकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, भ्रमप्राशन आदि)			२० का०	२०
१०८२	२४१८	संस्कारविधि			२० का०	२०
१०८३	२१८५	सत्यनारायण पूजाविधि			२० का०	२०
१०८४	१८७८	सत्यनारायण पूजाविधि			२० का०	२०
१०८५	६२१	संविद्यकर्म			२० का०	२०
१०८६	३८६१	संविधी			२० का०	२०
१०८७	४७४१	संविधीकरण			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का क्रमांक	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६४×८४ सं० मी०	१४		३२	पू०	प्राचीन	
३२६×१३३ सं० मी०	७ (१३४- १३६, १४१)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
१७५×१०३ सं० मी०	५,	८	२५	पू०	प्राचीन	
२२६×१३२ सं० मी०	३ (१-३)	१०	२४	अपू०, कृमिकृतिस	प्राचीन	इति प्रार्थना ॥०॥
१६×१३ सं० मी०	३६ (१-६, १२-४१)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	इतिसपिडि कमं समाप्तम् ।
१६१×८३ सं० मी०	२ (१-२)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति वाराहेपिडकल्पे भगवच्छास्त्रे ॥
१६१×६८ सं० मी०	४१ (१-४१)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति सपिडि करणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किं वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०८८	३६०७	सपिंडीकरण विधि	श्रीधरमणि मिश्र		गि० का०	२०
१०८९	५४७९	सपिंडीकरण श्राद्ध			२० का०	२०
१०९०	१०६२	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			२० का०	२०
१०९१	४९९४	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			२० का०	२०
१०९२	५२२९ ४	सप्तमतिवा पूजा पद्धति			२० का०	२०
१०९३	५००५	सप्तमती पाठविधान			२० का०	२०
१०९४	८९६	सरोजम लिखा			२० का०	२०

पत्रो या पुठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पुठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्थान और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
घ	ब	स	द	६	१०	११
२२५ × ११४ सें० मी०	१८ (१-६, ८-६, १२-१४, १६-२२)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री मत्स्यडित घोषमणि मिश्र कृताया प्रेतप्रकाशिकाया निरग्निको... हिक क्रिया सपिंडीकरण विधि समाप्त शुभभवतु सवत् १६२२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या ॥
२१७ × १०६ सें० मी०	१८ (५-१७, १६-२०, २२-२४, २६-२८)	१०	३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति सपिंडीकरण श्राद्ध सपूर्ण ॥ सवत् १६० चैत्र शुक्ल चतुर्थी शनि-वासरे लिखत पंचौली महताव सिंह स्वात्म पठनार्थं शुभ भूयात् ॥
३२५ × १२७ सें० मी०	४७ (१-४७)	१०	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६३७	इति सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति समाप्तम् ॥ सवत् १६३७ ॥ शाके १८०२ ॥ मिति... लिखित फिकिरवद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ रामायणम् ॥ लक्ष्मणाय-नम् ॥
२५४ × १०७ सें० मी०	२२ (१-३, ३-४ ४-५, ५७, ६, ११-२१)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०४	इति सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति ॥ श्री-रस्तु ॥ सं० १६०४ कार्तिक वदि ६ ॥
१६५ × ११२ सें० मी०	५	७	१४	पूर्ण	प्राचीन	सप्त सतका पूजा पथ्यत समाप्ता ॥ १॥
१५६ × ६८ सें० मी०	३ (१-३)	१०	१७	अपूर्ण	प्राचीन	
२३१ × १३१ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८५८	इति मंत्रिय नियम सरोज कलिका समाप्ता ॥ सवत् १८५८ ॥ पौष कृष्ण पक्षी शनी यात्त-प्राप्ते ॥ शुभम् ॥

क्रमांक प्रीर विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सद्रशुविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०६५	४००१	सर्वसंस्कार विधान			दे० का०	३०
१०६६	५८२७	सर्वकर्मसाधारणपद्धति	देवभद्रपाठक		दे० का०	३०
१०६७	४४३४	सर्वकर्मस्वमिनिर्णय	कमलाकर भट्ट		३० का०	३०
१०६८	५१६८	सर्वतोभद्रदेव स्थापन			मि० का०	३०
१०६९	७६३२	सर्वतोभद्रपूजन			३० का०	३०
११००	३५०७	सर्वतोभद्रपूजनम्			३० का०	३०
११०१	२२४२	सर्वतोभद्रपूजनम्			३० का०	३०

पत्रो वा पृष्ठो वा संख्या	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या को प्रति पत्रि- मे पत्रसंख्या		क्या संव पूर्ण है ? अपूर्ण है तो कल- मान घन १। विवरण	धरण्या ओर प्राचीनता	अन्य धावत्यक विवरण
		स	द			
२१×६ सं० मी०	२ (१-२)	१०	४३	पू०	प्राचीन	सर्प संस्कार विधान ॥
२३२×१०४ सं० मी०	२५ (१-२५)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १६१२	इति श्री मन्महायाज्ञिक नागर ज्ञातीय पाठन श्री रामचन्द्र भूगुणाधर पाठक वश समूत पाठक श्रीवलभद्रात्मज देवभद्रवृत सर्वकर्मसंघारणाग पद्ध- तिर समान्ता । सवत् १६१२ मिति ज्यैष्ठ्य मदी ५ रविवार लिखत ॥
१८७×१०७ सं० मी०	६ (१-६)	६	२०	अपूर्ण	प्राचीन	इमि रामकृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्टे वृत्तो सर्वकर्मसंघान्निर्णयः ॥ शुभ- मस्तु ॥
३२५×२०७ सं० मी०	१ (घर्ता)	३३	१८	पू०	आधुनिक	
२२×१० सं० मी०	४ (१-४)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति सर्वतोभदेवता ॥
३१×१३ सं० मी०	१० (१-१०)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति सर्वतोभद्र पूजनम् श्री लक्ष्मण सवत् १६०४ मार्गशुक्ला ५ रवौ लिखत..... ६
३१२×१६१ सं० मी०	१२ (१-१२)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १६१३	इति सर्वतो भद्रपूजनम् श्री लक्ष्मण सवत् १६१३ आषाढ कृष्णः.....

क्रमांक धीरे विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११०२	५३६४	सर्वतोभद्रपूजन विधि			३० का०	३०
११०३	२८२६	सर्वतोभद्रमण्डल पूजाविधि			३० का०	३०
११०४	७५८८	सर्वतोभद्र लिगतोभद्र			३० का०	३०
११०५	६७४१	सर्वदेवता प्रतिष्ठा विधि			३० का०	३०
११०६	$\frac{३१५}{२}$	सर्वदेवपूजन प्रकार			३० का०	३०
११०७	८२५	सर्वदेव प्रतिष्ठा			३० का०	३०
११०८	६७५४	सर्वपुष्टान्तोपनिष्यप्रयोग			३० का०	३०



पत्नी या पृष्ठो का धार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति में श्लोकसंख्या	क्या ग्रथ पूरा है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथका और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
प.सं.	व.	स. द.	६	१०	११
२८५X१२४ सं० मी०	४ (१-४)	८ ३२	पू०	प्राचीन सं० १६२६	इति सर्वतोभद्रपूजनविधि समाप्त शुभ- मस्तु सवत् १६२६ शाल ॥ मोती मार्ग शिर्ष शुक्ल ६ ॥ रविवासरे ॥
२४७X१५६ सं० मी०	५ (१-५)	१० ३१	पू०	प्राचीन सं० १६१५	इति सर्वतोभद्रमंडल पूजा विधि समाप्ता ॥ श्रावणे चतुर्थे पक्षे पंचम्या भृगुवासरे ॥ शुक्ल कर्तुके १६२५ लिख्यते पूजनमया ।***
२३७X१०३ सं० मी०	६ (१-६)	११ ३७	पू०	प्राचीन सं० १६७४	इति सर्वतोभद्र तिगतोभद्र समाप्त ॥ सवत् १६७४ शके १७३६ सर्वे धारिणा सवत्सरे भाद्र पद मासे शुक्लपक्षे + +
२१४X१० सं० मी०	७ (१-२)	११ ४०	पू०	प्राचीन	तिगतोभद्र देवता समाप्ता ॥
१७७X११८ सं० मी०	४ (१-४)	१५ १२	पू०	प्राचीन	इति सर्वं देव पू०
२७७X११३ सं० मी०	७० (१-५१ ५१-६६)	६ ४४	अपू०	प्राचीन	
२४१X६ सं० मी०	७ (१-७)	१४ ४३	पू०	प्राचीन	यज्ञ पुष्पादि सब मति रात्रवत अन्तोर्मा मेक्यस्त्रिशष्टश्राणि भवति एषा तुष्टि सर्वस्त्वोमस्य सर्वे पुष्पास्तोषोमस्य समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११०६	६७६०	सर्वपुष्ठाप्तोर्यामस्यो कथ्यत ऽथाग			दे० वा०	दे०
१११०	६५१५	सर्वपुष्टेष्टि होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
११११	६५०६	सर्वपुष्टेष्टि भाध्वयंब प्रयोग			दे० का०	दे०
१११२	४७३७	सर्घप्रायश्चित्त प्रयोग			दे० का०	दे०
१११३	६६३८	सर्वस्तोम सर्वपुष्ठाप्तो र्यामस्य ब्राह्मणान्छमी प्रयोग			दे० का०	दे०
१११४	६१५ ३	सर्वपा वसुनि गृद्धा- गृद्धि			दे० वा०	दे०
१११५	३६८४	सहस्रचरी ( होम ) विधान			दे० वा०	दे०

पत्रो मा पृष्ठो वा भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे रविःसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथमपूर्णा है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर वा विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	व	म	द	६	१०	११
२०८५८८ सं० मी०	१७ (१,४-१६)	७	३२	अपूर्०	प्राचीन	इति सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्योक्त्यतः प्रयोगः ॥.....
२२३५८९ सं० मी०	४ (१-४)	८	३४	पूर्०	प्राचीन	इत्याश्वलायनोक्त सर्वपृष्ठेष्टिहोतः प्रयोगः समाप्तः ॥ ...
२२५६३ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३८	पूर्०	प्राचीन	इति सर्वं पृष्ठेष्टिप्राश्नव्यं प्रयोग ॥
२०३५७५ सं० मी०	६ (१-६)	७	३६	अपूर्०	प्राचीन	.....अथ सर्वं प्रायश्चित्त प्रयोग ॥ ..... (प्राप्त) x          x          x
२३९५६७ सं० मी०	११ (१-११)	६	३३	पूर्०	प्राचीन	छरीगवशाद्विर्याय ॥ सर्वस्तोम सर्व-पृष्ठाप्तोर्यामस्य ग्राह्ये ॥
१६३५११ सं० मी०	२ (१-२)	१४	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२५६५८ सं० मी०	१	७	३६	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१११६	२६६०	सहस्रशीर्षा			दे० वा०	दे०
१११७	६३७३	सांगमडलपवमान अनु- ष्ठान पद्धति प्रयोग			दे० का०	दे०
१११८	५४४०	सावत्सरिक श्याद्ध			दे० का०	दे०
१११९	५८१३	सार्पिण्ड्य प्रदीप	नामोजीभट्ट		दे० का०	दे०
११२०	४७२० ३	साय सप्त्या			दे० का०	दे०
११२१	५४८५	सालाकर्म			दे० का०	दे०
११२२	७२०	सावित्रीव्रतकप्रोद्योपन			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे प्रतिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या गुण पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत् मान अक्ष का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
दश	व	स द	६	१०	११
२२४×८६ पं० मी०	८ (२-३, ७, ९ १२-१४)	६ ३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री सुहस्त्रगोर्पा सपूर्णम् ॥ सुम- मस्तु राम ॥
२०८×६८ सं० मी०	७ (१-७)	१० ३८	पूर्ण	सं० १८२९	इति श्री महद्गुणध्यान शोभानुसारी साग मडल पवमानानुष्ठान पद्धति प्रयोग समाप्त । इदं पुस्तकं सदा सदाशिवकवीश्वरेणा पीप शुद्ध पीण- मास्या लिखित ॥ सवत् १८२९ मिति ॥
२१×७८ सं० मी०	६ (१३-१८)	७ ३३	अपूर्ण	प्राचीन	इति सावस्तरीक श्राद्ध प्रयोग ॥
२८७×१२१ सं० मी०	१६ (१-१६)	११ ४५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८१०	इति श्री मत्कालोपनाम शिव भट्ट सुत सतीशमज नागोजी भट्ट कृत सापिंड्य प्रदीप समाप्त शुभमस्तु । सवत् १८१० मीति सावनवदि अनावस्य १५
१७७×११ सं० मी०	३ (१८-२०)	७ १८	पूर्ण	प्राचीन	
२२८×६४ सं० मी०	३ (१-३)	७ ४०	पूर्ण	प्राचीन	इति साला समाप्तम् ।
२४४×७७ सं० मी०	१४ (१-१४)	८ ३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८७८	इति श्री भविष्योत्तर पुराण कृष्ण युधिष्ठिर सवादे बट सावित्री वल कपो- द्यापन समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२३	६११२	सिद्धिविनायक- पूजाविधि			दे० का०	दे०
११२४	५३३६	(श्री) सूक्तविधान			दे० का०	दे०
११२५	१२२६	(श्री) सूक्तविधान पुरस्चरण			दे० का०	दे०
११२६	$\frac{४७२०}{३}$	सूक्तोक्त प्रातः सध्या	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
११२७	$\frac{४७२०}{३}$	सूक्तोक्त मध्याह्नसध्या			दे० का०	दे०
११२८	४७४४	सूक्तोक्त याद प्रयोग			दे० का०	दे०
११२९	४१६५	सूक्तोक्त याद सकल्प			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमस्या और प्रति पक्ति म प्रक्षारसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्णा तो वत- मान प्रश्न का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आशयक विवरण
		स	द			
२४१ X १० ६ सं० मी०	७ (१-७)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति वरद चर्यो सिद्धि विनायक पूजा विधि समाप्त ॥
२२२ X ७४ सं० मी०	४ (१-४)	८	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री सूक्त विधान सपूर्ण ॥
२१५ X ८६ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री सूक्तस्य विधान पुरश्चरण प्रकार शुभभवतु ॥
१७७ X ११ सं० मी०	११ (१-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूक्तोक्त प्रात सध्या समाप्त ॥
१७७ X ११ सं० मी०	६ (१२-१७)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूक्तोक्त मध्याह्न सध्या ॥
२४८ X ११ २ सं० मी०	३ (१-३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	समाप्तोय सूत्रानुसारी दश श्राद्धप्रयोग ॥ श्री सीताराम चंद्र ॥
२१५ X ६ सं० मी०	३ (१-३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति सूक्तोक्त श्राद्ध सकल्प ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
११३६	६५२६	सौमभसविवेक			दे० का०	दे०
११३१	६१११	सौमभसविवेक			दे० का०	दे०
११३२	६७००	सौत्रामण्य प्रयोग			दे० का०	दे०
११३३	६७५३	सौत्रामण्यी होत्र			दे० का०	दे०
११३४	६२७६	स्नान			दे० का०	दे०
११३५	२६६१	स्नान मंत्र			दे० का०	दे०
११३६	२०६	स्नातकमनुष्ठान	मयदेव भट्ट		दे० का०	दे०



पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२० ८ X ८ ६ से० मी०	११ (१-११)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन स० १८८८	सवत् १८८८ शुभ कृत् नाम सवत्सरे मिति वैशाख व १० गुरुवार ॥
१८ ६ X ८ ४ से० मी०	२ (१-२)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमे आश्वलायनाना सोम अक्ष विवेक ॥ + + +
२१ ६ X ६ से० मी०	३ (१-३)	८	२७	पूर्ण	प्राचीन	इति सौतामसि प्रयोग ॥
२४ X १० ३ से० मी०	३ (१-३)	६	३५	पूर्ण	प्राचीन	
२१ ६ X १० ८ से० मी०	६ (३-५, ८-१०)	६	२२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ ५ X ११ २ से० मी०	२ (१-२)	७	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति स्नान मंत्र ।
१६ X ८ ७ से० मी०	१८ (१-१८)	८	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति पिड पितृ यम ॥ समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या दा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
११३७	६७६	श्री स्मार्तपदार्थ सग्रह (गङ्गाधरी)	गङ्गाधर भट्ट	-	दे० का०	दे०
११३८	६६१२	स्मार्तपाकसप्रयोग	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
११३९	६३७४	स्मार्त प्रायश्चित्त	दिवाकर		दे० का०	दे०
११४०	४६९९	स्मार्तसग्रह कारिका (भाषान पद्धति)	गङ्गाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११४०	७६४५	स्मार्तान्दनुगमन प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
११४१	४१०९	स्मृति वाचन			दे० का०	दे०
११४०	४३०८	स्मृति वाचन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्य और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५ ५ × ११ ५ सें० मी०	५०	१०	३६	पू०	प्राचीन स० १६८४	इति गंगाधरी पुस्तक मिद सपूर्ण ॥ सवत १६८४ वर्षे आण्ड बदि ५ रवौ लेख ॥
२३ २ × १० २ सें० मी०	२४ (१-२४)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सुतना दीक्षिताननेन सर्वो- पकाराय वशिष्टासमवकाश्रवरणावर्मा द्यापाक सप्रयोग समाप्त ॥ ***
२१ × ६ ४ सें० मी०	६७ (१-६७)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्नालोपनामक भट्टरामेश्वरा राम भट्ट महादेव द्विज वषे सुनु भट्ट दिवाकर विरचित स्मात प्रायश्चित्तानि प्रयोग रूपेण नित्यनैमित्तिक प्रायश्चित्तानि निकारिवाद्युक्तानि निरूपितानि ॥ इतिस्मात् प्रायश्चित्त समाप्त ॥
२७ ४ × ११ १ सें० मी०	५४ (१-५४)	६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री गंगाधरभट्टविरचितेस्मात्- पदार्थ सप्रहेमणिकावधानसमाप्त ॥ *** (पत्रसंख्या ६) आधानपद्धतिफुर्वे स्मात् सप्रह कारिका ॥१॥ (प्रारम्भ)
२७ २ × ११ ४ सें० मी०	४ (१-४)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति स्मार्ताग्न्यनुगमन प्रायश्चित्त समाप्त ॥
१६ × ६ १२ सें० मी०	१० (२-११)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १० १ सें० मी०	७ (१-२,४-८)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	ति
१	२	३	४	५	६	७
११४४	७०३६	स्वस्त्ययन			३० का०	३०
११४५	५६३६	स्वाहाप्राण			३० का०	३०
११४६	५४३	हसविधानार्थ्यम्			३० का०	३०
११४७	७१७०	हनुमत्प्रतिष्ठा प्रयोग			३० का०	३०
११४८	६६५७	हरिवंशप्रवणविधि			३० का०	३०
११४९	५०८२	हरिसमाराधनाकार सग्रह	रामप्रसाद		३० का०	३०
११५०	४६३२	हरिसमाराधनकार सग्रह	रामप्रसादाविध		३० का०	३०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागत मध्या या संग्रहविशेष की क्रमांक	ग्रंथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथम निवृत्त बस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
११५१	८६६६	हिंगमाराधनसारसंग्रह	रामप्रसादमिश्र		२० का०	२०
११५२	१४०१	हरिस्मृति			२० का०	२०
११५३	३५२४	हवनपद्धति			२० का०	२०
११५४	४७४६	हिरण्यशार्द प्रयोग			२० का०	२०
११५६	४६३७	होम			२० का०	२०
११५६	६७५६	होमचिन्तामणि			२० का०	२०
११५७	५३०	होमपद्धति	शीलबोदर		२० का०	२०

क्रमांक और विषय	पुस्तकानाम की प्रागतसमस्या वा सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११५८	२७४४	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११५९	४३५१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६०	६७७	होमपद्धति	लम्बोदर		दे० का०	दे०
११६१	५०२६	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६२	७८६८	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६३	३०२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६४	४६८४	होमपद्धति			दे० का०	दे०

पद्यो या पृष्ठो का आकार	पद्यसंख्या	प्रतिपद्य म पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूरा है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१७×१२६ सें० मी०	२८ (१-२८)	६	२३	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति रूपनारायण होमपद्धति समाप्त शभ भूयात् ॥ सवत् १८६५ शके १७३० शीष शुक्ल नवम्या सोमवासरे पुस्तक लिखित मिश्र पुमान राम श्री श्रीराम चंद्राय नम ॥
३०५×१२६ सें० मी०	५ (१-५)	१४	४६	पू०	सं० १६१३	सं० १६१३ आषाढ कृष्ण १३ तिथिगत मिश्र मुरलीधर स्वयं पठनाय श्री तस्मत् ॥
२६६×११५ सें० मी०	२६ (१-२६)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १६३५	इति श्री लम्बोदर विरचित होम पद्धति समाप्तम् सवत् १६३५ चैत्र कृष्ण ६ रविवासरे लिखित गया सहायेन अहीनना मध्ये इदं पुस्तक संपूर्णोक्त शररजयतु शुभा ददातु ॥
२४×१०३ सें० मी०	२ (६-१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
१४८×१३५ सें० मी०	२०	१२	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्रीवृत्तान्तित होमग्रन्थ पद्धति समाप्ता ॥ मोता ज्येष्ठ सुदि २ तबत् १८६५
२४१×१०२ सें० मी०	१५	३०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६×१२ सें० मी०	१६ (६५-११३)	६	३१	अपू०	प्राचीन (जील)	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	प्रयनाम	प्रयकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६५	५२६७	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६६	२४२८	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६७	७५६६	होम विधि			दे० का०	दे०
११६८	५२४६	होम विधि (कुणकडिका)			दे० का०	दे०
११६९	७३११	होम विधि			दे० का०	दे०
११७०	७७४५	होम विधि			दे० का०	दे०
११७१	६४६५	होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०



पत्ती या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पत्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण	
		स	द			१०	११
२१५ × १२४ सें० मी०	५ (१-३, ५-६)	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन		
२४ × १०३ सें० मी०	८ (१-६, २४, २६)	१२	३५	पूर्ण	प्राचीन		
३०६ × १४७ सें० मी०	४५ (१-४५)	११	३१	पूर्ण	सं० १६३६	इति श्री होम समाप्त सवत् १६३६ के शाल.....	
२३२ × ६८ सें० मी०	४ (१-४)	६	४०	पूर्ण	प्राचीन	इति होम समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥	
२४ × १२ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३७	अपूर्ण	प्राचीन		
२६१ × १०३ सें० मी०	१० (१-१०)	४२	३६	अपूर्ण	प्राचीन		
२२६ × १०४ सें० मी०	८	८	३२	पूर्ण	प्राचीन	अथ परमुक्थ होत्र प्रयोग ॥ (प्रारम्भ)	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागृतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रयत्नकार	टीनाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	दिनांक
१	२	३	४	५	६	७
कोश १	१७६८	अनेकाथ ध्वनि मजरी	दासगव		दे० का०	२०
२	४५२८	अनेकाथ ध्वनि मजरी	दासगव		दे० का०	२०
३	५५६६	अनेकाथ ध्वनि मजरी			मि० का०	२०
४	४४८७	अनेकाथ मजरी (१-४ अक्षर्याय)			दे० का०	२०
५	६०६६	अनेकाथ मजरी			दे० का०	२१
६	३४७६	अभिधान चिन्तामणि	हेमचन्द्र		दे० का०	२१
७	११७६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है? प्रपूरण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२३५ × १०५ सें० मी०	६ (४-६)	१३ ४०	अपू०	सं० १८७४	इति श्री काश्मीरखान्मयेमहाक्षपराक विरचिते अनेकायध्वनिमज्जर्या पदाधिकार काड शुभमस्तु ॥ सवत् १८०७४ ॥
२३२ × ११६ सें० मी०	७ (१-६, ८)	११ ४८	अपू०	सं० १८६६	इति श्री काश्मीरखान्मयेमहाक्षपरा कवि-विरचिते अनेकायध्वनिमज्जर्या तृती काधिकार प्रथमकाड । (पत्रसंख्या-४) × × × इति अनेकार्थे ध्वनिमज्जर्या तृतीयोध्याय ३ सवत् १८६४ वैशाख मास कृष्णपक्षे सप्तम्या बुधवासरा न्विताया लिखित मिश्रमहतावसिह स्वात्मपठनार्थे शुभमस्तु ॥
२१ × १११ सें० मी०	६ (१-६)	११ ४०	पू०	प्राधुनिक	इत्यनेकायध्वनि मज्जर्या द्वितीय काडो धं रलाकाधिकार साग एव सथित ॥ अनेकाय काश समाप्त * * * *
२७.८ × ११४ सें० मी०	१४ (१-१४)	६ ३२	पू०	सं० १६१४	इत्यनेकायध्वनिमज्जर्या एकाक्षरधिकार शचतुर्थोध्याय ॥ ४ माघमास शितेपक्षे चतुर्थीसामवासरेस्वलिपित्स्वामपाठार्थे बडकलीनगरस्थित १ सवत् १६१४ मंगल लखकानाच पाठकानाचमंगल
२२२ × ६७ सें० मी०	१५ (१, ३-१६)	८ ३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री लियशासन समाप्त ॥ महास-ब्दापनामन गदाधर भट्टन माघे सति शुक्ल पक्षेन बम्या लिखित ॥
३० × १०६ सें० मी०	२५	१४ ५४	अपू०	खडित सं० १७६६	इत्माचार्ये श्री हेमचंद्र विरचितायाम-भिधान वितामणो नाममो नाया सानान्य काड पट्ट समाप्त ॥ सं० १७६६ वर्षे
२५७ × ११६ सें० मी०	(४६, ६४- ६६, १०६)	८ २६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संप्रद्विगेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८	३०६७	अमरकोश (नामलिगानुशासन- भूमिकाड)	अमरसिंह		३० का०	३०
९	७४९	अमरकोश			३० का०	३०
१०	७७५	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
११	८५१	अमरकोश (स्वरादिकाड) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	क्षीर स्वामी भट्ट	३० का०	३०
१२	८६६	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
१३	४३०७	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह	मानुजीदोक्षित	३० का०	३०
१४	४३८२	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठो का धावार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या प्रीर प्रति पक्ति म अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ध्रुवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२८×१०५ सें० मी०	२१ (२२-४२)	११	३७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृती नामलिगानुशासने ॥ भूमिकाण्डो द्वितीयाऽय साङ्गएव समथित ॥ तपसि शुक्लदले चतुर्दश्या कुजे दिने समाप्तोय द्वितीय कण्ड लिखितमिद गुरुदयालेनेति शिवम् ॥
२१६×१०३ सें० मी०	६०	६	२८	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृती नामलिगानुशासने... ...एव समथितः ? ॥
२२२×१०४ सें० मी०	२१	६	३०	पू०	सं० १६३७	इत्यमरसिंह कृती नाम लिगानुशासने- स्वरादि काड प्रथम १ सागएव समथित आषाढमासे कृष्ण पक्षे द्वितीया गुरुवासरे लिखित रामप्रसादेन पुस्तक बुद्धि दायक सबत् १६३७, राम राम
२७५×११३ सें० मी०	५२ १,१-५३	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट क्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितमर- कोशोदघाटने स्वर्गादि काड प्रथम समाप्त ॥***
२६७×१०१ सें० मी०	६० (२-८०, ८४-६४)	७	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७०२	इत्यमरसिंह कृती नाम लिगानुशासने काड तृतीय सामान्य सागएव सम- थित शुभमस्तु शुभदिने ॥ सबत् १७०२ समये आषाढ सुदि प्रतिपदा गुरुवासरे ॥
२६६×१०८ सें० मी०	१०२ (१-८६, १-१६)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वधेल वशोदग्व श्री मंदिर विषयाधिप श्री कीर्ति सिंह देवाज्ञया श्री भट्टो जी दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायाममर टीकायां व्याख्या सुधाख्याया पानालभोगिवर्ण विवरण समाप्त ॥ (पृ० ७५)
२४५×६६ सें० मी०	८३ (२६-३८, ४०-४४, ४६-४६, ५६, ६६- ७८, ८०- १०७, १०६ -१२३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृती नामलिगानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीय सागएव समथित शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसदस्या या सग्रहविज्ञाप की सहाय	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिया है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	७५७०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१६	४३८४	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१७	१३०२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१८	१९०२	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	भानु दीक्षित	दे० का०	दे०
१९	१८०७	अमरकोश (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२०	४२२६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२१	४१३०	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५.५ × ६.६ सें. मी०	६१ (१-६, १२ -६३)	८	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१६.८ × १३.६ सें. मी०	३३ (१, ६-३५, ३७-३८)	६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
२५.६ × १२ सें. मी०	४५	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
३३.७ × १५.५ सें. मी०	४१ (१-४१)	११	५७	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कपिलवंशोद्भवश्रीमहीधर विय- याधिय श्री सिंहदेवशाया श्रीभट्टोजिदी- भित्तालमज श्री भानुदीक्षित विरचिताया- ममरटीकायाव्याख्या मुख्यायाप्रथमः बाड सपूर्णतामगमत्* * * * *
२८.६ × १२.१ सें. मी०	१३ (१-१३)	११	३८	पूर्ण	प्राचीन स० १८८६	इति श्री प्रमराचार्य कृतौ प्रथमकांड समाप्त ॥ सवत् १८८६ मिति माघ कृष्ण सप्तम्या तिथी कृत स्थानेश्वर नगरमध्ये ॥
२५.१ × ११ सें. मी०	५	१०	३२	अपूर्ण	प्राचीन (वहित)	
२५.८ × ११.१ सें. मी०	११ (८५-६५)	८	३७	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकानुय की प्रागतसख्या वा सप्रहविशेष की सख्या	प्रयनाम	प्रयकार	टीकावार	प्रय किम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२२	४२२८	अमरकोश	अमरसिंह		२० का०	२०
२३	२७४६	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		२० का०	२०
२४	३५२३	अमरकोश			२० का०	२०
२५	३५३०	अमरकोश	अमरसिंह		२० का०	२०
२६	३६४७	अमरकोश	अमरसिंह		२० का०	२०
२७	४०२१	अमरकोश	अमरसिंह		२० का०	२०
२८	२५४६	अमरकोश	अमरसिंह		२० का०	२०



पत्रो या पृष्ठी का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवितसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो अर्तमान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		द	स			
२३७ × ६ सें० मी०	४४ (११३, १६- १८, १८-२३, २३, २४, २४- ३२, ३४-३५, ३७, ३६-४३, ४५-५३, ५६- ५६३-६५)	८	२८	अपूर्०	प्राचीन (जीर्ण- शीर्ण) (खडित)	समाह्वयान्ततत्राणि सक्षिप्तं प्रति संस्कृतं ॥ सपूर्णां मुच्यते वर्णनाभिलिगा- नुशासनम् ॥ २ ॥ (प्रारभ)
२५२ × ११ सें० मी०	३४	८	३७	अपूर्०	प्राचीन	
२४६ × १० ६ सें० मी०	२६ (३२-४५, ५४-६१, ६५-६६, ६७-६८)	७	३२	अपूर्०	प्राचीन	
२२१ × ८३ सें० मी०	५५ (१-५५)	७	३६	अपूर्०	प्राचीन म० १६०८	इत्यमरमिह कृती नाम लिगानुशासने भूमिकादो द्वितीयोय सागएव सम- यित ॥ २ ॥ समाप्नोय द्वितीय वाड ॥ सवत् १६०८ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ ॥
२२६ × ११ १ सें० मी०	२८ (१-१०, १२-२४, २६-३२)	८	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२२५ × १० ७ सें० मी०	२८ (१-६)	८	२४	अपूर्०	प्राचीन	अथ अमर लिप्यते ॥ (प्रारभ)
२७ × १० ६ सें० मी०	३ (१-३)	७	३५	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संप्रतिविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३३	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
३०	३७	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
३१	४२	अमरकाश	अमरसिंह		३० का०	३०
३२	१३२	अमरकोश (प्रथम काण्ड)	अमरसिंह		३० का०	३०
३३	१३३	अमरकोश (तृतीय काण्ड)	अमरसिंह		३० का०	३०
३४	४७१	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
३५	४०२	अमरकोश (लियाणुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०

श्लो गा पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	प्रकृत्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
न अ	व	स	द	६	१०	११
२८६ × १४२ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२६	अपूर्०	प्राचीन	
२८५ × ११ सं० मी०	८६ (१-७, १२-६१)	७	२६	अपूर्०	प्राचीन	
२७६ × १०६ सं० मी०	६६ ६२-१६०	१०	२७	अपूर्०	प्राचीन स०१८५४	शुभसूयाल्लेखक पाठकयोः ॥ स०१८५४ ज्येष्ठ मासे शुक्ल ११ चन्द्र० रत्नाख्यान लिखितम् ॥ शुभमस्तु ॥ धीरस्तु ॥ श्री ॥
२५ × १२५ सं० मी०	१८ (१-१८)	६	३०	पूर्०	प्राचीन स०१७१८	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिगानुशासने ॥ स्वरादिकाड प्रथम साय एव समाप्त ॥२॥ इति प्रथमकाड समाप्त ॥ शके १७१८ ** भाद्रपदशुक्ल तृतीया इद पुस्तक समाप्त ॥ गगाधर महादेव काणेरया इद ॥ स्वार्थपरार्थ च ॥६॥
२३३ × १०७ सं० मी०	२६ (१-२६)	६	२८	पूर्०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिगानुशासने सामान्य काड तृतीया साय एव समाप्त ।
२५ × १०३ सं० मी०	६४ (१-६४)	६	३४	पूर्०	प्राचीन कृमिकृतित स०१६८०	इति लिगादि सप्रहवर्गं ॥ इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिगानुशासने ॥ सामान्य काण्डतृतीया साय एव समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री विश्वेश्वरदायनम ॥ श्री रामायनम ॥ सबत् १६८० ॥ *****
३३५ × १३ सं० मी०	१५१	५	३२	पूर्०	प्राचीन स०१६०२	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिगानुशासने काण्डतृतीया सामान्य । सग राव समा- प्त ॥३॥ सबत् १६०२ शके १७६७ ॥ अश्विनमासे शुक्लपक्षे शुभ तिथौ ॥७॥ श्रीमयासने ॥ लिपत विहारिवात् ॥ शुभमस्तु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	प्रबंधनाम	प्रबंधकार	टीकाकार	प्रय वित्त वस्तु पर लिया है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२४५	अमरकोश (लिगानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
३७	२५५	अमरकोष (लिगानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
३८	२८१	अमरकोश (लिगानुशासन) (तृतीय कांड)	अमरसिंह		३० का०	३०
३९	३६१९	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
४०	३७९५	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
४१	३८११	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
४२	३०३२	अमरकोश (नामलिगानुशासन) (भूमिकांड)	अमरसिंह		३० का०	३०

पत्तो या पृष्ठो का आवार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्षितसंख्या और प्रति पक्षि मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७५ X ११ सं० मी०	१०	११	३६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इत्यमरसिंह कृतो नामसिद्धानुशासने स्वरुदिकाण्ड. प्रथम साङ्गएव समापित ॥
२७५ X ११ सं० मी०	३४ (१-३४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामसिद्धानुशासने भूमिकाण्डो द्वितीयोऽपसाङ्गएव समापितः ॥
२७६ X ११ २ सं० मी०	२६ (१-२६)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इत्यमरसिंह कृतो नामसिद्धानुशासने काण्डस्तुतीयः सामान्य साङ्गएव समा- पित ३ शुभमस्तु लेखक पाठकयो श्री रस्तु सिद्धि श्री महाराजाधिराजे श्री महाराजा श्री राजा जै सिंहदेव राज्ये- शुभस्थाने रीवाणगरपुस्तकालित श्री चतुर्वेदयो घाली रामेण सं० १८८१ के प्रथिम शुक्ल ५ साने प्राप्तमर्थवा शुभभवतु ॥
२६७ X १५ २ सं० मी०	२६ (१-४, ६-४४, ५६-५७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२४७ X ११ २ सं० मी०	४१ (४-५, ११-४६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२६५ X १५ सं० मी०	३३ (१-१२, १-२१)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामसिद्धानुशासने- स्वरादिकाण्ड प्रथम साङ्गएव समापित ॥
२७१ X ११ ८ सं० मी०	६७ (१-६७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामसिद्धानुशासने भूमिकाण्डो द्वितीयोऽपसाङ्गएव समा- पित ॥ शुभभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसम्पत्ता वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४३	३०४८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४४	४८५०	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४५	४८५६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४६	४६४०	अमरकोश (नामलिंगानुशासन- १-२ कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४७	५३३४	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४८	४४३०	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (अमरविशेष सस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	महेश्वर	दे० का०	दे०
४९	६३३५	अमरकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा पाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत नाम ग्रंथ का विवरण	ग्रंथका और प्राचीनता	अन्य धावश्यक विवरण
		स	द			
२४८ × १०७ सं० मी०	११ (७३-८३)	८	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ × ११३ सं० मी०	५२ (१-५२)	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम तिगानुशासने भूतकाण्डो द्वितीय साग एव समाप्त × × × × × × × × ॥
३०३ × १२८ सं० मी०	२७ (१-२७)	११	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२५७ × १०५ सं० मी०	३८ (३-२४, २६-५१)	७	४२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री इत्यमरासंस्कृतौ नाम तिगानुशासने द्वितीयो भूमि कांडोयसागएव समाप्तः ॥ अगहसुदि दुद्रज सवत १८६४ श्रीकृष्ण प्रसाद ब्राह्मणेन लिखित समाप्त शुभमस्तु ॥
२७३ × १०४ सं० मी०	१३० (१-१३०)	६	४५	पूर्ण	प्राचीन	श्रीमत्यमरविवेके महेश्वरेण विरचित- एवाय ॥ भूम्यादि द्वितीयकांड समाप्तम गमच्छुभभवतु इति द्वितीय कांड समाप्त ॥
२७२ × ११६ सं० मी०	४६ (१-४६)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नाम तिगानुशासने ॥ स्वरादिकाण्ड प्रथम साग एव समाप्त
२२ × १२५ सं० मी०	१६ (११२१- २७,२६ ३६ ५२- ५५ ५७, ५६,६२- ६३ ८७)	८	२३	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसङ्ख्या वा सग्रहविशेष की सङ्ख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	५०८५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५१	४८६६	अमरकोश (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५२	५००३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५३	५१८३	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५४	७२००	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५५	$\frac{६६८६}{३}$	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५६	७०२६	अमरकोश			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४५ × १२१ से० मी०	२३ (२-११, १३-२५)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतो नाम लिगानुशासने स्वरादि काड प्रथम समाप्तः ॥
२२८ × ८८ से० मी०	३६ (१-३६)	६	३८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम लिगानुशासने ... .. ॥ इति श्री अमरकोश तृतीय काडः समाप्त ।
२३५ × ११ से० मी०	३७ (४-२२, ३०,४७,४८)	७	२७	अपूर्ण	प्राचीन	
२७८ × ११६ से० मी०	३ (१-३)	६	३१	अपूर्ण	प्राचीन	.....समाहृत्यान्व तत्राणि सञ्चितौ प्रति सस्कृते ॥ सपूर्णमुच्यते वर्ग- नामलिगानुशासनम् ॥ २ ॥ ..... (प्रारम्भ)
२५३ × १०८ से० मी०	८ (१-८)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१७ × १५७ से० मी०	२२ (१-२२)	१२	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री अमरसिंह विरचिते नाम लिगानुशासने स्वरादिकाड प्रथम- समाप्तम् ॥
२११ × १२३ से० मी०	१	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५७	२३४६	अमरकोश (नाम लिगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५८	२३०२	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५९	२३००	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६०	५६७७	अमरकोश (सटीक) (प्रथम कांड)	अमरसिंह	नरहरि भट्ट	दे० का०	दे०
६१	५६२५	अमरकोश (सटीक) (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६२	५५७५	अमरकोश			दे० का०	दे०
६३	५५२४	अमरकोश-टीका	अमरसिंह	भानुदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६ × ११ सें० मी०	५	८	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२६६ × ११६ सें० मी०	११० (१-२३, २५-१११)	१२	४६	अपूर्०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम तिग्मानुशासने ... .. ॥
२८ × ११२ सें० मी०	१५४ (१-१५४)	१०	४६	पूर्०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम तिग्मानुशासने । साम न्य काण्डस्तृतीय साम एव समर्थित ॥ शुभमस्तु ॥
२२ × ६ सें० मी०	४३ (१-४३)	७	२५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री तरहरि ऋद्ध विरचिते अमर ने प्रथम कांड. ॥
२२ × ६ सें० मी०	३६ (१-२८, २८ २६, २६-३४)	७	२०	अपूर्०	प्राचीन	
२७ × ११-४ सें० मी	४२ (२-४२)	८	३४	पूर्०	प्राचीन सें० १६४६	इत्यमरसिंह कृतो नाम तिग्मानुशासने ॥ सामान्य काण्डस्तृतीय साम एव समर्थित ॥ ४७ ॥ सवत् १६४६ माघ शुक्ले षष्ठ्या रवौ समाप्तोऽयमस्मिन्
२१ × १२ ४ सें० मी०	८१ १-४, ४-५, ५-७८, १०७)	१३	३५	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री बघेलवशोद्धव श्री महीधर विष्णुयाधिय श्री कीर्तिसिंह देवाज्ञया श्री भट्टोजि दीक्षतात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायामारटीकया व्याख्या सुधाया प्रथम काण्ड संपूर्णतामगमत् ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की प्रागतसख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१६८०	अमरकोश (टीका)			दे० का०	दे०
६५	१६३६	अमरकोश (सटीक)			दे० का०	दे०
६६	२१२६	अमरकोश ( सस्कृत टीका सहित )	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
६७	२०६९	अमरकोश ( नामलिङ्गानुशासन )	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६८	२०२५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६९	५७९३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७०	५७६७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो मा पृष्ठो का धारा	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे धार संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२२५ × १२३ सं० मी०	३६ (१-३८, ४६)	१३	५४	अपूर्०	प्राचीन	
२२५ × १२ सं० मी०	४६	१३	५०	अपूर्०	प्राचीन	
२८ × ११५ सं० मी०	२७१ (१८-२८८)	११	४४	अपूर्०	सं० १७४७	इति श्रीवपेलदशोद्भव श्रीमहीश्वर विषयाधिप श्रीमहाराजकुमार श्री- कीर्ति सिंह देवनाय । श्रीमट्टोजी दीक्षितारमज श्रीमानुजी दीक्षित विरचितायाममरटीकाया व्याख्या- सुधा द्वितीय काण्ड. संपूर्णतामगात् ॥ शुभसवत् १७४७ समये.....
२१४ × ८२ सं० मी०	८६ (१४, १४-१८, ३५-६६, १०१-११६)	६	३५	अपूर्०	प्राचीन सं० १७३७	इति लिंग सन्नवर्ग इत्यमर सिंह कृती तृतीय कांड समान्त शुभमस्तु सं० १७३७ समये पोप सुदि एका- दश्या पुस्तक लेखित गणाराम बदी जनेन संख्यायित श्री महाराज कुमार भगवतराय धर्मार्थ ॥
२६ × ११५ सं० मी०	१७ (७-२३)	८	२६	अपूर्०	प्राचीन	इति अमरसिंह कृते.....
२७५ × ११४ सं० मी०	१५ (१-१५)	७	२६	अपूर्०	प्राचीन	
२३१ × ११ सं० मी०	२८ (४-६ १०-३४)	६	३१	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	५७३५	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
७२	५९९९	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
७३	६११५	अमरकोश (नामलिङ्गानुशासन)	अमरसिंह		३० का०	३०
७४	६०४७	अमरकोश-सटीक (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह		३० का०	३०
७५	६३१९	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०
७६	६३१८	अमरकोश (नामलिङ्गा- नुशासन, तृतीयखण्ड)	अमरसिंह		३० का०	३०
७७	७६१६	अमरकोश	अमरसिंह		३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७.३ × ११.५ सें० मी०	५७ (१-५७)	७	३१	५०	प्राचीन	इति शूद्रवर्ग इत्यमर सिंह कृतो नाम- लिगानुशासने ॥ द्वितीय कांडो भूम्यादि सागएव समर्थित ॥
२३ × ८.४ सें० मी०	६०	४	२७	अ५०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम लिगानुशासने स्वरादि कांड ..... ॥ (५० ४७)
२८ × ११.५ सें० मी०	२६ (१-२६)	५	२६	५०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नामलिगानुशासने स्वरादि कांड प्रथम साग एव समर्थित ॥
२७.१ × ११.३ सें० मी०	३६ (१-३६)	८	३५	५०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतो नामलिगानुशासने ॥ स्वरादि कांडः प्रथम सागएव समर्थित ॥१॥
२२.८ × ९.८ सें० मी०	६ (१, ६, १५-२१)	१२	२४	अ५०	प्राचीन	
२२.८ × १०.४ सें० मी०	३८ (१-३८)	१०	२४	५०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतो नामलिगानुशा- सने ॥ काण्डस्तृतीय सामान्य सागएव समर्थित ॥
२६.७ × १०.३ सें० मी०	६	७	३८	अ५०	प्राचीन	महाराज कुमार श्री बाबू फत्तेसिंह देव राज्ये तस्मिन्काले वर्तमाने ॥ पुस्तक लिखित पण्डित भोपति × × ॥

क्रमानुसारी विषय	पुस्तकालय की प्राप्तिप्रणाली या संग्रहविधि की संख्या	प्रयत्न/म	प्रयत्नार	टीकानगर	प्रयत्न वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
७९	७७१०	प्रमरकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		२० का०	२०
८०	७६६०	प्रमरकोश नामालिखितानु- शासन			२० का०	२०
८१	७४७४	प्रमरकोश			२० का०	२०
८२	७३९८	प्रमरकोश (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		२० का०	२०
८३	११७३	एकाक्षरकोश	अपणक		२० का०	२०
८४	४७४६	एकाक्षरकोश			२० का०	२०
८५	५२६५	एकाक्षरकोश			२० का०	२०



पत्रा वा पृष्ठा वा आकार	पत्रमध्या	प्रति पृष्ठ म परिगणना और प्रति पक्ति म प्रभारमन्त्रा		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष वा विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
८ अ	९	१०	११	१२	१३	१४
२३३×१३२ सें० मी०	२६ (१-२६)	११	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२१७×१०७ सें० मी०	३८ (१-३८)	७	३५	पूर्ण	प्राचीन	इति लिगादिशेषवग इत्यमरमिहृ कृती नाम दिमानुनामन काण्डस्तुतीय × × × × ॥
२३२×१०६ सें० मी०	८ (५६-६६)	७	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२६५×१४४ सें० मी०	३४ (१-३, १५-३५)	१२	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६१×१४८ सें० मी०	२ (१-२)	१२	३०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६१८	इतीद्वै काशर कोश कथित मुनिना पुरा इति श्री महा क्षपणक ववि विवरितमेकाक्षर नाम कोश ॥
२५१×११२ सें० मी०	३ (१-३)	११	२२	पूर्ण	प्राचीन	इत्येकाक्षरि नाम समाप्ता ॥
२२७×१०२ सें० मी०	३ (१-३)	६	३५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६०	इत्येकाक्षर कोश समाप्ता सवत १८६० शके १७२५ श्रावण सुदि १४ भोमे क पुस्तक लिखित सीतारामे- रात्मकपठनाथम्परायम्वा श्री गणेश- सायनम् ॥

क्रमानुसार क्रमिक विषय	पुस्तकालय की प्रागतिसूचिका या सप्रसूचिके की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	६५३८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८७	५८६६	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८८	७२७२	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८९	३०७८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
९०	$\frac{१०११}{२}$	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
९१	१६२६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
९२	१७६६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०

ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिमध्या श्रीः प्रतिपत्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? प्रयोग है तो वत मान अक्षर वा विवरण	अक्षर्या श्री प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		ब	ग			
७० × १११ सें० मी०	२ (१-२)	६	३८	पू०	प्राचीन सं० १६४३	इत्येकाक्षर कोश समाप्त सवत् १६०३ पीठवदि X X X X ।
२४६ × ११२ सें० मी०	३ (१-३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री महा इरक उदिराज विरचित एकाक्षरकोश ।
२३८ × १३४ सें० मी०	६ (१-६)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२३४ × ११ सें० मी०	६	६	२१	पू०	सं० १६३६	इति एकाक्षरकोश समाप्त ॥ लिखित नवदाप्रसाद तिवारी सं० १६३६ के मिति माघ सुदि १४ ..... ॥
२६ × १८२ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरकोश समाप्तम् ॥
२४२ × ८३ सें० मी०	३ (१-३)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति एकाक्षरकोश परिपूर्ण ॥ राम राम ॥
२४१ × ११ सें० मी०	२ (१-२)	११	३६	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इत्येकाक्षरकोश ॥ सवत् १८७५ ॥

क्रमानुसारी क्रिया	पुस्तकानाम की प्रागतगणना या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४०७८	योग			दे० का०	३०
६४	१३४६	जगद्विजयो छन्दटीका	बकीदाचार्य सरस्वती		३० वा०	३०
६५	२३३	लिकाडकोश	श्री पुरुषोत्तमदेव		६० भा०	६०
६६	६०१६	दीपिकाश मुक्तमली	नगेंद्र		३० का०	३०
६७	२३५३	नाममाला	बल्लभ		३० का०	३०
६८	७५३६	नाममालानिघट्ट	धनजय		३० का०	३०
	२					
६९	१७१६	नामलिखानुशासन	धर्मरसिंह		३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा श्रानार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिनख्या प्रौर प्रति पत्ति न प्रक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश वा विवरण	ग्रन्थ प्रौर प्राचीनता	ग्रन्थ कावयव विवरण
क अ	ब	स	द	६	१०	११
२६३×६५ सं० मी०	१३ (२-११, १३-१४)	८	३१	अपूर्०	प्राचीन	
२६×१२५ सं० मी०	३२ (३-३८)	८	४३	अपूर्०	प्राचीन	इतिश्रीमद्विद्यानिघान कवीद्राचार्य सरस्वती विरचिताया बृहद्भगद्विज- छट्टीता समाप्त ॥
३०७×१०३ सं० मी०	२५	६	४३	पूर्०	प्राचीन	इति श्री गुरुपातम देव विरचित शेषा- मर समाप्त ॥ इद पुस्तक..... स्वस्ति श्री नृपशालि बह नशकके १७७३ विरोधकृतनाम सवलने श्रवणे शुक्ल द्रादश्या भृगुवमरपुतायातदिन समाप्त ॥
२७४×११२ सं० मी०	३ (१-३)	१८	५५	पूर्०	प्राचीन सं०१६२४	तस्यातिशायिनिके पयिजागस्क धीलो- चनस्य गृह शासन लोचनस्य नावाकवीद्र रचितानभिधानकोयानाहृष्य लोचनमिवो- यमदीपिकोप ॥३॥ * नागेद्र स प्रयित कोप समुद्रमध्ये नावाकवीद्र मुखमुक्ति समुद्रवेय । विद्वद्गृहादपरनिमित्त पट्ट- मूत्र । मुखनावली विरचिता हृदि सत्रि- घातु ॥ इति ग्रथस्यादि समाप्ता ॥ सवन १६२४ जेठे ॥
२४६×११४ सं० मी०	२ (१-२)	१०	३७	पूर्०	प्राचीन	इति बलम कृत माला समाप्ता श्लोक मख्या घाठ ॥
२७×११५ सं० मी०	१८ (१-१८)	७	२८	पूर्०	सं०१६३६	इति श्रीग्रनजयकृत नाममालानिघट्ट समाप्तम शुभमस्तुनिद्धिरस्तु श्री सवत १६३६ भागशीर्षे कृष्णे ५ पंचम्य- मगुरो लिखित रामप्रसाद दिच्छित ॥
१६५×६७ सं० मी०	१४ (११२-११३ १३५,१४२, १४२,१४५- १५१,१५२- १५४)	७	२३	अपूर्०	प्राचीन सं०१८१-	इत्यऽमरसिंह कृतौ नाम लियानुशासने सामान्य काण्ड तृतीय सागएव समर्थित शुभमस्तु लेखक पाठकयो सं०१८१२ ज्येष्ठमुदि ४ गुरुऊ श्री कृष्णार्जुनस्तु ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१००	३६६६	निघट्ट			३० का०	३०
१०१	२५७४	निघंटनाममाला			३० का०	३०
१०२	२६४३	निघंटमाला	धनजय		३० वा०	३०
१०३	१११२	ॐ पारसीप्रकाश	कृष्णदास		३० का०	३०
१०४	६६५	पारसीप्रकाश	कृष्णदास		३० का०	३०
१०५	३२३६	मातृकाकोश			३० का०	३०
१०६	५१७०	मातृकाकोश			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितमख्या प्रौर प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		नया अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अथ वा विवरण	प्रवस्था प्रौर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६×७७ सं० मी०	१६ (१-१६)	६	२३	पू०	सं०१८५८ प्राचीन	इतिनिघटो पंचमोऽध्याय समाप्त ॥ सं० १८५८ ॥ शके १७२३ मिति माघकृष्ण अमास्या समाप्त ॥
२३×१०३ सं० मी०	६	१०	४१	पू०	सं०१८७०	इति श्री धनजय महाकाव्ये निघंटनाम माना समाप्ता, शुभमस्तु श्रीस्तु ॥ सं० १८७० पोष कृष्ण पंचमी रवि वासरे इद पुस्तक लिप्यते ॥ रामाय नम् ... ..
२२×६ सं० मी०	२० (१-२०)	७	३६	पू०	सं०१७८७	इति श्री धनजय विरचिताया निघंट माला ॥ समाप्त शुभमस्तु ॥ सवत् १७८७ शाल कार्तिक ... ..
२८×५११ सं० मी०	१९ (१-१९)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८३३	इति श्री महामहेन्द्र श्रीमदक्षर शाहकारिते विहारि कृष्ण दश मिथ कृते पारसी प्रकाश कृत्प्रकरण समाप्त ॥ अग्नि राम वसु भूमि सप्तमे फाल्गुणे शिवतिथौ सितेतर ॥ सूर्ये नदनदिने हरिवशो वशरूप कृतये विलिखे ॥
२८×११३ सं० मी०	१० (१-१०)	१३	४४	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री महामहेन्द्र श्री नदधरसाह कारिते कृष्णदास पारसी प्रकाशे शब्दार्थ कोश प्रकरणम् ॥ सं०१८३४ के साल चैत्र वदी ११ गरीक लिखि महापाल वशरूप वेशा ।
२३×१०३ सं० मी०	३ (१-३)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति मातृका कोशः सपूर्ण ।
१६७×८५ सं० मी०	६	६	२१	पू०	सं०१९१७	इति मातृका कोश समाप्त सं०१९१७ आश्विन कृष्ण १३ गुरौ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सप्रहृविशेष की मध्या	ग्रन्थनाम	संपादक	टीकाकर	ग्रन्थ विम वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
१०३	$\frac{६२०}{२}$	मातृकाकोश			३० का०	३०
१०५	$\frac{६२०}{२}$	मातृका निघण्टु			३० का०	३०
१०६	७५५६	मेदिनीकोश			३० का०	३०
११०	२६६०	मेदिनीकोश			३० का०	३०
१११	१३८३	मेदिनीकोश	मेदिनीकर		३० का०	३०
११२	१०४०	व्यजनैकातरेकोश			३० का०	३०
११३	२४३५	शृङ्ग प्रदीप	सुरेश्वर		३० का०	३०



पत्रो वा पृष्ठो वा प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण है तो यतमान अक्षर वा विवरण	भवस्या मोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		मोर प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या				
८ अ	अ	त	द			११
१६६ × ६८ से० मी०	५	८	२३	अपूर्ण०	प्राचीन	इति श्री मातृकाकोशसमाप्त ॥
१६३ × १० से० मी०	८	१०	२७	अपूर्ण०	प्राचीन	
३१२ × १३५ से० मी०	७४ (१-७४)	१०	२६	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२४ × १०६ से० मी०	४	१३	३१	अपूर्ण०	प्राचीन	
२२४ × १०८ से० मी०	१०२	११	३४	अपूर्ण०	प्राचीन	
३१ × ११८ से० मी०	६	६	३१	पूर्ण०	सं० १८८२	इति अर्पणनैकांतरे कोप समाप्त । श्रीकृष्ण गोकुल वासी सधत् १८८२ समय नाम कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां सोमवासरे बुभुवन शर्मणे लेख्यमिदं पुस्तक ॥
२४३ × ८५ से० मी०	४३	६	४६	अपूर्ण०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सभ्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
गीता						
१	६००२	अर्जुन गीता			दे० वा०	दे०
२	१७०७	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
३	२८१३	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
४	३४४८	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
५	३५७५	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
६	२५१२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
७	२७३	भवभूत गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का क्रमांक	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान भग का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रंथ सावधान विवरण
		स	८			
१६३×१०५ सं० मी०	१६ (१-१६)	७	१६	पू०	१०१६०६	इति श्री अर्जुन गीता श्री कृष्ण अर्जुन संवादे तत्र गनदीपो संवत् १६०६ ॥ ..... ॥
२२५×६८ सं० मी०	६ (६-१७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त । श्री शुभमस्तु । श्रीरामायणम
१२×८ सं० मी०	(४३ पू० संस्कृत, १६ पू० हिंदी) कुल ५९ पू०	७	१२	पू०	सं० १८६३	इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता संपूर्ण, भाद्र शुक्ल पक्ष तिथी ४ बुधवासरे संवत् ॥ १८६३ ॥
१८४×६९ सं० मी०	११ (१-११)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री अर्जुन गीता संपूर्ण संवत् १८४७ कवार वदि द्वितीया ॥
२३३×११ सं० मी०	६ (१,५-८१०, १२-१३, १७, १६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीकृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त ॥
२१३×१४१ सं० मी०	७ (१-७)	१२	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त शुभमस्तु सं० १८८६ प्र श्रवण वदि नवमी रविवासरे प्रति लिपित राघकृष्ण ब्रह्मन उपाध्या श्री कृष्णायनम राघकृष्णबिहारी की जैराम ॥
१६४×१२ सं० मी०	८ (१०-१३, २०-२३)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमानुसार और विषय	पुस्तकालय की आयतनसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विसयस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	६७३१	अवधूत गीता	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
९	७८४५	अष्टादशश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१०	३६६४	उत्तरगीता	गौडपादाचार्य		दे० का०	दे०
११	१९२६	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१२	२०२२	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१३	७७०५	उत्तरगीताभाषा ( द्वितीय अध्याय )		गौडपादाचार्य	दे० का०	दे०
१४	४१५८	वसिष्ठगीता			दे० का०	दे०

पद्यो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पति म अक्षरसंख्या		नया प्रथमपूरण है ? प्रपूरण है तो चर्त- मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
		ब	म			
२४६ × १३६ से० मी०	१८ (१-१८)	१२	२७	५०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रय विरचिताया अथर्वत गीताया ॥ स्वात्म मवित्युपदेशे चतुर्थे प्रकरणे । (पत्र संख्या १३)
१६६ × ६ से० मी०	२	७	१८	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतामूर्धनियस्तु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णाजून सवादे अष्टादश श्लोकी गीता संपूर्णम् श्री कृष्णांशुमस्तु श्री गुरुदत्तात्र- यायांशुमस्तु शुभ भवतु ॥
२०४ × ६३ से० मी०	२५ (१-२५)	१२	३३	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्ये विरचितायां उत्तर गीताया द्वितीयो० ॥ (पत्रसंख्या-२२)
१५५ × ६४ से० मी०	१३ (१-१३)	५	१५	अपूर्०	प्राचीन	
१५५ × ६६ से० मी०	१२ (१-१२)	५	१७	अपूर्०	प्राचीन	
२६६ × १४३ से० मी०	२१ (१-२१)	१२	३०	पूर्०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्ये विरचिताया उत्तरगीता व्याख्या द्वितीयोध्यायः ॥ श्रीमदुत्तर गीताया द्वितीयोध्याय ॥
१५३ × ६ से० मी०	२७	६	१६	अपूर्०	प्राचीन	इति षट्म पुराणे सिद्धार्थे सारे कपिल ऋषि सिद्ध सवादे राजराजेश्वरयोग कथन नाम अष्टमोध्याय ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकनाम की प्रागतासंग्या या संपादनिका की मख्या	संघनाम	संघनार	टीकाकार	संघ किम वस्तु पर तिखा है	तिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३२८१	गणेशगीता			दे० का०	दे०
१६	५७१५	गर्भगीता			दे० का०	दे०
१७	१०६ (अ)	गीता	ख्यात		दे० का०	दे०
१८	२०५५	गीता (तृतीय अध्याय)			दे० का०	दे०
१९	३८८	गीता (संस्कृत टीका सहित)	ख्यात		दे० का०	दे०
२०	३१७४	गीता			दे० का०	दे०
२१	$\frac{५२३३}{२१}$	गीता (दशम और एकादश स्कंध)			दे० का०	दे०

पत्रो वा पृष्ठो वा क्रमांक	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पणितसंख्या और प्रति पत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या पथ पूर्ण है? अपूर्णा है तो वर्ण- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७×८८ सं० मी०	५० (१-५०)	७	२५	५०	सं०१८२०	इति श्री गणेशगीता संपूर्ण। सवत् १८२० शके १६८२ विजयनामसंवत्से अधिक ज्येष्ठवद्यतता देशोत्तदिन पुस्तक समाप्त ॥ श्री गणाननार्णमस्तु ॥
१६६×६२ सं० मी०	५ (१-५)	६	१६	५०	सं०१६३६	इति श्री गर्भगीता सूपनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गर्भं गीता समाप्तम् ॥ शुभ- मस्तु ॥ सवत् १६३६ के आषाढ सुदि १२ कालिपित श्री बाबा महलदाश ॥
१२५×७५ सं० मी०	१३० (१-१३०)	६	१६	५०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्या सहिताया भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे भोज सयाव योगो नामाष्टादशोऽध्याय ॥१८॥ समाप्ता श्री भगवद्गीता ॥ श्रीमद्भूतर् गीता सूपनियत्सु० यायोग शास्त्रं संवादे महाभारते अश्वमेधं शत सहस्रं ज्ञान विवरणनाम तृतीयोऽध्याय ३ ॥
१५५×६६ सं० मी०	८ (१-८)	५	१८	५०	प्राचीन	
३४७×१३१ सं० मी०	१० (५, ६ १२-१६)	६	३७	अपूर्०	प्राचीन	
१५×७५ सं० मी०	३६ (४८-६६ ७१-८५)	८	२०	अपूर्०	प्राचीन	श्रीमद्भागवतदगीता सूपनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे भोज सयास योगोनाम अष्टा- दशोऽध्याय ॥१८॥ × × ×
१५५×१०३ सं० मी०	११	६	२३	५०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूप दर्शन नाम एकादशो ऽध्याय ॥

क्रमानुसार क्र. विषय	मुम्तवालय की प्रागतमस्या वा सप्रतिविशेष की संख्या	पद्यनाम	प्रथवार	दीवावार	प्रथम किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	२८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदनदास सरस्वती	३० का०	३०
२३	२१०२	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
२४	२१०३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
२५	२१०४	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
२६	२३०८	गीतागूढार्थ दीपिका ( अष्टम अध्याय )			३० का०	३०
२७	२३०७	गीतागूढार्थ दीपिका ( अष्टम अध्याय )			३० का०	३०
२८	२११३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या पत्र पूर्ण है? प्रकृत्या पूर्ण है तो वर्त- मान भग का प्राचीनता विवरण		अथवा प्रकार विवरण
		स	द	६	१०	
२८ × १३ ३/४ सें. मी.	२८	१३	४६	पूर्ण	प्राचीन	
२८ ३/४ × १२ सें. मी.	१२	१०	५०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां पौडगोष्याय ॥१६॥
२८ × १२ सें. मी.	१०	६	३२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता मूल निपत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण माजने सवादे गूढार्थ दीपिकायां चतु- दशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गार्विदाय नमोनमः ॥५॥
२८ ३/४ × १२ सें. मी.	८	११	४६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपरिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण माजने सवादे दीपिकायां द्वादशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गार्विदाय नमस्तुते ॥ श्री भगवार्थे नमः ॥
१८ × ११ ७/८ सें. मी.	१२ (१-१२)	१०	४४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया मोघ्याय ।
२८ ४/४ × १२ १/४ सें. मी.	३१ (१-३१)	११	५४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपि- काया पञ्चोध्याय समाप्त प्रथमकांड समाप्त ॥
२८ २ × ११ ६/८ सें. मी.	१६ (१-१६)	११	५४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया तृतीयोध्याय ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	२११२	गीतागूढार्थ दीपिका (चतुर्थ अध्याय)			३० का०	३०
३०	२१११	गीतागूढार्थ दीपिका (पंचम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
३१	२११०	गीतागूढार्थ दीपिका (सप्तम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
३२	२१०८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
३३	२१०६	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०
३४	८३६	गीता शांकर भाष्य	शांकराचार्य		३० का०	३०
३५	१६६५	गीता (संस्कृत टीका सहित)			३० का०	३०

पत्रो वा पृष्ठो वा पाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में परिगण्यता घोर प्रति प्रति व घतरवशत		क्या अथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो अं मान अथ वा विवरण	अथवा घोर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२८२×११९ सं० मी०	२४ (१-२४)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थदीपिकायां अनुषंगोऽध्यायः ॥
२८२×११९ सं० मी०	११ (१-११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गुणनिपत्सुब्रह्म ... ..गीता गूढार्थ दीपिकायां अध्यायः ॥
२८४×११२ सं० मी०	१४ (१-१४)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गुणनिपत्सु ... .. गूढार्थ दीपिकायां सप्तमाध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥
२८५×११२ सं० मी०	४६	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मन परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्रीनन्दभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां सर्वं गीतायं सूत्रण नाम द्वितीयो ऽध्यायः ॥ शुभमस्तु ॥ शुभं रस्तु ॥
२८५×११२ सं० मी०	१३	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां गीता गूढार्थ दीपिकायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गीताय नमः ॥
२९३×११२ सं० मी०	१२३ (१-४४, ४६-१२४)	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य शंकरभगवत् कृतो श्रीगीताभाष्ये पुनर्निपत्स्वष्टादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ .....
२४२×११२ सं० मी०	५ (२-४, ४, २०)	६	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा समहविषय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२६३५ ७	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३७	७५३२	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३८	१७०१	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३९	१७०८	गुरुगीता			दे० का०	दे०
४०	१११६ ४	जन्मविपाकगीता			दे० का०	दे०
४१	७६०८	उत्पत्तागरगीता			दे० का०	दे०
४२	२४८४	भारतगीता			दे० का०	दे०

पद्या या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिगणना और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या शेष पुरां है ? अपूर्ण तो वर्त मान ग्रंथ का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४५ × १४४ सं० मी०	२	२६	१७	अपूर्ण	प्राचीन	
१४२ × ६५ सं० मी०	११ (१-११)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन	श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे इश्वर पार्वती सवादे श्री गुरुगीतास्तोत्र मंत्र संपूर्ण ॥ × × × × × ×
२२ × १०५ सं० मी०	१० (३, ७-१६)	७	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२३५ × ११३ सं० मी०	७ (३-६)	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री स्कंदपुराणे उमा महेश्वर सवादे गुरु गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ ... सं० १८३४ मासानाकारिक मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्या १७ बुधवासरे लित शुभादि ॥
२६ × १४१ सं० मी०	२ (३-४)	१५	४६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवान् अर्जुन सवादे जनम विपाक गीता समाप्त ॥
१३१ × ८४ सं० मी०	१३ (१-१३)	७	१४	अपूर्ण	प्राचीन	
१६५ × ६३ सं० मी०	६ (१-६)	७	२०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद सवादे नारद गीता संपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
४३	१६८३	नारदगीता			दे० का०	दे०
४४	३३४८ ४६	नारदगीता			दे० का०	दे०
४५	१४००	नारदगीता			दे० का०	दे०
४६	७१७८	नारदगीता			दे० का०	दे०
४७	१६३७ १२	पाडवगीता			दे० का०	दे०
४८	७७४६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
४९	७२८८	पाडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिगणना और प्रति पक्ति में अक्षरगणना		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थस्या धौर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६६×११५ सें. मी०	२ (२-३)	७	३७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद सवादे नारद गीता सपूर्णम् ॥
१२५×८२ सें. मी०	६ (१-६)	६	१५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कृष्णनारद सवादे नारद गीता सपूर्णम् शुभमस्तु श्री राम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६०००	पाठवगीता			दे० का०	दे०
५१	५६०६	पाठवगीता			दे० का०	दे०
५२	२३८६	पाठवगीता			दे० का०	दे०
५३	३२१२	पाठवगीता			दे० का०	दे०
५४	$\frac{६५२०}{१६}$	पाठवगीता			दे० का०	दे०
५५	$\frac{३३४८}{४६}$	पाठवगीता			दे० का०	दे०
५६	३२०७	पाठवगीता			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि वतमान मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वतमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२३४×११७ सैं० मी०	७ (१-७)	१२	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पाण्डव गिता शुभ अष्टुन समाप्त ॥
२०७×१०६ सैं० मी०	१४ (१-१४)	७	२०	पू०	प्राचीन सैं० १८७१	इति श्री सकल महावैष्णव विरचनाया पाण्डवगीता स्तोत्र समाप्त शुभ भवत भगल ददात् ॥ फगुन सुद १० ॥ सवत् १८७१ ॥ मू का ॥ वाद ॥ **
२२×१० सैं० मी०	१० (१-४, ६-११)	८	२८	अपू०	प्राचीन सैं० १८१७	इति श्री महाभारते शांति पर्वणि भीष्म नारद सवादे पाण्डवगीता नाम विष्णु प्रस्तुति समाप्ता । शुभमस्तु ॥ सवत् १८१७ ॥ तत्र वर्षे आबण मासे शुक्ला सप्तम्या पक्षे भौमवासरे ॥ मिद पुस्तक समाप्त ॥
१५३×१०१ सैं० मी०	७६	८	२०	अपू०	प्राचीन	
६६×६५ सैं० मी०	१६ (१-१६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री पाण्डवगीता समाप्त शुभमस्तु + + + ॥
१२५×८२ सैं० मी०	२१ (१-२१)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री पाण्डवगीता स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीराम ॥
१६५×८३ सैं० मी०	११ (१-११)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति पाण्डवगीता समाप्त श्री लक्ष्मी नारायणावलमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ यादुशा पुत्रबं दृष्टवातादुशी लिखित मया । यदि शुद्धमस्तु वा मम दोषो न विद्यत ॥ १ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	११२३	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५८	३५६२	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५९	४१३७	पांडवगीता			मि० का०	दे०
६०	२८३७	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६१	२८९८	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६२	४५१४	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६३	१८९१	पांडवगीता			दे० का०	दे०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में पत्रसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? मपूर्ण है तो वर्तमान भाग का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२६ × १२ ६ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाभारते.....राजसूय प्रकरणे निम्नपालवधे पाठवगीता समाप्ता ॥
१६ × ८ ४ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पाठवगीता समाप्ता ।
१४ २ × १० ३ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पाठवगीता सपूर्णम् सुभ भूयात् मिती आषाढ सुदि ७ सवत् १६०७ रामायनम् .....॥
१६ ६ × ८ ७ सें० मी०	१३ (१-१३)	८	२१	पूर्ण	प्राचीन	इति पाठवगीता सपूर्णम् ॥ समाप्त ॥ सं० १६२२ ॥ श्री श्री स्वामी जी चैत.....॥
१२ ३ × ७ ३ सें० मी०	१८ (१-१८)	७	१५	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री पाठवगीता समाप्ता सं० १६१७ के मार्ग सुदी १० शुक्लवा पुस्तक लिखित १० अमोरासिखीन राम चतुर्वेदी उचहटा बंद ॥
२३ ३ × १० ७ सें० मी०	७ (१-७)	६	३५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री पाठव गीता सपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
२८ ४ × १४ सें० मी०	३ (१-३)	१५	४४	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१३६८	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६५	४२७६	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६६	६८६६	ब्रह्मगीता-सटीक			दे० का०	दे०
६७	६१	भगवद्गीता	लालताप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
६८	३६४	भगवद्गीता	व्यास		दे० का०	दे०
६९	७२७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७०	७४५२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अक्षरों है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१८×६ सें० मी०	६	८	३३	अपूर्ण	सं० १८५४	इति पांडवगीता संपूर्णम् शुभमस्तु सं० १८५४ वं० शु० ५ भृगु० लि० उद्वेगमेण शुभम् ।
२१५×१०.५ सें० मी०	१४ (१-३,१४)	७	२५	३५०	सं० १९१८	इति श्री पांडवगीता समाप्ताः ॥*** ***॥ सवत् १९१८ माघ कृष्ण ६ शनी तिष्यत प० श्री दुर्वेराष्ट्रे पठनार्थं ॥
२७.५×१२ सें० मी०	१५० (१-३२, ३२-१४६)	११	३८	५०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे सूत संहिताया यज्ञ- वेभव खड्गोपरिभागे प्रह्लादात्मसू- निपत्सुदादशोऽध्याय ॥
२१×११.७ सें० मी०	६६ (१-६६)	६	१६	५०	प्राचीन	भाद्र कृष्ण १० गुरु वारे तिष्यत मित्रं पुस्तक समाप्ता तिष्यत सालताप्रसाद मिसिर पलटन गोपन वपनी ८ रजमत
२८.३×१४.४ सें० मी०	२८ (२-२४, २६-२६, ३१)	१४	३७	अपूर्ण	प्राचीन	६६ वनाजमालपुनदि कृष्ण पुत्र के निवट ॥ जद अक्षर पुस्तक द्रष्टातादक्ष तिष्यत भया । यदि शुद्धम शुद्धवा मम दोशोन दीरने ।
२०.२×१०.४ सें० मी०	६३ (१-६३)	६	२६	५०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीता संपूर्णं शुभमस्तु सवत् १८८१ के शुभल चंद्र मुदि नीमि गुरो व :-
२०.६×६.१ सें० मी०	७१ (१-७१)	७	२८	५०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री भगवद्गीता मूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगो नामाष्टादशोऽध्यायः । शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसक्या या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	मिथि
१	२	३	४	५	६	७
७१	७४५०	भगवद्गीता			२० का०	२०
७२	७२६८ २	भगवद्गीता			२० का०	२०
७३	७६१५	भगवद्गीता			२० का०	२०
७४	७६०१	भगवद्गीता टीका			२० का०	२०
७५	७६६६	भगवद्गीता			२० का०	२०
७६	७८८६	भगवद्गीता-सटीक (मुबोधिनी टीका)		श्रीधर स्वामी	२० का०	२०
७७	७८६३	भगवद्गीता टीका		श्रीधर स्वामी	२० का०	२०

पत्रो वा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवितसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६४ × १२४ सें० मी०	७८ (२-७६)	६	२०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम सप्त- दशोऽध्यायः ॥ (पृ० ७५)
१६४ × १२५ सें० मी०	३६ (१-३६)	१८	१३	अपूर्ण	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगो नामाष्टादशो- ऽध्यायः १८ ॥ भगवद्गीता संपूर्णा ॥
२५७ × १३४ सें० मी०	४० (२-४१)	११	३०	अपूर्ण	प्राचीन स० १८६६	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यासयोगो नामाष्टादशो- ऽध्यायः ॥ १८ ॥ सवत् १८६६ वर्षे ॥ सके १७६४ ॥ वर्षे फाल्गुन मासे सुदि***
२३५ × १२४ सें० मी०	१६	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन (जीर्ण)	
६४ × ८६ सें० मी०	४६	६	१३	अपूर्ण	प्राचीन	
३३८ × १५७ सें० मी०	८१ (१-८१)	१३	५०	पूर्ण	प्राचीन स० १८८३	इति श्रीभगवद्गीता टीकाया सुबो- धिण्या श्रीधरस्वामि विरचिताया पर- मार्थ निर्णयनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ रामेभक्तसुभक्तस्य १८८३ वर्षे पीप्लेसितेभूगौ ॥ पक्षेऽष्टम्या चरेवत्या मल्लिनार्थोध्यलीलिखत ॥ १ ॥ समा- प्तोप शय सुभक्तस्तु श्रीराम ॥
३११ × १३३ सें० मी०	११५ (१-११५)	११	४०	पूर्ण	प्राचीन स० १८५३	इति श्रीभगवद्गीता टीकाया सुबो- धिण्या श्रीधरस्वामि कृताया मोक्ष योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ समे मासे चंद्र शुक्ल पक्षे पंचम्या भीमवासरे पुस्तक गीता टीका रामे लिपावा बाल कृष्ण रामभक्त समत १८५३ श्री पदुमपूर ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
७८	५८११	भगवद्गीता (द्वादश अध्याय)			दे० का०	२०
७९	५८२९	भगवद्गीता			दे० का०	२०
८०	५८२५	भगवद्गीता (भाषा टीका)			दे० का०	२०
८१	५९९४	भगवद्गीता			दे० का०	२०
८२	५९९१	भगवद्गीता			दे० का०	२०
८३	५९८२	भगवद्गीता			दे० का०	२०
७४	५९७१	भगवद्गीता			दे० का०	२०
	६					



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्य और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब			६	१०	११
२२"८ × ११" सें० मी०	२ (१-२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशाध्यायः १२॥
२० × १४ सें० मी०	६० (३३-६२)	६	१७	अपू०	प्राचीन स० १६२२ (कृमि-कृति)	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सन्यास मोक्षयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः स० १६२२॥
२२ ३/४ × १३ १/४ सें० मी०	६६	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मनमहाभारते सप्तमस्कन्धे सहिताचार्यविरचितया भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञान-विज्ञान योगो नाम सप्तमोऽध्यायः
१६ १/४ × ६ १/४ सें० मी०	३० (१-२, ४-६, ११-१६, २४, २८-३३, ६६, ६६-७३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणकर्म दर्शना नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥
१३ × ६ १/४ सें० मी०	२२	५	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूति योगो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥
१६ ६/४ × ६ १/४ सें० मी०	१०३ (१-१०३)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥
१० ८/४ × ६ ७/४ सें० मी०	१३५ (१-१३५)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेषु सप्तमस्कन्धे सहिताचार्यविरचितया भीष्म पर्वणि भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सन्यास योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथार	टीनावार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८५	६१२५	भगवद्गीता (दशम और एकादश अध्याय)			३० का०	३०
८६	$\frac{६०७६}{५}$	भगवद्गीता			३० का०	३०
८७	६२०८	भगवद्गीता (चतुर्थ, पचम अध्याय)			३० का०	३०
८८	२२८१	भगवद्गीता			३० का०	३०
८९	$\frac{५५२०}{५}$	भगवद्गीता			३० का०	३०
९०	२१६३	भगवद्गीता			३० का०	३०
९१	२१२३	भगवद्गीता (गूढायशोपिका)		मधुसूदन सरस्वती	३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१३३×८५ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	१८	५०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे विवररूप दर्शनोनामैका- दशोऽध्याय ॥११॥
१५.५×६५ सें० मी०	१३५	६	१७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाभारतेषु सहस्रसहिताया वेद्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीभगवद्- गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग- शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्याय सपूर्णम् ॥शुभम्॥
१७×७.६ सें० मी०	५ (३३-३७)	६	१७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यास योगो नाम चतुर्थाऽध्याय ।*** (पत्रसंख्या-३६)
१६८×११५ सें० मी०	२८ (१-२८)	५	१४	अपूर्ण	प्राचीन स०१८४४	
१३६×७.६ सें० मी०	१४३ (१-१४४)	६	१४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षयोगोनामअष्टादशोऽध्याय ॥
१७७×७.८ सें० मी०	१६ (८,११- १२,२५, २६-३६)	८	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
२८×१२ सें० मी०	११ (१-११)	१०	४५	५०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मुद्राबंधीपिकाया सप्तदशोऽध्याय ॥ श्रीकृष्णाय गोविन्दाय नमोऽस्तुते ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आपत्तसहना वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रथम किस्त वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६२	६४६१	भगवद्गीता (हिन्दी- मराठी-टीका)		पार्थ सारथी	२० का०	६०
६३	७१५७	भगवद्गीता			३० का०	६०
६४	१३६	भगवद्गीता	व्यासजी		२० का०	६०
६५	३८५	भगवद्गीता (सटीक)	व्यास	रामानुजमुनि	२० का०	६०
६६	६६७	भगवद्गीता			२० का०	६०
६७	३३७	भगवद्गीता			२० का०	६०
६८	३८७५	भगवद्गीता			२० का०	६०

पदों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो अंश-मान अंश का विवरण	प्रवक्ष्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४३ × ११२ सं० मी०	६०	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति टीका समस्तोक्तो अध्याय पंच भावरी श्री पार्यसारथी कर्ता जीवा मन मनोरथी ५ (पत्र सं० २८) (पत्रांक ३४)
१२५ × ८२ सं० मी०	१२६ (१-११५, १४१-१५१)	६	१५	अपू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यं संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादेसंन्यास योगोनामष्टादशोऽध्यायः ॥१०॥ संवत् ॥ १६१७ ॥१०००००
१६ × १० सं० मी०	७१ (१-७१)	७	२७	पू०	प्राचीन	शके १७१३ ध्रुम कुन्नामसंवत्सरे भाषाढशुक्ल चतुर्दश्यां मंद वासरे भाष्या वर्तातर्गत ब्रह्मावर्तकृद्देशे उत्पलारण्येदारुणी क्षेत्रे एतत्सुस्तक समाप्तिसं वमत ॥
३३६ × १६२ सं० मी०	१६ (३५-५०)	१३	५५	अपू०	प्राचीन सं० १८३७	इति श्री भगवदंभानुज मुनिविरचिते अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ भाद्रमास शुक्ल पक्षे तिथी १५ ॥ बुद्धवासरे तद्दिनशंपूर्णं समाप्तः ॥ संवत् ॥ १८३७ ॥
२७३ × ११६ सं० मी०	१२७ (१,३-१२८)	७	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८६३	इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे भीष्मपर्वणि परममोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१००००० श्री सं० १८६३ ॥
२४१ × १२६ सं० मी०	२७ (१-२७)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१६॥ सं० ११६६ ॥
२५६ × १५६ सं० मी०	११ (६-१६)	१४	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूत्रनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म संन्यास योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ + + + + (५० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या वा सग्रहविशेष की शख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	३६१८	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१००	३६४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०१	३६८६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०२	३६८८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०३	३८६०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०४	३००६	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१०५	३०७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आहार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो अतमान अक्ष का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६७ X १५५ सैं० मी०	१३१ (१-१३१)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पञ्चोत्तरीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णा-जुनसवादेमन्यास योगोनामाष्टादशो-ध्याय १८ समाप्तिसंगमत् ॥ विक्रमा-दित्यराजस्यनागाभ्रनवभूस्मृत प्राणालेऽ-सितपभेदु तृतीया चद्रवासरे लिखित शिवल्लेन मुगलनालस्यभ्रातृमज ।
११५ X ७६ सैं० मी०	११८ (१-११८)	८	१८	पू०	प्राचीन	*** श्री भद्रगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णा-जुन सवादे मोदय सन्यास योगो नाम अष्टमदशोध्याय ।
१८८ X ६६ सैं० मी०	५० (१-५०)	१०	३२	पू०	प्राचीन	*** श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णा-जुन सवादे मोक्षसन्धास योगोनाम अष्टादशोध्याय समाप्त शुभ भूयात् **** ।
३११ X १५२ सैं० मी०	३६ (१-३६)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म० योगशास्त्रे श्रीकृष्णाजुन सवादे संत्र सन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्याय १८ ॥ समाप्त शुभमस्तु ॥
२३५ X १०३ सैं० मी०	१३ (६-२१)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्या ।
३१३ X १६३ सैं० मी०	१६	१५	५२	अपू०	प्राचीन (जोण)	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णाजुन सवादे पाण शास्त्रे निरूप्य सान्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्याय १८ ॥
२५८ X ६७ सैं० मी०	७१ (१-७१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राग्वतसख्या वा मद्रहविशेष वा संख्या	शब्दान	ग्रंथकार	टीकाकार	प्रय किम वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
१०६	८६६	भगवद्गीता (१ स १० अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०७	६१५	भगवद्गीता (१ स १८ मं १५ तक)			दे० का०	दे०
१०८	६४४	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०९	६७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११०	४८३८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१११	४६२३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११२	४६१४	भगवद्गीता (अष्टादश अध्याय)			दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ म पकितसख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्तमान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२८ × १३३ से० मी०	५४ (१-५४)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १६३	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे रत्न लातेनयमलम्बि नीता मर कोट नगर ॥ नाम श्री कृष्णाय ॥ सं० १६३२ बंशाद्य... ..
१६५ × ६२ से० मी०	१२७ (१-७८, ७८-१२६)	५	२१	पू०	प्राचीन सं० १८२	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामाष्टा- दशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ सं० १-६२ मुका मटीकमगडमध्ये ॥ पटनाय श्री महतरंवा गोरजी ॥ लिखित प० श्री चौबे कलुराम इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास नामाष्टादशोऽध्यायः ॥
१६७ × ७७ से० मी०	६ (१, ८, ३७, ८३, ८६- ९०, ११८)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे प भाष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥... .. सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त **॥ ... .. शुभमस्तु भूयात् सवत् १६५४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
२२४ × १० से० मी०	२५	६	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७६१	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे प भाष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥... .. सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त **॥ ... .. शुभमस्तु भूयात् सवत् १६५४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
१८८ × ६४ से० मी०	८७ (१-८६, ८८)	८	२०	अपू०	सं० १६४४	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे प भाष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥... .. सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त **॥ ... .. शुभमस्तु भूयात् सवत् १६५४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
२३७ × ११३ से० मी०	३१ (१३-६, १४ १६, २३, २७ ३३, ३४, ३६- ४३, ४६-४८, ५०, ५१, ५४- ५७, ५६-६१, ६३)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे प भाष निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥... .. सवत् १७६१ दशमी उद पूर्ण समाप्त **॥ ... .. शुभमस्तु भूयात् सवत् १६५४ शक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्या श्रीमवासरे ॥
२२६ × १२ से० मी०	४६ १-४६	८	३४	पू०	प्राचीन	इति भगवद्गीता सूक्तियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे म भाषयो नाम अष्टादशाध्याय संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की प्राणतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकानार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	४६१०	भगवद्गीता			मि० का०	दे०
११४	४४२६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११५	५०६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११६	४६१६ २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११७	५१३२	भगवद्गीता (१०-११ अ०)			दे० का०	दे०
११८	६८७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११९	६५२० १६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या शब्द पूर्ण ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान भण का दिक्कण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१० × ११८ से० मी०	४७ (१-८, १२-१६ १८-४१)	६	२२	अपूर्०	प्राधुनिक	
१६६ × १०२ से० मी०	६४ (१-६४)	८	२३	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म गुण विभागदर्शनोनाम महादशोऽध्याय + + + ॥ ( पृ० ४५ )
२२६ × १०५ से० मी०	२६	७	३०	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म गुण विभागदर्शनोनाम महादशोऽध्याय + + + ॥ ( पृ० ४५ )
८६ × ६७ से० मी०	६५ (१-६५ ६६)	५	६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म योगोनाम तृतीयोऽध्याय ॥ + + + ॥ ( पृ० ८१ )
२३४ × ६४ से० मी०	१२ (१-१२)	६	३१	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूपदर्शनोनाम एकादशो ऽध्याय ॥ १॥ लिखित नारायण भट्ट ब्राह्मण ॥
२५५ × १५४ से० मी०	३० (१६-४५)	१४	२३	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गुणत्रय विभागोनाम चतुदशो ऽध्याय ॥ ( पृ० ४१ )
६६ × ६५ से० मी०	२० (१-२०)	१०	११	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री महाभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्ण- ार्जुन संवादे विश्वरूपदर्शनोनाम मोषो नामकादसोऽध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	१०१७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२१	४४८८	भगवद्गीता (१-१८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१२२	४४६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२३	१०४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२४	४२६२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२५	४३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२६	$\frac{४४४०}{१०}$	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्र मा पृष्ठा का धाया	पत्रमहा	प्रति पृष्ठ में प्रतिमहा		इस संवत्सुरी १ मूलने के मा जने मान घटा के विभाग	संख्या को प्राप'ना विभाग	पत्र माहाया विभाग
		म	द			
१६८ × ६१ सं० मी०	७ (६६-६१)	८	२०	घण्ट	प्राचीन	
२१७ × ११ सं० मी०	७६ (१-७६)	७	२४	१०	सं० १६१७	इति श्री महाशक्तिपुत्रविद्यापुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीब्रह्मज्ञानंमवादे मोक्षमार्गम दोमोनामाष्टादशोऽध्याय- १८ ॥ सवत् १६१७ मासमासे शुभे शुक्रवासे तिथौ महाशिवरात्रौ ११ अर्था- त्तरे तिथौतं श्रीदेवे शयित्वा...
१६३ × ६८ सं० मी०	११८ (३-१८, १०- १०, ४६, ४६- ६२, ६७-६४, ६८-१३२)	६	१६	घण्ट	(द्वि- कृतिः) सं० १६११	इति श्री महाशक्तिपुत्रविद्यापुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीब्रह्मज्ञानंमवादे मोक्षमार्गम दोमोनामाष्टादशो- ऽध्याय ॥ १८ ॥ वाचस्पत्यनेन कृतमपने पठ्यमानंमवादे ॥ महाशिवरात्रिनिमित्तं महाशक्तिपुत्रविद्यायां ॥ सवत् १६०११ श्रीगणेशायनमः ...
१४३ × १० सं० मी०	४७ (१-४४, ४७-४९, ४४- ४७, ६१-६७, ६४-६६)	१०	१८	घण्ट	प्राचीन	इति श्री महाशक्तिपुत्रविद्यापुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीब्रह्मज्ञानंमवादे मोक्षमार्गम दोमो नामाष्टादशो- ऽध्याय ॥ १८ ॥
२३७ × १३१ सं० मी०	४३	७	२२	घण्ट	प्राचीन	उं नरपतिरिति श्रीमहाशक्तिपुत्रविद्यापुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीब्रह्मज्ञानंमवादे मोक्षमार्गम दोमो नामाष्टादशो- ऽध्याय ॥ १८ ॥
३१६ × १३८ सं० मी०	३० (१-३०)	१२	३८	घण्ट	प्राचीन सं० १८७१	( पत्रमंथ्या ७६ ) + + + इति श्री महाशक्तिपुत्रविद्यापुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीब्रह्मज्ञानंमवादे मोक्षमार्गम दोमोनामाष्टादशोऽध्याय- १८ श्री सवत् १८७१ वीप शुक्ल पूर्णिमास्थाम जम् ।
१२४ × ६१ सं० मी०	६६	६	१४	घण्ट	प्राचीन सं० १८६८	श्री महाशक्तिपुत्रविद्यापुत्र- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीब्रह्मज्ञानंमवादे सवत् १८६८ मासमासे शुभे शुक्रवासे तिथौ महाशिवरात्रौ ११ अर्था- त्तरे तिथौतं श्रीदेवे शयित्वा प्रायाग दाम निपत + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागनमसंज्ञा या सग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ वित्त वस्तु पर लिया ३	विवि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	१३६८ ५	भगवद्गीता			३० का०	३०
१२८	१०६७	भगवद्गीता			३० का०	३०
१२९	१९१०	भगवद्गीता			३० का०	३०
१३०	१८७०	भगवद्गीता (सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित)			३० का०	३०
१३१	१८२६	भगवद्गीता (संस्कृत टीका सहित)			३० का०	३०
१३२	१५३२	भगवद्गीता (सटीक)			३० का०	३०
१३३	१८६६	भगवद्गीता			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा धावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		नया प्रथम पूर्ण है? प्रपूर्ण है तो वर्तमान प्रस वा विवरण	यवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ भावश्यक विवरण
क घ	ब	स	द	६	१०	११
१५७×७८ सं० मी०	१२६ (८-१३३)	६	१७	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनियत्सु ब्रह्म-विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णाज्ज्ञेन सवादे मोन सन्यासयोगो नामाष्टा-दशोऽध्याय ॥ १८ ॥ सपूर्णम् शुभ ॥
१४×८५ सं० मी०	१४४ (१-१४४)	६	१५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र सघाताया वैयासिका भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूफनियत् ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णाज्ज्ञेन सवादे मोसे " अष्टा-दशोऽध्याय ॥ १८ ॥
२६५×१५८ सं० मी०	१२२ (१-१२२)	४	२७	पूर्०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्रसहिताया वैयासिकया भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूफनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णाज्ज्ञेन सवादे मोससन्यास योगो नामअष्टादशोऽध्याय समाप्ता ॥ शुभ-मस्तु ॥
२६३×१४७ सं० मी०	४२ (५८-७८, ८१-८६, ६८- १०६, ११२)	१५	४०	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णाज्ज्ञेन सवादे.....
२७७×१४५ सं० मी०	१३६ (१-१३६)	१४	४१	पूर्०	प्राचीन	सवत १८५८ भाद्रपदे मासे शुक्ले पक्षे तिथौ सप्तमी ७ चद्रवास रे लिखित मिद पुस्तक गीताया नक्षत्रण चाम्भ्यो ॥
३०×११ सं० मी०	३२	११	३४	अपूर्०	प्राचीन	
१६३×१०४ सं० मी०	६	८	१६	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	मिति
१	२	३	४	५	६	७
१३४	२८८३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३५	२८४८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३६	२८३५ २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३७	२८१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३८	३४४१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३९ <sup>१</sup>	१२५६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४०	१२१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०



पत्रो या पुस्तो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति म प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अथ वा विवरण	ग्रन्थस्या धीर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१५३×८ सें० मी०	८१ (१-८१)	७	२५	पूर्ण	प्राचीन स०१८७४	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ भगवत्गीतासंपूर्णं शुभम्भूयात् ॥ सवत १८९४ क प्राल चत्र सुदि ८ श्रीमेक तिखा श्री वैद्य वसन दाश ॥ सी॥गन ॥ श्रावण चद्रायनम ॥
२२६×११ सें० मी०	१२१	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन	
१४२×८७ सें० मी०	१४१ (१३-१४३)	६	४२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री महाभारते शनं महत्सु मर्दिताया वैयासिकया भोष्म पवणि श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे " " ॥
१०×७ सें० मी०	२२ (१०७-१२८)	६	१०	अपूर्ण	प्राचीन	
२१७×१०३ सें० मी०	४० (१-४०)	५	२४	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादेकमयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ (१०३४)
१७×६३ सें० मी०	११६ (५-१२३)	६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे परमाथ विनिरामयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ वर्षे वैशाख वदि ३ शनिवाशरान्विताया लिखित ५० नारायण दास गिहनपुरिया ॥ पोषी श्री महाराज कुमार प्रानद सिखरु की ॥ श्री गोपाल नू ॥
१८५×६ सें० मी०	१०७ (२-१०८)	६	२१	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसध्या वा सप्रहविशेष की संख्या	प्रपनाम	प्रपकार	टीकावार	प्रप किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	११६३	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४२	३१६३	भगवद्गीता (१-८ अध्याय)			३० का०	३०
१४३	३१७५	भगवद्गीता (सटीक)			३० का०	३०
१४४	३१७८	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४५	३१८०	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४६	३२८७	भगवद्गीता			३० का०	३०
१४७	२६३३	भगवद्गीता			३० का०	३०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२१ × ११ ५ सें० मी०	४०	८	२२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे परमार्थं निरायोनामाष्टादशो- ऽध्यायः ॥१८॥ समाप्तम् ॥ शुभ्रमस्तु ॥
२७ × १३ ३ सें० मी०	२५ (१-२५)	१८	३८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादशोऽध्याय ।
३० × १३ सें० मा०	११३ (४-११६)	१३	४३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशो ध्याय १८ नारायणाय × × ×
२० ६ × ८ ६ सें० मी०	६६	५	२८	पूर्ण	प्राचीन	श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्याय ॥
२१ ६ × ६ १ सें० मी०	७३ (२-७५)	८	२२	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षयोगोनाम अष्टादशोऽध्याय ॥१८॥
१२ २ × ६ २ सें० मी०	१२५	७	१२	अपूर्ण	प्राचीन	
१५ ७ × १० ६ सें० मी०	६७	७	२५	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	३६७०	भगवद्गीता			२० का०	२०
१४९	२५१२ ५	भगवद्गीता			२० का०	२०
१५०	४४१७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		२० का०	२०
१५१	२१०७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		२० का०	२०
१५२	२१०६	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		२० का०	२०
१५३	२१०५	भगवद्गीता दीपिका गूढार्थ	मधुसूदन सरस्वती		२० का०	२०
१५४	८३०	याज्ञवल्क्य गीता (१-१२ अध्याय)			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है? अक्षर पूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१२ × ४८ सें. मी०	१०५ (३-१०७)	५	२४	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म-विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष मन्वाम योगोनाम अष्टा-दशोऽध्याय ॥ सवत् १८६६ इद पुस्तक केशवस्य हस्ताक्षर खड्ग अस्ति शुभ भूयात् ॥ ...
१६१ × ११ सें. मी०	४ (१८-२१)	१०	१८	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म-विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे विभूति योगोनाम दशमोऽध्याय ॥
३१५ × १५ = सें. मी०	२४३ (१-२४३)	१४	४५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विश्वेश्वर सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचिताया श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायाम-ष्टादशोऽध्याय १८ मन्माप्त सवत् १८५५ मिति जेष्ठ मासे कृष्णपक्षे ११ एकादश्या शुक्रवासरे × × ॥
२८३ × १२ सें. मी०	१२	१०	४४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया दशमोऽध्याय ॥
२८३ × १२ सें. मी०	११	१०	५०	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूफनिपत्सु ब्रह्म-विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे गूढार्थ दीपिकायामेकादशो-ध्याय ११॥
२८३ × १२ सें. मी०	१३	११	५३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया तयोदशोऽध्याय ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥ श्री गोपालाय नमः ॥
२७७ × १२ सें. मी०	१८ (१-१८)	११	४३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री राजवल्कलगीतापनिपदस्य द्वादशोऽध्याय ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	३६७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१५६	३६७५	रामगीता			दे० का०	दे०
१५७	४०१४ ६	रामगीता	रामानुज		दे० का०	दे०
१५८	३६८७	रामगीता			दे० का०	दे०
१५९	२७८३	रामगीता			दे० का०	दे०
१६०	३३४८ ४६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६१	१४४४ ५	रामगीता (पंचम सर्ग)			दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का अक्षर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवितसंख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या पद्य पूर्ण है? अपूर्ण है तो वन मात्र अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
		स	द			
१६३×८३ सं० मी०	१२ (१-१२)	६	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री मद्दध्यात्मरामायणे उत्तर कांडे रामगीता नाम पचमोध्याय ॥५॥ प्रथम सवन सुदि ॥२४॥ सक्तु १८८२ ॥ मुक्ता वदेउमड ॥
१३८×६६ सं० मी०	१६ (१-१६)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्दध्यात्म रामायणे उत्तरकांडे रामगीता नाम पचमोध्याय ॥५॥
१८१×१६१ सं० मी०	३	१५	८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामनुज विरचित पटश्लोकी रामगीता संपूर्ण समाप्त ॥
१६३×७५ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्दध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तर कांडे रामगीता नाम पचम सर्ग ॥
१५८×१०५ सं० मी०	८ (१-८)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्दध्यात्मरामायणे उत्तरकांडे उमा महेश्वर सवादे रामगीता समाप्ता ॥
१२५×८२ सं० मी०	१६ (१-१६)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्दध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकांडे श्रीरामगीता नाम पचम सर्ग ५ ॥
१८७×१२७ सं० मी०	७ (१-१७)	१५	१५	पू०	प्राचीन (सं०१६१७)	इति श्री मद्दध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकांडे श्रीरामगीता पचमसर्ग ५ बिहारि लालेन लिखत सं० १६१७ आ० गू० गू० ॥

क्रमिक शीर्ष विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मसूहविशेष की मख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	६८६०	रामगीता (सटीक)			३० का०	३०
१६३	७५१३	रामगीता			३० का०	३०
१६४	६६७६	रामगीता			३० का०	३०
१६५	२२४६	रामगीता			३० का०	३०
१६६	७३७२	रामगीता			३० का०	३०
१६७	७३५५	रामगीता सटीक			३० का०	३०
१६८	७५५२	रामगीता सटीक (रामगीता व्याख्या)			३० का०	३०



पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूरा है ? अपूरा है तो वत मान राज का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५४ × ११५ सं० मी०	१६ (१-१६)	१३	४१	पू०	प्राचीन (कृमि कृतित)	इति श्री मत्स्यवत राज विपद्भर ॥ रामगीता टिप्पन समाप्ता ।
१६१ × ६६ सं० मी०	२२ (१-२२)	१५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अश्वाम दामायण उत्तरकांडे श्री रामगीता समाप्ता आ रामायण मस्तु ॥
१८२ × ११७ सं० मी०	१४ (१-१४)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१४४ × ७३ सं० मी०	१८ १३, ४-१६	१५	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायण उमा महेश्वर सवादे श्री रामगीता संपुष्पम ॥
३२ × ६८ सं० मी०	६ (१-६)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १६३२	इति श्री मदध्यात्म रामायण उत्तर कांडे उमा महेश्वर सवादे श्री राम गीता समाप्तम सम्वत् १६ गत २२ के शाह्य पुस्तक लिखितम् × × ×
२६६ × ११३ सं० मी०	३१ (१-३१)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामह ेश्वर सवादे उत्तरकांडे रामगीता कथन नाम पचम सग ॥ × × × इति टीकाया पचम सग ॥५॥
२४६ × ११२ सं० मी०	१४ (१, ४-१६)	६	४६	अपू०	प्राचीन	"करिव्य रामगीता व्याख्यान वालबुद्धये ॥१॥ (पत्रसंख्या १)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ टीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२	श्रीभगवद्गीता			नि० का०	दे०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्तसंख्या और प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म द	६	१०	११
१७२ × ६६ सें० मी०	६	८ २५	अपूर्०	प्राचीन सं० १७५	इति श्री वैष्णव गीताया श्रीवृष्णाजुंन सवादे वैष्णव दीक्षा निर्देशायामो नाम चतुर्षोऽध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १७५६ ॥
१५२ × ७६ सें० मी०	११२ (१-११२)	७ २५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री परमपुराणे उत्तर छडे श्रामद् शिव गीता सूरनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया श्री महादेव राघव सवादे माक्षयगोनाम पाडशोऽध्याय ॥
२३ × १५ सें० मी०	६	१६ ३४	अपूर्०	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोऽध्याय. × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३६ × ६७ सें० मी०	६ (१-६)	१२ ४५	अपूर्०	प्राचीन	
२०३ × १२ सें० मी०	११	११ ५८	पूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोऽध्याय ॥
१६५ × ११५ सें० मी०	१०२	८ १८	पूर्०	सं० १६१५	इति श्रीभगवद्गीता सूरनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीवृष्णाजुंन सवादे मोक्ष यागेनामष्टोदशोऽध्याय ॥ १८ ॥ सप्तमं शुभमस्तु ॥ सवत् १६१५ के साल.....
१६६ × ६३ सें० मी०	१२६ (१-१२६)	१ २०	पूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूरनिपत्सु ब्रह्म- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीवृष्णाजुंन सवादे माक्षयन्यायगोनामाष्टादशोऽध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संप्रतिविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता मूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२	श्रीभगवद्गीता			दि० का०	दे०
	५					

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थपूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग द	६	१०	११
१७२×६६ से० मी०	६	८ २५	अपूर्०	प्राचीन से० १७५*	इति श्री वैष्णव गीताया श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दाक्षा निर्देशमागो नाम चतुर्थोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७५४ ॥
१५२×७६ से० मी०	११२ (१-११२)	७ २५	पूर्०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर छंदे श्रामद शिव गीता सूरनिपत्सु ब्रह्म- विद्याया श्री महादेव रायव संवादे माक्षमागोनाम द्वादशोध्याय ॥
२२×१५ से० मी०	६	१६ ३४	अपूर्०	प्राचीन से० १६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोध्याय* × × × × से० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३६×६७ से० मी०	६ (१-६)	१२ ४५	अपूर्०	प्राचीन	
२८३×१२ से० मी०	११	११ ५८	पूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोध्याय ॥
१६५×११२ से० मी०	१०२	८ १८	पूर्०	से० १६१५	इति श्रीभगवद्गीता सूरनिपत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगनामष्टोदशोध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्णं शुभमस्तु ॥ संवत् १६१४ के साल.....
१६६×६३ से० मी०	१२६ (१-१२६)	६ २०	पूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूरनिपत्सु ब्रह्म- विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे माक्षान्मागोनामष्टादशोध्याय ॥

क्रमांक प्रीर विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१७६	५७	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७७	$\frac{१२८५}{८}$	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७८	१६१३	श्रीमद्भागवतगीता (संस्कृत सटीक)			दे० का०	दे०
१७९	४२८०	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८०	$\frac{३३४८}{४६}$	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८१	६३९	श्रीमद्भगवतगीता			दे० का०	दे०
१८२	११०	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१८ × ११६ सें० मी०	१० (६-१५)	१३	३२	अपूर्ण	प्राचीन	
१७५ × ६५ सें० मी०	६६ (१-६५)	७	१६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता मूपनियत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामष्टादशोऽध्यायः ॥६॥ ॥सप्त॥
३३ × १५ सें० मी०	२६	१२	७५	अपूर्ण	प्राचीन	
२० × १० ५ सें० मी०	४५ (३-२१, २५-३६, ४६-४८, ५६-५७, ५६-६५)	६	२७	अपूर्ण	सें० १८४७	जून संवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ शुभ भूयात् ॥ श्रीमद्भगवद्गीता संपूर्णा ॥ श्रीरामचंद्रायनमः सवत् ॥ १८६४ ॥ मिति आषाढ वदि ॥ लिखिते पन्नालाल भट्ट मथुरास्थेन ॥
१२ ५ × ८ २ सें० मी०	१३८ (१-३६ (३४-३६)-१३५)	६	१७	पूर्ण	सें० १८६६	तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्यसहितया वैशामिक्या भीष्मपत्नियु श्रीमद्भगवद्गीता मूपनियत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे संन्यासयोगो नामष्टादशोऽध्यायः १८ सवत् १८६६ के मिति चैत्र सुदि ४ लिप्यते श्री गोमाई दलई राम पठनाय वैष्णव श्रीनंदराम श्रीरामजी
२० × १० ६ सें० मी०	७०	८	२२	पूर्ण	प्राचीन	श्री सवत् ॥ १९६ ॥ ॥ ६३ ॥ पोसवदि द्वितीया सानो वामर समाप्त.....
१७ × १० ५ सें० मी०	१२६	७	१७	पूर्ण	प्राचीन	तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीता मूपनियत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे संन्यासयोगो नामष्टादशोऽध्यायः ॥ श्रीकृष्णार्जुनसु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसंख्या वा राष्ट्रविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८३	$\frac{६६१}{५}$	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८४	६७३२	श्रीमद्भगवद्गीता (सुबोधनी संस्कृतटीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१८५	६८२०	श्रीमद्भगवद्गीता (मराठी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१८६	७०२४	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८७	७१७६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८८	$\frac{५४१२}{५}$	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८९	६०६६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पकितमख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य प्रावश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
१२६ × ७१ सें० मी०	८१ (१२-१७, ३२-१०४, १०७-१०६)	६ १६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता ॥
२८५ × १२६ सें० मी०	११२ (१ ११२)	१४ ३८	पूर्०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीताटीकाया सुबो- धिण्या श्रीधरस्वामिकृताया मोक्षयोगो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥****
२४४ × १४८ सें० मी०	६६ (२-७०)	१५ ३२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहिताया वैय्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगव- द्गीता सुनियत्सु ब्रह्म विद्याया योग- शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यास योगो नाम अष्टादशोऽध्याय १८ सवत् १८४० फाल्गुन कृष्ण १४ शुभमस्तु ॥
१५१ × ११२ सें० मी०	१९	१७ १६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री तत्त्वदिति श्री महाभारत शत- सहस्रसंहिताया वैय्यासिक्या शाति भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सुनियत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशो ऽध्याय ॥ × × ×
२५५ × १२५ सें० मी०	५२ (१-५२)	६ ३२	पूर्०	प्राचीन सं० १६३५	इति श्री भगवद्गीता सुनियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टा- दशाध्याय ॥ १८ ॥ सवत् १६३५ जेष्ठकृष्णा १५****
१४१ × ७६ सें० मी०	१३५ (३-१३७)	६ १६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुनियत्सु ब्रह्म- विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशाध्याय ॥ शुभमस्तु तेषां पाठकया ॥
२१ × १०७ सें० मी०	७८ (१-७८)	७ २६	पूर्०	सं० १८८६	हरि ॐ तत्त्वदिति श्री महाभारते शतसहस्रसंहिताया वैय्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्री मद्भगवद्गीता सुनियत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे भागवत नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८ ॥ **** सं० १८८६****

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मूद्रांक की संख्या	ग्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर निखा है	वर्ग
१	२	३	४	५	६	७
११०	$\frac{७१७७}{२}$	श्रीमद्भगवद्गीता			३० का०	३०
११०	$\frac{८११३}{१०}$	पट्टलानी-मगीता			३० वा०	३०
११२	$\frac{४६४५}{५}$	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११३	४१४२	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११४	१२५२	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११५	३३१८	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०
११६	$\frac{२३६}{१२}$	सप्तश्लोकीगीता			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पविनसंख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		ब	स			
१२६×८१ सें० मी०	१४३ (१-१४३)	६	१६	पू०	प्राचीन	३। श्री। मा। मा।। तेषा।।स।।स।।हि।।या वैद्यासि वया।।प्या।।वणि।।ग।।द्गो।।सू।। नि।।स्तु।। ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री वृष्णावर्जुन सवादे मी।।स।।स।।गे।। मा।।दशो १०ध्याय ।।१८।। ममाप्तम् ।।
१६५×१३ सें० मी०	२ (३८-३६)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री पट्टरनोकी रामगीता सपूर्ण ।।
११२×८५ सें० मी०	४ (८-११)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री मन्मथनाकी गीता सपूर्ण समाप्त ।। * * *
१३५×८३ सें० मी०	२ (१-३)	६	१३	अपू०	सें० १६४०	इति श्री सप्तशती गीता समाप्तम् ।। शुभमस्तु सवत् १६४० के अषाढ १६ व० ।।
१०३×६१ सें० मी०	१६	४	१०	अपू०	प्राचीन सें० १८७५	इति श्री मन्मथनाकी गीता संग्रह सप्त- माप्त ।। लिप्योपेत शीमधेम मत १८ ७५ ।। का।। मोतीमाह सुधि ।।१०।।
१२१×६६ सें० मी०	४ (१-४)	४	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मन्म
१६×१०५ सें० मी०	१ (१७)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति सप्तशती गीता सपूर्णम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९७	$\frac{२१५२}{५}$	सप्तश्लोकी गीना			दे० का०	३०
१९८	४३९८	सप्तश्लोकी गीता			३० का०	३०
१९९	$\frac{६०९८}{२}$	सप्तश्लोकी गीता			३० का०	३०
२००	५७५९	सप्तश्लोकी गीता			३० का०	३०
२०१	$\frac{५८९६}{२}$	सप्तश्लोकी गीता			३० का०	३०
२०२	५६०८	सप्तश्लोकी गीता			३० का०	३०
२०३	$\frac{७१७८}{७}$	सप्तश्लोकी भगवद्गीता			३० का०	३०

पत्तो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकितसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या	क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	६	म द	६	१०	११
१६१×११ सें० मी०	२ (१५-१६)	८ १६	५०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन सवादे सप्तश्लोकी गीता संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु मंगल ददानु ॥
१६२×८७ सें० मी०	१ (१-२)	७ २०	५०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यश्लोकीगीता संपूर्ण ॥
२२×१०१ सें० मी०	१	८ ३८	५०	प्राचीन	इति सप्तरश्लोकी गीता समाप्ता ।
२०×१०७ सें० मी०	३ (१-३)	७ २४	५०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ॥ संवत् १८८४। पीस विद ७। हस्ताक्षर भमूतराव के होम
१४३×१०६ सें० मी०	१	८ १७	अपूर्ण	प्राचीन	
१७६×६८ सें० मी०	२	६ २३	५०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
१६६×१० सें० मी०	३ (१-३)	४ १५	५०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी अथवद्गीता संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किंग वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	१६५२	सारंगीना			दे० का०	२०
ज्योतिष ✓ १	६६३५	अमप्रबन्ध			२० का०	२०
२	२४२	अनदंशा फल			दे० का०	२०
३	१०५६	अक्षरचिन्तामणि			२० का०	२०
४	४५६१	अक्षरचूटामणि			२० का०	२०
५	६८१८	अमृतकुंभ	नारायण		२० का०	२०
✓ ६	१६००	अपंगट			१० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरमख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण द्वैतो वर्ण- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
१८ × १० ५ सें० मी०	३ (१-३)	८	३२	अपूर्०	प्राचीन	
१८ २ × १२ ६ सें० मी०	२ (१-२)	१६	२७	पूर्०	प्राचीन	इत्यग प्रश्न ॥
२२ ३ × १० ८ सें० मी०	८ (१-८)	६	२८	अपूर्०	प्राचीन	
२६ × १० ५ सें० मी०	११ (१-११)	६	३८	पूर्०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री अक्षरचिन्तामणि समाप्ता संवत् १८३४
२२ ७ × १२ २ सें० मी०	६ (१-६)	७	२५	पूर्०	प्राचीन सं० १६३६	इत्याक्षर चुडाभणि पुस्तक सम्पूर्ण संवत् १६३६ साके १८०१ समय आषाढ मासे कृष्ण ३ शनी वासरे लिपिवा गौरी शम्भणे .....
३२ × १० सें० मी०	४२ (१-४२)	७	४५	पूर्०	सं० १६३१	इति श्री ज्योति श्री रामसुत नारायण विरचिते अमृत कुमे ग्रहण लिखनानु- क्रम समाप्त ॥ संवत् १६३३ आशोज मासे शुक्ल प्रतिपदा मदवासरे लिखित मिद पुस्तक शंकर दत्तात्रज पुत्र नद लाल नेव ॥
२७ २ × ११ २ सें० मी०	२ (१-२)	७	२३	अपूर्०	प्राचीन सं० १८१८	इत्यर्थ काठ सपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविषय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	दिपि
१	२	३	४	५	६	७
७	४६०२	ग्रथदीपक (हिंदी टीका सहित)	६		३० का०	३०
८	३८०३	ग्रथप्रदेश			३० का०	३०
९	२४६	ग्रथजदकेवली			३० का०	३०
१०	७१८८	ग्रथकवय परिष्ठादि			३० का०	३०
११	६६०८	ग्रथववगजातक (प्रथम अध्याय)			३० का०	३०
१२	५२७५	ग्रथप्रहयोग फल	नागेश्वर तान पाठक		३० का०	३०
१३	२५७	ग्रथवर्गाधिकार			३० का०	३०



पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रगणना	प्रति पृष्ठ में पंक्तिनिकाश और प्रति पंक्ति अक्षरसंख्या		क्या अक्षर पूर्ण है ? अपूर्ण है तो तत्समान अक्षरों का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६५ × ११२ सें० मी०	५३ (१-५३)	६	२६	पूर्ण	सं० १६४२	इति वेत्तदयपन्न संपूर्णं समाप्त भूयान् सवत् १६४२ भागोत्तम मासे वैसाख मास अष्टमपक्षे चतुर्थियाया शनिवासरौ बुधमाघ्निया लिखित पंडित राम सरूपजी यह पुस्तक ..
२३ × १०६ सें० मी०	१६ (१-१६)	१०	२५	अपूर्ण	प्राचीन	इति अर्घ्यश्लोके गुरुमिश्रपत्र ॥ (पत्रसंख्या-११) × × ×
२८६ × ११५ सें० मी०	५ (१-५)	८	३६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६११	इति श्री अक्षयद केवली संपूर्णम् .. सं० १६११ मानो .. प्रादित्य वासरे लिखिता मुकुलम पुरामध्य लिखि विहारिन राम राम कृष्ण रा० ॥
२३ × १०६ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२७५ × ११६ सें० मी०	४ (१-४)	६	४८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यष्टकं जानके प्रथमोऽध्याय समाप्त ॥
२१२ × ८२ सें० मी०	७ (१-७)	६	३२	पूर्ण	प्राधुनिक	इति अष्टप्रहृषोप-पत्र समाप्त ॥ श्री सत्र लख के श्वर सप्रिघी लिखित नागश्वर तान पाठक गोपालनाथ लिखित ॥
२२५ × १० सें० मी०	६ (१-६)	१३	३८	पूर्ण	प्राचीन	इत्यष्टक वर्गाधिकार समाप्तम् ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१४	७३६०	अष्टात्तरीदशा (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	३०
१५	$\frac{५३३२}{८}$	ग्रहगण विधि			दे० का०	३०
✓ १६	१५५७	ग्रहि चक्र			दे० का०	३०
१७	५२८६	ग्रहिनल चक्र (सटीक)			दे० का०	दे०
✓ १८	$\frac{५०५४}{१५}$	आखेटक चक्र			दे० का०	३६
१९	४७७४	भाषाप्रश्न			दे० का०	३०
२०	६६०५	ग्रामदायादि फन विचार (जैमिनि जात होना)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का क्रमांक	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि के क्रमांकसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावरणक विवरण
		स	द			
२११×१४६ सं० मी०	२६	२०	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१६×१४६ सं० मी०	२ (१-२)	१६	२२	पूर्ण	प्राचीन	इति महर्गण विधि ॥
२६६×११८ सं० मी०	४	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२७३×११८ सं० मी०	५ (१-५)	१२	४१	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२१	इति नरपति जयचर्यां स्वरोदये अहिवल चक्रम् समाप्तम् ॥ ..... इति स्वरोदयविवृती अहिवल विवरणम् ॥ सवत १६२१ भाद्र शुक्ल पष्ठमा वृषदासरे तिथिदिदम्०
१६४×७८ सं० मी०	८ (१-८)	८	२४	पूर्ण	प्राचीन	इति यामलीय सप्तमे आखंडक चक्र ॥
२१८×६६ सं० मी०	७ (१-७)	६	२५	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री आद्या प्रश्न समाप्तम् ॥ सम्बत् १८६० ॥ साके १७२५ ॥ समये चंद्र मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्या रविवारा दिने पित रघुवर रामेन आत्मा पठाथ पुस्तक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ तिथि मस्तु ॥
२७४×११६	३ (१-३)	१५	६१	अपूर्ण	प्राचीन	..... ॥ अथ श्री मज्जिमिनि जातका- नुसारेणामुदयादि फल विचार क्रीयते ॥ ..... (प्रारम्भ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२१	३६२६	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२२	५१८७	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२३	३०८६ ६ -	आज्ञाप्रश्न			२० का०	दे०
२४	६६११	आर्यभट्टमिद्धांत	आर्यभट्ट		दे० का०	दे०
✓ २५	१८६६	आनोक् मनोरमा प्रश्न	शं		दे० का०	दे०
२६	५५६५	इष्टकान गोघन पूर्वार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०
२७	५५६४	इष्टकानगोघन उत्तरार्द्ध (सटीक)			२० का०	दे०

पत्रा मा पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पत्रिसंख्या और प्रतिपत्रि मे अक्षरसंख्या		क्या गद्य पूर्ण है? अपूर्ण है ता वतमान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचानता	अन्य धावस्थर विवरण
		म	द			
१८६ × १०७ सें० मी०	६ (१-६)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री दश कृत प्रश्न समाप्त X X X X X X ॥
२५७ × १२८ सें० मी०	० (-४)	१२	२६	अपू०	प्राचान नं०१८८	इति विष्णुराज कृत आय पूर्ण अक्ष समाप्त सवत् १८८३ ॥ X X X
१६७ × १३१ सें० मी०	५	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२६२ × १२ सें० मी०	२६ (१-२६)	११	३६	पू०	प्राचीन नं०१६५०	इति श्री महावाय्याय्य भट विरचिते महासिद्धांत गोलाध्याये कुट्टकाधिकारी नामाष्टादश ॥ संपूर्ण ॥ संपूर्णोप- माय्यभट सिद्धांत ॥ सवत् १६५० ॥
१७७ × १२ सें० मी०	६ (१-६)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री गण विरचितालाक मनोरमा प्रश्न विसमा समाप्त ॥ (पृ० ३)
२६६ × ११६ सें० मी०	१० (१-१०)	१२	५३	पू०	प्राचीन नं०१६००	इति श्री लग्नात् पटराशिमध्ये चद्रे रत्नान चद्रसारणी । उदाहरण च समाप्त शुभमस्तु सवत् १६०८ माघ शुक्ल सोम लिखित छत्रपुर श्री ॥ पूर्वाह्न समाप्त ।
२६८ × ११८ सें० मी०	७ (१-७)	१२	४६	पू०	प्राचीन नं०१६०८	इति लग्नात् पटराशितोत्रिंशे चद्रे सप्तमभावनविष्णुसारण्युदाहरणे समाप्ते १० १६०८ कार्तिक वदि १२ मीमे छत्रपुरलिखिते श्री ॥ उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२८	१३६०	इष्ट मोक्षण			३० का०	३०
२९	४२८८	उद्दुशास्त्रवर्णन			३० का०	३०
३०	६८५१	उद्दुशास्त्र प्रदीप			३० का०	३०
✓ ३१	२०७७	उत्पात संक्षेप	यशोधर मिश्र		३० का०	३०
३२	६९२	ऋण-धन चक्र ?			३० का०	३०
✓ ३३	९५१	ऋतुमंजरी			३० का०	३०
३४	११८	कमलवधगुप्त	विष्णुराम झा		३० का०	३०
	२					

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में पत्रसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ का प्राचीनता	ग्रन्थ का प्राच्य विवरण
		स	द			
८	८	८	८	१०	१०	१०
२३ × १० ५ सें० मी०	६	८	२६	५०	प्राचीन	
२५ १ × ११ ३ सें० मी०	६ (१-६)	११	२७	५०	प्राचीन सं० १८१८	इति उद्दृग्नास्व पत्रम् श्री सवत १८१८ शाके १६८२ वैशाख कृष्ण गुरो ति० द्विवेदिन जगनायस्य श्री "
२४ ५ × ११ सें० मी०	६ (१-६)	५	३६	५०	प्राचीन सं० १६०१	इति पराशरीये उद्दृग्नाय प्रदीप समाप्तिमय- मत ॥ सवत १६०१ थावण शु० १ गुरुवासरे ॥
३२ × ११ सें० मी०	८	६	४५	५०	प्राचीन सं० १६१८	इति श्रीमत्कसारि मिश्रात्मज मिश्र यशोधर विरचिते ईद्वज्ज चित्तामणी उत्पात लक्षण समाप्तम् शुभमस्तु सवत् १६१८ के आश्विन शुक्ल १५ शुकेक
१३ २ × ८ सें० मी०	५ (१-५)	८	१८	५०	प्राचीन	
२१ ६ × ६ २ सें० मी०	४	७	३१	५०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्रीतुंगजरी संपूग स्वम्ब १८६० साके १७२५
२८ × ६ सें० मी०	४	८	२६	५०	प्राचीन	इति कमान वध शत्रुन समाप्त ॥ शुभ- मन्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ उपन पाठवयो ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्ति मरुपा वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	६६८७	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३६	६८१५	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३७	६४६४	*करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३८	३६४१	करण कौतूहल टीका	विश्वनाथदेवज		दे० का०	दे०
३९	३१८६	करणप्रदीप	महादेव		दे० का०	दे०
४०	१६०२	करण फल			दे० का०	दे०
४१	३८३६	समं प्रवाण (समं प्रवाण विज्ञापन प्रसार)			दे० का०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२५ X १० ५ सें० मी०	१३ (१-१३)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं० १६६६	इति भास्वरीये करणं कुतूहले पर्वानपनानाम दशमोऽध्यायः ॥ सं० १६६६ वर्षे " "
२१ X १० ७ सें० मी०	१६ (१-१६)	६	२६	पू०	सं० १६१०	इति भास्वरीयते ब्रह्मगणे कुतूहले ॥ विदग्धवृद्धिवल्लभे शशोक सुष्ययोगे ॥ १० ॥ सं० १६३० ॥ शके १७६५ मीनी वैशाख वदि १४ भृगो ॥
२३ X ६ ३ सें० मी०	१६ (१-७, ६-१६, १८)	६	२६	अपू०	प्राचीन सं० १६६२	करणं कुतूहल समाप्त ॥ सं० १६६२ वर्षे शके १५२७ प्रवर्तमाने भाद्रपद शुदि नवम्या रवौ लिखित " " " "
२३ X १० १ सें० मी०	६०	१०	३१	अपू०	सं० १८४२	इति श्री दिवाकर देवज्ञात्मज विश्वनाथ देवज्ञ विरचिते ब्रह्मतुल्यस्योदाहरण्ये पाताधिकारस्योदाहरणम् ॥ श्री विश्वनाथेन दिवाकरस्य सुतेन यत्माद्रचिता समाप्ता योलाभिघग्राम निवासिनेयमुद्राहृति खेट कुतूहस्य ॥ सं० १८४२
२३ X १० १ सें० मी०	६ (२-४, ६-८)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२० X १० ८ सें० मी०	३	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२२ X १५ २ सें० मी०	२ (१-२)	१४	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री सूर्याख्ये सवादे ज्ञानभास्वरे० कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार मूरलीधरेण लिखित ॥
(सं० सू० ६८)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	७५६०	कर्मपत्रागिरा			३० का०	३०
४३	१०६१	कर्मगल्पिनटीका			३० का०	३०
४४	४५६	कण्ठावलि	रुद्र		३० का०	३०
४५	५१६८	काकभाषापिंड (सटीक)।	गर्ग श्रुति		३० का०	३०
४६	६६८८	कालचक्र ज्ञानक			मि० का०	३०
४७	६६४६	मानचन्द्रता टीका			मि० का०	३०
४८	१०४६	कासजातक			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या प्रौर प्रति पक्ति मे प्रसरसंख्या		क्या प्रथम पृष्ठ है ? प्रपूरण है ती वर्तमान अंश का विवरण	भवस्था प्रौर शचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
		स	द			
२२'६ x १२६ सें० मी०	६ (३२-४०)	१५	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्म प्रकाशिकामा जन्मा कानाक्षिपेककाल ज्ञाननामचतुर्थाधिकार (पत्र संख्या ३२)
३०४ x १४८ सें० मी०	१७ (१-१७)	१५	४७	पू०	प्राचीन सं० १८६०	समाप्तोय बलिनीता इति श्री ॥ सवत् १८६० भा- १७१५ ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्ष अमावास्या त्रिदिन लिखत मिथ मुगलाधर स्वयं पठनायम् उमासिवा जयति मगत्य करि ॥
२६'१ x १२५ सें० मी०	३ (१-३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति रुद्रकृतकण्डावर्णिसूत्रम् ॥१॥ कम्पायटक चैव आयन्त तास्रमाजने अन्वत्ये बटवृक्षे च भुक्ता नाद्रायण चरेत् ॥१॥
२२२ x १२५ सें० मी०	४ (१-४)	११	२१	पू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री गणं ऋष्यश्वरानिरच्यते कावान पण्डितोपरिप्रस्तौ चतुर्विंशति प्राछा सूत्रणुगतौ सं० १८३४ वै० शु० ८ शु० रि० -
२५ x १०६ सें० मी०	१६ (१-१६)	६	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री इश्वर पायतो सवादे कालचक्र जातक समाप्तम् ॥
२५१ x १०५ सें० मी०	१० (१-१०)	६	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीशिवरदत्तवाग्भियवेन आद्यरायं पुराणी श्री बलात्तिय गुनसूय नामधेय देशिकप्रियशिष्यरा मन्त्र बाह्येन इश्वरोक्त कालचक्र जातकामुदयि विधान दशाविपाक चर्किचिद् याच्याता ॥
२७८ x ११३ सें० मी०	५ (१-५)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १६५५	इति कालजातक माषगुमता १२ बुधवार सवत् १६५५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४९	५५८२	कालज्ञान			३० का०	३०
५०	४७७०	कालज्ञान			३० का०	३०
५१	४-९०	कालज्ञान			३० का०	३०
५२	४८८६	कालज्ञान			३० का०	३०
५३	३५३७	कालज्ञानाक्षरविद्यागणितशास्त्र	शिव		३० का०	३०
५४	४९७	कालमार्तण्ड ?	वृष्ण देवस		३० का०	३०
५५	६६३३	कालसूत्र व्याख्यान			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरमख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो चतमान अक्ष का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
अ	ब	स	द	ह	१०	११
२४६ × १३६ से० मी०	२ (१-४)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	
२१७ × ८६ से० मी०	१० (१-१०)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १८५६	संवत् १-५६ शाक १७२४ समय मार्ग मास शुक्लपक्षे पंचम्या भीमवासरे ॥ वितपिरधुवरा रामेन काल ज्ञान समाप्तम् ॥ श्रीराम ...
२३ × १२ से० मी०	६ (१-६)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १८५७	इति आर्या ग्रन्थ समाप्तम् ॥ संवत् १८५७ साके १७२२ ॥
२७५ × १२३ से० मी०	७ (१-७)	८	४८	पू०	सं० १९३६	इति खेरल्लदंशातमाप्त क्षेत्रभासे कृष्ण पथे १३ दस्वा ब्रुघवासरे ॥ लिपित्वा गौरीद्विजस्य धाम पठनाय हेतवे संवत् १९३६ शाकान्द १८०१ ॥
२६३ × १३२ से० मी०	१३ (३-१५)	११	२५	अपू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री शिव विरचिताया कालमानकर-चिन्तामणि शास्त्र समाप्त संवत् १८८६ मासुन कृष्णे १ शुक्ले श्रीराम-चन्द्राय नमोनम ॥
२४ × १० से० मी०	३१ (१, २१-५०)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११६ से० मी०	४ (२-५)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	इति वानसूत्र व्याख्यान तृतीयो-ध्याय ॥ ** (पत्रसंख्या ४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५६	२७६४	कुडमडपसिट्टि	विट्टल दीक्षित		६० का०	६०
✓ ५७	$\frac{१०००}{२}$	वृषचक्रम्			३० का०	३०
५८	११४३	कूपतडागचक्रम्			३० का०	३०
५९	७०५१	केरलप्रश्न	केशवप्रसाद		३० का०	३०
६०	७५५०	वेरलप्रश्न			३० का०	३०
६१	४४६४	वेरलीमान			३० का०	३०
६२	१०३४	वेगवपट्टति	वेगव देवज		३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या शय पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२४३ × ८३ सें. मी०	६ (२-१०)	६	१६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्रीमत् ज्योतिवित विठ्ठल दीक्षित विरचिता कुडमडप सिद्धि ॥ .....
२०.२ × १३.८ सें. मी०	३	१५	१२	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ × १० सें. मी०	२ (१-२)	८	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति ब्रह्मयामले तडाग चक्रम् ।
२१.२ × १२.२ सें. मी०	५ (१-५)	१६	१४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री केशव प्रसाद विरचिते केरल प्रश्न समाप्त । सुभम् ॥ लिखत मनभा- मनप्रसाद पठनर्थ अह वनखडेश्वरवासी पुजारी . . . ..
२४.३ × १०.५ सें. मी०	५ (१-५)	६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
२५.६ × ११.५ सें. मी०	४ (१-४)	१४	४४	पूर्ण	प्राचीन	इति केरली ज्ञानम् ॥ पार्श्वी.....॥
२५.८ × १३.७ सें. मी०	८ (१-८)	७	३६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री केशव देवजिविरचिते बेगवीय पदाति समाप्तम् ॥ सवत् १८८६ बंगाय वदि ८ चद्रे लिखितमिद मुरलीदत्त स्वय पठनार्थम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४४२५	केशवपद्धति (सटीक)	केशव देवज्ञ	विश्वनाथ देवज्ञ	दे० का०	दे०
६४	४७१३	केशवी टीका			दे० का०	दे०
६५	१६८८	केशवी पद्धति (संस्कृत टीका सहित)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
६६	२७०५	केशवी पद्धति	केशव देवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	१२८६	कोटयत्र			दे० का०	दे०
६८	१३७२	कोटुक चिन्तामणि			दे० का०	दे०
६९	१८०६	महातन्त्राति			दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवितमध्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या	क्या प्रय पूर्ण है? अपूर्ण है ता वर्त मान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द म	द	स द	६	१०	११
२८१×१४२ सें० मी०	३४ (१-३१, ३७-३६)	१६ ४३	अपू०	रचनाकाल सा १५४० लिपिकाल स० १८८६	गगनधेदशरेद्रुमिते शके १५४० नमसि- शुकर बुधभगने लिखी गएपतेहि इत मुजदसताविततवारमगाडरमत्पुरे ॥ इति सपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवायनम सवन् १८८६ शके १७५४ माघव मासि सितानवम्या ६ भोमवासरे लिखित- मिद पुस्तक मूरतीदत्त स्वय पठनार्थ शौडान्वयेलेखक पठित शुभमिति ॥
३०५×१५५ सें० मी०	४५ (१,६-७-१० २२-२४-४२, ४४-४६ ४६-५५)	१३ ४०	अपू०	स० १६१०	इति सपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवाय- नम ॥ सवत् १६१०। शके १७७५ पौषमासे सिते पक्षे एकादशे विधु वासरे लिखत मिद पुस्तक मिश्र देवी सहाय स्वात्म पठनार्थमिति ॥
२२४×१४३ सें० मी०	२०	२१ ३३	पू०	प्राचीन	इति केशवाचार्य कृते केशवी पद्धति समाप्त ॥
१६७×८३ सें० मी०	१० (१-१०)	१० २२	पू०	प्राचीन स० १८२६	इति केशव देवज्ञ विरचिता केशवपद्धति समाप्ता । सवत् १८२६ वरधे आवण वदी सुतीमा ३ वार सनिश्चर पोषी लिखी देवी ब्राह्मण ॥
२३८×१११ सें० मी०	५ (१-५)	६ ३०	अपू०	प्राचीन	
२०४×१० सें० मी०	८३ (२-१८, १८-८३)	६ २१	अपू०	प्राचीन स० १८०६	इति कौतुर्कचितामणि समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ सवत् १८०६ थावण कृष्ण २० " "
२२५×१३५ सें० मी०	८ (१-८)	११ २८	पू०	प्राचीन स० १६३४	इति गझत शानि सपूर्ण ॥ सवत् १६३४ प्रथम ज्येष्ठवदि ६ दिन रविवार लिखत मिदनाशायण ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मसूहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
✓ ७०	७२३०	गणक भूषण	समरसिंह		दे० का०	दे०
७१	६६४४	गणित ज्ञता	वल्लभ गणक		दे० का०	दे०
७२	२६२६	गर्गमनोरमा	गर्ग मुनि		दे० का०	दे०
७३	२७२६	गर्ग मनोरमा			दे० का०	दे०
७४	१५३६	गर्ग मनोरमा (टीका सहित)			दे० का०	दे०
७५	६६३४	गर्ग संहिता	गर्ग		दे० का०	दे०
७६	६६३२	गर्गाद्यान कामधेनु			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या श्रव्य पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	श्रवस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
२७ × ११ ४ सें० मी०	२३ (१-२३)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन सं० १११	समर सिंहने... युग चद्र नद नु मिते अपूर्ण श्रवितार युक् नियिद्धि के कर भेच ॥ निश्चित मया गणना भूपग्न प्रथम स्वरित X X X X
३० ६ × १२ ७ सें० मी०	६ (१-६)	११	४२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१०	इति श्री वल्लभ गणक कृता गणित नामा समाप्ता १ कि० उदीच्य वा० कृष्णनाथेन मदन १६१० मार्गश्रिते श्रैश्वर तिथौ मन्दवामरे ॥
२७ ५ × ११ सें० मी०	६	१०	४२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	४ (१-४)	१२	४३	पूर्ण	प्राचीन	इति गर्ग मनोरमा भाष्य समाप्ता ॥
२५ × ११ २ सें० मी०	५ (१-५)	११	३१	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१२	इति गर्ग मनोरमाया प्रथम विद्याया गर्ग कृत टीका समाप्ता शुभ सवन् १६१३ ॥
२६ ८ × १२ ६ सें० मी०	५१ (१-५०, ५२)	७	४१	अपूर्ण	प्राचीन	गार्गीये ज्योति शास्त्रे प्रथमः ॥ ** (पत्र संख्या १८)
२१ × १२ ४ सें० मी०	१७ (१-१७)	११	२२	पूर्ण	प्राचीन सं० १६२८	इति श्रीकालचक्रोपरिकृतमुद्राहरणं समा प्तम फाणीत सं० १६२८ मार्गश्रिषं शुक्लाष्टम्या श्रवतिका शंभे शिष्यार्थ कृत मुद्राहतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगनसख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	७५४६	गुरुहाड (राशिग्रह)			दे० का०	दे०
७८	६६४१	गुलिकादि फल			दे० का०	दे०
७९	६८५०	गुलिकासाधन			दे० का०	दे०
८०	३७२८	गोलत्रयेड (गोलाध्याय)			दे० का०	दे०
८१	६४५३	गोलाध्याय	सत्ताचार्य		दे० का०	दे०
८२	५९२०	गोरी जातक			दे० का०	दे०
८३	६७१८	गोरीजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१७ × ६ सें० मी०	८ (१-८)	६	३१	पू०	प्राचीन सं० १८५६	इति श्री गुरुवाण्ड समाप्तम् ॥ सवत् १८५६ मासे १७२४ समयमार्ग मासे कृष्णपक्ष एकादश्या त्रिवासरे विलेपि-रघुवररामन आत्मपठार्थं पुस्तक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२१२ × ११७ सें० मी०	५ (१-५)	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति गुलिकादि फलम् ॥
२४४ × १०८ सें० मी०	१	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति प्राणन्द ।
११३ × ११ सें० मी०	२१ (१-२१)	११	३२	पू०	प्राचीन	
२७ × १०५ सें० मी०	२२ (१-२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	प्रापूर्णे सत्सङ्गत गोलाध्याय ॥ यासिन्द ज्योतिर्वित्पुनोर्माघवस्वेद पुस्तकम् ग्रन्थसंख्या ॥४५०॥
३४६ × १३५ सें० मी०	१३ (२-१४)	६	६६	अपू०	प्राचीन	
२३१ × १०१ सें० मी०	३ (१-३)	१०	१	अपू०	प्राचीन	इति गौरी जानके शुभाशुभं + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सप्रहुरियोग की मध्या	प्रथाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ विस वस्तु पर लिप्या है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४	४५६२	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८५	४३६६	गौरीजातक कम पद्धति	माधव		दे० का०	दे०
८६	६१८७	प्रहणफल			दे० का०	दे०
८७	१३०४	प्रहणफल			दे० का०	दे०
८८	४४६६	ग्रहदशातर्दशा			दे० का०	दे०
८९	६२५२	ग्रहदशाफल			दे० का०	दे०
९०	७०६३	ग्रह द्वादशभाव फल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पक्ति में श्लोक संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है तो वर्तमान श्लोक का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
		स	द			
२७६×११ सं० मी०	३ (१-३)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं० १६०२	इति श्री गौरि यातक शुभाशुभ फल समाप्तम् ॥ श्री शुभसम्बत्सरा १६०२ शकाब्दा १७६७ समय चैत्र कृष्ण ११
२६×१४ ३ सं० मी०	३ (१-३)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री मिथ्य कटपतिमज माघव विर- चिताया गौरि जातक वर्म पद्धिती दाहाणादशातदशाफलाध्याय ॥
२४४×१० सं० मी०	६ (१-६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री राहुप्रकरणम् ॥ सवत् १८५७ जेष्ठ कृष्ण ११
२६६×१० सं० मी०	३ (१-३)	१४	४०	पू०	प्राचीन	इति ग्रहण फल मिति ॥
२५×११ सं० मी०	५ (१-५)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १७६३	***सं० १७६३ स १६५८ माघ वदी १० भृगुवासरे लिखित..... ..... ॥
२७×११ २ सं० मी०	४ (२-५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२०८×११ सं० मी०	७ (२-३, ६- ८, १०-११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	नवग्रह पात्र सूर्य ॥.....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की घागागणना या सग्रहविज्ञाप की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ विस- वस्तु पर लिप्या है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
६१	१७८२	ग्रहफल			२० का०	२०
६२	१८५६	ग्रहफलम्			२० का०	२०
६३	६३३८	ग्रहभावप्रकाश (हिंदी टीका)	कविरत्न	गोपाल	२० का०	२०
६४	६०८८	ग्रहभाव फल			२० का०	२०
५ ६५	४३००	ग्रहलाघव	राणेशदेवस		२० का०	२०
६६	५३२८	ग्रहलाघव	राणेशदेवस		२० का०	२०
६७	५१५४	ग्रहलाघव	विश्वनाथ देवस		२० का०	२०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमहया और प्रतिपक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२१ × ११ सें. मी०	६ (१-६)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ × १० २ सें. मी०	२७ (१-२७)	१०	२८	पूर्ण	प्राचीन	इति विवाह ॥
२४ × १२ २ सें. मी०	१३ (१, ३, ५, १५)	१७	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
१६ ५ × ८ ४ सें. मी०	६ (३, ८-११)	६	१५	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ × १२ सें. मी०	१३	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन	
२० ७ × ११ सें. मी०	८ (५-८, १४- १६, ३३)	७	२३	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज्ञ विरचित गृह लाघवे चन्द्रमूय स्पष्टीकरणायधिकार + + + + + ॥ (१० ७)
३३ × १३ ८ सें. मी० (सं.सं.७०)	२०	१३	२१	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री दिवाकर देवज्ञात्मज विश्व नाथ देवज्ञ विरचिताया ग्रहाघवस्य भौमादिस्पष्टीकरण स्यादा ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तक नाम की प्राणामुद्रा या मप्रहसिरोप या सख्या	प्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६८	६६७१	ग्रहलाघा			३० का०	३०
६९	७२१६	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१००	७०३०	ग्रहलाघव	गणेशदेवज		मि० का०	३०
१०१	७०३१	ग्रहलाघव	विश्वनाथदेवज		३० का०	३०
१०२	७०६१	ग्रहलाघव	गणेशदेवज		३० का०	३०
१०३	५७७१	ग्रहलाघव			३० का०	३०
१०४	५७४३	ग्रहलाघव			३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२०८×१०५ से० मी०	८ (२४-३१)	११	३०	अ०	प्राचीन	
२५२×१०५ से० मी०	७	१०	२५	अ०-पुटकल पत्रे	प्राचीन से० १८६५	इति श्री मत्स्यनागमाचार्य वैशम्पैयण बर्गा- वत्परिवा मन्त्री गणेशदेवस्य विरचित ग्रहलाघव पंचारार स्वष्टाकरण समाप्त शुभमस्तु ॥ सरत् ८६५ माघे शुके पक्षे चतुर्दशरे " " " "
२०६×१०८ से० मी०	६ (२-४, १७-१६)	८	२६	अ०	प्राद्युनिक	इति श्री मत्स्यनागमाचार्य देव्ये श्री वेत्त- क सवत्सरात्म भा भद्रगणा देवस्य विरचिते ग्रहलाघव त्रिप्रश्नाधिकार श्चतुर्थे ॥ (पृ० १८)
२२२×१०३ से० मी०	६२ (२-२६, ३१-६३) पत्र २१ दो	८	३३	अ०	प्राचीन से० १६६७	इति श्री विद्यानाथ देवनाथनाथ विष्णु नाथ विरचिते ग्रहलाघव चंद्रग्रहणा- धिकार समाप्त हूति समाप्ता । सरत् १६६७ भाके १५ २ मार्गशोष कृष्णे ३० X X (पृ० ६१)
२२६×११७ से० मी०	८ (१-८)	१२	२६	अ०	प्राचीन	इति श्री गणेशदेवस्य विरचिते ग्रहलाघवा द्ये चन्द्रशुभोनि द्वादश + +
२७४×१०२ से० मी०	२ (१-२)	८	३०	अ०	प्राचीन	
२६×१११ से० मी०	९ (१-६)	८	२४	अ०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे सिद्धान्त रहस्ये पर्येण देवस्य विरचिते मध्यमाधि- कार + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमह्यता वा सप्रहविशेष की सहा	प्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४२२३	ग्रहलाघव			२० का०	३०
१०६	१७४४	ग्रहलाघव			२० का०	३०
१०७	१७१०	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		२० का०	३०
१०८	११६०	ग्रहलाघव	विश्वना - देवज्ञ		२० का०	३०
१०९	११६७	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		२० का०	३०
११०	११७४	ग्रहलाघव			२० का०	३०
१११	११८५	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		२० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रसंख्या और प्रति पत्र में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अग्रणी है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थ का प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३३ × १६ ५ सें० मी०	३५ (१-३५)	१५	४८	पू०	सं० १६१२	इति श्री ग्रहनाथवे ग्रहणाधिवाः समाप्त सवत १६१२ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ चंद्रमासरे लिखित पबोलीमहतावरापठनाथ "...."
२० × ११ २ सें० मी०	२१ (१-२, १-१६)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६ ४ × ११ ५ सें० मा०	७ (५-११)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
२३ ५ × १२ सें० मी०	११ (८-१५, १७-१६)	१५	३६	अपू०	प्राचीन	इति शिवाकर देवमात्मज विरचनाथ देवज विरचिताग्रह साधवस्वमाधि-कारस्यापाहृति समाप्ता । "अनेन रहित "
२३ ७ × ११ सें० मी०	६ (२-१०)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१७ १ × १२ ५ सें० मी०	७ (३-६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२२ ५ × १२ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और तिथि	मुस्तवाज की आगतसम्या या सप्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११२	२६२८	ग्रहलाघव	गणेश देवज्ञ		दे० का०	दे०
११३	१६४०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११४	१६७२	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११५	३६८०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११६	२३३०	ग्रहलाघव (सटीक)		गणेश देवज्ञ	दे० का०	दे०
११७	४१२२	ग्रहलाघव	विश्वनाथ देवज्ञ		दे० का०	दे०
११८	२१५५	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रो वा पृष्ठो वा पावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिमत्या पौर प्रति पक्ति म संसकरणस्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्णं ता वर्त- मान प्रथ वा विवरण	भवस्या पौर प्राचीनता	अन्य भावशयन विवरण
		म	द			
१७ × १० ५ सं० मी०	२६ (१-२६)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सत्तागमाचार्य वैशव साव- स्त्रिकात्मज गणेश देवज विरचिते सिद्धान्त रहस्ये ग्रहलाघव संपूर्ण ॥
२२ × ५ ३ सं० मी०	११ (१-११)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज कृते ग्रहलाघव तारा ग्रहस्य वरणम् ॥ * * * * *
२६ ७ × ११ १ सं० मी०	३७ (१-२४, २६-३८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
१६ × ६ ५ सं० मी०	३१ (१-३१)	१०	२८	पू०	सं० १६३७	इति श्री ग्रहलाघवस्य संपूर्णम् भवत् ॥ सदत् १६३७ शके १८०२ नदननाम सवत्सर × × × ॥
२४ ३ × १ सं० मी०	१६ (१-१६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५ सं० मी०	७ (१, ५-१०)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री विद्यनाथ देवज विरचिते ग्रह- लाघवस्येष्ट मूख चंद्र तिथ्यादि द्वितीय (पृ० १०)
२३ ८ × १२ १ सं० मी०	२० (१-२०)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव सावस्त्रिकात्मज गणेश देवज विरचिते ग्रहलाघवे सिद्धांत रहस्ये * * * * * समाप्त सप्तदश ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकानाम की प्रागत्तमध्या वा सग्रहविशेष की नाममा	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीतारार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
११६	२५६७	ग्रहनाथ			दे० का०	दे०
१२०	४०४	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२१	७६६१	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२२	६६७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२३	६६६	ग्रहलाघवम्	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२४	७७७६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२५	६०८३	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठा न आकार ८ अ	परसंग्या अ	प्रति पृष्ठ म पवित्ररुपा प्रति प्रति शक्ति म सगररतध्या		क्या अथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्त मान अथ का विवरण ६	अवस्था प्रौर प्राचीनता १०	अन्य भावयन विवरण ११
		स	द			
२० × १२ ८ सं० मी०	३२ (१-३२)	६	१६	५०	प्राचीन सं० १८०७	भा० ६ गुरो सं० १६४० गणे १८०७ ॥ (17-9-1885 = १७-६-१८८५)
२० × १० सं० मी०	६ (१४-१८, २१)	१०	३०	अपूर्०	प्राचीन	
२० ७ × ६ ८ सं० मी०	६ (१३, १८- १६, २२-२४)	१०	२८	अपूर्०	प्राचीन	इति गणेशदेव० ग्रह० सिद्धा० पचागा समाप्त ॥
२७ २ × ११ सं० मी०	१३ (१-१३)	७	२०	अपूर्०	प्राचीन	
३० ५ × १५ सं० मी०	१३	१३	४३	अपूर्०	प्राचीन	
२० ७ × ६ ८ सं० मी०	६	६	३२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री गणेशदे० ग्रह० ना० सिद्धांतरह० तिथि पत्रादेव ग्रहणद्वयशाध्यम् × × × × (पृ० १६)
२४ × १० २ सं० मी०	१५ (१-१५)	११	३२	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरदेवभात्मज विश्वनाथ देवज्ञ विरचिता ग्रहलाघवस्य लग्नादि छाया यत्रभाग दिक्साधन नलिका- वधाधिकारस्योदाहृति ॥ * * * (पत्र सं० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	प्रथनाम	प्रथवार	टीकावार	प्रथ दिना वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	२४७५	प्रह्लापव (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
१२७	३०१०	प्रह्लापव (उत्तरार्द्ध)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२८	४३१७	प्रह्लापवटीका		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२९	११९१	प्रह्लापवटीका		नृसिंहदेवता	दे० का०	दे०
१३०	५७१९	प्रह्लापव	गणेश देवता	नृसिंहदेवता	दे० का०	दे०
१३१	५७१४	प्रह्लापवटीका	गणेशदेवता	मल्लारिदेवता	दे० का०	दे०
१३२	१०८०	प्रह्लापवटीका			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का मातार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या और प्रतिपत्ति में अक्षरसंख्या		क्या अधपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षरों का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८	९	१०	११	१२	१३	१४
२५२ × १०४ सें. मी०	५४ (१-७, १०-३५, ३६-४१, ४३- ४७, ५०-५३, ६६-७५)	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६५ × १५४ सें. मी०	३६ (१-३१, ३१-३५)	१३	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
३०३ × १६१ सें. मी०	३० (३५-६४)	१६	५१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०३	इति श्री ग्रहनाथवे वरण सिद्धोत्तरहस्ये तद्विवरणक देवज्ञवर्य दिवाकरात्मज विश्व नाथ देवज्ञ विरचिते निदान रहस्यो- दाहरण समाप्ति × × सवन् १६०३ विक्रमात्समे माघकृष्ण *****॥
२३२ × १०६ सें. मी०	८	८	२६	अपूर्ण (छडित)	प्राचीन	
२६५ × ११५ सें. मी०	३१ (१, २, ४, ६, १५-४०)	८	४२	पूर्ण	प्राचीन	श्रीमद्गुरुहस्तेश शंभुजीनये प्रया कृता स्ते तद्भ्रातृ पुत्रेण नृसिंह ज्योतिर्विदा स्व कृत ग्रहलाघव टीकाया ॥ (पत्र सं० १)
२७१ × १३८ सें. मी०	५२	१४	५६	पूर्ण	सं० १६१४	इति श्री मद्गणेश देवज्ञकृत ग्रहलाघ- वस्य टीकाया मल्लारि देवज्ञ विर- चिताया मध्यम ग्रह साधनधिकारः प्रथम ॥ (५० १२)
२६५ × ११५ सें. मी०	२८	११	३१	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की मख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विविधि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	१६८६	प्रह्लाधव (मस्तुतटीका)	मणेशदेवज्ञ	विश्वनाथदेवज्ञ	३० का०	३०
१३४	२३८५	प्रह्लाधत्र (सस्कृतटीका)	मणेश देवज्ञ	नृसिंह ज्योति- विद	३० का०	३०
१३५	४७५२	प्रह्लाधवविवरण			३० का०	३०
✓ १३६	६९४६	प्रह्लाधवव्याख्या	विश्वनाथ देवज्ञ		३० का०	३०
१३७	५६०३	प्रह्लाधवसारणी			३० का०	३०
१३८	६२६	प्रह्लाधवसारणी			३० का०	३०
१३९	२९८६	ग्रहविचार			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पतिम-या और प्रति पार्श्व म ग्रंथारसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रंथ का विवरण	ग्रंथका और प्राचीनता	ग्रंथ प्रावृत्तन विवरण
		म	द			
२२२ × १४ सें० मी०	१० (१-७ , ३१)	१५	३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री देवनात्मज विश्वनाथ कृते मिद्वान रहस्य * * *
२४१ × १० सें० मी०	५५ (१-५७)	११	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२६८ × ११ सें० मी०	३६ (१-३६)	१०	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
२५३ × १० सें० मी०	१० (१-१०)	१७	५३	पूर्ण	सं० १६१४	इति श्री दिवाकर देवनात्म विश्वनाथ देव विरचिताया ग्रंथावो बाह्यतो स्पष्टी करण ॥ (१० ५)
३१५ × १५ सें० मी०	१३ (१-१३)			पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मनाथवे शारणी समाप्त सकत १८०७ (?) चंद्र शुक्ला १२ लिखित मिश्र मुरलीधर
२६६ × १३ सें० मी०	१५			अपूर्ण	प्राचीन	
२३४ × ६३ सें० मी०	१३ (१ १२, १५)	१०	४१	अपूर्ण	प्राचीन	

प्रमाणक और विषय	पुस्तकालय की अंगणदसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	६२०६	ग्रहस्पष्टीकरण (ग्रह कल)			दे० का०	दे०
१४१	१७७०	ग्रहाधिकार			दे० का०	दे०
✓ १४२	६१२८	चंद्र व्यवस्था			दे० का०	दे०
✓ १४३	८४५	चंद्रकुडली			दे० का०	दे०
१४४	६२६५	चंद्रग्रहणार्थ श्लोक			दे० का०	दे०
१४५	६८०६	चंद्रोन्मीलन			मि० का०	दे०
१४६	३७५५	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या प्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वत- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द			
२१ × १२ ७ सें० मी०	१६	२२	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ × १५ १ सें० मी०	३ (१४-१६)	१३	४२	अपूर्ण	प्राचीन सें० १८ ६	इति ह्यग्नीद्राल्लेशके प्रधानयनाधिकार इति पंचमाधिकार समाप्त श्री त्रिवत् १८६६ तत्र थावण हृष्ट्या १० चद्र वासरे दपुस्तक निपत मित्र हरनदस्वा त्म पठनाथ शुभ मयल ददाति श्री- रस्तु ॥ अथ चद्र अवस्था लिख्यते ॥ (आदि)
११ × ८ ८ सें० मी०	६	६	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१८ ४ × १० ५ सें० मी०	८	८	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२६ ५ × ११ १ सें० मी०	७	१३	४२	अपूर्ण	प्राचीन	
२५ १ × १० ५ सें० मी०	४७ (१-४७)	६	३६	पूर्ण	आधुनिक	इति चद्रो मीलन समाप्तम ॥
२४ ८ × १२ १ सें० मी०	१०	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन	इति चद्रामीलने महागास्त्राणंब विनिगते मूल तत्राथ सबध प्रथम प्रकरण ॥ (पत्र सं० २)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की मर्यादा	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ विस- यस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१४७	१८३६	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०
१४८	६६१५	चंद्रोन्मीलनटीका			दे० का०	दे०
१४९	६६८५	चंद्रोन्मीलन टीका			दे० का०	दे०
✓ १५०	४२६७	* चक्रवर्त्नावली	यानुदेव		दे० का०	दे०
१५१	५१६२	चक्रवली			दे० का०	दे०
१५२	७६५४	चमत्कारचिन्तामणि	द्वैवन्तरामभट्ट		दे० का०	दे०
१५३	२७८८	चमत्कार चिन्तामणि			दे० का०	दे०



पत्री या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पत्रितसंख्या और प्रति पत्रित म आक्षरसंख्या	क्या यह पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्ण-मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स द	६	१०	११
२३३ × ११ सें. मी.	१० (१०-१६)	१० २६	अपू०	प्राचीन	
२८८ × १२ सें. मी.	१६ (१-१६)	१३ ४५	पू०	प्राचीन	
३०५ × १२ सें. मी.	१७ (१-१७)	१७ ५६	पू०	प्राचीन	इति चन्द्रोमीलन टीकाया भाष्यादियु जलनिर्णय सप्ताविंशति पटलः ॥
२८५ × १२५ सें. मी.	४ (१-४)	१० ५३	पू०	सं० १७१६	इति श्री वासुदेव कृता चक्र रत्नावली समाप्ता ॥ सवत १६१६ समये ज्येष्ठ सुदि एकादश्या रविवासरे नियत जगजीवन ब्रह्मचारिणा ॥
२६ × ११४ सें. मी.	२ (१-२)	१७ ५०	अपू०	प्राचीन	
१६ × १२४ सें. मी.	४० (२-४१)	१० १०	अपू०	प्राचीन सं० १६०३	इति श्रीमहेश्वररामभट्टनाथण विरचिते चमत्कार चिंतामणि ग्रहभावफलाध्याय प्रापाठ मासे कृष्णपक्षे तिथी ११ भृगुवामर सवत १६०३ मासे १७६८
२५२ × १०३ सें. मी.	१४ (१-१४)	८ २७	पू०	प्राचीन सं० १६२५	इति चिमतकार चित्वाभणि सपूर्णं सं० १६२५ मि० पौष वदि ५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तिमर्यादा या प्रवर्धितरीय की मर्यादा	ग्रन्थनाम	प्रथकार	टीकाकार	ग्रन्थ विषय वस्तु पर विषय है	विवरण
१	२	३	४	५	६	७
१५४	१०१८	चमत्कार चिन्तामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	३०
✓ १५५	५७६७	चमत्कार चिन्तामणि	नारायणभट्ट		३० का०	३०
१५६	७८८१	चमत्कार चिन्तामणि (सटीक)	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
✓ १५७	३६८२	चलनसिद्ध			३० का०	३०
१५८	२०६१	चिन्तामणि टीका			दे० का०	३०
१५९	$\frac{२५३२}{१७}$	चौरनामप्रश्न			३० का०	३०
१६०	१६७६	जामदीपक			३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठा का भावार	पत्रगणना	प्रति पृष्ठ मे पतिनामना और प्रति पति म प्रथमगण्या		क्या प्रथमपूण है ? प्रपूण है तो वन मान मम वा विवरण	मवाप्या और प्राचीनता	प्रथम आवश्यक्त विवरण
		स	द			
२६३ × ११३ सं० मी०	१३ (१-१३)	८	३३	पू०	सं० १६०२	इति श्री चमत्कार विनामसि सम्पूर्णम श्री सवत १६०२ नाम १७६७ मास मास शीत पत्र पृष्ठम्या रविनामर
२२ × १०५ सं० मी०	११ (१-११)	११	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री राज ऋषि (नारायण) रचित चमत्कार विनामसि नाम भावावश्याम ॥संपूण ॥
२७३ × ११४ सं० मी०	२० (१-२०)	११	३७	प्रपू०	प्राचीन	
१६८ × १०७ सं० मी०	३ (१-३)	१०	२७	प्रपू०	प्राचीन सं० १८३४	
३२ × ६ सं० मी०	७४ (२-७४)	७	४७	प्रपू०	प्राचीन सं० १६३६	
१३७ × ११५ सं० मी०	१ (१-२)	११	२६	पू०	प्राचीन	इति चौरनामप्रश्न ॥
३० × ११५ सं० मी०	१०० (१२ १४ ८० ८३ १०३)	६	४१	प्रपू०	सं० १६१८	इति श्री जम दीपव शास्त्रकार श्री हरि सुत सुत्रहृष्ट्या विर विरचित संपूण शुभमस्तु । सवत १६१८ के साल भाषाठ मुदि ३

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६७४	जन्मसमुद्र विवृति	नरचंद्रो पाध्याय		२० का०	२०
१६२	६७१	जन्मसमुद्र विवृति	नरचंद्रोपाध्याय		२० का०	२०
१६३	७३७	जन्मागपत्रावलि			२० का०	२०
१६४	८८६	जन्मजातक			२० का०	२०
१६५	४६२६	जातककर्म			मी०का०	२०
१६६	११४४	जातककर्म			२० का०	२०
१६७	४४१	जातककर्म पद्धति (बेशबी टीका)		बेशबी टीका	२० का०	२०

पत्नी या पुष्टो का शासन	पत्रसंख्या	प्रति पुष्ट म पविनसंख्या प्रौर प्रति पक्ति म यथा-मथ्या		कथा ग्रथ पूर्ण है ? अर्ग है ता वत मान पत्र वा विवरण	यवस्था और प्राचीनता	ग्रथ आवश्यक विवरण	
		स	द			१०	११
३०१×१६ सं० मी०	६ (१-६)	१३	५२	अ०	प्राचीन	इति नरच पाध्याय कृत्या जन्मसमुद्रोपनी वृत्ति रश्मि सभवादि वक्षणे प्रथम-प्रथम कृतान अथाता जन्म विधिनामा कृताना व्याख्यायत	
३२५×१६ सं० मी०	२४ (१२४)	१३	५८	अ०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री वागहट्टगदीया श्री गिह सूनि गिप्यशर शवर श्रीनरचद्रोपाध्याय कृत्या वृत्ति वद्राया सनाया जन्म समुद्र प्रश्न शतसरहाराया अष्टमकलाल नाभ सादि वागदीया प्रयोग लक्षणो नामष्टम कृतान समाप्ताय ग्रथ शुभ संवत् १८८१ ।	
३२५×१३ सं० मी०	१६ (२-१७)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति सक्षप जन्म पभावलीवनम शुभ मस्तु मंगल ददातु निप्यत देविसहाय विद्याधिपठनाय परपोत्र विप्लुदत्त का पोत्र मान सिंह का पुत्र वाहाद सिंह का संवत् १६०५ मासातमास चत मासे कृष्णपक्ष शुभ तिथि एकादस्या ११ तिब्रह्मी मध्य राम ।	
१४८×११८ सं० मी०	१० (१-१०)	६	१४	पू०	प्राचीन सं० १९१२	इति जन्मातक संपूर्ण समाप्तम् ॥ भूयात सं० १६१२ लिखित्वा मीनेकु ।	
२१६×८८ सं० मी०	१० (१-१०)	६	२४	पू०	प्राचीन सं० १८५९	इति श्रीजातकम समाप्तम् ॥ सम्बत १८५६ शाक १७२४ शमयपोषमाम कृष्णपक्ष तयोदश्या बुधवाशरे ॥	
१६×१२५ सं० मी०	२६ (१-१४) १६-२७)	८	१८	अपू०	प्राचीन		
२४×१० सं० मी०	६६	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति केशव पद्धति सोदाहरण समाप्ता ॥ रचनाकार—सं० १५४० लिपिकाल । १८३६ सम्मित विक्रमस्य	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतगणना वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	मूल्य
१	२	३	४	५	६	७
१६८	११४५	जातकचंद्रिका			दे० का०	२०
१६९	७६०९	जातकपद्धति	केशव देवज्ञ		२० का०	२०
१७०	१०९२	जातकपद्धति	श्रीपति		२० का०	२०
१७१	३१९७	जातकपद्धति			दे० का०	२०
१७२	२४४३	जातकपद्धति	केशव देवज्ञ		२० का०	२०
१७३	१४७४	जातकपद्धति	पारामर		२० का०	२०
१७४	१७३१	जातकपद्धति	केशव देवज्ञ		२० का०	२०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्ररूप्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्त मान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थ श्रीर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		व	म			
१६ × १२ सें० मी०	१३	१०	१६	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ १ × ८ ५ सें० मी०	६ (१-३ ६-८)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री कश्यप देवज्ञ विरचिते जातक पद्धती भावाध्याय ॥ (पत्र १-२)
३१ × १४ ८ सें० मी०	८६ (१-८३, ८६-८८)	१६	४८	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ ५ × १० ३ सें० मी०	११ (५-१५)	६	२६	अपूर्ण	प्राचीन	
२३ ४ × १० ३ सें० मी०	२७ (३-१५, १७-३०)	८	३४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ ७ × १० ६ सें० मी०	११ (१-११)	१०	३०	पूर्ण	प्राचीन सं० १८६०	इति पाराशर हृत जातक पद्धति समाप्ता ॥ सवत् १८६० चैत्रशुद्धि १२ चद्रवासरं लिखित ॥ .. .. सुब्रह्मण्य ॥
२० ३ × १० सें० मी०	६ (१-६)	११	३३	पूर्ण	प्राचीन सं० १८३६	इति श्री वेणव देवन विरचिता जातक पद्धति समाप्ता ॥ शवत् १८३६ शाने १७०४ वैशाख मास शुक्ल पक्ष त्रयो ३ चद्र वासरे शुभमस्तु मंगलददातु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकान्तर्गत शागतनव्या दा मप्रहविशेष की संख्या	प्र नाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
१७५	३००	जातकपद्धति	वेशव देवज्ञ	नारायण	३० का०	३०
१७६	२०३०	जातकपद्धति	भनत देवज्ञ		३० का०	३०
१७७	५८६२	जातकपद्धति उदाहरण	कृष्ण देवज्ञ		३० का०	३०
१७८	६२५१	जातकपद्धति व्याख्या			३० का०	३०
१७९	७०९७	जातकमंत्ररी	रघुनाथ		३० का०	३०
१८०	१०३३	जातकरत्नगार	यशिष्ठ		३० का०	३०
१८१	५७९४	जातक खनगुणप्रकरण			३० का०	३०



पत्रो या पृष्ठो या प्रकार	परिमण्य	प्रति पृष्ठ मे पवित्रमण्य श्रीर प्रति पक्ति मे प्रधारसप्त्या	क्या प्रथमं है ? प्रपूर्णं है तो वर्त- मान घण वा विवरण	प्रदत्त्या श्रीर प्राचीनता	अन्य धावश्यक विवरण	
अ	ब	स	द	९	१०	
२६ × ६६ सैं० मी०	४६ (१-४६)	१३	५२	पू०	प्राचीन सं० १७४५	इति श्री बल्लासदेवजात्मज गोविंद देवजगुत देवज नारायण वृता सोदा- हृनिने केशवीय जातक पद्धति व्यख्या समाप्ता ॥ सवत् १७४५ शके १६११ समये भाद्र पद विंशतिवदभृतेनेद पुस्तकम् लेखीति ॥ शुभ भूयाल्लख्य पठायो ॥
३५ × १५२ सैं० मी०	१८ (१-१५, १५-१७)	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०३ सैं० मी०	२५	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री बल्लास देवजात्मज कृष्ण देवजविरचिते श्रीपति भृतीय जातक पद्धत्युदाहरणे दृष्टि गणितोदाहरणम् । (पृ० १८)
२२ × १०३ सैं० मी०	२८ (१-२८)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ × ६५ सैं० मी०	१२ (१-१२)	६	३५	पू०	प्राचीन सं० १८३६	श्री रघुनाथ विरचिते जातकमञ्जर्या जातक प्रकरण प्रथम ॥ (पत्र ६० ३) सवत् १८३६ साकष १७०४ राम अपाठकृष्ण प्रतिपदा तिथौ बुधवासरे ॥ लिखित ठाकुर रामेण × × × ।
२८ × १३५ सैं० मी०	१० (१-१०)	६	३२	पू०	सं० १६०३	इति श्रीवशिष्ट वृत्त जातक भग्योदय- विचार वालक ज्ञानफलद दशमोप्याय १० मिति धावण शूदि ८ सं० १९०३ ॥
२० × १०५ सैं० मी०	४ (१-४)	११	२१	पू०	प्राचीन	इति जातक लग्न गुण प्रकरण ॥

क्रम सं. और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमस्या या मस्यत विशेष की संख्या	प्रथमान	प्रथवार	टीकानार	प्रथ विस दस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८२	६६३१	जातक विवरण			दे० का०	दे०
१८३	७०४१	जातकसार (सामुद्रिक)			दे० का०	दे०
१८४	६६५८	जातकसार			दे० का०	दे०
१८५	४०१२	जातकसारीद्धार			दे० का०	दे०
१८६	११६२	जातकाभरण	हुडिगज		दे० का०	दे०
१८७	३३६८	जातकाभरण	हुडिराज		दे० का०	दे०
१८८	२६८२	जातकाभरण			दे० का०	दे०

पक्ष या पृष्ठो वा कार	परिष्कार के तहत पक्ष पृष्ठों, ११ परिष्कार घोष प्रतिपत्ति रसि न घन ११ मे क्षणगतना विषय				परम्परा घोष प्रतिपत्ति	संख्या वाच्यता विभाग
	पक्ष	पृष्ठ	द	६		
१४४६३ सं० मी०	३ (१-३)	२८	४३	५०	प्राचीन सं० १७२७	इति श्री विद्यालय विरचिते भार- निपाद. गमात् सने १७२० पाप्मून X X X X X ॥
२५७४१० सं० मी०	१० (१-१०)	१०	४१	५०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री जातकारे सामुद्रिकादिने दृष्टवान् निशंघानाम् पाठोपपाय ॥ X X X X (पक्ष सं० ८)
२४४१०७ सं० मी०	३ (१-३)	१३	४७	५०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर महादे जातक- सारे संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ *****
३१४४११४ सं० मी०	८ (१-८)	१२	४०	५०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मसमे उमामहेश्वर महादे जातक सारोद्धार संपूर्णम् ॥ (पृ० ३)
२३७४११ सं० मी०	४०	१०	३१	अपूर्०	प्राचीन	
२३८४१०६ सं० मी०	२०२	१०	३०	अपूर्०	सं० १८३६	इति श्री सर्वजातक सारोद्धार संपूर्ण समाप्त शुभमस्तु सवत् १८३६ प्र थावण शुभन ३ ॥
२८३४१३८ सं० मी०	६	१३	४५	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
१८९	२९८५	जातनाभरण			२० का०	२०
१९०	५०३७	जातनाभरण	दुं डिराज		२० का०	२०
१९१	६०१३	जातनाभरण	दुं डिराज		२० का०	२०
१९२	२४७३	जातनाभरण	दुं डिराज		२० का०	२०
१९३	३०८	जातनाभरण	दुं डिराज		२० का०	२०
१९४	२९२४	जातनाभरण	दुं डिराज वंश		२० का०	२०
१९५	४६६५	जातनाभरण	दुं डिराज		२० का०	२०

पत्रा मा पृष्ठा ना साधार	पत्रा मा पृष्ठा ना साधार	प्रति पृष्ठ मे परिमाण्य पौर प्रति पृष्ठ ए साधारण्य		क्या एव पुर्ण ? पुर्ण ? वा वग. मान धन वा विवरण	सवण्या पौर प्राचीन	पत्र साधारण विवरण
		ग	द	१०	१०	१०
२१७ × १०३ सें मी०	६	८	२८	धू०	प्राचीन	
२३६ × १११ सें मी०	६ (१-१)	११	३८	धू०	प्राचीन	
३१ × ११५ सें मी०	२८ (१-२८)	६	३७	धू०	प्राचीन	
२३८ × १०० सें मी०	६६	६	२८	धू०	प्राचीन	
३१५ × १२५ सें मी०	३३	१२	४३	धू०	प्राचीन	इति जातवाभरणेऽ एव वषट्का- ध्याय = ?
२४३ × १०४ सें मी०	२	८	२६	धू०	प्राचीन	
३१३ × १५५ सें मी०	४४ (२-८, ११-१७, १६-४८)	१७	६७	धू०	प्राचीन म० १८६५	इति श्री देवज्ञ दृष्टिराज विरचिते जातवाभरणे स्त्रीजातनाभ्याय जातवाभरणे संपूर्ण ॥ सं० १८६५ सापाठ कृष्ण १३ बुधवासरे लिखितमिद पुस्तक मिश्रलक्षणा तत्सुत मूरतिघर स्वयं पठनार्थम् उनाशिवो- जयति ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविषय की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	४७८४	जातवाभरण	दुडिराज		३० का०	३०
१६७	४७८	जातवाभरण (ग्रहभावफलानि)	दुडिराज		३० का०	३०
१६८	५०५६	जातकालवार	गणेश दैवज्ञ		३० का०	३०
१६९	६७७२	जातकालवार	गणेश दैवज्ञ		३० का०	३०
२००	३७८४	जातकालवार	गणेश दैवज्ञ		३० का०	३०
२०१	$\frac{३०५६}{६}$	जातकालवार	गणेश दैवज्ञ		३० का०	३०
२०२	५६५४	जातकालवार	गणेश दैवज्ञ		३० का०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रमदया	प्रति पृष्ठ में पक्तिमदया और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पृष्ठ है? अपूर्ण है या वर्त- मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
द अ	ब	स	द	६	१०	११
२३६ x ११६ से० मी०	५७ (२-१७, १६- २५, २७-२८, ३०-३१, ३५- ३६, ४२, ४५- ४७, ४९, ५१, ५३-५६, ५८, ६३-६६, ६८, ७०, ७२, ८०- ८३, ८६-८८, ९५, ९७)	८	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री देवस्य दुःहगज विरचिते जानिका भरने हर्षपरनाध्याय ॥ (पत्रसं० ८०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०३	४३०३	जातवालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०४	१७३४	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०५	४३६	जातवालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०६	२४२१	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०७	२४०५	जातवालकार			दे० का०	दे०
२०८	६००४	जातवालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०९	३९८४	जातवालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकितसंख्या और प्रति पकित मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३२'५ × ११'६ सें० मी०	१० (१-१०)	७	३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२४'२ × १०'६ सें० मी०	७ (१०-१६)	१०	३७	अपूर्ण	प्राचीन सें० १८७१	
३० × १२'७ सें० मी०	१४ (५-१८)	१०	४०	अपूर्ण	प्राचीन	
२४ × १०'५ सें० मी०	२१	७	३८	पूर्ण	सें० १८८६	सवत १८६६ माघ वदि ६ ॥ श्री दुर्गायनम ॥
२५ × १२ सें० मी०	११ (१-११)	१२	३७	पूर्ण	प्राचीन सें० १८८३	इति श्री जातकालकारे भार्वाध्याय्यः समाप्त भाद्रे मासितिते पशोद्गादश्यां बुधवाप्तरे संवत् १८८३ ॥
२१'८ × ११'१ सें० मी०	५ (१, ६, १७-१६)	६	२३	अपूर्ण	प्राचीन	
२६ × १३'५ सें० मी०	६ (१-६)	६	३२	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सप्ताहविशेष की माया	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है		तिथि
					५	६	
१	२	३	४	५	६	७	
२१०	५११५	जातकालकार			दे० का०		दे०
२११	७०११	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०		दे०
२१२	५४८०	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०		दे०
२१३	६८१२	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ		दे० वा०		दे०
२१४	६८५४	जातकालकार (वशाध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० वा०		दे०
२१५	१०३७	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ	हरिभागु शुक्ल	दे० वा०		दे०
२१६	४१६७	जातकालकार (सटीक)	गणेश दैवज्ञ		दे० वा०		दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रतिपत्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		म	द			
२४४ × १०६ सें. मी०	६ (१-६)	६	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४४ × १०८ सें. मी०	२० (१-२०)	८	३०	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज्ञ विरचिते जातशा- लकारे वशाध्याय मंत्रम ॥ मयत् १८- २० अक्ष १७१४ श्री मन्त्रालिग- र्दनम् ॥
३०४ × १४२ सें. मी०	१० (१-१०)	८	४८	अपूर्ण	प्राचीन	
२३३ × १०६ सें. मी०	२८ (१-८, १०- २५, २७- ३०)	८	३५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री जातपालकारे टीपाया वशा- ध्याय समाप्तोप गय ॥
२३५ × ६६ सें. मी०	२१ (१-२१)	६	३३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री गणेश देवज्ञ विरचिते जातशा- लकारे वशाध्याय ॥
३१ × १४२ सें. मी०	२४ (१-२४)	१४	५०	पूर्ण	प्राचीन मं० १८६६	इति श्रीमच्छुभानाममंठमिमानुभा- विता जातशालकारे टीपाया मं० १८६६ शाके १७६१ पाठस्य कृपया मन्त्रमि ७ अक्षरान्तरे ६६ पुरातनं तिथिन अक्षर न्यय पठनायम् उमानियो अयनि निवापनमयु ॥
३४५ × १३५ सें. मी०	१० (१-१०)	१२	२६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री जातशालकारे मशाध्यायः प्रथमः । (पत्रसं० १-३) × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संप्रह्वविशेष की संख्या	प्रयत्नाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	प्रयत्न किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	७६६६	जातकालकार सटीक	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१८	७४१२	जातकालकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१९	३५३५	जातकालकार टीका		हरिभानु	दे० का०	दे०
२२०	६९४३	जातकालकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२२१	३८१५	जातकालकार सूचीपत्र			दे० का०	दे०
२२२	६६०४	जैमिनि उपदेशमूल			दे० का०	दे०
२२१	२५६३	जैमिनि उपदेशमूल	जैमिनी		दे० का०	दे०

पत्रो वा पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या	क्या ग्रथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
घ	व	स द	६	१०	१०
३२३ X १४४ से० मी०	२८ (१-२८)	११ ४४	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति हरिभानु शुक्ल वृत्ता जातवालकार व्याख्या समाप्ता शुभमस्तु सवत् १८८० फाल्गुण कृष्ण १२ गुरो थी ॥
२६५ X १०३ से० मी०	२०	१५ ४०	पू०	प्राचीन (हृमि वृत्ति)	इति श्री जातवालकारे टीकाया वकाश्याय समाप्तोऽयं शुभमस्तु सवत् १८२७ शान १७६२ पोष X X ॥
२६२ X १२६ से० मी०	२७ (१-२७)	१३ २०	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री मच्छुबलापनामक हरिभानु-भाविता जातवालकार टीका समाप्ता सवत् १८८३ शाने १७४६ अश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ११ बुधवासरे ॥
२६४ X ११२ से० मी०	३४ (१-३४)	१० ४५	पू०	सं० १६०८	इति श्री गणेश देवशारचिने जातक लकारेवशाध्याय समाप्तः श्री ३ सवत् १६०८ माघमासे कृष्णपक्षे गुरुवासरे लिखित ***** ॥
२७७ X १४ से० मी०	१० (१-१०)	१६ ३४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मालकार प्रकरणे समाप्त शुभमस्तु मंगल ददातु ॥
२७१ X ११५ से० मी०	१६ (१-१६)	६ २६	पू०	प्राचीन	इति जैमिनीयदेश सूत्रे चतुर्थाध्याये चतुर्थं पाद ॥४॥' ...
२६२ X १२२ से० मी०	११	१० ३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम बन्धु पर निष्ठा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
२२४	७६६७	जैमिनि सूत्र			दे० का०	दे०
२२५	६६१३	जैमिनि सूत्र (मटीक)		नीलकण्ठ दंडवज	दे० का०	दे०
२२६	६६०६	जैमिनि सूत्र (मटीक)			दे० वा०	दे०
२२७	३०२८	जैमिनि सूत्र वृत्ति		कृष्णानन्द मरस्यती	दे० वा०	दे०
२२८	४२५७	जैमिनि सूत्र व्याख्या		नीलकण्ठ (व्याख्याकार)	दे० पा०	दे०
२२९	६५४४	ज्ञानदीपिका			दे० वा०	दे०
२३०	६६०९	ज्ञान प्रदीप			दे० वा०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	ग्रंथस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१७२ × १११ सें. मी०	२	१०	२०	अपू०	प्राचीन	इति जैमिनिमूत्रम् ॥
२७२ × १११ सें. मी०	३१ (१-३१)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकण्ठ ज्योतिर्विद्विरचिताया जैमिनि सूत्र व्याख्याया सुभाषिन्या द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ श्री शाक रस सप्तमपत्रमिते नपाल खडे वरे श्री श्रीमद्राजगिन्नुपायन वरे राज्य प्रकुर्वन्ममी ॥ रेन्मी श्री जय शर्म मुरि तनुज श्री नीलकण्ठोजि शास्त्रे जैमिनिना कृते सुविवृति भूषाशया व्यासरोत् ॥
२७७ × १११ सें. मी०	२४ (१-२४)	१७	४७	पू०	प्राचीन	इति जैमिनि सूत्रे तृतीयाध्यायस्य तृतीय पाद ॥३॥
२६३ × १०४ सें. मी०	८१ (६-८६)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२ सें. मी०	१४ (१-१४)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री नीलकण्ठज्योतिर्विद्विरचिताया जैमिनिमूत्र व्याख्याया सुभाषिन्या प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ X X X
२१२ × ७६ सें. मी०	२१ (१-२१)	८	२४	पू०	प्राचीन	ज्ञान दोषिना समाप्ता ॥
२७४ × ११७ सें. मी०	२५ (१-२५) (एक विविट पत्र)	६	४०	पू०	प्राचीन ६०१६२६	इति श्री ज्ञान प्रदीप केरवीर्य वार्ध निदि कथननाम काठ समाप्त ॥ सं० १६०६ पत्र १०६४ मार्ग शेषं X X X

क्रमिक पीर विषय	पुस्तकानाम की प्रागतमन्त्रा वा मप्रहविनेप की मन्त्रा	प्रथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ विस वस्तु पर निघा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२३१	४७६८	ज्ञानप्रदीपक			२० का०	२०
२३२	$\frac{४५३४}{२}$	ज्ञानबोधिनी	नंदलाल		२० का०	२०
२३३	१६७७	ज्ञानभास्कर			२० का०	२०
२३४	६५४५	ज्ञानमजरी	ऋषि शर्माचार्य		२० का०	२०
२३५	१२८६	ज्ञानमजरी			२० का०	२०
२३६	६४३६	ज्ञानस्वरोदय			२० का०	२०
२३७	६७०	ज्यौनिक सार जातक			२० का०	२०



पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ से पवितसंख्या और प्रति पक्ति से अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थ की प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५४×१० सें० मी०	२६ (१-२६)	८	३३	पू०	सं०१७५४	इति ज्ञान प्रदिपके समाप्त ॥ ... .. सवत् १७५४ समये कार्तिके ...
३०५×१२२ सें० मी०	५६ (१-५६)	१०	५७	पू०	सं०१८१६	इति श्री मिथशिवराममुत्तनदत्ताल विर- चिताया ज्ञानबोधन्या सव सरनाम ॥ ज्ञानबोधनी समाप्ता शुभमस्तु श्री कृष्णा- र्पण मस्तु सवत् १८१६ मार्गवदि ३० शोबहलिखितमिद पुस्तक कालू चतुर्वे- दिन राम ॥
३०५×१२ सें० मी०	४८	१०	२८	पू०	सं०१६१८	सवत् १६१८ के सात ... १५ वा ॥ लिखित लाल वृज लाल ॥ ...
२४७×६५ सें० मी०	२१ (१-२१)	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रेणि शर्माचार्य विरचितताया ज्ञान- मज्जामक्षर प्रथम विद्या समाप्ता ॥१॥
२२६×११ सें० मी०	३२ (२-३३)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्ञानमन्त्री समाप्ता ॥
२३२×१२३ सें० मी०	२२ (१-२२)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वरगवादे ज्ञान स्वरो दप समाप्तम ॥ मोनि द्विनिप पापद कृष्ण ११ एवादेश्य इदुवावर सवत् १८८४ बीहारी नाम गवतारे उदगयन धाम कनु सन्नि पुम्नह समाप्त मुकाम जावा । इति श्री ग्यातिहगार जाकर समाप्त विहित सधमी नाप भट्ट गान्ध्या ॥
२५५×१०५ सें० मी०	४ (१,२,५,६)	६	१२	अपू०	प्राचीन	
(म० मू० ७५)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संप्रतिविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम वस्तु पर निर्यात है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
२३८	७८८०	ज्योति प्रबोध	केशव		२० का०	३०
२३९	३५२१	ज्योतिविदाभरण			२० का०	३०
२४०	२९९३	ज्योतिष कल्पतरु			२० का०	३०
२४१	११९०	ज्योतिषकल्पतरु			२० का०	३०
२४२	३०११	ज्योतिषकल्पतरु	सूडामणि		२० का०	३०
२४३	३०१६	ज्योतिषकल्पतरु			२० का०	३०
२४४	३०१७	ज्योतिषकल्पतरु			२० का०	३०

पत्रा गा पुळो का प्राकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमध्या और प्रति पक्ति म अक्षरमध्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कट मान अंग का विवरण	धवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७७×११३ सें. मी०	७ (१-७)	८	४३	पू०	प्राचीन	
३०८×१५८ सें. मी०	६	११	४६	अपूर्ण	प्राचीन	
२४३×१२६ सें. मी०	४१	१०	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
२४×६७ सें. मी०	७७	८	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
२८१×११६ सें. मी०	८३ (१-८३)	६	३४	पू०	प्राचीन शाक१५५०	घावे शून्य सरेपु शीत विरणे १२५० वैशाखमासे " इति श्री कवि चंडा मणि चमरति विरचित ज्योतिषरत्न तरी जातक स्वधे द्वात्रिंशोऽध्याय ३२ शुभमस्तु ॥
२७६×११५ सें. मी०	२२५ (१-२५)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री ज्योतिष कल्पतरी जातक स्वधे विदशा यागिनीदत्ता कथन नाम परिवर्तनोऽध्याय श्री सवन १८८२ माघ मास शृङ्गाशे तिथी १ मीम- वानर त्रिपिनदिद पुस्तक छत्रपुर मध्य " " ॥
२५८×१३१ सें. मी०	१८ (१-१८)	१३	३६	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष कल्पतरी मून सभदे तृतीयाध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	विवि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	३४२२	ज्योतिष कल्पतरु	चूडामणि		६० का०	६०
२४६	७३२४	ज्योतिषवीमुदी (प्रश्नप्रकरण)	नीलकण्ठ		६० का०	६०
२४७	१२२६	ज्योतिषवीमुदी	नीलकण्ठ		६० का०	६०
२४८	२७५३	ज्योतिष ग्रन्थ			६० का०	६०
२४९	१६६६	ज्योतिषप्रश्निका			६० का०	६०
२५०	१०१५	ज्योतिष जातक			१० का०	६०
२५१	३४८६	ज्योतिषतन्त्र (ज्योतिष प्रश्न)	चिंतामणि		३० का०	६०

पत्रा या पृष्ठो वा धावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्रिसंख्या और प्रति पति मे अक्षरसंख्या		ज्याअथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है ता वत मान अत्र वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य दावपत्रक विवरण
		स	द			
२३७×१० सें० मी०	६२१	७	३७	अपूर्०	शाक १५६५	शाक पंचान वाणदी १५६५ बंशाखे मुमुक्षुसरे ॥ पंचम्या शुक्ल पक्षेतु श्री मद वृ दावनातरे ॥ ... .. इति श्री वशि चूडामणि विरचिते ज्योतिषकल्पादीमिश्र स्वधे उपसहारो नाम पंचविंशो समाप्तश्चाय स्वव ॥ श्री ॥
२४४×१० ३ सें० मी०	३	८	३०	अपूर्०	प्राचीन सं० १८३६	इति श्री नीलकण्ठरचित ज्योतिष कौमुद्या प्रश्न प्रकरण ॥ सं० १८३६ मितौ बंशाख कृष्ण द्वितीया २ शनौ लिखित हरीछम दीक्षित × × × ॥
२४५×१० ६ सें० मी०	३७ (१-३७)	८	३३	पूर्०	सं० १८७७	इति श्री नीलकण्ठरचित ज्योतिषकौमु द्या प्रश्नप्रकरण समाप्तम ॥ सवत १८४७ ॥ निनि आपाठ शुदि द्वितीया भोमवामर ॥ श्री ॥
२१२×८१ सें० मी०	५ (१-५)	७	२३	पूर्०	प्राचीन	इति ज्योतिष ॥ ... ..
२०×१० सें० मी०	६	८	२७	पूर्०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष चंद्रिकाया पत्राया- न्व्यो प्रथम प्रकाश ॥ ॥ श्री रस्तु ॥
२५५×११ ६ सें० मी०	२३	६	२६	पूर्०	सं० १६८८	समत समत १६८८ समेनामनीति जेठ मुकुला द्राष्टम्या रविवासर ॥
२७ ६×१२ ५ सें० मी०	२० (१-२०)	१०	३६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्री देवत चूडामणि श्री मन्महा- राज वदित पादावुज सिध्द जनाना- दशायि सबविद्याकुशलशास्त्रमुकृतथम श्यामचिंतामणि पंडितवर्य विरचिताया ज्योति शास्त्रे प्रथम तत्र संपूराम ॥ (पृष्ठ संख्या-१३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	२५१५	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	१०
२५३	२६५	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	१०
२५४	२०६५	ज्योतिष यत्र संग्रह			दे० का०	१०
२५५	६८४८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	१०
२५६	५०८१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	१०
२५७	२८६७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	१०
२५८	४४३७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	१०

पन्ना या पृष्ठा का संख्या	पत्रमन्था	प्रति पृष्ठ म पक्तिवन्था और प्रति पति मे प्रमन्थवन्था		क्या प्रथम पृष्ठ है ? मनुष्य है ता वत मान प्रथम का विवरण	ध्वरथा और प्राचीनता	प्रथम आवरण विवरण
		स	द			
८६	४	१०	४१	६	१०	११
२५५ × ६५ सें. मी०	२०	१०	४१	अपूर्०	प्राचीन	
३० × १३ सें. मी०	४ (१-४)	११	३५	पूर्०	प्राचीन	
१३८ × ८७ सें. मी०	२५	११	१६	पूर्०	प्राचीन	
२४८ × १०६ सें. मी०	२६ (१-२६)	११	५३	पूर्०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट विरचिताया ज्योतिपरलमाला समाप्त -
२३४ × ११४ सें. मी०	६ (३६१२ २०)	१३	३८	अपूर्०	प्राधुनिक	इति श्री श्रीपल भट विरचिताया ज्यातिरत्नमालाया महूत प्रकरण × × × (१० १०)
२३४ × ८३ सें. मी०	५२ (१-५२)	७	२८	पूर्०	प्राचीन न० १७७५	इति श्री पति भट्टविरचिताया ज्यानिप रत्नमालाया देवप्रतिष्ठा प्रकरण विग्रहनिम समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ समत १७७५ शक ॥ १६४० ॥ नमये पोष शुदि ७ मन्थमी गुरोरह ॥ राम ॥ राम ॥
२६ × १०४ सें. मी०	३५ (२८ १३ १८ २२ ३० ३० ४१ ४१ ४३ ४५ ४७ ४९ ५३ ५४ ५६)	५	३०	अपूर्०	प्राचीन	इति था आपति विरचिताया ज्योतिप रत्नमालाया योग प्रकरण चतुय × × (५० १४)

प्रमाण और विषय	पुस्तकान्त की आगतसंख्या वा राश्ट्रविशेष की मन्था	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीमावार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२५६	१३७१	ज्यातिय रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६०	३१५०	ज्योतिय रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६१	५३०८	ज्योतिय रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६२	६५४६	ज्योतिय रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६३	७३६	ज्योतिय रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६४	४८१०	ज्योतिय रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	४८३२	ज्योतिय रत्नमाला (तन्त्रप्रकरण)	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०



पत्रो वा पृष्ठा वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है?	भवस्या और प्राचीनता	अन्य प्रावश्यक विवरण
		म	द	प्रपूर्ण है तो यत् मान अक्ष वा विवरण		
८ अ	८	म	द	६	१०	११
२४५ × १५ से० मी०	२६ (२-२७)	१४	३८	अपूर्०	प्राचीन	
२४ × १० ३ से० मी०	२५ (१-२५)	१०	३६	अपूर्०	प्राचीन	
२३ ६ × ११ ५ से० मी०	८ (२-७, ८-१५, १६)	१३	४६	अपूर्०	प्राचीन	इति श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष- शास्त्रमालाया लग्न प्रकरणं ॥ (५० १६)
२७ ८ × १० २ से० मी०	३१ (१-३१)	६	३६	पूर्०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिषपरत्नमालाया लग्न प्रकरण द्वादश ॥
२५ ३ × ११ ५ से० मी०	६६ (२-६७)	७	२५	अपूर्०	प्राचीन	
२२ × ८ ४ से० मी०	४७ (२-४४ ५०-५२)	६	३३	अपूर्०	१० १८ २७	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष रत्नमालाया सुर प्रतिष्ठा प्रकरणं ॥ सबत १८२७ मार्ग सुदि १२ वृश्चिक पुस्तक लिखित भोद्वरामेख स्वपाठार्थे ।
२७ ५ × ११ ५ से० मी० (१०-५० ७६)	३६ (१-३६)	८	३२	पूर्०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष रत्न मालाया लग्न प्रकरणं द्वादशम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आमतसग्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	दिनि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	६१३७	ज्यातिपसग्रह			दे० का०	दे०
२६७	७०५३	ज्यातिपसग्रह			दे० का०	दे०
२६८	१६२०	ज्यातिपसग्रहिका			दे० का०	दे०
✓ २६९	६१६३	ज्योतिषसार	नरचंद्र		दे० का०	दे०
२७०	४६०८	ज्यातिपसार			दे० का०	दे०
✕ २७१	१७७४	ज्यातिपसार			दे० का०	दे०
२७२	४२७९	ज्यातिपसारसग्रह ( वातवाधर )	मुजादिय		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो वा आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिभरया श्लोक प्रति पक्ति म अक्षरसंख्या		क्या अर्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त मान अर्थ ता विवरण	अग्रगत्या श्लोक प्राचीनता	अर्थ आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
१६८ × ७७ ५ सं० मा०	६	७	२०	अपूर्ण	प्राचीन	
१७७ × ८६ सं० मी०	६१	८	१८	पूर्ण	प्राचीन	
२१ × १६ सं० मी०	३२	१६	१५	अपूर्ण	कृमि तित	
२५ २ × १० ३ सं० मी०	८	१६	४५	अपूर्ण	प्राचीन	अहत जिन नत्वा नारवद्रणधीमता सार भुध्रमते किञ्चि चातिप श्लोक नारध ॥१॥ स्वरस्वती प्रसादनय त्वा द्वार दृष्यन् । वरिष्य नरवद्रोह । मुखात्वा वाध देतव ॥२॥ (प्रारभ)
२३ ८ × १६ ३ सं० मी०	७ (१-७)	१२	२२	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६११	इति जात्रोसारसास्त्र समाप्त सवत् १६११ शौर्यमुद्राद्विताम मुह वासर तादिन समाप्त सुभमस्तु मंगल दशात ।
२४ × १२ ४ सं० मी०	५ (२-६)	११	३८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री जात्रिकसार सास्त्र समाप्त संपूर्ण चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयो ७ भृगु वासरे मदन १८७६ निव्यत प धार छरिया जुगन परमाद सेवक कृष्ण के ॥
२३ × ६७ सं० मा०	१२ (२-७, १३, २१-२५)	८	३१	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८५३	इति श्री मुजादित्येन विप्रेन ॥ विर- चित् जातिप सार सप्रहा वालवोप- कावसारसग्रह संपूर्ण । मवत ॥१८ ॥५३॥ प्रभौताम सप्तशरे ॥क्वार मास शुभ्ये शुक्ल पक्ष त्रियादसी शुक्लवासर * * *

क्रमांक और विषय	पुस्तकानाम की श्रावणतगम्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विसयस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	१३२६	ज्योतिष सारसग्रह			३० का०	३०
२७४	१६३६	ज्योतिषादि सग्रह			३० का०	३०
२७५	७१३४	ताज्वबसार			३० का०	३०
२७६	६६२६	ताजिब (द्वादश ग्रहफन)			३० का०	३०
२७७	५५२५	ताजिक नीलकठी	नीलकठ		३० का०	३०
२७८	२०४५	ताजिब नीलकठी	नीलकठ दैबस		३० का०	३०
२७९	५८८३	ताजिक नीलकठी	नीलकठ भट्ट		३० का०	३०

पत्रा या पृष्ठा का आन्तर	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पत्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरमर्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान अंश का विवरण	ग्रन्थशा श्रीर प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
८ अ	८	स	द	९	१०	
२३७×११ सें० मी०	१७ (१-१७)	८	४५	अपूर्०	प्राचीन	इति ज्यातिष सार सग्रह नाम नक्षत्र गोघान गुरु रवि शुद्धिनाम द्वितीया- स्तवक ॥२॥ ( पत्र संख्या-७ )
१७५×१२ सें० मी०	२२	१६	१५	अपूर्०	प्राचीन	
२४४×१०१ सें० मी०	३१ (१-३१)	१०	३२	अपूर्०	प्राचीन	
१६×६३ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२०	पूर्०	प्राचीन से० १७५३	ईति राहुफल ईति तानिक द्वादश भुवन घटान फल समाप्त श्री शुभमस्तु यादृष्ट पुस्क दृष्टवा तादृष्ट लीपति मया × सवत् १७५३ मास सा० ॥
२४८×१०७ सें० मी०	४४ (१-४४)	८	३४	अपूर्०	प्राचीन	
३३१५×२ सें० मी०	३	१३	४१	अपूर्०	प्राचीन	
२२५×१०५ सें० मी०	१० (१-२, ४- ११)	६	४३	अपूर्०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या वा संप्रतिविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२८०	६८१०	ताजिब नीलकठी	नीलकठ देवना		१० का०	३०
२८१	६६६२	ताजिब नीलकठी	विश्वनाथ देवना		१० का०	३०
२८२	२७२०	ताजिब नीलकठी	नीलकठ		१० का०	३०
२८३	२७२८	ताजिक नीलकठी	नीलकठ भट्ट		३० का०	३०
२८४	१२८०	ताजिक नीलकठी	नीलकठ देवना		३० का०	३०
२८५	४६०	ताजिक नीलकठी	नीलकठ देवना		३ का०	३०
२८६	२४६३	ताजिक नीलकठी			३ का०	३०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रमख्या	प्रति पृष्ठ म पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो धन मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अथ आवश्यक विवरण
		स	द			
२४२×१०६ सं० मी०	२८ (१-२८)	१०	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
३२०×१२५ सं० मी०	५६ (१-५६)	१०	४२	अपूर्ण	प्राचीन	इति देवाकर देवनात्मज विश्वनाथ देवन विरचित नाटक ज्योतिर्वि क्लृप्त सनातन पाठशालाभाष्यस्य व्याख्यो वाहति समाप्ता ॥ (पृ ४६)
२३३×११६ सं० मी०	२५ (१-२५)	६	३४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री नीलकण्ठाय विरचिते नील- नदीताजक संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२४२×१२४ सं० मी०	२१ (१-२१)	११	३८	अपूर्ण	प्राचीन	
३१५×१२ सं० मी०	६ (१-६)	६	४५	अपूर्ण	प्राचीन	
१८६×१५२ सं० मा०	२६ (१-२६)	१३	३४	पूर्ण	सं० १६०६	इति श्री नीलकण्ठ विरचितताजक समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददानु सवत १६०६ शके १७७४ पीप कृष्ण अष्टम्या चंद्रवासरे निखिल मिश्र शिवदयाल श्री ॥
२४५×६८ सं० मी०	३१ (३४७६ २६३१३३)	८	२६	अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और दिवस	पुस्तकानाम की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किम वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८७	३३०६	ताजिक नीलकठी			दे० का०	दे०
२८८	४१२४	ताजिक नीलकठी	नीलकठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८९	१७४१	ताजिक नीलकठी	नीलकठ देवज		दे० का०	दे०
२९०	५२४५	ताजिक नीलकठी (वपतत्र)	नीलकठ		दे० का०	दे०
२९१	६५४८	ताजिक नीलकठी (वपतत्र)	नीलकठ देवज		दे० का०	दे०
२९२	४८३	ताजिक नीलकठी	नीलकठ देवा		दे० का०	दे०
२९३	७०१३	ताजिक नीलकठी (गणपत्र)	नीलकठ		दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपत्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत-मान अक्षर वा विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द	६	१०	
२३ ६ × ११ २ सं० मी०	१८ (१-१८)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं० १७७८	शके नदाभ्रवाण्डुमित आश्विन मासके । शुक्लेष्टम्या..... सप्तत् १७७८ शाके १६५३ कातिक शुक्ल पंचमी रवि वासरे समाप्त पुस्तक ॥ राजक नील कठी लिखित..... ॥
२६ × १३ सं० मी०	३७ (३-३७, ३६-४२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२५ ३ × ११ सं० मी०	७० (१-२२, २५-२६, ३०- ३२, ३५ ५०, ५६-६२, ६६- ७२, ७६, ७६- ८८, ९२-९६)	५	२८	अपू०	प्राचीन	
२७ × १३ ६ सं० मी०	२५ (१-२५)	११	३०	पू०	१५०६ रत्नाकर-शाव- निर्णयान-सप्त- १८६६	शके नदाभ्रवाण्डु ॥ १५०६ ॥ मिति आश्विन मासके शुक्लेष्टम्यामनुग्रय नीलकठ वधाकरोत ॥ इति श्री काशी निवासि नालकठ विरचित वप त द्वितीय समाप्त ॥ श्री सं० १८६६ ॥ तत्रवर्षे महामागल्पप्रदे मासोत्तमे मासे फाल्गुनमास शुक्ले पक्षे शुभ तिथी एकादश्या ११ शुक्रवासर
२४ ७ × १० ५ सं० मी०	२८ (१-२८)	६	३०	पू०	प्राचीन	शके नदा वाण्डुमित आश्विन मासके शुक्लेष्टम्या वप तत्र नीलकंठवृषो ऽकरोत ॥ ५ ॥ शुभभवतु लीखित वास देव ह्यस ॥
३० × ११ ५ सं० मी०	२७	११	५०	पू०	सं० १८३८	इति वप तत्र सपूर्ण ॥ सं० १८३७ शाके ७०२ मासोत्तमेमास अस्वत्त मासे । शुक्ल पक्ष । पुष्य तिथी दसम्याया । १० । रव वासरे । लिपत जोत गराम पुत्र राम प्रसादवा । नाग वाण । शुभ । शुभ श्रीरामजी सदा सहाय । सरस्वति नम ॥ शुभा ॥
२४ ६ × ११ १ सं० मी० (मंस० ७७)	१८ (१-१८)	६	३०	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री नीलकठया सजातत्र समाप्त + + सं० १८८२ समाप्त + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार	ग्रथ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६४	४६६	ताजिक ( मजा तन्न ) (मटीव)		समरसिंह	२० का०	२०
२६५	६१४७	ताजिक नीलकठी (सजा तन्न)	नीलकठ दैवज्ञ		२० का०	२०
२६६	१४६	ताजिक नीलकठी (सजातन्न प्रकाशिका टीका) उत्तरार्ध	नीलकठ दैवज्ञ	विश्वनाथ	२० का०	२०
२६७	२६४	ताजिक नीलकठी	नीलकठ दैवज्ञ	दिवाकर दैवज्ञ	२० का०	२०
२६८	२६८१	ताजिक नीलकठी (संस्कृतटीका)	नीलकठ दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	२० का०	२०
२६९	५८०	ताजिक नीलकठी (संस्कृतटीका)			२० का०	२०
२७०	२६९	ताजिक नीलकठी (स० टीका) गिनुबापनी	नीलकठ दैवज्ञ	माधव	२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रसंख्या और प्रति पत्र मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थ और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३२५ × १४५ सें. मी.	१३ (२-१४)	१४	४४	अ०	स० १६०७	***समरसिंह कृत ताजिक तत्रे स्फुट प्रकटार्थमुक्तमस्ति** (पृ० ६) इति हर्षस्थान विचारयेत् लौघ्यतराम गोपाल चुलडये कापडपावासमध्य स० १६०७ पृ० ४० १३ ॥
२५ × १०४ सें. मी.	२३ (१-२३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री देवज्ञानतमूत नीलकण्ठी विरचित राज्ञा तत्र समाप्त ॥ दद पुस्तके दिनि तमाण वेश्वर ज्योतिर्विदी
२४५ × १०१ सें. मी.	७४	१२	३१	पू०	प्राचीन स० १५५१	अकारिविश्वनाथेन सजातव प्रकाशिता ॥ टीकाटीकाकृता क्यारितज्ञानज्ञानुवधनम् ॥१॥ चन्द्रवाण शरचन्द्र १५५१ सम्मिते हायनेनृपतिशलिवाहन । मार्गशीर्षसित पञ्चमी तिथी विश्वनाथ विदुषा समापिता ॥२॥ गादावरीतटे भाति गोलग्रामोऽति सुन्दर ॥
३१७ × १२७ सें. मी.	२२ (१-२२)	११	४१	पू०	प्राचीन स० १६१६	इति श्री दिवाकर देवज्ञ विरचिते श्री नीलकण्ठ ज्योतिर्विदित कृत सजातवे पचाशत्सहस्र सहित समाप्तम् तीया ध्याय सवत् १६१६ मार्गशिर शुक्ला ३ चन्द्र वासरे लिपि कृत आनदि रामान्तज विहारिण मोरशाध्य वासिना शुभम् ॥
२७२ × १५६ सें. मी.	१३	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर देवज्ञात्मज विषय नाम देवज्ञ विरचित नीलकण्ठ ज्योतिर्विदकृत सजातवे सहस्राध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ता ॥
२७ × ११७ सें. मी.	१२ (१-१२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३१७ × १२८ सें. मी.	३३ (१-३३)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की अग्रभण्डसूची वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३०१	२२८	ताजिक नीलकंठी (१-२ तत्वम्)	नीलकंठ देवज्ञ		दे० का०	दे०
३०२	१७१०	ताजिक भाव विचार			दे० का०	दे०
३०३	१०६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० वा०	दे०
३०४	६६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० वा०	दे०
३०५	५२३७	ताजिकगार	हरिमट्ट		दे० वा०	दे०
३०६	७८६	ताजिकगार			दे० वा०	दे०
३०७	७५७	ताजिकगार			दे० वा०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अक्षर का विवरण	ग्रन्थस्य और प्राचीनता	ग्रन्थ गावययव विवरण
		स	द			
८ अ	व	स	द	६	१०	११
२७ X ११ सं० मी०	२६ (१-१२, १-१३)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति नीलवट्या द्वितीतत्र समाप्त लिखित हर. राम दीक्षितमराठेले करेण स्वायं ॥ शुभभूयानलेखक पाठवाना ॥
२५ X ११ ए सं० मी०	२३ (१-२३)	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १८२६ श० १६६१	*** **सवत् १८२६ शके १६६१ वैशाख सुदि १ ॥
२५ X ६१ सं० मी०	२४ (१-५५)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १७५५ श० १६२०	इति श्री महर्षि वज्र दु द्विराजात्मज गणेश देवजविरचितेता जिप्र भूगणा भोजन चिन्ताकवंस ॥ समाप्ता य ग्रंथ ॥ समाप्त । शुभमस्तु ॥ सवत् १७५५ शके १६२० प्रथम ज्येष्ठ वदि १३ गुरु-वासरे मुकुन्दपुर नगरे श्रीमहाराजा अबधूतसिंह देवस्य पुस्तक लिखित निद । श्रीमिश्रन्त हनुमनेन ॥
२६ X १५ सं० मी०	१७ (१-१०)	१५	४४	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री महर्षि वज्र दु द्विराजात्मज गणेश-गणेश विरचिते ताजिव नृपणे भोजन चिन्ता विचारार्थ्याय ॥ समाप्तोपय ग्रंथ उमाशिवयोजयति प्रातस्तत् सवत् १८६६ चैत्र शुक्ला १३ पत्रदिने लिखितनिद पुस्तक मिश्र मुरतिधर स्वय पठनायंम् श्री ॥
२६ X ११ ए सं० मी०	३५ (१-३५)	६	३७	पू०	सं० १७७८	इति श्री हरिभट्ट विरच्यते ताजिनसारे दिनप्रकरण समाप्त भवत् १७७८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पछे १ प्रतपदाम्मे ताजिन सार .....
३५ X १२ सं० मी०	१६ (२, ६-२०)	६	६२	अपू०	प्राचीन	
२६ X १० सं० मी०	८ (२, ६, ११, १५-१७, ३२, ३५)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०८	४२७२	ताजिकसार	हरिहर भट्ट		दे० का०	दे०
३०९	७५९८	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३१०	७६२६	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३११	$\frac{१०५५}{३}$	तिथि ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०
३१२	५९००	तिथितत्व दर्शन (तिथि निर्णय)	शिवगोविन्द पंडित		दे० का०	दे०
३१३	५१११	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
३१४	$\frac{२५३२}{१७}$	तिथिनिर्णय			दि० का०	दे०

पत्रों या पन्नों का प्रकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पत्र संख्या और प्रति पत्र में अक्षर संख्या		क्या प्रयुक्त है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्षरों का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १० सं० मी०	४ (१-४)	६	३७	अपूर्ण	प्राचीन	
२० × ४६ सं० मी०	४६ (१-४६)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	इति श्री राजक शारे मिश्रभावाध्याय ... .. (पत्र संख्या ४६)
१६७ × ११८ सं० मी०	२७ (१-२७)	१५	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १८४१	इति श्री हरिमठ विरचित नाजिकसार सं० १८४१ आगे १७०६ मिति आपाद कृष्णामाया गुरु वासरे
२० × १० सं० मी०	४ (१-४)	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
३० × १२३ सं० मी०	११ (१-११)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १६१६	इति श्री मद्रासचंद्र चरणारविंद मजि- मकरद मधुपेन शिवमोविंद पंडितेन विरचित तिथितत्व दर्शन नाम तिथि निर्णय समाप्त शुभमस्तु शुभमूयात् सं० १६१६ के साल अश्विन वदि ...
२२ × १० सं० मी०	४ (४-६,६)	८	२१	अपूर्ण	प्राचीन	
१३७ × ११५ सं० मी०	२३	६	२४	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०१	सं० १६०२ के साल मिति पत्रवदि ३० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१५	२३१	तियिपत्र			दे० का०	दे०
३१६	$\frac{२५३२}{१७}$	तियि प्रकाश			दे० का०	दे०
३१७	७६४६	तियिप्रकाश निर्णय	गगाधर		दे० का०	दे०
३१८	२३५०	तियिराशि शुभाशुभ विचार			दे० का०	दे०
३१९	२४७	० तियिमशतम्	तियिमशार्फ		दे० का०	दे०
३२०	६६४४	तियिन् वनोरी टीका	राम		दे० का०	दे०
३२१	७८१४	दरमिल	बगह निहिर		दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठा का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्ति संख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कत मान ग्रन्थ का दिवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ
१६×६५ से० मी०	५२	१६	२७	अपूर्ण	प्राचीन (जोए)	
१३७×११५ से० मी०	१०	१२	२३	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री तिथि प्रकाश समाप्त शुभ- मस्तु ॥
६१×८६ से० मी०	५ (१-५)	८	३२	पूर्ण	प्राचीन स० १८७४	इति श्री द्विवेद गंगाधरकृतौ तिथि- प्रकाश निर्णय समाप्त शुभमस्तु ॥ स० १८७४ चैत्र सुदि ३ गुरोक्त पुस्तक लिपित × × ×
२२३×१०४ से० मी०	५	६	२५	अपूर्ण	प्राचीन	
२६८×१०७ से० मी०	५ (१-५)	१२	३६	पूर्ण	प्राचीन स० १८३७	इति श्री त्रिविक्रमाचार्य निरचित त्रिदिनमशत संपूर्ण ॥ स० १८३७ ॥ शाक ॥ १७०२ ॥
२६१×११३ से० मी०	१४ (१-१४)	८	४३	पूर्ण	प्राचीन स० १९१७	इति मित विश्व वयोग्णा वृष्णकने मन्त्री निवद्धा क न बालुवाया वयो गोरक्ष पुम भित्ति मुरजनुपा रामेरा कृत ॥ स० १९१७ माघे मास ॥
२४६×१०६ से० मी०	१० (१०८-१००- ११)	६	२७	अपूर्ण	प्राचीन	इति दर्वागल समाप्त ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	मुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस दस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३२२	४४११	दशाचक्र			दे० का०	दे०
३२३	६९५०	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२४	७६८८	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२५	४८३५	दशाफल			दे० का०	दे०
३२६	२५३२ १७	दिवामुहूर्त			दे० का०	दे०
३२७	२६२२	दैन्यचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२८	४०१२	दैन्य जीवन	श्रीनरमण त्रिपाठी		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पत्रसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२६७ × ११४ से० मी०	५ (२-६)	६	४२	अपूर्०	प्राचीन	
२४३ × १०४ से० मी०	१३ (१-१३)	६	२८	पूर्०	प्राचीन	इति दशाचितामणि समाप्त ॥
२७३ × ११४ से० मी०	१६ (१-१६)	७	३४	पूर्०	प्राचीन	
२३५ × ६ से० मी०	१२ (१-१२)	७	३२	अपूर्०	प्राचीन	
१३७ × ११५ से० मी०	१३ $\frac{१}{२}$	६	२३	पूर्०	सं० १६२४	अथ शुभ सं० १६२४ के शाने १७८६ कार्तिक वदि १५ समाप्ति दिन सिधि तेद पुस्तक श्री पंडित नगारामेपु
३२ × १२८ से० मी०	६ (१-५, ७)	७	३४	अपूर्०	प्राचीन	
३७ × १५१ से० मी०	३३	१७	२८	अपूर्०	प्राचीन (जोरा)	इति श्री द्विज दिनकरात्मजस्त्रिपाठे श्री लक्ष्मण बृहत्सावतसराय विर-जितास्त्रिगुण संहिता *** (पुष्पिका)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	प्रथनाम	प्रभाव	टीकाकार	प्रय किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२६	$\frac{२५३३}{३}$	दापमान			१० का०	३०
३३०	६२४२	द्वादशराशिपत्र			३० वा०	३०
३३१	७५+५	द्वादशराशिफल प्रश्नावली			३० वा० ।	३०
३३२	$\frac{५३३२}{८}$	द्विघटिका मुहूर्त			३० का०	३०
३३३	४०८५	द्विघटिका मुहूर्त			३० का०	३०
३३४	$\frac{२५३२}{१७}$	द्विघटिका मुहूर्त			३० का०	३०
३३५	७७७६	घोषाट (पञ्चपरिभानाघिबार)	घोषति		३० वा०	३०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसंख्या		क्या शब्द पूर्ण हैं ? अपूर्ण हैं तो वतमान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		प्रति पृष्ठ में अक्षरसंख्या	प्रति पृष्ठ में अक्षरसंख्या			
८ अ	६	८	६	१०	१०	१०
१७२ × १२५ से० मी०	२	८	१६	१०	प्राचीन	इति दासजान ॥
२१५ × ११ से० मी०	७ (१-७)	१३	३२	१०	प्राचीन सं० १६१५	इति श्री राशो मण्डल द्वादश राशी फल ॥ समत १६१५ शके ७७८० भादा शुक्ल त्रयोदशी * * *
२१८ × १२ से० मी०	८ (१- )	६	२७	१०	प्राचीन सं० १८५८	इति द्वादश रासिफल लिप्यते ॥ शुभ- म्वस्तु शिद्विरतु सवत १८५८ फालगुन वदि * * *
२१६ × १५६ से० मी०	३	१३	२३	१०	प्राचीन	इति श्री शिवा विरचित दुपटीया मूर्त मपूण ॥ श्री ॥
२३ × ३८ से० मी०	१६ (१-१६)	४	३७	१०	प्राचीन सं० १८५६	इति श्री ज्योति शास्त्रगारे पार्वती शिव सवादे शिव प्राप्त द्विषतिकाश- माप्त ॥ सवत १८५६ शके १७२१ * * * ॥
१३७ × १५५ से० मी०	१६ (१-१६)	१४	२८	१०	सं० १६२४	इति श्री शिव कृतद्विषटिका मूर्त सपूर्ण शुभमस्तु ॥ सवत १६२४ * * * * *
२१८ × ११ से० मी०	५	६	२४	१०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२४८१	नक्षत्र कण्ठावली			दे० का०	दे०
३३७	६८०८	नक्षत्र चूणामणि			दे० का०	दे०
३३८	७०१२	नक्षत्र विद्यान			दे० का०	दे०
३३९	१०४१	नक्षत्रायुदशाफलम्			दे० का०	दे०
३४०	१८६१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४१	२१८४	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४२	६८७३	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१६२ × ८३ सें० मी०	४ (१-४)	१०	२६	५०	प्राचीन	इति नक्षत्र चण्डावलि संपूर्णा ॥
२३६ × १०३ सें० मी०	३२ (१-३२)	६	३३	५०	प्राचीन	॥ इति स ॥
२२' × ६६ सें० मी०	५ (१-५)	६	३६	५०	प्राचीन	इति नक्षत्र विधान संपूर्ण ॥ × ×
२६२ × १०८ सें० मी०	११ (१-११)	८	२८	५०	प्राचीन सं० १८१२	इति श्री मन्मि अक्षरद्वारिप्रजमा(घ) व रचितेनक्षत्रापुद्गना प्रमविभागा- नयानफल समाप्तम् ॥
२४१ × १०२ सें० मी०	१३ (१-१३)	१२	४१	अपूर्०	प्राचीन	इति नक्षत्रि त्रयचर्चायां स्वरोदये पञ्चमे सप्तम्यायमे शास्त्रे सप्तहा नाम प्रथमाध्याय ॥ (५० ४)
१२१ × १२२ सें० मी०	६१ (१०-५६, ५६-८३, १३१-१४१)	१३	४४	अपूर्०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री नक्षत्रि त्रयचर्चायां नक्षत्रि त्रयचर्चायां प्रथमः ॥ सं० १८७० ॥
२७६ × १३६ सें० मी०	२२७ (१-२२७)	१०	३३	५०	प्राचीन	इति श्री पद्मि नक्षत्रि त्रयचर्चायां यात्राप्रवर्तनित्तराहुनाभिगमाष्टानि- × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिवि
१	२	३	४	५	६	७
३४३	६६०१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० वा०	३०
३४४	३७५०	नरपतिजयचर्या			३० का०	३०
३४५	७३६०	नरपतिजयचर्या- स्वरोदय	नरपति		३० का०	३०
३४६	१६२१	नरपतिजयचर्या- स्वरोदय			३० वा०	३०
३४७	$\frac{५०५४}{१२}$	नगर विमिनशत योग			३० वा०	३०
३४८	६६२१	नटजम पटल			३० वा०	३०
३४९	६१८	नटजमाधमय			३० का०	३०



पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिमात्रा और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
क अ	ब	स द	६	१०	११
२६'६ × ११'२ सें० मी०	६४	६ ३५	अपूर्०	प्राचीन	इति नर ५० रज्जुवधे चक्र ॥
३३ × १२'५ सें० मी०	३० (५-३०, १२७, १२६, १३१, १३२)	१३ ४४	अपूर्०	प्राचीन	
३१'७ × १३'३ सें० मी०	६५ (१-६५)	१२ ५२	पूर्०	प्राचीन म० १८६५	इति श्री नरकति जयचर्म्याया स्वरोदये तात्कालिक पञ्चाग समाप्तम् ॥..... शाके १७३० । सं० १८६५ .. ..
२५ × १२ सें० मी०	२३	१२ ४२	अपूर्०	प्राचीन	
१६ × ७'८ सें० मी०	८	६ १८	अपूर्०	प्राचीन	
२०'७ × ६'३ सें० मी०	२ (१-२)	१० ३०	पूर्०	प्राचीन	इति श्री रुद्र संहिताया हर शर्वती सवादेनऽटजन्म पटसाध्याय समाप्त ॥ श्री शिवापरा मस्तु ॥
२३'६ × १०'५ सें० मी०	१० (१-१०)	१४ ३८	अपूर्०	प्राचीन	
(म० मू० ७६)					

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविषय की संख्या	ग्रन्थनाम	प्रयत्नकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३५०	६६१७	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५१	७७६८	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५२	२८०३	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५३	६६२६	नष्टजातक प्रश्न			मि० का०	दे०
३५४	२२७६	नारदद्रष्टिपत्र	श्रीसागरचन्द्र सूरि		दे० का०	दे०
३५५	$\frac{२६७६}{२}$	नारायण प्रश्न			दे० का०	दे०
३५६	६६१०	निपेचनालमूढि			दे० का०	दे०

पद्यो या पृष्ठो का भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रय पार्श्व है ? अपूर्ण है तो वर्ण- मान प्रश वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७३ × ११२ सं० मी०	३ (१-३)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्न मार्गे नष्ट प्रकाराध्याय- स्ममाप्तिमगमत् ॥ * ... ..
२०३ × १६ सं० मी०	३ (१-३)	१७	२५	अपू०	प्राचीन	
२७३ × ११६ सं० मी०	२ (१-२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति नष्टजातकाध्याय ॥
१६८ × ६५ सं० मी०	४	११	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नमार्गेनष्टप्रकाराध्याय ॥
२४१ × १२५ सं० मी०	३२ (१-३२)	६	२६	पू०	प्राचीन स०१८०७	इति नारदद्रष्टिपन्नके श्रीसागर- चन्द्र सूरि कृते प्रथम प्रकीर्णक संवत् १८०७ वर्षे भावणवदि तृतीया- ३ अध्यायसरे लिखित व्यास जय शकरेण ॥
१७८ × १५५ सं० मी०	१५३	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२७६ × ११६ सं० मी०	६	१३	४४	पू०	प्राचीन स०१६२६	स० १६२६ आषाढ व १३ दुधे विनायक वेतालस्याय लेखः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संप्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	
३५७	११०५	नीलकंठी	राम दैवज्ञ		दे० का० " "	७ ३०
३५८	२५३२ १७	नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		३० का०	३०
३५९	६९९३	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विषयनाथ दैवज्ञ	३० का०	३०
३६०	२६१७	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विषयनाथ दैवज्ञ	३० का०	३०
३६१	६८७७	नीलकंठी (टीकासहित)	नीलकंठ		३० का०	३०
३६२	७९३४	नीलकंठी (सजातज्ञ)	नीलकंठ		३० का०	३०
३६३	७४७	नूयान			३० का०	३०

पत्रो या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिनसंख्या प्रीर प्रतिपत्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान अक्षर का विवरण	प्रवस्था प्रीर प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
अ	ब	स	द	६	१०	११
२१६ × १५३ से० मी०	४० (१-४०)	१२	३७	५०	प्राचीन स० १६१७	इति श्री देवज्ञानतमस्तु देवज्ञ राम विरचित वर्षलक्षः मासफले च दिनफले नीलकण्ठ नाम ग्रथ संपूर्ण ॥ समाप्त शुभफल दधात ॥ सवत् १६१७ । मिति अमुन वदि ॥३॥ शुके...
१३७ × १५५ से० मी०	१२	१२	२६	५०	प्राचीन	इति नीलकण्ठ तत्रे प्रथम समाप्त ॥
३१ × ११६ से० मी०	२१	६	४४	अपूर्ण	प्राचीन जीर्ण	इति श्री दिवाकर देवज्ञास्मविजा विश्वनाथ देवज्ञ विरचिते नीलकण्ठ-ज्योतिर्विष्कृत सज्ञा तत्रे सहमाध्यायस्य व्याधयोदाहृति समाप्ति संपूर्ण ॥
२३७ × १२३ से० मी०	३१ (२२-३२)	१०	३८	अपूर्ण	स० १८६६	इति श्री दिवाकर देवज्ञास्मविजा विश्वनाथ देवज्ञ विरचिते नीलकण्ठ-ज्योतिर्विष्कृत सज्ञा तत्रे सहमाध्यायस्य व्याधयोदाहृति समाप्ति संपूर्ण ॥ सवत् १८६६ शाके १७३४ ॥
२४३ × १०२ से० मी०	२६ (१-२६)	१०	३६	अपूर्ण	प्राचीन	
२७१ × ११४ से० मी०	१२ (१-१२)	११	३८	पूर्ण	प्राचीन स० १६१२	इति श्री नीलकण्ठ इत सज्ञाविवेके सहमानिव्यदधात् ॥ प्रथमतस्त समाप्त । × × × ॥
२५१ × १०६ से० मी०	६ (१-६)	११	२६	पूर्ण	प्राचीन स० १६०७	इति श्री नृपान पुस्तक समाप्त थावन मासे इत्यपक्षे कृष्ण चतुर्दश्यावधवासरे सवत् १६०७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या राश्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६४	४६८७	पंचपक्षी			दे० का०	दे०
३६५	५०९६	पंचपक्षी			दे० का०	दे०
३६६	४०३२	पंचपक्षी			मि० का०	दे०
३६७	३००७	पंचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६८	६७३६	पंचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६९	$\frac{४३३२}{८}$	पंचम भाव विचार			दे० का०	दे०
३७०	२८६४	पंचशरा	परमेश्वर उपाध्याय		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति में प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थस्या भौर प्राचीनता	ग्रन्थ प्रावश्यक विवरण
		स	द			
२८५ × १२५ सें० मी०	६ (१-६)	११	४४	पू०	सं० १६०६	इति श्री शोबोक्त पञ्चपक्षि सनाप्त- म् । शुभ सम्बत १६०६ ॥ शाके १७७४ ... ..
२० × ७६ सें० मी०	२५ (१-६, १- ७, १-६)	६	३३	अपू०	प्राचीन	ग्रन्थ पञ्चपक्षिणा सख्या विधीयते ॥ (प्रारम्भ) ... ..
२० × ७७ सें० मी०	१३ (१-१३)	६	३६	पू०	सं० १६२५	इति पञ्चपक्षी समाप्ता ॥ सवत १६२५ मार्गशीर्षवद्य शुभवार हर्डीकरो- पनाक राम चद्रेण लिखित स्वा० ॥
२४ × १५ सें० मी०	२	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पञ्चपक्षी प्रश्न सपूर्ण ॥
३३२ × १०२ सें० मी०	३ (१-३)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति रत्नाकर खडे स्कान्दाग्रस्त्य सवादे पञ्चपक्षी प्रश्न समाप्त ॥ लिखितमिद विनायक वेतालान ॥
२१६ × १४६ सें० मी०	२	११	२८	पू०	प्राचीन	ग्रन्थ पञ्चम भाव विचार + + (प्रारम्भ)
२४५ × १३५ सें० मी०	२ (१-२)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सना कुला वतशपरमसुरयो- पाप्याय कृते पञ्चशरा ग्रन्थे आयुर्दायो द्वितीयोऽध्याय समाप्त ० जयशिव ०: जयराम जानकी ० जयगौरी शंकर

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथवार	टीकाकार,	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७१	७३७८	पंचस्वरनिर्णय (सुबोधिनी टीका)	गंगाप्रसाददेवज	प्रजापतिदास	३० का०	३०
३७२	२६६७	पंचस्वरनिर्णय	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७३	४७१४	पंचस्वरा	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७४	६८५३	पंचस्वरा			३० का०	३०
३७५	६६२०	पंचस्वरा	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७६	६६१२	पंचस्वराजातक (मटीक)	प्रजापतिदास		३० का०	३०
३७७	६८१७	पंचस्वरनिर्णय	प्रजापतिदास		३० का०	३०



पत्तो गा पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या प्रौर प्रति पंक्ति में पक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त- मान प्रग का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द	६		
८ प्र	८				१०	११
२६८ × ११२ सं० मी०	२६ (१-२६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्भूदनियोगनामक अक्षर मणि- मुत्त गंगाप्रभा विरचिताया पंचस्वर निरुण्णैर्मत्तमोऽध्यायः ॥३॥ पौपेभासे कृष्णपक्षे × × × × × ॥
२७ × १११ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	
३४४ × १७५ सं० मी०	७ (१-७)	१५	५२	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास कृत पंचस्वरा समाप्तं ॥
२४२ × १०७ सं० मी०	१० (१-१०)	६	३०	पू०	प्राचीन	
२७३ × ११५ सं० मी०	१३ (१-१३)	६	४३	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास विरचिते पंच स्वरायां सप्तमोऽध्याय ॥७॥
२६२ × ११४ सं० मी०	१७ (१-१७)	११	३४	पू०	प्राचीन	इति पंच स्वराजातके बालारिष्टम् ॥१॥ (पत्र-संख्या ५) इति श्री गौड ब्र(प)दाचार्ये वि० पंचस्वर टिपण समाप्तम् ॥ (पत्र-संख्या १६)
३२५ × ६८ सं० मी०	१० (१-१०)	११	५५	पू०	स० १६४६	इति प्रजापतिदास कृतः पंचस्वरा निरुण्णैः समाप्तम् ॥ सम्बत् १६४६ ॥ श्राके १८१४ तिमिम् पंचदशमि गुह वासरातितया ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या मसूदाविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
३७८	४०३१	पंचांग बरॉन			मि० का०	दे०
३७९	२९२७	षड्विंशक			दे० का०	दे०
३८०	७३९६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८१	७४६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८२	४२५६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८३	१८१२	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८४	१०६७	पद्मकोश	गोवर्द्धन ज्योतिष		दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो या माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त- मान अक्षर वा विवरण	ग्रन्थसा और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२० × ७ ७ सं० मी०	८ (१-८)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति पारिजात रत्नाकरे पञ्चागवर्ण- नोत्तम प्रथमाध्याय ॥
२७ ३ × १० ८ सं० मी०	५ (१-५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	
१८ २ × १० ६ सं० मी०	२६	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२६ १ × ११ सं० मी०	१६ (१-१६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति पद्यवाण भाव फलम् समाप्तम् ॥ सं० १६०६... स्वस्ती श्री रघुवर त्रिपाठी तस्य आत्मज दाता राम त्रिपाठी तस्य पुत्र्य भार्ज्या रा लोचन रामेन ..... मङ्गलमेधे ॥
२३ × १० सं० मी०	१२ (१-१२)	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति श्री ताजकीय पदमहोश व्यग्रय समाप्तोयम् वैशाख शुक्ला ४ चद्रवासरे सं० १६११ ॥
२५ १ × १० ६ सं० मी०	६ (१-६)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
२७ ६ × १० ७ सं० मी०	११	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति षडमकोम सं० १८८६ महासोत्तमा- से चैत्र शुक्ला ७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा समग्रविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	३५८	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८६	१६३८	पद्मकोश जातक			दे० का०	दे०
३८७	५६६	पद्मकोश वपपल			दे० का०	दे०
३८८	४६०६	पद्मपचाशिका			दे० का०	दे०
३८९	१५१५	पद्मपचाशिका			दे० का०	दे०
३९०	२८२३	पद्मपचाशिका	श्रीपति		दे० का०	दे०
३९१	३६५२	पद्मपचाशिका			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसङ्ख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसङ्ख्या प्रार प्रतिपक्ति मे अक्षरसङ्ख्या		क्या शय पूरा है ? प्रपुण है तो वत मान अश का विवरण	ग्रवस्या और प्राचीनता	अय श्रावश्यक विवरण
		स	द			
१७५ × १३२ सें० मी०	१२	२०	२०	पू०	प्राचीन स०१६५	इति राहुफल इति ताजकीय पदम व शाव्यपथ समाप्तोपम मीय शिर कृष्णा - बुधवासर सवत १६३५ शुभम् लिखित वनवारि लाल स्वय पठनाय ।
२०८ × १०८ सें० मी०	२५	८	२६	अपू०	प्राचीन स०१६५१	
१४६ × १०३ सें० मी०	६ (१-६)	८	४१	पू०	प्राचीन स०१६३५	इति श्री पदमकोश वर्षफल नक्षत्राहादि फल संपुणम् ॥ सवत् १६३५ वैशाख कृष्ण प्रतिपदा १ वार बृहस्पतवार मघाद्यावपलानके १ ॥
२३५ × ११ सें० मी०	१० (१-१०)	८	३४	पू०	प्राचीन स०१६०८	काश स्या गौड विप्र हररस कवि व शवक सज्जनाना कुर्वे सिद्धात सार मून मनुजनत पद्य पचासकीय २ पादि पचासास पुन समापति ॥ सवतु १६०८ ॥ (पत्र सख्या-१)
२३८ × १०७ सें० मी०	७	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०६ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२८	पू०	प्राचीन स०१८६६	इति श्री कविद्रक विभूषण परिधि श्रीपति विरचिताया पद्यपचासकीय ॥ समाप्त सुभमस्तु ॥ सवत १८६६ ॥ सके १७३१ श्रीरामायनम् । श्रीराम चन्द्र नम श्रीगणेशायनम् ॥
२५५ × १३ सें० मी०	१० (१-१०)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री पदम पचासिका समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	प्रथानाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६२	३६८६	पद्यपचाशिका	श्री पति		दे० का०	दे०
३६३	६८०७	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०
३६४	२१३०	पद्यप्रदीप जातक	श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
३६५	६८६	पल्लिभारट दिचार			दे० का०	दे०
३६६	२८११	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३६७	१४६८	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३६८	२५३२ १७	पल्लीपतन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति संख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर संख्या		क्या प्रथम पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रथम का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२२×१२ सं० मी०	४	१७	३६	अपूर्ण	सं० १८७७	इति श्री बचोद्विकुनमूपरणपठित श्री- पति रचिताया पद्यवाचनावय समाप्तम् ॥ सवत् १८७७ भाद्रपद कृष्णपक्षे ५ रवि लिप्यत यस्य छोटेलालऽस्मिन् मिर- पुरे गगानिकटे विध्यशेत्रे
२४१×१०५ सं० मी०	१० (१-१०)	७	३१	अपूर्ण	प्राचीन	
३२६×१२३ सं० मी०	२० (१-२०)	१०	४२	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री बचोद्विकुनकलमपठित श्रीपति विरचिते पद्यप्रदीपाध्यजातकं समाप्तम्
२२६×११७ सं० मी०	३ (१-३)	१०	२६	पूर्ण	प्राचीन सं० १६०८	इति श्री पत्नि पत शपट प्ररोहण विचार शप्त सं० १६०८ शाने १७७३ अश्विनमासैश्वर्य पक्षे नवम्या मंगु वागेर लिखतरामदिहनि प्रेषण प्रप- मार्थम् पुस्तक निदम् ।
२७१×१११ सं० मी०	२ (१-२)	६	४१	पूर्ण	प्राचीन	इति परिष्ठा पत्नी पतन पत्ताकन शान्ति विधि प्रहरमण तिथिवार नशात्र सम्प मंगु ... .. ॥
१६७×६३ सं० मी०	१ (२-३-४)	११	२६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३७	इति पत्नी पतन गमानम् ॥ निप नीबन राय पटनासं सं० १८३७ मार्ग शिर सं० २ निपत श्यमी गिब बरुं ॥
११७×११२ सं० मी०	१०	११	२४	पूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकानुय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७
३६६	$\frac{७२५१}{२}$	पल्लीपतनविचार			३० का०	३०
४००	६६७३	पल्लीपतनविचार (दु स्वप्नदर्शन)			३० का०	३०
४०१	१७३२	पल्लीशरट विधान	कमलानरभट्ट		३० का०	३०
४०२	$\frac{१८६०}{४ (घ)}$	पल्लीशरटविधानम्			३० का०	३०
४०३	६६५१	पल्लीशरटयोविधान	मर्ग उपाध्याय		३० का०	३०
४०४	६६१६	पवनविजय			३० का०	३०
४०५	६२०५	पवनविजयस्वरोदय			३० का०	३०



पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रितसंख्या और प्रति पत्रि- मे प्रक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष विवरण	ग्रथस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण	
		स	द			१०	११
१७६×८१ सं० मी०	६ (१-६)	७	१६	५०	प्राचीन स० १६३८	इति श्री पल्लीविचारोध्याय समाप्तम् ॥ स० १६३८ ॥ पाल्गुण मासेतिथि पक्षे पष्टम्या गुरुवासरे ॥ X X X X	
२०५×१५१ सं० मी०	१ पत्रा	२६	२७	५०	प्राचीन	इति श्रीमृतवचनात् पल्लीपत्रनविचार समाप्त ॥	
२५८×१०७ सं० मी०	१३ (१-१३)	१०	३७	५०	प्राचीन	इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणोनारामण- नारद सवादे श्रीकृष्णखंडे भगवन् दसवादे दु स्वप्नदर्शनकथन नाम द्वासीतितमो- ध्याय ॥ शुभमस्तु ॥	
१२६×८८ सं० मी०	६ (१-६)	८	१३	अपूर्ण		इति पल्ली शरट विधान समाप्तम् शुभमस्तु ॥	
२१७×१०१ सं० मी०	२ (१-२)	११	४८	५०	प्राचीन	इति शर्गोपाध्याय विरचित पल्ली सन्टयो विधान समाप्त ॥	
१४३×८२ सं० मी०	७ (१-७)	११	२२	५०	प्राचीन स० १७७५	इति श्री पत्रन विजय नाम प्रथममाप्त शुभमवात् ॥ स० १७७५ कानिच शुक्रना मन्मथी उरवो विपत मनसा रामगौड ब्राह्मण जलेनर नगरमध्ये शुभ भवाम् ॥	
२२१×१८४ सं० मी०	११ (१-११)	६	२४	५०	प्राचीन स० १८६६	इति ॐ तत्सद् इति शिष उमामबाधो- क्तो नव प्रकृतार्थिन पवन विजय नाम स्वरोदयं समाप्तम् ॥ स० १८६६ भाष भाग कृष्णपक्षे " "	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रामतसम्ख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	प्रयकार	टीकाकार	ग्रथ कित वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ४०६	६३०४	पवनविजय स्वरोदय			२० का०	२०
✓ ४०७	६६५६	पातसाधन विवृति	विश्वनाथ		२० का०	२०
४०८	३०१८	पाराशर जातक			२० का०	२०
४०९	७०४७	शराशर होरा सुश्लोकी- भातव			२० का०	२०
४१०	५६६३	पाराशरीय जातक (सटीक)			२० का०	२०
४११	५६३२	पाराशरीय जातक			२० का०	२०
४१२	३१८७	पाराशरीय जातक (सटीक)			२० का०	२०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
द म	ब	स	द	६	१०	११
२२ २ × १३ ६ से० मी०	२४ (१-२४)	६	१८	१००	प्राचीन सं० १८६६	ॐ तत्सदिति उमामाहेश्वर सवादे नव प्रकरणान्वित पवनाविजय नाम स्वरा- दय समाप्तम् सपूर्णं सवत् १८६६ मासाना मासे माघ शुक्ला ५ शनी लिखित .. ...
२६ ६ × ११ ५ से० मी०	८ (१-६, ६- ७)	१५	४४	१००	प्राचीन	इति श्री दिवाकर देवज्ञात्मज विरचनाय विरचिता पातसाधन विवृति समाप्ता ॥
२७ ३ × ११ ५ से० मी०	१५ (१-१५)	७	३१	१००	प्राचीन सं० १६०७	इति पाराशरि जातक म० १६०७ शाके १७७२ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे ३ गुह- वासरे ..
२७ ८ × १० ६ से० मी०	६ (१-३, ५- ६, ८)	७	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
३१ २ × १४ ८ से० मी०	६ (२-७)	१४	४५	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८१९	
२५ ६ × १० ४ से० मी०	२ (१-२)	६	३६	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६००	इति पाराशरीये जातके उद्बुदायप्रदी- पाष्टपेदशातदशाध्याय समाप्त ॥ ४ ॥ समाप्तोय ग्रन्थ ॥ श्री रस्तु सं० १६०० शाके १७६५ × × ॥
२५ ६ × १२ ५ से० मी०	६ (१-६)	११	४३	पूर्ण	प्राचीन	इति पाराशरी जातकस्य टीका या संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ विस- वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१३	६६१८	पाराशरी होरा			दे० वा०	दे०
४१४	६२८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१५	३७५४	पाशकेवली	गीतम		दे० का०	दे०
४१६	२८६७	पाशकेवली	गर्गाचार्य		दे० वा०	दे०
४१७	७०८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१८	६६७६	वीक्ष्यधारा (मूहृतं चिंता- मणि टीका, तिथि, वार, प्रकरण)	गोविंद देवज		दे० वा०	दे०
४१९	६६७९	वीक्ष्यधारा (मूहृतं चिंता- मणि टीका, तिथि, वार, वधसंप्रकरण)	गोविंद देवज		दे० वा०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पकितसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	ग्रन्थस्य और प्राचीनता	अन्य प्रावश्यक विवरण
		स	द			
८ प्र	६	स	द	९	१०	११
२७४ × ११५ सें० मी०	६ (१-६)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति पराशरराये केरलमारे कारक प्रकरण ॥ * ...
२६२ × १२८ सें० मी०	७	१४	३३	अपूर्ण	प्राचीन सं० १७६२	इति पाशाकेवली समाप्ता ॥ मूर्त्तेशुभ बलाया पाशन कार म शुभ × × × × × सवत् १७६२ पीप शुक्ल प्रतिपाद तोर्मराजे लिखिता ॥
१६ × १२ सें० मी०	१० (१-७, ७-६)	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री गोत्तम कृता पाशाकेवली समाप्ता ॥ सवत् १६१७ मिश्र सेठ मल्ल जी तस्यात्मज छजुरामेण लिखिता पाशाकेवली विष्णो प्रसादात् शुभमस्तु श्रीकृष्णायनम ॥
२३८ × ११ सें० मी०	४ (४-६, ८-६)	१०	२८	अपूर्ण	प्राचीन सं० १८३६	इति गणाचार्य विरचित पाशाकेवली समाप्त ॥ शुभमस्तु समाप्त ॥ सवत् १८३६ फाल्गुणे मासि शुक्ले प्रतिपदाया भीमवासरे शुभ ॥
११६ × १०३ सें० मी०	१६ (१-१६)	११	१८	पू०	प्राचीन	पाशाकेवली समाप्ता ॥ श्री सुभ भुया ॥
२४८ × १२२ सें० मी०	४४ (१-४४)	७	३३	पू०	सं० १८८८	इति श्री दैवज्ञानतनुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहल चिन्तामणी गोचर प्रकरण ... गोविदेन विनिमिते नवनिघो पीयूषधाराभिधे व्याख्याने खलु गोचर प्रकरणे सपूर्णता * * * * * सवत् १८८८ * * * * * ॥
२४६ × १२३ सें० मी०	१६२ (१-१६०) पत्र २६ एव ५३ दो, दो	७	३२	पू०	सं० १८८८	इति श्री विद्दईवज्ञ मुकुटालकार नीलकण्ठ ज्योतिर्विद्युन्नमोविदग्ग्योतिर्विद्विरचिताया मुहल चिन्तामणि टीकाया पीयूषधाराभिधया सविचार विमिश्रानसन्न प्रकरण समाप्ति सं० १८८८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२०	६६७५	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मण्डिटीका राज्याभिषेक प्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२१	६६७८	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंता मण्डि टीका, विवाह प्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२२	६६६६	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंतामण्डि टीका, शुभाशुभप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२३	६६७७	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंतामण्डि टीका, सजातिप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२४	६६६७	पीयूषधारा (मूहूर्तचिंतामण्डि टीका, सस्वारप्रकरण)	गोविंद देवज्ञ		दे० का०	दे०
४२५	६८७१	पंतामहतिद्यात			दे० का०	दे०
४२६	२७३६	प्रपद्य निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का भावार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रति पक्ति मे प्रक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? प्रपूर्ण है तो वर्तमान प्रश्न का विवरण	भवत्या और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५७ × १२१ सं० मी०	२५ (१-२५)	७	३५	पू०	स० १८८८	***मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिवित्युत्र- गोविंद ज्योतिविद्विरचिताया मुहुर्तं चितामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायी राजाभिषेक प्रकरण समाप्तिममत्*** स० १८८८ *** ** ** ॥
२६ × १२१ सं० मी०	१७६ (१-१७६)	७	३६	पू०	स० १८८८	इति श्री विद्वदेवज्ञ मुकुटालकारनीलकंठ ज्योतिवित्युत्रगोविंद ज्योतिविद्विरचिताया मुहुर्तं चितामणि टीकाया पीयूषधारा- भिधायी विवाह प्रकरण समाप्तिमगात् ॥ स० १८८८ ॥
२५८ × १२२ सं० मी०	१०० (१७-१११)	७	३०	प्रपू०	स० १८८८	इति श्री विद्वदेवज्ञमुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिवित्युत्र गोविंदज्योतिविद्विरचि- ताया मुहुर्तंचितामणितिकाया पीयूष- धाराभिधायी शुभाशुभ प्रकरण समाप्तं यमान ॥ स० १८८८ ॥
२६ × १२२ सं० मी०	४२ (१-४२)	७	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीदेवज्ञ मुकुटालकार नीलकंठ ज्योतिवित्युत्र गोविंद ज्योतिविरचिताया मुहुर्तं चितामणि टीकाया पीयूषधारा- भिधायी सत्राति प्रकरण समाप्ति ।
२५७ × १२१ सं० मी०	१३६ (१-१३६)	७	३३	पू०	स० १८८८	इति श्री विद्वदेवज्ञ मुकुटालकार नील- कंठ ज्योतिवित्युत्रगोविंद ज्योतिविद्वि- रचिताया मुहुर्तं चितामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायी तपस्विकर सहा- रण समाप्ति ममत् स० १८८८ आश्विन ६ ।
२७ × ११६ सं० मी०	१२ (१-१२)	११	४०	पू०	प्राचीन स० १८८७	इति श्री विष्णुधर्मोत्तर पंतामह मिदान समाप्त तांत्रिकमंत्रयोगुच्छान् १५६३ × × मन् १८८७ वाल्मीकि कृष्ण १० अठ्ठवामरे समाप्तं दद पुत्रक पठन् श्री श्री महाशय श्री की विष्णु देवे राम मान पञ्चवा- सपञ्चादि राम श्री निवाग श्री री ब्रह्मपुरी माये + + इति प्रथम निरुंज, शुभ भूयात् संवत् १८१७ ॥
२७ × ११३ सं० मी०	१४	१०	३७	पू०	स० १८१७	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्यतासख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	निधि
१	२	३	४	५	६	७
४२७	१६६	प्रश्न ग्रथ			२० का०	२०
४२८	३००८	प्रश्न ग्रथ (हिंदी टीका)			२० का०	२०
४२९	४२१९	प्रश्नग्रथ			२० का०	२०
४३०	४३४२	प्रश्नचहेषवर			२० का०	२०
४३१	$\frac{२४३२}{१७}$	प्रश्नचिंतामणि			२० का०	२०
४३२	४८२८	प्रश्नज्ञान			२० का०	२०
४३३	$\frac{१०२५}{१}$	प्रश्न ज्ञानम्	बालीनाथ		२० का०	२०



पत्रों या पृष्ठों का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पवित्रसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रय पूरा है? अपूर्ण है तो वर्ण-मान अक्ष का विवरण	भवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०२ × ६५ सं० मी०	५ (३-७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
१५१ × ६ सं० मी०	४ (१-४)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२३९ × १०६ सं० मी०	५ (१-५)	१२	२८	पू०	प्राचीन	अथ प्रश्नप्रश्न लिख्यते (प्राप्त) शुभमस्तु सम्पूर्णम्! ... (अंत)
३०५ × १४ सं० मी०	१८ (१-१८)	१६	३४	अपू०	सं० १८६४	इति श्री चण्डेश्वर ब्रह्मविद्यायंगमागमी- त्प्रायो एकराशः × × उमाशक्ताय नमः सम्वत् १८६४ ... पू० (१८)
१३७ × ११५ सं० मी०	२३	१८	३२	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नविद्यायनि नामाप्त ॥
२४२ × १०३ सं० मी०	२ (३-४)	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२०३ × १०८ सं० मी०	७ (१-७)	६	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा सप्रहविशेष की संख्या	प्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३४	४४७६	प्रश्नतत	नीलकण्ठ		दे० का०	दे०
४३५	६८४४	प्रश्नदीप			दे० का०	दे०
४३६	१७५३	प्रश्नदीपक	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४३७	३६२०	प्रश्नपारिजात			दे० का०	दे०
४३८	३००० ३	प्रश्नप्रवरण			दे० का०	दे०
४३९	१८३	*प्रश्नप्रवाश			दे० का०	दे०
४४०	४०८०	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्तो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिमख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्त- मान अक्ष का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
३०३ × १५५ सें० मी०	१८ (२-३, ७-२२)	१५	४७	अपूर्ण	प्राचीन सं० १६०४	इति श्री निरकठ विरचित ज्योतिषि बौमुटा प्रदानत वरण समाप्ताय ... सं० १६०४ शा १७६६ संत कृष्णपक्षरादश्या भृगुदिने ..
२१५ × १०१ सें० मी०	१	११	४२	अपूर्ण	प्राचीन	
२७ × १०२ सें० मी०	१३ (१-१३)	६	३७	पूर्ण	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री वासनाथ हुतो प्रश्नदीपक समाप्त ॥ अथ शुभ सवतरे श्री नृपति विश्वमादित्यराजे संवत् १८७० वर्षे माहाभागलमास पौषमास शुक्ल पक्षे शुभतिथी दशम्याप (दशम्या) शनिवार वारं मिथ तनमुख स्वात्म पठनाय ॥ शुभ भवतु ॥
२३८ × ११२ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३५	अपूर्ण	प्राचीन	
१७२ × ११८ सें० मी०	१६३	१६	२४	अपूर्ण	प्राचीन	
२१ × ८६ सें० मी०	१२	=	२६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री ज्योतिर शास्त्र सारे प्रश्न शास्त्र प्रश्न प्रश्नोत्तर समाप्त ॥
२१२ × ८७ सें० मी०	११ (१, ३-१५)	६	२८	पूर्ण	प्राचीन सं० १७६४	इति श्री वासनाथ दिग्बिधा प्रश्न प्रश्न समाप्त शुभमस्तु सप्त प्रश्न ॥ संवत् १७६६ शा १६०६ क कार्तिक शुद्ध २ थीम वर विष्णु शिवाजी प्राप्तनाथ स्वामीय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय को प्राप्तसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	७३६४	प्रश्नप्रदीप			३० का०	दे०
४४२	७४६४	प्रश्नप्रदीप			३० का०	दे०
४४३	३३११	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		३० का०	दे०
४४४	२८४६	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		३० का०	दे०
४४५	११३२	प्रश्नप्रदीप जातक (सटीक)	प० थियपति	हीराजाज	३० का०	दे०
४४६	१००८	प्रश्नप्रदीपिका	काशीनाथ भट्ट		३० का०	दे०
४४७	४४३	*प्रश्नभंजन	गंगाधर देवस		३० का०	

पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो बर्त- मान ग्रन्थ का विवरण	ग्रन्थका और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
		स	द			
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
११ × ७ ४ सं० मी०	१२	१०	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
२४२ × ११२ सं० मी०	८ (३३-३७, ३६-४१)	६	३०	अपूर्ण	प्राचीन	
२२ ५ × १२ ७ सं० मी०	८ (१-८)	१६	३४	पूर्ण	प्राचीन सं० १८४५	इति श्री काशीनाथ कृतो प्रश्नप्रदीपक समाप्त ग्रन्थमस्तु भवतु ददातु सवत् १८४५ पीपलसुख ८ ॥
२३ ३ × १० ५ सं० मी०	१७	७	२८	पूर्ण	सं० १६१८	इति श्री काशीनाथ विरचिते प्रश्न- प्रदीपके समाप्त ॥ सं० १६१८ ॥
३३ ३ × १२ ८ सं० मी०	२०	६	४६	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री कबीरकृतसत्संग पंडित श्रीपति विरचिते प्रश्न प्रदीपाख्य जातक समाप्तम् ।
२० ५ × १० सं० मी०	१६	८	३२	पूर्ण	सं० १६१४	इति श्री सर्व विद्या विशारद काशी- नाथ कृतो प्रश्न प्रदीपिक समाप्त ॥ सवत् १६१४ शके १७७६ वैशाख कृष्ण षतुदश्यां १४ बुधवत्स मासरे । शुभमस्तु श्री राम निर्दिष्ट मिथ्य देवी- महाय ॥ श्री रस्तु ॥ शुभ मस्तु ॥
२४ ५ × १२ ३ सं० मी०	२१	११	३८	अपूर्ण	सं० १८२०	इति श्री भंडार देवातालय गणेश्वर देवक विरचित प्रश्नभंडार समाप्त सं० १८२० ज्येष्ठ १४ पूर्णिमा शुभ महात्म्य निबन्ध श्रीवत्स राय छाया- पटनार्थ ॥ धीमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमध्या वा सप्रहविशेष की संख्या	पथनाम	प्रथकार	टीकाकार	प्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४८	५०१४	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४४९	१४२१	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४५०	११२२	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४५१	६६१८	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		३० का०	३०
४५२	७३०७	प्रश्नमहोदधि (सटीक)			२० का०	३०
४५३	६६४७	प्रश्नरत्न	मदराम		३० का०	३०
४५४	३२७२	प्रश्नरत्न	मदराम		३० का०	३०

पत्नी या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्रिसंख्या और प्रति पत्रि मे प्रक्षरसंख्या		क्या प्रप पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अक्ष का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२६१×१०६ से० मी०	४ (१-४)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्यं विरचिता प्रश्नमनोरमा समाप्ता ॥ लिखिते सेवाराम स्वबो- धार्यं ॥ राम शुभभूयात् ॥
२४४×१३४ से० मी०	६ (१-६)	१४	३८	पू०	स०१८८३	सवत् १८८३ सरोहृदतिभवत्सरेभक्त- ज्येष्ठमिश्रनौमूर्तिलिदत्तन लेप्यम भारा द्वाज कुले शुभे ॥ लक्ष्मण सुताभव ।- शुभंभूयात् ॥
२०२×१०३ से० मी०	७ (१-७)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्यं विरचिता प्रसोक प्रश्न- मनोरमा प्रश्न विद्या समाप्ता ॥ * * * लेपिता पुस्तकी सु दरमनोरमप * * * * ॥
१६६×८८ से० मी०	३	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति प्रश्न मनोरमा समाप्ता ॥ श्री- कृष्णार्पणमस्तू ॥
२३१×११४ से० मी०	८ (१-८)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	
२६७×११४ से० मी०	६ (१-६)	१६	६२	पू०	स०१६३१	इति प्रश्नरत्न संपूर्ण ॥ सवत् १६३१ भारपद शुक्ल १४ शुक्रवारे लिखित ॥
३३३×१३ से० मी०	१४ (१-१४)	१०	४५	पू०	स०१६०१	इति श्री विभ नदराम हुन केरलि शास्त्रे प्रश्नरत्न नाम प्रथ समाप्तम् सवत् १६०१ मिति जेष्ठ शुक्ल नवम्यां रविवारराधिवताया समाप्तोय लिपितं वागुदेव समेण धरीपद्ममे ॥ शुभं भूयात् ॥ धी ॥ धी ॥

क्रमांक शीर विषय	पुस्तकालय की भागतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५५	८१४	प्रश्नरत्नटिप्पणी			दे० का०	दे०
४५६	१८६७	प्रश्नरहस्य	विष्णुराज		दे० का०	दे०
४५७	७२७३	प्रश्नविचार	देवत		दे० का०	दे०
४५८	१३८६	प्रश्नविनिश्चय			दे० का०	दे०
४५९	१४७१	प्रश्नविनोद			दे० का०	दे०
४६०	१४५५	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास		दे० का०	दे०
४६१	१६५०	प्रश्नवैष्णव			दे० का०	दे०



पत्रा या पृष्ठो ना आधार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पत्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या प्रथम पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अंग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
२७ ६ × १२ २ सं० मी०	४४ (१-४४)	११	३४	पूर्०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री स्वकृत प्रथम रत्नस्य टिप्पणी संपूर्ण ॥ सवत् १८६५ प्राशिवन कृष्ण १० गुरुदिने महापुन्य क्षत्र कनकलेय निविष्ट पठनापस्य शुभ ॥
२४ × ६५ सं० मी०	५	६	३०	पूर्०	सं० १६२१	इति श्री विष्णुराज निमित्त प्रथमरहस्य समाप्त । इदं पुस्तक लिखित श्री रोदसेन शिव दयाल आत्मज शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु शुभ सवत् १६२१ चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टम्या ८ रविवाररे .....
२५ ८ × १२ ७ सं० मी०	३ (१-३)	११	३७	पूर्०	प्राचीन	इति देवल कृत प्रथम संपूर्णमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की अंगणसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकानार	ग्रन्थ विम वस्तु पर निष्ठा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
४६२	३४०१	प्रश्नवैष्णव	नारायण दास		दे० का०	दे०
४६३	६६२४	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६४	२६७८	प्रश्नसंग्रह	शिव		दे० का०	दे०
४६५	३७४६	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६६	६१५०	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६७	७००१	प्रश्नसार	गोविन्द देवता		दे० का०	दे०
४६८	६८५६	प्रश्नसार	हृषीक		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिनस्यया और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	अन्य भावश्यक विवरण
		स	द			
३३.८ × १५.७ सें० मी०	३१ (१-३१)	१३	५३	पू०	म० १७५५	इति ब्रह्मदाशपुत्र श्रीनारायणदास सिद्ध विरचिते प्रश्न वैष्णव शास्त्रे पचदशो- ध्याय. १५ श्री सवत् १८७४ भाद्रपद- मासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ रववासरे शुभमस्तु मंगलदानि लिपिते मिते पश्री दुर्वागिरधारा . . . . .
२१.३ × ८.७ सें० मी०	८ (१-८)	११	३०	पू०	प्राचीन जाके १७५३	इति प्रश्न संग्रह. समाप्ता ॥ श्रीराम चन्द्रार्पणमस्तु ॥ शके १७५३ चर- सवत्सरे गुजरोपनामक रामचंद्रेण लिखित ॥ श्री गजानन ॥
३१.२ × १४ सें० मी०	६ (१-६)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव विरचिते प्रश्नसंग्रह समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददानु . . . .... .
१६ × १३.५ सें० मी०	६ (१-६)	६	१६	पू०	म० १८००	इति प्रणयसाहृ॥ सवत् ॥ १६०० चैत वैदिभावाश्रया ॥
२२.५ × १०.३ सें० मी०	४ (१-४)	६	२८	अपू०	प्राचीन	श्री गणेश नमस्तुत्य श्रीगुर गिरिजा- पति देवज्ञान हितार्थाय क्रियते प्रश्न संग्रहै . . . . . —(पादि)
२०.६ × १६.५ सें० मी०	४ (१-४)	१८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्स्यस्य स्वयं नियमित प्राचाय वशाद्भव विष्णु देवज्ञानमज गोविंद देवज्ञ विरचिते प्रश्नसार संग्रहः ॥
६१.४ × १२.५ सें० मी०	१२ (१-१२)			पू०	प्राचीन म० १६०५	हयश्रीय विरचिते प्रश्नसारः समान्निभ- गमन् ॥ म० १६०५ ॥

क्रमक और विषय	पुस्तकालय की आगतमध्या या सप्रहविशेष की संख्या	प्रथनाम	प्रयत्नार	टीकानार	प्रथ विस वस्तु पर निष्ठा है	विधि
१	२	३	४	५	६	७
४६६	४६०१	प्रश्नगार	गगेश		मि० या०	दे०
४७०	४०७६	प्रश्नसार	जीवज्योति		दे० का०	दे०
४७१	२३६४	प्रश्नगार	गोविंद दैवज		दे० का०	दे०
४७२	२६०३	प्रश्नसार	गोविंद दैवज		दे० का०	दे०
४७३	१२६४	प्रश्नस्वरोदय			दे० का०	दे०
४७४	$\frac{१८२०}{२}$	प्रश्नावली			दे० का०	दे०
४७५	८४६	प्रश्नावली	जडभरत		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो वा आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पवित्संख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या प्रयपूरा है ? अपूरा है तो वत मान अक्ष वा विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य ध्यानशयक विवरण
		व	म			
१६५ × ६६ सें. मी०	७ (१-७)	७	२०	पू०	म०१६२	इति श्री मद्रयामन गणेश त्रिमित प्रख्यासार ग्रथ समाप्तम् १६२७ इति वंशाष्ट शुकना १५ ॥
२२५ × ११ सें. मी०	३ (६-८)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति याज्ञिक उत्तरि गुण जीव ज्यानि विरचित प्रश्नसार समाप्त ॥ X X
२२५ × ६५ सें. मी०	६ (१, ३-७)	१०	२८	अपू०	म०१६३	इति प्रश्नसार समाप्तम् ॥ सं० १६३६ पूगर्वादि ४ वा ॥
२६५ × ११४ सें. मी०	६	६	३०	अपू०	म०१६१३	इति श्री विष्णु देवनात्मज गाविद देवन विरचित प्रश्नसार समाप्त ॥ आहुष्णापराम ॥ सवन १६१३ मान १७३४ माननम माग प्रयाङ्ग नाम शुभे कृष्णपत्र तिथी १४ चतुदश्या भोमनासर " "
१६ × ६२ सें. मी०	६ (३-११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति साधारण प्रश्नस्वराम्य त्रिपित गापीद्रव " "
१८ × १३२ सें. मी०	१०	८	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतमस्थया वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकर	ग्रथ विम वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	६६२८	प्राणपद-गायन प्रकार			२० का०	२०
४७७	२६३०	फलविचार			२० का०	२०
४७८	७०७३	फारसी काव्याधिवार	हीरानन्द		२० का०	२०
४७९	६५४२	वालवुद्धि प्रकाशिका	गोविदाचार्य		२० का०	२०
४८०	७०३७	वालवुद्धि-प्रकाशिकी	गोविदाचार्य		२० का०	२०
४८१	६८९८	वालवुद्धि-प्रकाशिकी	गोविदाचार्य		२० का०	२०
४८२	३०१४	वालबोध	मुजादित्य		२० का०	२०

पद्यो या पृष्ठो का भाकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे वृत्तिसंख्या और प्रति पंक्ति म अक्षरसंख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान ग्रथ का विवरण	ग्रन्थस्या और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक दिवस
द	द	स द	६	१०	११
२७५५१२ से० मी०	४ (१-४)	१२ ३२	पूर्ण	प्राचीन	
२४५१२१ से० मी०	२२		अपूर्ण	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तासंख्या या नष्टहदिसंख्या की संख्या	प्रयत्नांग	प्रयत्नार	टीकाकार	प्रयत्न वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८३	११८८	वातबोध	मुजादित्यविप्र		दे० का०	दे०
४८४	६८११	वातबोध	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८५	२३३८	वातबोध	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८६	२७३६	वातबोध व्याख्या	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८७	$\frac{७०४३}{४}$	वातबोध (सारसंग्रह)	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८८	$\frac{७४७८}{२}$	वातबोध सारसंग्रह	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८९	४२२	वातबोधक (सारसंग्रह)	मुजादित्य		दे० का०	दे०



पत्रो या पृष्ठो का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पकितसंख्या और प्रतिपक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कितना अक्षर का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
		स	द			
१२८ × १३३ सं० मी०	१७ (३-१७, १६-२०)	११	२८	अपूर्ण	सं० १८४७	इति श्री मुजादित्यविप्रविरचित बाल- बोध ग्रंथसमाप्तम् शुभमस्तु सवत् १८४७ साके १७१२ आषाढ वदि ६ शुभमस्तु राम ॥
३३ × १०६ सं० मी०	१७ (१-१३, १६-१६)	१०	३४	अपूर्ण	सं० १८६१	इति श्री मुञ्जा दित्येन विरचिते ज्योतिष शास्त्रे बालबोधवाक्या सार संग्रहसमाप्तम् ॥ १८६१ शुभमस्तु ॥
२४५ × १११ सं० मी०	१४ (१-११, १३-१४)	६	३४	अपूर्ण	सं० १७४४	इति श्री मुजादित्येन विरचितं ज्योतिष शास्त्रे बालबोधवाक्या सारसंग्रह समाप्त सवत् १८४४ ज्येष्ठ शुदि मीमे***
२१५ × १८ सं० मी०	१२	१३	१३	पूर्ण	सं० १८१४	इति श्री मुजादित्येन विरचिते ज्योतिष शास्त्रे बालबोध व्याख्या समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु । सवत् १८१४ पौष वदि ३० ॥
१४७ × १३३ सं० मी०	१६	११	१५	अपूर्ण	प्राचीन	